Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्तोत्र-भारती कण्ठहारः

स्वामिश्रीभारतीकृष्णतीर्थः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग्रन्थ का परिचय

आध्यात्मिक जीवन के प्रारम्भ के दस-बारह वर्षों में पूज्यपाद ग्रन्थकार ने विपुल स्तोत्र-साहित्य की रचना 'स्वान्तः सुखाय' की थी। उसका बहुत-सा अंश तो काल-क्रम से नष्ट हो गया। जो कुछ बचा, उसका एक-तृतीयांश अनुवाद-सहित यहाँ प्रकाशित हुआ है। शेष का आगामी दो खण्डों में प्रकाशन करने की योजना है। आशा है ये स्तोत्र भक्तों के कण्ठहार बनेंगे और पूज्यपाद ग्रन्थ-कार की पावन-स्मृति को सजीव रखेंगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

72

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्तोत्र-भारती-कण्ठहारः

प्रणेता

ब्रह्मलीन जगद्गुरु स्वामी श्री भारती कृष्ण तीर्थ महाराज

शंकराचार्य, गोवर्द्धन मठ, पुरी

सम्पादक और अनुवादक

पं० श्री रतिनाथ झा

प्राध्यापक, संस्कृत महाविद्यालय,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रकाशक

मधुभारती ग्रन्थमाला प्रकाशन ट्रस्ट

के लिए

भा र ती य वि द्या भ व न

चौपाटी : बम्बई-७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकाशक :
सु० रामकृष्णन्
कार्यवाहक सचिव
भारतीय विद्या भवन, चौपाटी
बम्बई-७

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण
जुलाई, १९६७

मूल्य रु० ५.५०

मुद्रक :
बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस
भेलूपुर, वाराणसी-१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूज्यपाद ग्रन्थकार

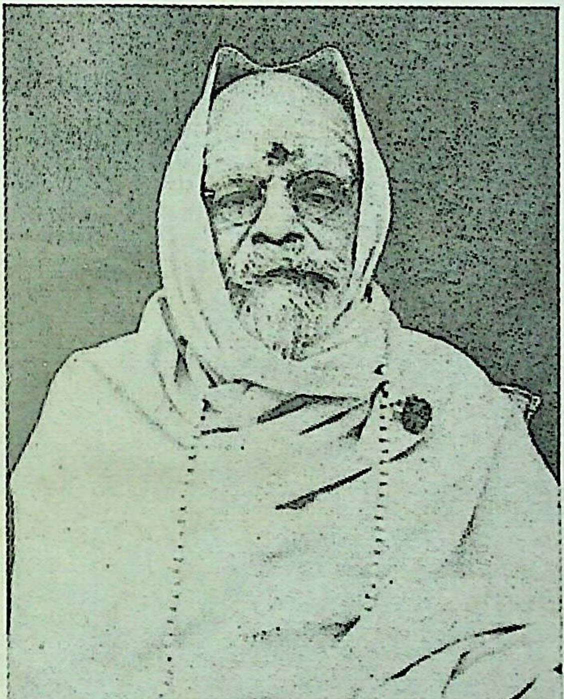

जगद्गुरु शंकराचार्य
श्री भारती कृष्ण तीर्थ महाराज
(१८८४-१९६०)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूज्यपाद-ग्रन्थकृद्-वन्दना

श्रीशङ्कराचार्यपदाधिरूढ-
श्रीभारतीकृष्णनिजाभिधानाम् ।
जगद्गुरूणां चरणारविन्दं
समर्चयामीप्सितसर्वसिद्ध्यै ॥

श्री शङ्कराचार्य के पद पर आसीन, श्रीजगद्गुरु श्री भारती कृष्ण (-तीर्थ) के चरण-कमलों की, सब प्रकार की अभीष्ट-सिद्धि के लिये अर्चना करता हूँ ।

यो भारत्यं विविधकलया ब्रह्मविद्याभिरत्या
कृष्णत्वं च प्रणतदुरिताज्ञानसङ्कर्षणेन ।
अन्वर्थत्वं नयति तमिमं भारतीकृष्णतीर्थं
श्रीपादं श्रीक्षितिगुरुवरं नौमि तीर्थाधितीर्थम् ॥

जो (श्रीगुरु चरण) विविध कलायुक्त ब्रह्मविद्या की अभिरति से भारतीत्व और प्रणतजनों के पाप और अज्ञान का हरण करने से कृष्णत्व धारण करके अपना भारतीकृष्णतीर्थ नाम सार्थक करते हैं, ऐसे तीर्थों के भी तीर्थ श्रीजगद्गुरु श्रीपाद श्रीभारतीकृष्ण तीर्थ को मैं प्रणाम करता हूँ ।

स्वच्छीभूते हृदयमुकुरे वेदशास्त्रोपदिष्टः
सर्वोऽप्यर्थः प्रतिफलति च प्राप्यते तत्त्वबोधः ।
याथात्म्येन प्रभवति ततः स्थातुमात्मानुभूति-
र्यत्कारुण्यात्तमिह शरणं सद्गुरुं संश्रयामि ॥

जिन सद्गुरु की कृपा से, स्वच्छ हुए हृदयादर्श में वेदशास्त्रों में कहे हुए सभी अर्थ प्रतिफलित होते हैं और (परम-) तत्त्व का ज्ञान हो जाता है और (जिनकी कृपा से) आत्मानुभूति दृढ़ होने में यथार्थरूप से समर्थ होती है उन सद्गुरु का, जो इस संसार में शरण-रूप हैं, आश्रय लेता हूँ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेरे परमप्रिय श्रीगुरुदेव

मञ्जुलादेवी त्रिवेदी

हमारी पवित्र तपोभूमि भारतवर्ष में मा वसुन्धरा ने समय समय पर तेजस्वी महापुरुषों को जन्म दिया है। उन्हीं महापुरुषों के कारण हमारा सनातन वैदिक धर्म अक्षुण्ण रहा है। अध्यात्म ज्ञान के रत्नों से भरा यह देश आज भी अपने अध्यात्म ज्ञान की अमूल्य सम्पत्ति से संसार के इतर देशों के समक्ष मस्तक ऊँचा करके खड़ा है। हम सर्वसाधारण भारतवासियों को अपने उन्नत अध्यात्म-राज्य के पारदर्शी महापुरुषों का आदर्श सामने रख कर अपने जीवन को उन्नत बनाना चाहिए। पुस्तक पढ़ने से जो ज्ञान नहीं मिलता वह सन्तों की सेवा से मिलता है, क्योंकि सन्तों का आचरण ही ज्ञान है।

भगवान् आदि शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित पीठ श्रीगोवर्धन मठ के पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य महाराज श्री भारतीकृष्णतीर्थस्वामी एक परम पवित्र, प्रकाण्ड विद्वान् एवं प्रतिभासम्पन्न महात्मा थे, जिन्होंने सत्य का साक्षात्कार किया था। 'सत्यान्नास्ति परो धर्मः' यह उनका आदर्श था! उन्होंने जनता-जनार्दन की सेवा और सनातन वैदिक धर्म का सन्देश दुनिया के हर कोने में पहुँचाने के लिए, हमने आराम, आहार व स्वास्थ्य की परवाह न कर अपना समग्र जीवन अर्पण कर दिया। वे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव थे। उनके अबाध वात्सल्य की सन्तत स्नेह-धारा से सिञ्चित होने का मुझे सौभाग्य मिला है। श्री गुरुदेव की यह कृपा सर्वथा अहैतुकी थी। उनके अविच्छिन्न स्नेह-सुधा-वर्षण को जीवन की अमूल्य सम्पत्ति के रूप में अपने हृदय में धारण किए रहती हूँ।

ऐसी दिव्यविभूति का संक्षिप्त परिचय देना अनधिकार चेष्टा तो है ही, फिर भी गुरुदेव के पाद-पद्मों में अपनी श्रद्धा-भक्ति-प्रेम-पूर्ण पुष्पाञ्जलि समर्पित करने का लोभ नहीं छोड़ सकी हूँ।

बम्बई में २ फरवरी १९६० को जगद्गुरु शङ्कराचार्य महाराज श्री भारती कृष्ण तीर्थ स्वामी जी अपना पार्थिव शरीर छोड़ कर ब्रह्मलीन हुए। यह समाचार फैलते ही तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने द्रवीभूत होकर दिल्ली रेडियो द्वारा निम्न श्रद्धाञ्जलि अर्पित की थी—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Sankaracharya's sad death. A man of profound learning, he was in addition to being an accredited religious leader a devout nationlist, who participated in the freedom movement. I had the good fortune of knowing him personally, a fact which has intensified my sense of sorrow at his passing away.

अप्रैल में श्रद्धाञ्जलि-सभा के अवसर पर उपराष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन् की ओर से निम्न सन्देश आया था—

Vice President,
New Delhi.
April 8-1960

Dear Madom,

Thank you for your letter of the 4thinst.

I have known the late Sree Jagadguru Sankaracharya Maharaj of Goverdhan Mutt PURI for many years. His vast learning and brilliant exposition impressed all who heard him. Latterly he got interested in the World Reconstruction Association.

I am glad you are having a meeting to honour his memory.

Yours faithfully,
Sd. (S. Radhakrishnan)

केलिफोर्निया से Church of Religious Science के अधिष्ठाता ने लिखा कि:—

Dear Mrs. Trivedi,

My heart is heavy, for I have just learned of the passing of our beloved Holiness. Never in my life have I met such a man who reflected such wisdom, love, intelligence and inner beauty.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

If you had only known how I endeavoured to plan a trip to visit him so that I might again participate in his lectures as student. The precious hours I spent in study with him have meant much toward further enlightenment.

Yours in truth,
Wm. H. D. Hornaday D. D.

गुरुदेव ने विद्वान् और धार्मिक माता-पिता के घर में मार्च १८८४ ई० में जन्म ग्रहण किया। आपके पिता स्वर्गीय श्री नरसिंह शास्त्री उस समय तिन्निवेल्लि (मद्रास प्रेज़िडन्सी) में तहसीलदार थे और बाद में उन्होंने डिप्टी कलक्टर के पद से अवकाश ग्रहण किया था। आपके पितृव्य स्व० श्री चन्द्र-शेखर शास्त्री महाराजा कालेज, विजयानगरम् के प्राचार्य थे और आपके प्रपितामह स्वर्गीय न्यायमूर्ति श्री रङ्गनाथ शास्त्री मद्रास हाईकोर्ट के न्यायाधीश थे।

गुरुदेव का बाल्यकाल का नाम था श्रीव्यङ्कटरमण। आप अत्यन्त मेधावी असाधारण प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थी रहे। पूरे शिक्षण-काल में आप सदैव सब विषयों और सभी कक्षाओं में सर्वप्रथम स्थान पाते रहे। सन् १८९९ में मद्रास-विश्वविद्यालय से मेट्रिक्युलेशन परीक्षा उत्तीर्ण की और सदा की भाँति सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

आप संस्कृत भाषा में विशेष पारङ्गत थे और आपके संस्कृत भाषण से प्रभावित होकर मद्रास-संस्कृत-परिषद् ने जुलाई १८९९ ई० में आपकी आयु के १६ वें वर्ष में ही आपको 'सरस्वती' उपाधि से विभूषित किया था।

बी० ए० परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के बाद श्री व्यङ्कटरमण शास्त्री ने American college of Sciences, Rochester, New york के बम्बई केन्द्र से १९०३-४ ई० में बीस वर्ष की अवस्था में ही एम० ए० परीक्षा पास की। आपने एक साथ सात विषयों में एम० ए० परीक्षा दी थी और सभी में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था। सम्भवतः शिक्षा के इतिहास में प्रतिभा का यह अद्वितीय उदाहरण है। आपके विषय थे, संस्कृत, दर्शन, अंग्रेजी, गणित, इतिहास और विज्ञान।

विद्यार्थी जीवन में आप अपनी सदा अतृप्त ज्ञान-पिपासा, विलक्षण प्रज्ञा, अद्भुत मेधा के लिए विख्यात थे। अपने शिक्षकों के समक्ष आप-असंख्य प्रश्न उपस्थित करते थे और उन लोगों को प्रायः अपने अज्ञान को स्वीकार करना पड़ता था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते हुए ही आपने W. T. Stead के पत्र Review of Reviews में धर्म, दर्शन, समाज-विज्ञान, इतिहास, राजनीति, साहित्य आदि विषयों पर प्रौढ़ लेख देना आरम्भ कर दिया था। आधुनिक विज्ञान की सभी शाखाओं में आपकी उत्कट रुचि थी। विज्ञान के क्षेत्र में आधुनिकतम अनुसन्धानों और आविष्कारों का अध्ययन वे जीवन के अन्त तक करते रहे।

श्री व्यङ्कटरमण ने श्री गोपालकृष्ण गोखले के मार्ग-दर्शन में अपना सार्वजनिक जीवन सन् १९०५ से आरम्भ किया। यद्यपि आपकी ज्ञान-पिपासा निरन्तर बढ़ रही थी तथापि मानवता की सेवा की कामना भी आपके हृदय में कम अदम्य रूप से वर्तमान नहीं थी। किन्तु सब विज्ञानों का मूल विज्ञान अर्थात् भारत का पवित्र प्राचीन अध्यात्मविज्ञान आपके आकर्षण का सबसे बड़ा केन्द्र था। इसीलिए १९०८ ई० में आप मैसूर के शृङ्गेरी मठ के शङ्कराचार्य जगद्गुरु श्री सच्चिदानन्द शिवाभिनव नृसिंह भारती स्वामी के चरणों में जा पहुँचे।

शृङ्गेरी में आप अधिक दिन नहीं रह पाये, क्योंकि राष्ट्र-नेताओं के प्रबल आदेश के अनुसार आपको राजमहेन्द्री में नवीन रूप से स्थापित नेशनल कालेज के प्राचार्य का पद स्वीकार करना पड़ा। तीन वर्ष तक आप उस पद पर रहे, किन्तु १९११ ई० में आप अध्यात्म-ज्ञान, साधना और उपलब्धि के प्रति अपने असह्य लोभ का संवरण नहीं कर सके और अकस्मात् उक्त पद का परित्याग करके शृङ्गेरी में पुनः जगद्गुरु के श्रीचरणों में जा पहुँचे।

इसके बाद आठ वर्ष आपने वेदान्त दर्शन के गम्भीर अध्ययन और ब्रह्म-साधना में विताये। इस अवधि में आप श्री नृसिंह भारती स्वामी से वेदान्त का अध्ययन करते थे और कुछ स्थानीय विद्यालयों में संस्कृत एवं दर्शन पढ़ाते थे। बीच-बीच में प्रखर योग-साधना के लिए आप निकटवर्ती वनों में चले जाया करते थे। पूना, बम्बई आदि में विशेष व्याख्यान-मालाओं के लिए भी आपका जाना हुआ करता था।

अनेक वर्षों के अध्ययन, मनन, साधना और आध्यात्मिक उपलब्धि के पश्चात् आचार्य व्यङ्कटरमण शास्त्री ने वाराणसी में ४ जुलाई १९१९ में शारदापीठ के शङ्कराचार्य जगद्गुरु श्रीविक्रम तीर्थ जी महाराज से संन्यास लिया और आपको स्वामी भारतीकृष्णतीर्थ यह नाम दिया गया।

संन्यास आश्रम में प्रवेश से आपकी वास्तविक महत्ता का प्रकाश आरम्भ हुआ। दो वर्ष बाद ही सन् १९२१ में आपकी प्रबल अनिच्छा रहते हुए

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भी आपको विधिवत् शारदापीठ के शङ्कराचार्य के पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इस पद पर प्रतिष्ठित होते ही आपने देश के कोने-कोने में जाकर सनातन धर्म पर व्याख्यान देना आरम्भ किया। आपकी निर्मल बुद्धि, समर्थ भाषण-कला, चुम्बकवत् आकर्षक व्यक्तित्व, अदम्य इच्छाशक्ति, उदात्त चरित्र और विमल विचार-शक्ति से देश के बुद्धिजीवी और धार्मिक लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा।

गोवर्धन मठ, पुरी के जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री मधुसूदन तीर्थ इन दिनों श्री भारतीकृष्ण से बहुत प्रभावित हुए और अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण उन्होंने आपसे प्रार्थना की कि आप गोवर्धन मठ के शङ्कराचार्य का पद स्वीकार करें। आप इस अनुरोध को टालते रहे किन्तु अन्त में, जब १९२५ ई० में जगद्गुरु श्री मधुसूदन तीर्थ का स्वास्थ्य गम्भीर रूप से बिगड़ गया तब आपको बलात् गोवर्धन मठ का अधिष्ठातृ-पद स्वीकार करना पड़ा और शारदा पीठ की गद्दीपर श्रीस्वरूपानन्द जी को प्रतिष्ठित किया गया।

गोवर्धनमठ पुरी के शङ्कराचार्य पद से आप ३५ वर्ष तक देश भर में, अपितु संसार भर में सनातनधर्म का सन्देश प्रचारित करते रहे। शेष जीवन तक आपने अपना पूरा समय शिक्षा और उपदेश देने में, वार्तालाप और प्रवचन करने में, चर्चा द्वारा जिज्ञासुओं के मन में विश्वास जमाने में बिताया। आपने भारतीय संस्कृति के पुनरुज्जीवन के महत्कार्य का बीड़ा उठाया था और उसी के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया।

विश्वशान्ति के पोषण के लिए और वेदान्त के उच्च आध्यात्मिक आदर्शों के प्रचार के लिए श्रीजगद्गुरुजी फरवरी १९५८ ई० में अमेरिका के दौरे पर गए। शङ्कराचार्यों की सम्पूर्ण परम्परा में विदेशयात्रा का यह प्रथम अवसर था। इस दौरे की व्यवस्था परमहंस योगानन्द जी द्वारा स्थापित Self Realisation Fellowship, Los-Angeles नामक वेदान्त-संघ के द्वारा की गई थी। जगद्गुरु जी वहां प्रायः तीन मास रहे और इस अवधि में उन्होंने सैकड़ों महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, गिर्जाघरों और सार्वजनिक संस्थाओं में भाषण दिए। दूरदर्शन (Television) पर भी आपके गणित सम्बन्धी सप्रयोग भाषण हुए। वास्तव में आपने आध्यात्मिक प्रकाश, शांति, संवाद और सद्भावना की ऐसी बाढ़ ला दी थी और अपने उद्देश्य में इतनी सफलता पाई थी कि उसकी तुलना स्वामी विवेकानन्द के कार्य से हो सकती है। लौटते समय आपने इंग्लैण्ड में भी कुछ व्याख्यान दिए और मई १९५८ ई० में वापिस भारत पहुँचे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अमेरिका यात्रा से पूर्व का आप का एक और कार्य भी उल्लेखनीय है। जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक मूल्यों के समन्वय के उद्देश्य से आपने नागपुर में १९५३ ई० में श्रीविश्वपुनर्निर्माणसंघ के नाम से एक संस्था की स्थापना की थी। इस की कार्य-कारिणी परिषद् में गुरुदेव के शिष्य, भक्त, प्रशंसक थे, जिनमें हाईकोर्ट के जज, सरकारी मन्त्री, शिक्षाविद् राजनीतिज्ञ एवं अन्यान्य क्षेत्रों के अधिकारी व्यक्ति सम्मिलित थे।

प्रायः पचास वर्ष तक गुरुदेव ने शरीर, मन, हृदय और आत्मा से मानवता की सेवा करने में अथक परिश्रम किया था। अपनी सुख-सुविधा का, शारीरिक विश्राम का कभी भी उन्होंने ध्यान नहीं रखा। शरीर पर इस घोर अत्याचार के परिणाम अन्तिम कुछ वर्षों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगे थे, किन्तु फिर भी आपने कभी विश्राम नहीं किया और अध्ययन, प्रवचन, लेखन आदि को युवकोचित उत्साह से आप चलाते रहे। फलस्वरूप नवम्बर १९५९ ई० में आप गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गए और सर्वोत्तम चिकित्सा की व्यवस्था होने पर भी २ फरवरी १९६० को आपने इस नश्वर शरीर को त्याग कर बम्बई में महासमाधि ले ली।

गुरुदेव के दिव्य व्यक्तित्व का शब्दों में वर्णन करना असम्भव है। उनकी वाणी का श्रवण करना परम सुखद था, उनका दर्शन करना महाभाग्य का विषय था, उनसे वार्तालाप करना वरदान जैसा था। वे धर्म, जाति, वर्ण आदि के भेदों से अतीत रह कर सभी के अपने थे। ब्राह्मण-अब्राह्मण, हिन्दू-मुसलमान, पारसी-ईसाई, यूरोपियन-अमरीकन सभी को उनसे समान स्नेह मिलता था।

पूजा के समय वे विशेष दर्शनीय होते थे। किसी भी कारण पूजा में शीघ्रता कोई भी उनसे नहीं करा सकता था। प्रत्येक प्रतिमा की वे पृथक् पृथक् पूजा करते थे और प्रत्येक का ध्यान करते थे। उन्हें प्रतिमा न समझ कर वे उनकी जीवन्त विद्यमानता का अनुभव करते थे। मठाधीश के रूप में अनेक कर्तव्यों से घिरे रहने पर भी और शिष्यों की अपार संख्या होने पर भी आप आश्रम के प्रति सदा कर्तव्यपरायण रहे। आत्म-प्रसाद और परमानन्द आप में सदैव विराजते थे। आपके अनन्त गुणों का अनन्त शब्दों में वर्णन किया जा सकता है किन्तु मेरा हृदय आपके व्यक्तित्व की महत्ता से भरा हुआ है। उपयुक्त शब्द सूझते ही नहीं। ज्ञान के रत्नाकर, भक्ति के समुद्र, करुणा के सागर का क्या वर्णन किया जाय ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूज्यपाद गुरुदेव श्री भारती कृष्ण तीर्थ महाराज वेद-वेदान्तादि के प्रकांड विद्वान तो थे ही, तदुपरान्त महान् दार्शनिक, भौतिक विज्ञान और अध्यात्म-विज्ञान के अद्भुत समन्वयकर्ता एवं विषय-प्रतिपादन की अनुच्छिष्ट शैली के धनी होने के साथ-साथ कवि भी थे। शैशवावस्था से ही संस्कृत भाषा पर इनका प्रभुत्व था। संस्कृत भाषा में देव-देवियों पर स्तोत्र काव्यों की रचना वे करते ही रहते थे। सन् १९११ में जब वे श्रृंगेरी जगद्गुरु के पास पहुँचे तब वहाँ श्री जगद्गुरुजी के पादपद्मों में बैठकर श्रीगुरुओं की महिमा पर स्तोत्र लिखते ही जाते थे। उनकी लेखनी से अमृत-समान मधुर एवं भक्ति से परिपूर्ण काव्यों की धारा रुकती ही नहीं थी। स्तोत्र के बाद स्तोत्र बनाते जाना और अपने श्रीमुख से गुरुदेव को सुनाते जाना, यही कार्य महीनों तक चलता रहा। इसी प्रकार लाखों श्लोकों की रचना हो चुकी थी। इन स्तोत्रों की सुमधुर छन्दोबद्ध रचना और प्रेमलक्षणा भक्तिका निर्दोष श्रृङ्गार सुनने वालों की हृदय-ग्रन्थि तक पहुँचकर दिव्य आनन्द से रोम-रोम को पुलकित कर देते हैं!

पूज्य गुरुदेव की शैशवावस्था के विद्यागुरु श्रीवेंकटराम शास्त्री और अध्यात्म क्षेत्र में वेदान्त गुरु श्री सच्चिदानन्द शिवाभिनव नृसिंह सरस्वती (श्रृंगेरी-जगद्गुरु) उन्हें निरन्तर प्रोत्साहन और हृदय से आशीर्वाद देते ही रहते थे। उनके हृदय में अपने गुरुओं के प्रति अपार श्रद्धाभक्ति एवं प्रेम था। वे कहा करते थे, विद्या विद्या के लिए नहीं, ख्याति या अन्य कोई भौतिक प्रयोजन के लिए नहीं, किन्तु केवल भगवत्प्राप्ति के लिए एवं मुक्ति के साधन के लिए है।

वे केवल शुष्क वेदान्ती नहीं थे, अपने भक्तों के प्रति उनके हृदय में वात्सल्य का सागर भरा था। वे व्यक्तिमात्र पर अभेद दृष्टि रखने वाले, मित-भाषी, प्रिय एवं मधुरभाषी, नम्र, परोपकारी, शान्त तथा आनन्द और करुणा की साक्षात् मूर्ति थे।

१९२२ दिसम्बर ता० २—५ को ऑल इण्डिया खिलाफत कॉन्फरेन्स, मोंघीर में प्रमुख स्थान से धार्मिक स्वराज्य, राजधर्म, हिन्दू मुस्लिम एकता और स्वतन्त्रता इत्यादि विषयों पर प्रवचन करने के अपराध में उन्हें ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने हिरासत में ले लिया था और कोर्ट में उन पर मुकद्दमा चला था और फिर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री भारती कृष्ण तीर्थ महाराज को २२.१२.'२२ को १ वर्ष की सजा सुनाई गई। उसी एक वर्ष के कारावास में उन्होंने हिन्दी का अभ्यास किया। तब तक महाराजश्री के सभी प्रवचन संस्कृत व अंग्रेजी में ही होते थे। जेल में भी पूजा-पाठ, श्रीमद्भागवत-पारायण के साथ बाइबल का पारायण भी होता था। साथ-साथ गीतोपदेश, नाडी परीक्षा, कुण्डलियाँ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देखना व गणित सिखाना आदि कार्य भी चालू थे। जेल के अंग्रेज एवं हिन्दू अफसर भी बड़े आदर से सुनते थे, सेवा भी करते थे। यह स्तोत्र-काव्यों का ग्रन्थ, जो अब प्रकाशित हो रहा है, उन्हीं दिनों कारावास में लिखा गया था। कारावास में लिखे गए हजारों स्तोत्रों में से कुल लगभग साढ़े तीन हजार श्लोक प्राप्त हुए हैं। कुछ श्लोक डायरियों में और कुछ अलग-अलग कागज के टुकड़ों पर पेन्सिल से लिखे गए थे, क्योंकि वहाँ स्याही को उपयोग में लाने की इज़ाज़त न थी और न तो उन्हें कागज दिए जाते थे। अन्यथा जेल में भी सब प्रकार की व्यवस्था आचार्य के गौरव के अनुसार थी। यथा–गङ्गाजल, फल, ब्राह्मण सेवक इत्यादि।

१९२३ के दिसम्बर में उन्हे कारावास से मुक्ति मिली। बाहर आने पर उनका धर्म-प्रचार का कार्य पुनः जोर-शोर से चलने लगा। इलाहाबाद में उनके एक भक्त के यहाँ लिखी हुई डायरियों का बॉक्स रखा था। निरन्तर प्रवास और अन्य धार्मिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण पूज्य गुरुदेव को उस सामग्री पर विचार करने का अवकाश ही नहीं था। जीवन की उत्तरावस्था में, जब स्वास्थ बिल्कुल गिर चु . ा था, विश्राम की अत्यन्त आवश्यकता थी, उसी समय पूज्य गुरुदेव के परम भक्त नागपुर निवासी सेठ श्री गोवर्धन दास रावल ने पूज्य गुरुजी के लिए तैलंगखेड़ी बगीचे के पास (नागपुर में) छोटा सा सुन्दर भवन बनवाकर अर्पित किया। वह स्थान शहर के कोलाहल और भीड़-भाड़ से दूर है। भवन १९५४ में तैयार हो गया।

१९५६ में कुछ आराम से सोचने का अवसर मिला। इलाहाबाद में रखी हुई पेटियाँ नागपुर मँगवा ली गईं। पूज्य गुरुदेव उस समय "वैदिक मेथेमेटिक्स" लिखने में व्यस्त थे। ग्रन्थ पूरा होते ही उनके दोनो नेत्रों में मोतियाबिंद बढ़ने लगा, अतः १९५७ के वर्ष में वे नेत्रों से काम न ले सके। इसी वर्ष दोनों नेत्रों का ऑपरेशन हुआ, फलतः उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा। १९५८ की फरवरी में वे अमेरिका गए। १९५८ के चातुर्मास्य में जब नागपुर आना हुआ उसी समय वे अपने नेत्रों से कुछ-कुछ काम लेने लगे थे। गुरुपूर्णिमा के दूसरे दिन मुझे बॉक्स खोलने की आज्ञा दी और कहा कि हमारे हस्ताक्षर का जो कुछ मिले, उसे संभाल कर रखना। बॉक्स खोलने पर स्तोत्र-काव्यों की पाण्डुलिपि मिली, जिसमें दीमक लग चुकी थी। पेंसिल के अक्षर भी बहुत कुछ मिट चुकने की स्थिति में थे। अतः वे स्वयं नहीं पढ़ सके।

कुछ तीन चार दिनों में श्री गुरुदेव ने मुझसे कहा, यदि तू इन स्तोत्रों को पढ़कर सुनाती जायगी तो हम अपने हाथ से पुनः लिख सकते हैं। इस प्रकार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूज्य गुरुदेव ने मुझपर अहैतुक अनुग्रह करके सेवा करने का जो अवसर दिया उसके लिए मैं अपने को धन्य समझती हूँ। यह लिखने-लिखाने का कार्य ६ महीनों तक चलता रहा। जब मैं स्तोत्रों के छन्द गीत और लय में गाती जाती थी और वे लिखते जाते थे तब मैंने अनुभव किया कि वे भी गाते जाते और बार-बार हर्षाश्रु से गद्गद होकर पुलकित हो उठते थे। वे कहते, कि अब तो हमें लगता है कि हम शृङ्गेरी में पुनः पहुँच गए, उन दिनों का स्मरण जाग उठा है जब हम श्री गुरुजी के चरणों में बैठकर श्लोक के बाद श्लोक लिखते जाते थे और सुनाते जाते थे।

प्रकाशन की दृष्टि से स्तोत्र-काव्यों का निर्माण नहीं हुआ था। वे अपने आत्मानन्द की मस्ती में विभोर होकर जब-जब जो भाव दिल में उमड़ आया, लिखते गए थे।

यह सब कुछ लिखते समय स्मृतियों का एक तूफ़ान जाग उठा है और दुःखमिश्रित आनन्द से दिल भरा जा रहा है। यद्यपि वे आज शरीर से नहीं रहे, किन्तु हमेशा हमारे पास ही हैं।

दैवी प्रेरणा से प्रणीत भक्तिसुधा से भरे इन स्तोत्रों का प्रकाशन करने का जब संकल्प किया तब प्रश्न उठा कि इनका सुव्यवस्थित सङ्कलन एवं सम्पादन किससे कराया जाय। १९६२ में 'वैदिक मैथेमेटिक्स' के प्रकाशन के लिए जब मैं बनारस पहुँची तब स्तोत्र काव्यों के सम्पादन के सम्बन्ध में मेरी परमप्रिय आत्मीया डॉ० प्रेमलताजी से चर्चा हुई। हमारे गुरुदेव श्री भारती कृष्ण तीर्थ जी ने अपने पीठ के उत्तराधिकारी की वसीयत में प्रथम श्रेणी में श्री सच्चिदानन्द सरस्वतीजी का नाम रखा था, जो उन दिनों हनुमान घाट, पूर्णानन्द मठ, वाराणसी में रहते थे। डॉ० प्रेमलता बहिनजी को लेकर मैं श्री स्वामीजी महाराज के दर्शनार्थ गई। उस समय स्वामीजी और प्रेमबहन दोनों ने मिलकर काशी हिन्दूविश्वविद्यालय के संस्कृत महाविद्यालय के अध्यापक पं० श्री रतिनाथ झा को सम्पादन कार्य में समर्थ बताया। सम्पादन का कार्य श्री झाजी ने अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति-प्रेम-उत्साह पूर्वक किया। साधारण जनता भी उस रस का पान कर सके इसी उद्देश्यसे हिन्दी अनुवाद भी श्री झा जी ने किया। श्लोकों की कुल संख्या ३३०० है। हिन्दी अनुवाद सहित तीन खण्डोंमें इनका प्रकाशन होगा। प्रथम खण्ड तो प्रकाशित हो रहा है, बाकी दो खण्ड अनुवाद-सहित तैयार हैं, शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित होंगे। अतः मैं श्री झा की हृदय से आभारी हूँ तथा अपनी कृतज्ञता निवेदित करती हूँ तथा उनके श्रेय के लिए परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेरी आत्मीया होनेपर भी कु० प्रेमलता बहनजी विद्वत्ता एवं कार्य-कुशलता के लिए, मेरे लिए आदरणीय एवं आदर्श बनी हुई हैं। वे महात्माओं की सेवा में कभी तृप्त नहीं होतीं। पूज्य गुरुदेव के दोनों ग्रन्थ "वैदिक मैथेमेटिक्स" और स्तोत्र काव्यों के प्रकाशन के लिए अपनी बहुविध प्रवृत्तियों में कार्यव्यस्त होने पर भी उन्होंने शारीरिक एवं मानसिक श्रम किया है। ग्रन्थों के प्रकाशन सम्बन्धी मेरो सभी चिन्ताओं का भार अपने ऊपर लेकर मुझे निश्चिन्त बना दिया है। यदि मुझे बहिनजी का पूर्ण हार्दिक सहयोग न मिलता तो दोनों ग्रन्थ अब तक प्रकाश में नहीं आते। अपनी ओर से कृतज्ञता निवेदित करके उनकी अहैतुक, निःस्वार्थ और सेवा-भक्ति का मूल्य घटाना नहीं चाहती। वह अद्भुत है, अमूल्य है। केवल मैं अपनी हार्दिक शुभेच्छा व्यक्त करती हूँ कि इस महामना विदुषी को ऐसे ही महात्माओं का आशीर्वाद निरन्तर मिलता रहे और वे इस युग की गार्गी-मैत्रेयी का स्थान पाकर ज्ञान के सर्वोपरि शिखर को प्राप्त करें।

इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में पूज्यपाद श्री गुरुदेव के अनन्य भक्त मेरे गुरुबन्धु बम्बई निवासी श्री दौलत राम नायर, श्री श्रीमती कंचन भाई चोक्सी और नागपुरनिवासी श्री माधव वराटे ने सम्पादन कार्य के लिए कुछ अंश में आर्थिक सहयोग दिया है, आगे दूसरे खण्डों के प्रकाशन के लिये भी वचन दिया है। इन महानुभावों के प्रति अपनी कृतज्ञता निवेदित करना मैं अपना परम पवित्र कर्तव्य समझती हूँ।

ॐ तत् सत्

श्री मञ्जुला देवी

तैलंगखेड़ी बगीचे के पास
नागपुर

सेक्रेटरी, विश्वपुनर्निर्माणसंघ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्पादकीयम्

निसर्गरमणीयं सहृदयास्वाद्यं रसपीयूषं काव्यं कस्यापि वाङ्मयस्य शिरोभूषणभूतं स्थानमधिकरोति। संस्कृतवाङ्मये तु काव्यानां महिमाऽऽरम्भत एव दृश्यते। काव्यं न केवलमुक्तिवैचित्र्येण चमत्कारं जनयति सचेतसामपि तु चरितपरिष्कारं सम्पाद्य सामाजिकीं स्थितिं भव्यतमामापादयति। तत्रापि स्तोत्रकाव्यमाराध्यदेवताया अनुपमं कारुण्यमौदार्यञ्चाभिव्यनक्ति भजताञ्चान्तरिकं दैन्यं, श्रद्धासमुद्वलितं ललितं शीलं, भक्तिविजृम्भितमनुरागातिशयञ्चापि प्रकटीकरोति। एभिर्गुणगरिमभिः स्तुतिकाव्यं प्रायेण देवतानुग्रहग्रहणाय नितरामुपयोगि प्रभावविभूषितञ्च। यद्यपि मानवीयगुणगणस्य वर्णनेनापि मानवानां महानुपकारः सम्भवति तथापि इष्टदेवतानुरतिमूलकं तदीयं गुणानुवर्णनमैहिकमामुष्मिकञ्च दुर्लभं फलं प्रसूत इति नास्तीह मनागपि संशयस्यावकाशः। अतएव केचन काव्यनिर्माणव्यसनिनो महाकवयः मयूर-रत्नाकर-मङ्खक-जगद्धर-मूकप्रभृतयो मानवानां नायकत्वं परित्यज्य देवतानामेव गुणकीर्तने प्रवृत्ता दृश्यन्ते। तदीयानि काव्यामृतानि निपीयाद्यापि मोदन्ते सचेतसो रसिकाः।

अस्माकं सौभाग्यातिशयाद् गोवर्धनपीठाधीश्वरा जगद्गुरवोऽनन्तश्रीविभूषिता भारतीकृष्णतीर्थपादाः सहस्रशः स्तोत्राणि प्रणीय भक्तजनानां महान्तमुपकारं चक्रुः। दुर्दैवात् तदीयजीवनकाले न तानि स्तोत्राणि प्रकाशितानि। इदानीं तत्पादाम्बुजचञ्चरीका सुश्री मञ्जुला तिवारीति नाम्नी देवी तदीया शिष्या तानि प्रकाशयितुं कृतसङ्कल्पा बहुविधमायासमर्थव्ययञ्च प्रचुरं कृत्वा पण्डितश्रीमदोंकारनाथठाकुरद्वारा सुश्री डॉ० प्रेमलताशर्ममहोदयामेतदर्थमाजग्राह साहाय्यं वितरीतुम्। सापि तदर्पितानि लिखितानि स्तोत्राणि ममाग्रे समुपस्थापयन्ती एतत्सम्पादनस्य भारं ग्रहीतुं मामागृह्णात्। पवित्रं कार्यमिदं बुद्ध्वा सम्पादनस्य दुष्करतामननुभवन्नेवाहमुररीकृतवान्। अत्र कानिचित् स्तोत्राणि स्वामिपादानामेव पाणिपोथोजेन लिखितानि आसन्, अन्यानि च बहूनि इतरजनालिखितानि सम-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भूवन्। स्वामिपादानां लेखे भाषा सम्बन्धिन्यस्त्रुटयो नासन् परन्तु अनधीतसंस्कृतानां लेखकानां प्रमादाद् बह्वयोऽशुद्धयो जनिं लेभिरे। एकमेव पुस्तकमादाय तत्सम्पादनव्यवस्थायां दुष्परिहर एवान्तराय उदतिष्ठत्। अतएव बहुत्र स्वयमेव यथामति संशोधनं कृत्वा प्रकाशयामि। तत्र योंऽशो मया पूरितस्तस्याभिज्ञानाय [ ] कोष्ठकं चिह्नं संयोजितम्। यत्र च लेखकानामेव पाठभेद-उपलब्धस्तत्र ( ) एतच्चिह्नान्तराले योजितम्। अतः पाठकैश्चिह्नावलोकनेनैव ज्ञातव्यमेतत्।

एतद्ग्रन्थस्यायं प्रथमो भागः सानुवादः प्रकाश्यते। अनुवादे तु यथाशक्ति शुद्धतायाः स्पष्टतायाः परिमितेश्च सम्यक् पालनं कृतमस्ति। अत्र पौराणिकीनां कथानां मूलमनुसन्धेयं यतो देवतानां पारस्परिकं सम्बन्धं ग्रन्थकारः स्फुटीचकार।

छन्दसां निर्देशनं यथाशक्ति कृतम्। येषां लक्षणानि नामानि च न ज्ञातानि तानि नोल्लिखितानि। अग्रिमे संस्करणे कृते प्रयासे येषां नामानि ज्ञातानि भविष्यन्ति तेषामपि निर्देशं करिष्यामः।

सम्पादने कामं कृतेऽपि श्रमे दोषाः सन्त्येव। तानवगणय्य स्तोत्राणामुपादेयतां प्रथयिष्यन्त्येव भक्तशिरोमणय इति दृढो नः प्रत्ययः।

स्तोत्रकाव्यस्यास्य गुणदोषानुवर्णनं ममाधिकारक्षेत्रादतिरिच्यत इति मौनमेवावलम्बे विषयेऽस्मिन्।

रतिनाथझाः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निवेदन

जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ महाराज के साक्षाद् दर्शन का सौभाग्य मुझे नहीं मिला। परन्तु आप के स्वधाम आरोहण के पश्चात् ही आपकी प्रिय शिष्या श्रीमती मञ्जुला त्रिवेदी के साथ १९६१ में प्रथम परिचय हुआ। यह परिचय क्रमशः प्रगाढ़ स्नेह में परिणत हुआ। जगद्गुरु जी के साथ अप्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हुआ। यह सब कुछ जगन्नियन्ता का ही विधान है।

शंकराचार्य जी की वैदिक गणित सम्बन्धी पुस्तक के प्रकाशन कार्य के साथ आरम्भ से ही मेरा सम्बन्ध रहा और अन्त में एप्रिल १९६५ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से इस गौरवपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ।

जगद्गुरु जी ने वाग्यज्ञ के रूप में जिस विपुल स्तोत्र साहित्य का स्वान्तः सुखाय निर्माण किया था उसमें से जो कुछ श्रीमती मञ्जुला देवी जी के उद्यम से सुरक्षित रह पाया था उसका सम्पादन कराने और मुद्रण की व्यवस्था कराने में उस महापुरुष की जो भी सेवा मुझ अकिञ्चन से बन पड़ी उसके लिये अपने को धन्य समझती हूँ।

श्रीमती मञ्जुला देवी जी ने जगद्गुरु जी के जीवन के अन्तिम आठ नौ वर्षों में उनकी जो अथक सेवा की वह उनके सारे शिष्यमण्डल में सुविदित है। आप के पूज्य पतिदेव श्री चिमन लाल त्रिवेदी ने भी विश्वपुनर्निर्माण सङ्घ की स्थापना और संचालन में जगद्गुरु की महती सेवा की थी। आप के निधन के पश्चात् बहिन मञ्जुला जी ने वज्रपात को सहकर भी गुरुदेव की सेवा अम्लान भाव से की थी। यही परिचय यथेष्ट है। ऐसे उदात्त चरित्र से सम्पन्न महिला से अभिन्न स्नेह सम्बन्ध स्थापित होने का मुझे परम सुख है। बड़ी बहन के नाते आपने जो कुछ मधुर शब्द मेरे लिए कृतज्ञता में कहे हैं उन्हें उसी हृदिस्थित हृषीकेश को समर्पित करती हूँ जिसकी प्रेरणा से यह सब योजना अनायास बनी और क्रमशः सफल हो रही है।

प्रेमलता शर्मा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी—५

अध्यक्षा, संगीतशास्त्र विभाग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विषयानुक्रमणी

विषयाः	पृष्ठानि
श्रीगुरुपादुकास्तवः	१
श्रीगुरुपादुकास्तोत्राणि	३
श्रीउमास्तवः	८
ॐअथ श्रीकमलास्तुतिः	९
श्रीकमलाक्षितिविष्णुस्तुतिः	१४
श्रीकमलावसुधातुलसीकमलानिलयस्तुतिः	१६
श्रीकमलावसुमतीस्तोत्रम्	१८
श्रीकमलेशनाभिकमलोद्भवस्तोत्रम्	२०
श्रीक्षितिधरधवतनुजास्तवः	२१
श्रीगौरीस्तुतिः	२५
श्रीगीर्विधिस्तुतिः	२६
श्रीगोपालकृष्णस्तुतिः	३०
श्रीगौरीस्तुतिः	३१
श्रीगौरीसिन्धुजाताब्रह्मरमणीस्तवः	३२
श्रीभृगुसुतावसुधातुलसीहरिस्थितिः	३३
श्रीजलनिधिपुत्रीस्तवः	३६
श्रीतुलसीस्तवः	३९
श्रीपद्मप्रभवरमणीस्तवः	४०
श्रीपद्मजोत्सङ्गजाताष्टकस्तोत्रम्	४४
श्रीपद्मास्तुतिः	४७, ५०, ५२
श्रीअच्युतप्रियतमास्तुतिः	५२
श्रीपद्मास्तवः	५३
श्रीपार्वतीसिन्धुजासरस्वतीस्तवः	५७
श्रीपूर्णाम्बापुष्कलाम्बाशास्तृस्तोत्रम्	५९
श्रीभद्रकालीस्तुतिः	६०
श्रीभवानीवाणीताम्रपर्णीस्तुतिः	६४
श्रीभरतानुजास्तुतिः	६५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विषयाः	पृष्ठानि
श्रीभानुतनुभूस्तुतिः	६६
श्रीभारतीस्तुतिः	६८
श्रीभार्गवीस्तवः	७१, ७५
श्रीभारतमातृस्तोत्रम्	७६
श्रीभार्गवीदेवीस्तुतिः	७९
श्रीभीष्मतनुजा-वसुदेवभूस्तोत्रम्	८०
श्रीश्रीभूतुलसीस्तुतयः	८१
श्रीभैष्मीरूपभार्गवीस्तवः	८२
श्रीभैष्मीस्तुतिः	८५, ८७
श्रीभैष्मीवासुदेवस्तुतिः	९०
श्रीमल्ललितादेवीस्तुतिः	९१
श्रीमहागणेश्वरस्तुतिः	९२
श्रीमा + भू + हरिस्तुतिः	९६
श्रीमोहिनीस्तोत्रम्	१००, १०१
श्रीमोहिनीस्मरारिशास्तृस्तवः	१०३
श्रीमोहिनीशङ्करशास्तृस्तुतिः	१०५
श्रीमोहिनीमन्मथशत्रुशास्तृस्तवः	१०६
श्रीमोहिनीशङ्करस्तवः	१०७
श्रीरमास्तुतिः	१०८
श्रीरमाहरिस्तवः	१११, ११२, ११५
श्रीरमेशगौरीशजस्तुतिः	११६
श्रीराधास्तवः	११८
श्रीराधास्तुतिः	१२२
श्रीराधाकृष्णस्तुतिः	१२४
श्रीराधादेवीस्तुतिः	१२५
श्रीराधिकास्तुतिः	१२९
श्रीराधादेवीस्तवः	१३२, १३४
श्रीराधायादवेन्द्र (कृष्णचन्द्र) स्तवः	१३६
श्रीराधाहरिस्तवः	१४१, १४२
श्रीराधिकास्तवः	१४३, १४५
श्रीराधिकायदुमणिस्तवः	१४९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विषयाः	पृष्ठानि
श्रीरुक्मिणीस्तुतिः	१५०
श्रीविदर्भमहीपतिपुत्रीस्तवः	१५३
श्रीरुक्मिणीसत्यभामाहर्यष्टकस्तुतिः	१५४
श्रीलक्ष्मीस्तुतिः	१५७
श्रीलक्ष्मीदेवीस्तोत्रम्	१५८
श्रीलक्ष्मीमहीतुलसीस्तुतिः	१५९
श्रीललिताम्बिकास्तवः	१६४
श्रीललिताललाटाक्षस्तोत्रम्	१६८
पञ्चमी-श्रीललितेन्दुशेखरस्तवः	१७३
श्रीललिताषोडशीस्तुतिः	१७४
श्रीवचनक्षितिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनयास्तुतिः	१७९
श्रीवाग्विधिस्तुतिः	१८२
श्रीवाङ्निकरजनन्यष्टकस्तोत्रम्	१८३
श्रीवाणीस्तोत्रम्	१८५
श्रीवाणीरमोमास्तुतिः	१८६
श्रीविदर्भधरणीधरवर्ष्मभवास्तवः	१८८
श्रीवैदर्भीवासुदेवस्तुतिः	१९०
श्रीशशिकलाधारिस्तवः	१९१
श्रीभूतुलसीहरिस्तवः	१९३
श्रीशारदाम्बास्तवः	१९६
श्रीशारदाम्बा (वाणी) द्वयस्तोत्रम्	१९८
श्रीसत्राजित्तनुजास्तुतिः	२०२
श्रीसत्यभामास्तोत्रम्	२०३
श्रीसरसिजजनुःस्तवः	२०६
श्रीसरस्वतीस्तोत्रम्	२०७, २१२
श्रीवचनप्रसूवनजजस्तवः	२१४
श्रीसिन्धुजास्तुतिः	२१६
श्रीहरिदयितास्तुतिः	२२०
श्रीक्षितिगुरुश्रीशङ्करषोडशीस्तोत्रम्	२२३
श्रीक्षीरसमुद्रराजतनयालक्ष्मीस्तवः	२२८
श्रीशारदाम्बागिरिजेशगणेशस्तोत्रम्	२२९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विषयाः	पृष्ठानि
श्रीशृङ्गगिरिपीठाधीशदेशिकस्तोत्रम्	२३१
श्रीशृङ्गगिरिपीठाधिष्ठित-श्रीजगद्गुरुश्रीसच्चिन्मोदाचार्यस्तवः	२३२
श्रीनृसिंहगुरुस्तवः	२३५
श्रीगीर्गिरीशगणेशषोडशीस्तवः	२३७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ॐ श्रीः

श्रीगुरुपादुकास्तवः

अनन्त-संसार-समुद्र-तार-
नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम् ॥
वैराग्य-साम्राज्यद-पूजनाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१॥

अनन्त संसार-सागर को पार करने में नौका-स्वरूप, गुरुदेव में भक्ति प्रदान करनेवाले, पूजन करनेसे वैराग्य एवं साम्राज्य को देनेवाले श्रीगुरुपादुका युगल को बार-बार प्रणाम है ॥१॥

कवित्व-वाराशि-निशाकराभ्यां
दौर्भाग्य-दावाम्बुद-मालिकाभ्याम् ॥
दूरीकृतानम्र-विपत्ततिभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥२॥

कवितारूपी सागर को समुल्लसित करनेवाले चन्द्रस्वरूप, दुर्भाग्यरूपी दावानल को बुझा देनेवाली घन-घटा के प्रतीक एवं आनत जनों की विपत्तियों को दूर कर देनेवाले श्रीगुरुपादुका-युगल को बार-बार प्रणाम है ॥२॥

नता ययोः श्रीपतितां समीयुः
कदाचिदप्याशु दरिद्रवर्याः ॥
मूकाश्च वाचस्पतितां हि ताभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥३॥

जिस चरणपादुकायुगल को कभी एक बार भी प्रणाम करके महादरिद्र श्रीपतिरूपता तथा मूक वाचस्पति की पदवी को शीघ्र ही पा लेते हैं उस श्रीगुरुपादुकायुगलको बार-बार प्रणाम है ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नालीक–नीकाश–पदाहृताभ्यां
नाना–विमोहादि–निवारिकाभ्याम् ।।
नमज्जनाभीष्ट–ततिप्रदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।४।।

कमल के समान चरणों से अलंकृत, अनेक प्रकार के विशेष मोह आदिकों के निवारक, प्रणाम करनेवाले भक्तों को समस्त अभिलषित वस्तुओं के दाता श्रीगुरुपादुकायुगल को वार-वार प्रणाम है ।।४।।

नृपालिमौलि–व्रजरत्नकान्ति–
सरिद्विराज–ज्झषकन्यकाभ्याम् ।।
नृपत्वदाभ्यां नतलोकपङ्क्ते–
र्नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।५।।

राज-मण्डल के मौलि-मुकुट में विराजमान रत्नों की प्रभारूपी सरिता में सुशोभित होनेवाली मीनकन्या की जोड़ी एवं प्रणत जनों को साम्राज्य प्रदान करनेवाले श्रीगुरुपानुकायुगल को वार-वार प्रणाम है ।।५।।

पापान्धकारार्क–परम्पराभ्यां
तापत्रयाहीन्द्र–खगेश्वराभ्याम् ।।
जाड्याब्धि–संशोषण–वाडवाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।६।।

पापरूपी अन्धकार को नाश करने में सूर्य की पंक्ति के समान, त्रिविध— आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक तापरूपी सर्पराज के लिये खगपति गरुड़स्वरूप तथा जड़तारूपी सागर को भलीभाँति सुखा देने में बड़वानलस्वरूप श्रीगुरुपादुकायुगल को बार-बार प्रणाम है ।।६।।

शमादिषट्क–प्रदवैभवाभ्यां
समाधिदान–व्रतदीक्षिताभ्याम् ।।
रमाधवाङ्घ्रि–स्थिर–भक्तिदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।७।।

शम, दम आदि छहों साधन सम्पत्तियों को प्रदान करनेवाले, समाधि में अवस्थित करने के व्रत में दीक्षित तथा लक्ष्मीकान्त के चरणों में अनपायिनी भक्ति को प्रदान करनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को बार-बार प्रणाम है ।।७।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वार्चापराणा-मखिलेष्टदाभ्यां
स्वाहा-सहायाक्ष-धुरन्धराभ्याम् ॥
स्वान्ताच्छ-भाव-प्रद-पूजनाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥८॥

अपनी अर्चना में परायण भक्तजनों के अखिल अभीष्टों को देनेवाले, इन्द्रियों में अग्नि के समान तेजस्विता भरनेवाले, पूजन करनेवाले जनों के हृदय में निर्मल भावों को प्रदान करनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को वार-वार प्रणाम है ॥८॥

कामादि-सर्प-व्रज-गारुडाभ्यां
विवेक-वैराग्य-निधिप्रदाभ्याम् ॥
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥९॥

कामादि विकाररूपी सर्पों के लिये गरुड़स्वरूप, विवेक एवं वैराग्यरूपी निधियों के प्रदाता, ज्ञानदायक तथा शीघ्र ही मुक्ति को देनेवाले श्रीगुरुपादुका-युगल को वार-वार प्रणाम है ॥९॥

॥ॐ तत्सत् ॥

श्रीगुरुपादुकास्तोत्राणि

हव्याशिनो यन्निटिलाश्रयस्य
ज्वाला-वलीढा-वयवो ममार ॥
पती रतेस्तत्पदद-स्मृतिभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१॥

जिसके ललाटस्थ अग्नि की ज्वाला से दग्ध अंग होकर रतिपति मर गया उस शिव के पद को स्मृतिमात्र से प्रदान करनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥१॥

हारीकृताहीश-समानशास्त्र-
पारीणता-दायि-निजार्चनाभ्याम् ॥
ऊरीकृतानम्र-जनावनाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपनी अर्चना करनेवालों को शिवागम या पातञ्जल दर्शन सदृश दुर्गम शास्त्रों में पारंगत बनानेवाले तथा आनत जनों की रक्षा को स्वीकार कर लेनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को बार-बार प्रणाम है ॥२॥

हिरण्यगर्भा–धिकबोधदाभ्यां
शरण्य–सङ्घात–शिरोमणिभ्याम् ॥
अरण्य–सौधैक्य–मतिप्रदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥३॥

हिरण्यगर्भ से भी अधिक ज्ञान प्रदान करनेवाले, शरणागतवत्सलों के शिरोमणि तथा अरण्य और भव्यभवन में एकत्व बोधन करनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥३॥

हीरादि–सद्रत्न–ततिप्रधान–
वाराशि–कन्या–प्रद–संस्मृतिभ्याम् ॥
माराटवी–दाव–शुचीक्षणाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥४॥

अपना सम्यक् स्मरण करनेवालों को हीरा आदि उत्तम रत्नों की राशिभूत लक्ष्मी को प्रदान करनेवाले एवं कामवन के दावानल रूप पवित्र नेत्रवाले श्रीगुरुपादुकायुगलको पुनः पुनः प्रणाम है ॥४॥

हुताशिराजन्निटिलाब्जजात–
पीताम्बरत्व–प्रदपूजनाभ्याम् ॥
वाताशि–मौनीन्द्र–समर्चिताभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥५॥

पूजन करनेवालों को त्रिलोचन, स्वयम्भू तथा नारायण का पद प्रदान करनेवाले तथा वायुभक्षी मुनीश्वरों द्वारा समर्चित श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥५॥

हूहूप्रमुख्येडितगौरवाभ्यां
ईहाक्रुधाद्यान्तर–शत्रुहृभ्याम् ॥
अंहोऽहि–वीन्द्रायित–वीक्षणाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥६॥

हूहू प्रमुख गन्धर्वों द्वारा गौरव-गीत गाये जानेवाले, काम-क्रोधादि आन्तरिक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शत्रुओं के नाशक एवं पापरूपी सर्प के लिये गरुड़रूप वीक्षणवाले श्रीगुरुपादुका-युगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥६॥

हृदन्धकारौघ–घृणिव्रजाभ्यां
भिदं निहत्य–स्मृतितो हि ताभ्याम् ॥
विदं नतं ये कुरुतो हिताभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥७॥

हृदस्थ तिमिर-निकर-नाशक सूर्य समूहरूप, स्मरण मात्र से भेद-बोध को नष्ट कर हित सम्पादन करनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥७॥

हेमाश्मतौल्ये–क्षणदायिकाभ्यां
रामारमा–तौच्छ्य–मतिप्रदाभ्याम् ॥
भीमामयाति–व्रज–भस्मकृद्भ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥८॥

निकषोपल के समान सदसद्विवेचन चतुर दृष्टि प्रदान करनेवाले, कामिनी-कांचन में तुच्छता का बोध करानेवाले तथा भयंकर रोगों के पुंज को भस्म कर डालनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥८॥

हैमोदराम्भः–प्रभवस्वनेत्र–
हैमाद्रि–जामातृ–धुरन्धराभ्याम् ॥
हैमाद्रिवासि–स्तुत–वैभवाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥९॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा अन्य देवताओं द्वारा गीतकीर्त्ति श्री गुरुपादुका-युगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥९॥

होमप्रमुख्यै–र्जगति द्विजाद्याः
कर्मव्रजै–र्भक्ति–विबोधनाभ्याम् ॥
इच्छन्ति यत्तत्फल–दायिकाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१०॥

द्विज आदि होम प्रभृति कर्मों से जिस फल को संसार में पाने की इच्छा करते हैं उन फलों को प्रदान करनेवाले तथा भक्ति और ज्ञान के दायक श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥१०॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हौत्राग्नि-होत्राग्नि-हविष्य-होतृ-
होमादि-सर्वाकृति-भासमानम् ॥
यद्ब्रह्म—तद्बोध-वितारिणीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥११॥

अग्निहोत्र, हवनीय अग्नि, हविष्य, होता, हवन आदि समस्त आकृतियों से भासित होनेवाले तथा ब्रह्म को बोधित करानेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनःपुनः प्रणाम है ॥११॥

हंसादिभैरार्य-परम्परा व-
तंसायितैः सन्तत-पूजिताभ्याम् ॥
संसार-पाथो-निधि-कुम्भजाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१२॥

आर्य-परम्परा के अवतंसरूप परमहंसों से सन्तत पूजित एवं संसार-सागर के लिये अगस्त्यरूप श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥१२॥

श्रीमन्तमारात्प्रणतं विधाय
धीमन्तमिन्द्रं धिषणं च ये द्राक् ॥
ह्रीमन्तमग्रे कुरुतोऽस्य ताभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१३॥

प्रणतजनों को सम्पत्ति और विद्या प्रदान करके उसके समक्ष इन्द्र और वाचस्पति को लज्जित बना देनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥१३॥

पङ्कोद्भवात्मेक्षणनाभिजात-
पङ्कोद्भवासीन-कलत्रदाभ्याम् ॥
पङ्कोद्भवात्मालयया समेतं
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१४॥

कमलनयन और कमलासन की प्रिया—पद्मालया लक्ष्मी और सरस्वती को साथ-साथ प्रदान करनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥१४॥

आकार-शोभा—तनुदार्ढ्य-हस्ति—
प्रकार-दुर्गादि-समस्त-लक्ष्म्या ॥
विकार-हीनात्म-मति-प्रदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आकारकी रम्यता, शरीर की दृढ़ता, हाथी, प्राकार, दुर्ग आदि सम्पूर्ण समृद्धियों सहित निर्विकार मन और बुद्धि प्रदान करनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥१५॥

शङ्का–कुठारायित–वीक्षणाभ्यां
शङ्कारकत्व–प्रद–पूजनाभ्याम् ॥
लङ्काधिपारातिरति–प्रदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१६॥

कृपादृष्टि से सन्देह को नष्ट करनेवाले, पूजन करनेवालों के कल्याण-कारी तथा राम में रति प्रदान करनेवाले श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः-पुनः प्रणाम है ॥१६॥

ऐंकार–ह्रींकार–रहस्ययुक्त–
श्रींकार–गूढार्थ–महाविभूत्या ॥
ओंकार–मर्म–प्रतिपादिनीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१७॥

ऐं ह्रीं श्रीं—इन बीजमन्त्रों के गूढ़ रहस्य और महान् ऐश्वर्य के साथ प्रणव के मर्म के प्रतिपादक श्रीगुरुपादुकायुगल को पुनः पुनः प्रणाम है ॥१७॥

ओंकार–झंकार–रतेष्वविद्या–
हंकार–हुंकार–चणेक्षणाभ्याम् ॥
हिंकार–हुंकार–मुखेडिताभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥१८॥

प्रणव के नाद-सौन्दर्य में अनुरक्त जनों के विषय में अविद्या के अहंकार को नष्ट करने से प्रसिद्ध नेत्रवाले तथा हिंकार-हुंकार प्रमुख जनों से ईडित श्रीगुरु-पादुकायुगल को पुनःपुनः प्रणाम है ॥१८॥

॥ ॐ तत्सत् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्री उमास्तवः

[द्रुतगतिः]

भजदमरतरु—र्भ्रमरनिभकचा ।
भवभयहृदुमा भवतु शुभकरी ॥१॥

भक्तों के कल्पतरु, भ्रमराभ केशोंवाली, संसार-भय को नष्ट करनेवाली उमा कल्याणकारिणी हों ॥१॥

करजितकमला वरदनिजपदा ।
सितपटधृदुमा भवतु शुभकरी ॥२॥

कर से कमल को जीतनेवाली, वरद-चरणोंवाली, श्वेताम्बरधारिणी उमा कल्याणकारिणी हों ॥२॥

पशुपतिरमणी सुरनुतचरणा ।
रुचिरतनुरुचिर्भवतु शुभकरी ॥३॥

पशुपति की प्रिया, देववन्दित चरणोंवाली, भव्यशारीरिक कान्तिवाली उमा कल्याणकारिणी हों ॥३॥

मुररिपुसहजा हृतनतसमला ।
सकरुणहृदुमा भवतु शुभकरी ॥४॥

मुरारि की सोदर बहन, नतजनों के पापनाशक, सदयहृदया पार्वती कल्याणकारिणी हों ॥४॥

सुरगणविनुता मुनिजनकलिता ।
कनकदपदुमा भवतु शुभकरी ॥५॥

सुरगणों से वन्दित, मुनिजनों से पूजित, स्वर्णदायी चरणोंवाली उमा कल्याणकारिणी हों ॥५॥

भवभयहरणी जलधरचिकुरा ।
नतकलहृदुमा भवतु शुभकरी ॥६॥

भव-भय हरण करनेवाली, घनाभ केशोंवाली, भक्तों के लिये दयार्द्रहृदया उमा कल्याणकारिणी हों ॥६॥

धरणिधरसुता धरणिधरकुचा ।
नमदघहृदुमा भवतु शुभकरी ॥७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गिरीन्द्रकुमारी, भूधरसदृश विशाल स्तनोंवाली, प्रणाम करनेवालों के पापों को नष्ट करनेवाली उमा कल्याण करें ॥७॥

करलसदभया नयचयवरदा ।
शशिशिशुधृदुमा भवतु शुभकरी ॥८॥

अभय मुद्रांकित करवाली, शास्त्र-समुदाय का वर देनेवाली, बालेन्दुधारिणी उमा कल्याणकारिणी हों ॥८॥

●

ॐ अथ श्रीकमलास्तुतिः

[हरिगीतिका]

गिरिजाहृदीश्वरफाललोचनभस्मसात्कृतकायतत्-
सहसम्भवव्रजवश्यमानसदुर्लभाङ्घ्रिसरोरुहे ।
इहलोकनाकमुखाप्यसर्वसुखावलीतृणतुच्छता-
(दृढ) भावनाप्तजनुर्विरागधनेक्षिते कमलेऽव माम् ॥१॥

कामादि विकारों से वशीकृत चित्तवाले लोगों को दुर्लभ चरणसरोजवाली एवं भूलोक तथा स्वर्ग में प्राप्त होने योग्य सब प्रकार के सुखों पर तृणवत् तुच्छ बुद्धिवाले विरक्तजनों द्वारा समीक्षित कमला मेरी रक्षा करें ॥१॥

भरताम्बिकाजनकानलाम्बुधिनायकादिसुरावली-
कलितत्पितामहमुख्यदैत्यवरार्चिताङ्घ्रिवनोद्भवे ।
चरणामृतप्रभवद्वयस्मृतितत्परस्वमनोजरा-
कुमृतिप्रमुख्यसमस्तकष्टकदम्बहृत् कमलेऽव माम् ॥२॥

इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि देववृन्द एवं कलि एवं उसके पितामह प्रमुख दैत्यवरों से अर्चित पादपद्मोंवाली तथा युगलपादारविन्दकी स्मृति में तत्पर भक्तों की जरा, अपमृत्यु आदि समस्त पीड़ाओं को मन से हटाने में सुख माननेवाली कमला मेरी रक्षा करें ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपि वित्तलेशवि(काकिणीलव)वर्जिता अतिमन्दमैजधियो नराः
सकृदेव यत्पदपाथसीरुहसंस्मृतेरतिसत्वरम्।
प्रभवन्त्यहो निजवाग्विलासवसुव्रजापहृतामर-
व्रजदेशिकद्रविणेश्वराखिलडम्बराः कमलेऽव माम् ॥३॥

एक कौड़ी के लिये भी तरसनेवाले तथा अतीव जड़मति जन भी एक बार ही जिसके चरणारविन्द की स्मृति करके अतिशीघ्र धनपति कुबेर की समृद्धि तथा सुराचार्य की वाग्विभूति को तिरस्कृत करनेवाली सम्पत्ति तथा बुद्धि पा जाते हैं वह कमला मेरी रक्षा करें ॥३॥

क्षितिधारकक्षितिनायकप्रभवस्वकीयकलेवरा
सहजन्मविग्रहमानसामृतसम्भवोद्यदहर्पते।
विविधार्त्तिसन्ततिसन्ततानुभवार्दितस्वमनोऽम्बुभू-
प्रणतावलीकरुणाम्बुराशिहृदम्बुजे कमलेऽव माम् ॥४॥

गिरिराज किशोरी गौरी के सोदर नारायण के तन और मनरूपी कमल को विकसित करने में उदीयमान भानुस्वरूप तथा अनेकों प्रकार की पीड़ाओं के अनुक्षण अनुभव से म्लान हृदयसरोजवाले प्रणतजनों पर करुणासागररूप हृदयारविन्दवाली कमला मेरी रक्षा करें ॥४॥

अखिलान्तरायनिकायभूपतिवार्जभिन्नमहाभय-
ङ्करविघ्नजालनिवारणप्रवणस्मृतिस्वपदाम्बुजे।
रथमत्तदन्तितुरङ्गकोशचमूमुखानतकाङ्क्षिता-
खिलसम्पदावलिदानतत्परमानसे कमलेऽव माम् ॥५॥

अपने पदाम्बुजों की स्मृति से ही सर्वविध महाभयंकर विघ्न जालों के निवारण में तत्पर तथा प्रणत जनों के समीहित रथ, मत्तमतंग, तुरंग, कोश, सेना प्रमुख समस्त सम्पत्तियों के दान में प्रीत हृदय कमला मेरी रक्षा करें ॥५॥

चतुरास्यपञ्चमुखाश्रयाशसमुद्भवानिलभोजन-
व्रजभूतिभृद्रसनालिशक्त्यतिशायिवैभवपत्स्मृते(पद्युगे)
निजपादनीरभवद्वयोत्थपरागसंस्मृतिमुख्यकृन्
निखिलाघसङ्घनिवारणव्रतपालिके कमलेऽव माम् ॥६॥

जिसके चरणों की स्मृति के वैभव का वर्णन चतुरानन, पंचानन, षडानन, सहस्रमुख द्विजिह्वाधिपति शेष की शक्ति से परे है वह अपने युगल-पादारविन्द के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पराग की सम्यक् स्मृति से ध्यान करनेवालों के निखिल पापपुञ्जों के निवारण का व्रत धारण करनेवाली कमला मेरी रक्षा करें ॥६॥

कनकाभिमानहरच्छविस्वतनूगतामित (तुल)लावणी—
कणिकोपजीविसमस्तलोकगसुन्दरीकुलशेखराम् ।
द्रुहिणोरुजातपराशरोद्भवतत्तनूभवशौनक—
प्रमुखर्षिवर्यपरम्परार्चितपादुके कमलेऽव माम् ॥७॥

सुवर्ण के अभिमान को नष्ट करनेवाली छवि से देदीप्यमान अपने शरीर की अनुपम लुनाई की कणिका का वितरण कर समस्त लोक के सुन्दरी-रत्नों को उपजीवित करनेवाली तथा नारद, व्यास, शुक, शौनक प्रमुख प्रधान ऋषीश्वरों से समर्चित पादुकावाली कमला मेरी रक्षा करें ॥७॥

क्षरतोऽक्षरादपि यत्परं निजगाद पूरुषसत्तमं
तदमेयतत्त्वविबोधकस्वजपाक्षरव्रजमन्त्रिके ।
विविधाशयास्वपदाम्बुसम्भवसंस्मृतावलयेद्रुत-
प्रतिपादिताखिलकाङ्क्षितार्थकटाक्षके(परम्परे)कमलेऽव माम् ॥८॥

क्षर ओर अक्षर से पर जिस पुरुषोत्तम तत्त्व का निर्वचन किया गया है उसके अप्रमेय तत्त्व का बोध अपने मन्त्राक्षरों के जप करनेवालों को करा देनेवाली तथा विभिन्न-विभिन्न फलों की प्राप्ति के लिये अपने युगल पादाम्बुजों की स्मृति करनेवालों के सर्वविध मनोरथों को अतिशीघ्र पूर्ण करनेवाले कटाक्षवाली कमला मेरी रक्षा करें ॥८॥

सरसीसमुद्भवविष्टरत्वविबोधितानतहृत्स्थिति—
सरसीजदृग्रमणीत्वसूचितसर्वहृत्स्थितवीक्षणे ।
निगमव्रजश्रुतिशीर्षकीर्त्तितधर्ममुख्यचतुर्विध—
पुरुषार्थदानपरायणात्मचतुर्भुजे कमलेऽव माम् ॥९॥

ब्रह्म-तत्त्वज्ञ भक्तों के हृदय में स्थित लक्ष्मीनारायण की सूचना देनेवाली समस्त प्राणियों के हृदयदेश में विराजमान दृष्टिवाली तथा वेद-वेदान्त आदि शास्त्रों में प्रतिपादित धर्म आदि चतुर्विध पुरुषार्थों को देने में तत्पर चार भुजाओं वाली कमला मेरी रक्षा करें ॥९॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निजपादपङ्कजतत्पराशयहृत्तमोविनिवारणो—
द्यतचण्डदीधितिसञ्चयायिततत्त्वदीपकदीपके ।
चतुरम्बुराशिसमावृताखिलमेदिनीपतितामुख—
प्रणतेष्टसर्ववरप्रदानपरायणे कमलेऽव माम् ॥१०॥

अपने पादपङ्कज के भजन में तत्पर भक्तों के हृदय में अवस्थित तम को नष्ट करने के लिये उदीयमान सहस्रों सूर्य के समान आत्मतत्त्वावभासक दीपकवाली तथा चतुःसमुद्रावृत समस्त धरणी के अधिपतित्व आदि प्रणतजनाभिलषित वरों को देने में परायण कमला मेरी रक्षा करें ॥१०॥

धरणीभुवस्त्रिदशालयप्रमुखाभिधानचतुर्दश—
भुवनस्थिताखिललोकपूगसमर्चितस्वपदाम्बुजे ।
ज्वरितक्षभापतियक्ष्मकुष्ठमुखाखिलाभयकुञ्जर-
मृगनायकायितपादपद्मसकृत्स्मृते कमलेऽव माम् ॥११॥

भू, भुवः, स्वः प्रमुख चतुर्दश भुवनों में स्थित समस्त प्राणियों से समर्चित पादाब्जवाली तथा जिसके पादाब्ज की एक बार की भी स्मृति ज्वर, राजयक्ष्मा, कुष्ठ, आदि सम्पूर्ण रोगरूपी कुंजरों के लिये मृगराज स्वरूप हो जाती है वह कमला मेरी रक्षा करें ॥११॥

प्रणतेष्टसंसृतिसाध्वसव्रजनाशसूचितमुद्रिका—
खलसङ्घनिग्रहकृद्रथाङ्गगदामुखायुधधारिणि ।
अखिलप्रकारकधीविकारनिकायदूरनिजाशय—
व्रजसन्ततस्तुतनैजपादपयोरुहे कमलेऽव माम् ॥१२॥

प्रणतजनों के लिये इष्ट सांसारिक भय-भंजक अभय मुद्रा, खलों के नाशक चक्र, गदा आदि प्रधान आयुधों को धारण करनेवाली तथा सर्वविध बुद्धि विकार से असंस्पृष्ट हृदय वाले भक्तों द्वारा सतत संस्तुत पादाम्बुजों वाली कमला मेरी रक्षा करें ॥१२॥

वचनप्रसूदिविजाग्रभूधरणीधरक्षितिपाल—
प्रभवा पिनाकलसत्स्वपाणिशचीहरिप्रमुखामरैः ।
विकसज्जलस्थलपद्मचम्पकमल्लिकातुलसीमुखै—
रनिशार्चितस्वपदामृतोद्भवयुग्मके(धूलिके) कमलेऽव माम् ॥१३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वाणी और ब्रह्मा, गौरी और शंकर, शची और इन्द्र प्रमुख, अमरदम्पतियों द्वारा विकसित जलज, प्रफुल्ल स्थलकमल, चम्पक, मल्लिका, तुलसी आदि से निरन्तर पूजित युगल पादपद्मोंवाली कमला मेरी रक्षा करें ॥१३॥

मतिशान्तताबहिरिन्द्रियव्रजदान्तिसर्वतितिक्षुतो—
परतिप्रमुख्यसमस्तसाधनसम्पदालिदसंस्मृते ।
अनिशोद्भवक्षयरूप(भूरि)भवाभिधानमहारुजा—
प्रभवाखिलश्रमनाशतत्परमानसे कमलेऽव माम् ॥१४॥

अपनी स्मृति से ही शम, दम, तितिक्षा, उपरति आदि समस्त साधन-सम्पत्तियों को देनेवाली तथा जन्म-मरण के पुनरावर्तनरूप संसाररूपी महारोग से उत्पन्न समस्त श्रम को नष्ट करने में तत्पर-चित्त कमला मेरी रक्षा करें ॥१४॥

यममुख्यसाध्वससञ्चयाशुनिवारकत्वसमुज्ज्वलद्—
यममुख्यनैजसमस्तभागविराजियोगमुखप्रदे ।
गणनातिशाय्यपराधकोटिसहस्रमर्षकतामुख—
रुचिरस्वसद्गुणसञ्चयोद्धृत (यावित) सन्नते कमलेऽव माम्॥१५॥

यम-जनित भीति को शीघ्र ही नष्ट करने में समर्थ भ्राजिष्णु यम-नियम आदि आत्मतत्त्वाववोधक योग को देनेवाली तथा असंख्य अपराधों को क्षमा कर अपने सद्गुण गणों से प्रणतजनों का उद्धार करनेवाली कमला मेरी रक्षा करें ॥१५॥

नमदालिदसर्वसमीहितार्थनिकायदानपरायण—
स्वधियः श्रियः पदपङ्कसम्भवसंस्तुतिं पठताभिमाम् ।
निजहस्तगं सुकलत्रपुत्रमुखोल्लसच्चिरजीविता—
खिलवेतृतामितसम्पदाद्यखिलेप्सितं [भवति ध्रुवम्]॥१६॥

नमन करनेवालों के समस्त समीहितों को पूर्ण करने में परायण लक्ष्मी के चरणारविन्द की इस स्तुति को पढ़नेवालों को मनोहर पत्नी, पुत्र, चिरायुष्य, सर्वज्ञता, सम्पूर्ण सम्पत्ति आदि अभीप्सित पदार्थ मात्र अवश्य हस्तगत हो जाते हैं ॥१६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीकमलाक्षितिविष्णुस्तुतिः

[दोधकम्]

भक्तजनव्रज(नावलि)वैबुधवृक्षान्
संसृतिभूरुहभञ्जकुठारान् (सागरतारकनौकाः) ।
भृङ्गभुजङ्गम(पयोधर)भास्वर(जित्वर)केशान्
नौम्यनिशं कमलाक्षितिविष्णून् ॥१॥

भक्तजनों के कल्पतरु, संसार-महीरुह के कुठार (संसार-सागर से पार करने के लिये पोत) भृंग, भुजंग (वारिधर) के समान भास्वर केशवाले कमला, पृथिवी और विष्णु को सदा नमन करता हूँ ॥१॥

पादविनिर्जितपाथसिजाताञ्-
छारदनीरदसन्निभवस्त्रान् ।
वाञ्छितसर्ववरप्रदपूजान्
नौम्यनिशं कमलाक्षितिविष्णून् ॥२॥

अपने-अपने चरणों से पयोज को जीतनेवाले, शारदीय अम्बर के समान स्वच्छ वस्त्रधारी, पूजनमात्र से अभिलषित समस्त वरों के दायक कमला, पृथिवी और विष्णु को सदा नमन करता हूँ ॥२॥

शौनकमुख्यमुनीन्द्रनुताङ्घ्रीं-
श्चारुशरीरमनोधिषणाढ्यान् ।
स्वर्णसुवर्णपयोधरकान्तीन्
नौम्यानिशं कमलाक्षितिविष्णून् ॥३॥

शौनक प्रमुख मुनीन्द्रों से वन्दित पाद, सुन्दर शरीर, मन और बुद्धि से आढच, स्वर्ण, सुन्दर रंग और पयोधर की कान्तिवाले कमला, पृथिवी और विष्णु को मैं सदा नमन करता हूँ ॥३॥

अङ्घ्रिरजोहृद्भक्तरजस्कान्
भक्तिलसद्विनतातनुजातान् ।
स्वाकृतिवाहनशोभिशरीरान्
नौम्यनिशं कमलाक्षितिविष्णून् ॥४॥

चरणरज से भक्तों के हार्दिक रज को नष्ट करनेवाले, भक्ति से वैतनेय को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुशोभित बनानेवाले, सुन्दराकृति वाले वाहनों पर शरीर से भ्राजमान कमला, पृथिवी और विष्णु को सदा नमन करता हूँ ॥४॥

काणभुजप्रमुखाखिलविद्या–
श्राणनचुञ्चुपदस्मृतिलेशान् ।
शोणसरोरुहजित्वरपाणीन्
नौम्यनिशं कमलाक्षितिविष्णून् ॥५॥

लेशमात्र चरणों की स्मृति से काणाद आदि प्रमुख शास्त्रों के दान में प्रसिद्ध, रक्ताम्भोज को जीतनेवाले पाणिसे मनोहर कमला, पृथिवी और विष्णु को सदा नमन करता हूँ ॥५॥

मङ्क्षु वितीर्णपदानतकाम्यान्
निर्जरमण्डलमस्तकनम्यान् ।
आकृतिसद्गुणसन्नतिरम्यान्
नौम्यनिशं कमलाक्षितिविष्णून् ॥६॥

पदों में आनत भक्तों को अनायास ही समस्त काम्य पदार्थों के दाता, देववृन्द के मस्तक से नम्य, आकार, सद्गुण एवं सज्जनों की प्रणति से रम्य कमला, पृथिवी और विष्णु को सदा नमन करता हूँ ॥६॥

कृत्तकृतान्तमुखोद्भवभीतीन्
कृष्णसरीसृप(भुजङ्गम)जिष्णुकचाढ्यान् ।
कृत्स्नजगत्त्रयमङ्गलहेतून्
नौम्यनिशं कमलाक्षितिविष्णून् ॥७॥

यमादिकों से उत्पन्न भीति के नाशक, कृष्ण सर्प को पराजित करनेवाले केशों से समृद्ध, सम्पूर्ण त्रिभुवन के मंगलहेतु कमला, पृथिवी और विष्णु को सदा मैं नमन करता हूँ ॥७॥

नीरदशीर्षरुहो भवसिन्धु–
पारदपादयुगान् वरदातॄन् ।
नारदसन्ततगीतपदाब्जान्
नौम्यनिशं कमलाक्षितिविष्णून् ॥८॥

नीरदाभ केशों वाले, युगल चरणों से भवसागर से पार करनेवाले, वरदायक, नारद द्वारा चरणारविन्द के सतत यशोगान किये जानेवाले, कमला, पृथिवी और विष्णु को नमन करता हूँ ॥८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कष्टनिकृन्तन(विनाशन)पूर्वकमारा—
दिष्टकदम्बकदाननिषक्तान् ।
अष्टकपाठमुखद्रुततुष्टा
अष्ट ददत्यखिलेप्सितसिद्धीः ॥९॥

कष्टनाशपूर्वक समस्त इष्ट पदार्थों के दान में आसक्त देवों को प्रणाम है जो इस स्तोत्र के पाठ करनेवालों पर शीघ्र ही सन्तुष्ट होकर सम्पूर्ण मनोरथ पूरक आठों सिद्धियों को देते रहते हैं ॥९॥

•

श्रीकमलावसुधातुलसीकमलानिलयस्तुतिः

[सवैया भाषाछन्दः]

चित्तजनुःकलितान् गणनारहिताब्जभवाण्डजनिप्रदकायान्
भक्तजनेप्सितहस्तिहयाद्यखिलस्पृशिकृत्करुणाब्धिकटाक्षान् ।
सर्वकलाव्रजदान् यमवत्सुलभाङ्घ्रियुगान्नतमोक्षदपादान्-
छ्रीकमलावसुधातुलसीकमलानिलयान् हृदये कलयेऽहम् ॥१॥

मनोज के समान मनोहर, अगणित ब्रह्माण्डों के उत्पादनक्षम शरीरों के धारण कर्त्ता, करुणासिन्धु रूप कटाक्षों से ही भक्तजनों के ईप्सित—हाथी, घोड़े आदि दुर्लभ द्रव्यों के दाता, सकल कलाओं के प्रदाता, संयमी जनों के लिये ही सुलभ चरणोंवाले, प्रणतजनों को मोक्ष देनेवाले पादों से युक्त श्री कमला, वसुधा, तुलसी और पद्मासन को हृदय में भजता हूँ ॥१॥

निर्जितचन्द्रमुखानुरगाधिपपक्षिपपूजितपादपयोजान्
निर्जरसङ्घनुतानुररीकृतनम्रजनेप्सितपूरणदीक्षान् ।
निश्चलचित्तधृतानुरुसम्पदभीप्सुमुमुक्षुजनार्चितपादान्-
छ्रीकमलावसुधातुलसीकमलानिलयान् हृदये कलयेऽहम् ॥२॥

अपने-अपने मुख से चन्द्रमा को जीत लेनेवाले, शेष और गरुड़ से पूजित पादारविन्द वाले, देववृन्द से वन्दित, प्रणतजनों के ईप्सित पदार्थों को पूरा करने की दीक्षा ग्रहण करनेवाले, स्थिरचित्तयोगियों से गृहीत, विशाल सम्पत्ति चाहने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वाले तथा मुक्ति के इच्छुक जनों से समर्चित चरणारविन्द वाले श्री कमला, वसुधा, तुलसी और पद्मासन को हृदय में भजता हूँ ॥२॥

पद्मजनुःकलितान् भवभूतिवितारिनुतान् षडरिव्रजहन्तॄन्
छ्रीसुषमाकरुणामुखजन्ममहीर्ललितानिटिलाक्षनुताङ्घ्रीन् ।
शोणनिजाधरतुण्डविनिर्जितबिम्बविधून्नयसञ्चयदातॄन्
छ्रीकमलावसुधातुलसीकमलानिलयान् हृदये कलयेऽहम् ॥३॥

ब्रह्मा से वन्दित, सांसारिक वैभवदाताओं से नुत, षट् सपत्नों (काम, क्रोध आदिकों) के विनाशक, लक्ष्मी की सुषमा और करुणा की जन्मभूमि, ललिता ओर त्रिलोचन से वन्दित चरणोंवाले, अपने-अपने अधर की रक्तिमा से बिम्ब को जीत लेनेवाले तथा चन्द्रमा के अभ्युदय की राशि को देनेवाले श्री कमला, वसुधा, तुलसी और पद्मासन को हृदय में धारण करता हूँ ॥३॥

ओमिति वेदतदीयशिरोगदितानतपावननाम यदीयं
यत्पदनुग्रहसिन्धुलस(मिल)त्कणिकासुलभीकृतकामितलब्धिः ।
उज्झितसर्वमनीषितशेषमुखाशययोगिजनेक्षितपादान्
छ्रीकमलावसुधातुलसीकमलानिलयान् हृदये कलयेऽहम् ॥४॥

वेद, वेदान्त की ऋचाओं से आनत, प्रणव रूप पावन नाम वाले, अपने चरणानुग्रहसागर की कणिका से अभिलषित पदार्थों के लाभ को सुलभ कर देने-वाले, सम्पूर्ण स्पृहणीय वस्तुओं के त्यागी शेष प्रमुख प्रशस्तचित्त योगियों द्वारा दृष्ट पादों वाले श्री कमला, वसुधा, तुलसी और पद्मासन को हृदय में धारण करता हूँ ॥४॥

अन्धकसूदनपङ्कजसम्भवलेखपतिप्रमुखामरवर्य—
व्रातकिरीटतटोज्ज्वलरत्नघृणव्रजघृष्टनिजाङ्घ्रिसरोजान् ।
सर्वशुभावलिदान् स्वकलेवरकान्तिविभासितलोककलापान्
छ्रीकमलावसुधातुलसीकमलानिलयान् हृदये कलयेऽहम् ॥५॥

शंकर, ब्रह्मा, इन्द्र प्रमुख श्रेष्ठ देवताओं के मुकुट में जटित रत्नों से चुम्बित चरणाम्बुजों वाले, समस्त कल्याण के दायक, अपनी काया की कान्ति से लोकपालों को विभासित करनेवाले श्री कमला, वसुधा, तुलसी कमलानिलय को हृदय में धारण करता हूँ ॥५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीकमलावसुमतीस्तोत्रम्

[दोधकम्]

पादपयोरुहभक्तजनाली—
सर्वमनोरथदाननिषक्ते ।
कारणमानविहीनकृपाब्धी
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥१॥

चरणारविन्द के भक्तजनों को सम्पूर्ण मनोरथ देने में तत्पर, एवं अकारण असीम करुणावरुणालय कमला और वसुमती को सदा प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

नैज-पदाब्ज-नमस्कृति-कर्तृ—
व्रातमुदम्बुधिपूर्णशशाङ्कौ ।
रागविवर्जितलभ्यपदाब्जे
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥२॥

अपने पादाब्ज का नमन करनेवालों के आनन्द-सिन्धु को उद्वेलित करनेवाले पूर्णचन्द्र एवं रागरहित हृदयवालों के लिए सुलभ कमला और वसुमती को सदा प्रमाण करता हूँ ॥ २ ॥

स्वीकृतपादसमाश्रितसर्वा-
भीप्सितसंस्पृशितत्परदीक्षे ।
देवकिरीटनिघृष्टपदाब्जे
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥३॥

अपने चरणों में आत्म समर्पण करनेवालों को अंगीकार कर उनके समस्त मनोरथों की पूर्त्ति में तत्परता की दीक्षा लेने वाली तथा देवताओं के मुकुट से स्पृष्ट पादारविन्दवाली कमला और वसुमती को सदा प्रणाम लरता हूँ ॥ ३ ॥

क्षीरपयोधिभवानिकरर्द्धि (निखिलर्द्धि)-
व्रातवितारिकटाक्षमनोज्ञे ।
अन्तकमुख्यभयघ्ननिजाङ्घ्री
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥४॥

क्षीर सागर से समुद्भूत एवं कृपा कटाक्ष से ही सम्पूर्ण मनोरथों को परिपूर्ण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करने के कारण मनोहर तथा अपने चरणों से अन्तकादि के भय को नष्ट करने वाली कमला और वसुमती को सदा प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

भक्तललाटगवैधसमस्त-
दुर्लिपिमार्जनदक्षकटाक्षे ।
दीनकृपामृतसिन्धुहृदब्जे
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥५॥

भक्तों के ललाट में विधाता द्वारा लिखित दुःखद अक्षरों को मिटाने में आसक्तहृदया एवं दीनजनों के लिये कृपामृत सिन्धु रूप हृदयारविन्द वाली कमला और वसुमती को सदा प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

वर्ष्ममनोमतिमुख्यसमस्त-
स्वाङ्गमनोहरतातिशयाढ्ये ।
स्वर्ललनामणिगीतपदाब्जे
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥६॥

शरीर, मन, बुद्धि आदि प्रमुख अंगों को अतिशय सुन्दरता से समृद्ध तथा उत्तमोत्तम स्वर्गीय देवियों द्वारा स्वकीय पादारविन्द की यशोगाथा का गान कराने वाली कमला और वसुमती को सदा प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

भक्तवशीकृतगौतमवेद-
व्यासपतञ्जलिमुख्यनयाली ।
सन्नतमानसपद्मदिनेशौ
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥७॥

गौतम, वेदव्यास और पतञ्जलि द्वारा प्रणीत दुर्गम शास्त्रों को भक्तों के अधीन कर देने वाली तथा प्रणतजनों के हृदयारविन्द को प्रफुल्ल करने के लिये सूर्यरूप कमला और वसुमती को सदा प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

अत्र परत्र च सौख्यसमष्टि-
श्राणनवर्त्मविबोधनसक्ते ।
शोणनिजाधरनिर्जितबिम्बे
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥८॥

ऐहिक और पारलौकिक सुखों को देनेवाले मार्ग को बतलाने में आसक्त तथा रक्तिम अधर से बिम्ब फल को जीतनेवाली कमला और वसुमती को सदा प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ओं मुखमोचकमन्त्रसमूह-
स्पर्शसमुद्धृतनम्रनिकाये ।
ओं मनुलक्ष्यपरात्पररूपे
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥९॥

भवबन्धन के मोचक प्रणव प्रमुख मन्त्रों के उपदेश से भक्तों का उद्धार करनेवाली एवं अपने परात्पर स्वरूप को प्रणवजप से लक्ष्य बना देनेवाली कमला और वसुमती को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

भक्तजनव्रजसर्वशुगाली-
ध्वंसमनोरथपूरणसक्ते ।
इन्द्रियजिज्जनसत्वरलभ्ये
नौम्यनिशं कमलावसुमत्यौ ॥१०॥

भक्तजनों के समस्त शोकों को नष्ट कर उनके मनोरथों को पूरा करने में आसक्त तथा जितेन्द्रियों को झटिति प्राप्त हो जाने वाली कमला और वसुमती को सदा प्रणाम करता हूँ ॥ १० ॥

श्रीकमलेशनाभिकमलोद्भवस्तोत्रम्

(कनकप्रभा)

भवभीहरं घनकचं भजद्धितं
धवलांशुकं कुशलदाङ्घ्रिपङ्कजम् ।
सुरवन्दितं शुभगुणं जगत्सृजं
कमलेशनाभिकमलोद्भवं भजे ॥१॥

सांसारिक भयों को दूर करने वाले, घन के समान काले बालों वाले, भक्तों के हितैषी, उजवल वस्त्र धारण करने वाले, अपने चरणारविन्द से उपासकों के कुशलता-सम्पादक, देववन्दित, शुभगुणाकर, जगत्स्रष्टा एवं पद्मनाभ के नाभि-कमल से प्रकट होने वाले ब्रह्माजी का मैं भजन करता हूँ ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यमभीतिहृन्मृदुहृदं हरिप्रियं
मुनिसंस्तुतं कनकदं (भं) सुराग्रजम् ।
भवपारदं फणिकचं वरप्रदं
कमलेशनाभिकमलोद्भवं भजे ॥२॥

यम के भय का निवारण करने वाले, कोमलचित्त, हरिप्रिय, मुनियों से संस्तुत, कनक के दाता या कनकप्रभ, देवताओंमें ज्येष्ठ, भव-सागर से पार करने वाले, कृष्ण सर्प के समान केश वाले, वर-दायक पद्मनाभ के नाभि कमल से आविर्भूत ब्रह्माजी का मैं भजन करता हूँ ॥२॥

विनतार्चितं शतधृतिं नताघहृन्
मतिदायकं विधिपरं तपः प्रियम् ।
निखिलेष्टदं सुधिषणं शुचापहं
कमलेशनाभिकमलोद्भवं भजे ॥३॥

भक्तों से पूजित, शतधृति, प्रणत जनों के पाप नाशक वन सद्बुद्धि देने वाले, विधि परायण, तप के प्रेमी, अखिल अभीष्टवस्तुओं के दाता, सुमेधा, शोक-शामक पद्मनाभ के नाभि-कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी का मैं भजन करता हूँ ॥३॥

श्रीक्षितिधरधवतनुजास्तवः

त्रिभुवनततिजनमातर्गणपतिशुचिजसवित्रि ।
सकरुणहृदयपयोजे क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥१॥

हे त्रैलोक्य प्रसविनि, गणपति और कार्त्तिकेय की जननि, सदय हृदय-सरोज-वाली गिरिराजकुमारि, रक्षा करो ॥१॥

उरगपशयनसहोत्थे हिमकरशिशुधरकान्ते ।
उडुपतिविहितवतंसे क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥२॥

हे शेषशायी नारायण की सोदरि, बालेन्दुशेखर की वल्लभे, चन्द्रको शिरो-भूषण बनाने वाली गिरिराजकुमारि, रक्षा करो ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विधिहरिनिजपतिविघ्नेश्वरगुहमुखसुरपूज्ये ।
स्वसुषमविवशितशम्भो (कान्ते) क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥३॥

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, गणपति, कुमार प्रमुख देवों से पूज्य, अपनी अनुपम सुन्दरता से कामारि को भी वशीभूत कर लेने वाली गिरिजे, रक्षा करो ॥३॥

प्रणवगनिजमनुराजे प्रणवत उरुमतमूर्त्ते ।
द्रुतहृतविनतजनार्त्ते क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥४॥

प्रणव से अनुप्राणित मन्त्रराज वाली, प्रणवसे ही अपनी विशाल एवं संयम पूर्ण मूर्त्ति धारण करने वाली, विनत जनों की आर्त्तियों का अतिशीघ्र हरण करने वाली गिरीन्द्रकुमारी रक्षा करो ॥४॥

निटिलगहुतवहकान्ते क्रतुयमपुरहरजाये ।
पशुपतितनुपरिरब्धे क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥५॥

ललाट में अग्निरूप नेत्र धारण करने वाले त्रिलोचन की कान्ता, यज्ञ से यमपुर को नष्ट करने वाले हर की वल्लभा तथा पशुपति के तनु का गाढालिंगन करने वाली गिरिजा रक्षा करो ॥५॥

रथगजहयमुखसम्पत् (सपदिद्कणनिजवीक्षे)प्रदनिजकणिककटाक्षे ।
जितमतिजनसुलभाङ्घ्रे क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥६॥

अपनी कटाक्ष कणिका से रथ, गज, अश्व प्रमुख सम्पत्तियों को देने वाली, जितेन्द्रिय जनों के लिये अपने चरण को सुलभ बना देने वाली गिरिराजकुमारी रक्षा करो ॥६॥

स्ववशगनिखिलकलाले नतवरवितरणदीक्षे ।
विरचितनतततिहर्षे क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥७॥

निखिल कला-कलापों को स्वायत्त रखने वाली, नत जनों को वर देने की दीक्षा लेने वाली, प्रणत जनों को हर्षित करने वाली गिरिराजकुमारी रक्षा करो ॥७॥

क्षितिपितिविभवदपूजे सुरततिकलितपदाब्जे ।
नतवशनिहितसमृद्धे क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥८॥

पूजा करने से राजाओं के वैभव को देने वाली, देववृन्द से वन्दित पादाम्बुजों वाली, नतजनों के अधीन समृद्धि को कर देने वाली गिरीन्द्रकुमारी रक्षा करो ॥८॥

नतजननिकरकृपाब्धे पदनतसुरललनाले ।
स्वनयनरुचिविजितैणि क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥९॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणत जनों पर करुणा सागर, देवांगनाओं से प्रणत पाद, अपने नेत्रों की छवि से मृगियों को जीत लेने वाली गिरीन्द्रनन्दिनी रक्षा करो ॥९॥

इहपरसुखदपदाब्जे स्थिरशुभदायिकटाक्षे ।
पदहृतरुचिपयसीजे (जलजाते) क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥१०॥

अपने चरणारविन्द से ऐहिक एवं पारलौकिक सुखों की दात्री, स्थायी कल्याण दायक कटाक्ष वाली, चरणों की आभा से कमल को पराजित करने वाली गिरिजा रक्षा करो ॥१०॥

तनुरुचिविजितसुवर्णे निरवधिशुभदापाङ्गे ।
दृशिपुनरसुयुतभारे क्षितिधरधवतनुजेऽव ॥११॥

अपनी शारीरिक कान्ति से सुवर्ण को जीत लेने वाली, निःसीम कल्याण दायक अपाङ्ग वाली, आँखोंसे काम को पुनरुज्जीवित करने वाली गिरीन्द्रनन्दिनी रक्षा करो ॥११॥

श्रीगौरीस्तुतिः

[शालिनी]

अङ्गोद्भूतक्रोधलोभप्रमोहमत्तत्वादिद्विष्ट्रधीनातिदूराम् ।
नित्यानित्यव्रातविज्ञावलब्धवैराग्याप्याङ्घ्र्यम्बुजां नौमि गौरीम् ॥१॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि शत्रुओं के अधीन रहनेवाले जनों से अत्यन्त दूर एवं नित्यानित्य के विवेक से विषय पराङ्मुखजनों के लिये सुलभ पादारविन्द वाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

जम्भारातिस्वर्गिवक्त्राम्बुनाथघस्राधीशाद्यर्चितस्वीयपादाम् ।
पादाम्भोजद्वन्द्वषट्पादचेतोजारठ्यार्तिव्रातहां नौमि गौरीम् ॥२॥

इन्द्र, अग्नि, वरुण, सूर्य आदि देवताओं से समर्चितपादों वाली तथा स्वकीय पादपद्मों के मिलिन्द रूप हृदयवाले भक्तों के वार्धक्य जनित दुःखों को नष्ट करने वाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वाणीलक्ष्मीधूतसर्वस्वदर्पीभूतद्रव्याधीशजीवत्वमेताम् ।
अप्यत्यन्ताकिञ्चनाजन्ममूकां विन्दन्ते यत्सन्नतेर्नौमि गौरीम् ॥३॥

जिनके नमन मात्र से अत्यन्त दरिद्र तथा जन्मजात मूक भी प्राप्त लक्ष्मी और वाणी से धनपति एवं सुराचार्य को दर्पहीन कर देते हैं उस गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

धात्रीधर्तृव्रातवंशावतंसक्लेशव्रातक्लिष्टकारुण्यसिन्धुम् ।
स्वर्णोर्वीधृद्वर्ष्मजातां धरित्री-धर्तृक्षोणीपालजां नौमि गौरीम् ॥४॥

क्लेशाविष्ट राजवंशावतंसजनों के लिये कृपासिन्धु, हेमाचलकी अंगजा तथा गिरिराजकुमारी गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

कुम्भीन्द्राश्वस्यन्दनादिप्रदात्रीं कुम्भीन्द्रस्याप्पित्तसम्भूसवित्रीम् ।
कुम्भोद्भूतस्वीयकायार्चिताङ्घ्रिं नम्रालयंहःकृन्तनीं नौमि गौरीम् ॥५॥

गजराज, अश्व, स्यन्दन आदि की दात्री, गजानन की जननी, कुम्भज से पूजित पादों वाली, प्रणतजनों के पापों की नाशिनी गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

आत्मोद्भूतप्रोद्भवस्वाशनालीक्षोणीपालस्वीयतल्पानुजाताम् ।
स्वाङ्गच्छायालेशलेशावधूतप्रोद्यद्द्युम्नाधीश्वरां नौमि गौरीम् ॥६॥

आकाशजन्य पवन के भोक्ता सर्पों के अधिपति शेष को शय्यारूप से स्वीकार करनेवाले नारायण की अनुजा तथा अपने अंगों की कान्ति के लवलेश से उदीयमान सूर्य की आभा को तिरस्कृत करने वाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

लोपामुद्रावल्लभस्योपदेष्टा यत्पादाब्जस्तोत्रगानैकसक्तः ।
विश्वाकारस्वात्मविज्ञानभूतिस्पर्शप्रीतस्वाशयां नौमि गौरीम् ॥७॥

जिसके पादारविन्द के स्तोत्रगान में अतीव आसक्त जन महर्षि अगस्त्य के भी उपदेशक हो सकते हैं उस विश्व के आकार से विवृत आत्मस्वरूप के प्रबोधक प्रीतचित्त गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

काम्यव्रातप्रेप्सुनैजान्तरङ्गपादानम्राशेषकाम्यप्रदात्रीम् ।
देवारातिव्रातनिर्जीवतादशस्त्रभ्राजद्दोश्रयां नौमि गौरीम् ॥८॥

समस्त कामनाओं को प्राप्त करने के इच्छुक पादावनत भक्तों के अशेष मनोरथों की पूरयित्री तथा देवताओं के शत्रुओं को मारनेवाले शस्त्रों से विभूषित हाथोंवाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

ज्ञानोद्रेकोन्मूलिताज्ञानरूप (राशि) चेतोग्रन्थीभूतपादप्रणम्राम् ।
तादृग् (किञ्च) ग्रन्थिच्छेदनानन्तरङ्गमध्यभ्राजत्स्वाकृतिं नौमि गौरीम् ॥९॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अज्ञानात्मक हृदयग्रन्थि को ज्ञान के समुद्रेक से उन्मूलित कर उन निर्ग्रन्थि-हृदय भक्तों से प्रणत एव ग्रन्थिभेद के पश्चात् हृदयारविन्द की कर्णिका पर भ्राजमान दिव्याकृति वाली गौरी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

अम्भोराशिस्त्रीयनीवीभुवःस्वर्मुख्यावासिप्राणिराजीसवित्रीम् ।
उर्वीस्वर्गादीष्टलोकाधिनाथस्थानादिस्पृक्पूजनां नौमि गौरीम् ॥१०॥

सागर-रसना उर्वी पर तथा स्वर्गादि में निवास करनेवाले प्राणियों की जननी एवं पूजन करने वालों को अभिलषित भूतलका स्वामित्व और स्वर्ग लोक का अधीश्वरत्व प्रदान करनेवाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ १० ॥

दोर्दण्डालीखण्डितोद्दण्डचण्डक्रव्याद्भृद्भण्डचण्डादिमघ्नीम् ।
वीक्षालेशैराजयक्ष्मज्वरादिव्याधिव्रातोन्मूलिनीं नौमि गौरीम् ॥११॥

अपने भुजदण्डों से उद्दण्ड और प्रचण्ड दैत्याधिपति मण्ड, चण्ड आदि को मार डालने वाली एवं लेशमात्र दृष्टिपात से राजयक्ष्मा, ज्वर आदि व्याधियों का उन्मूलन कर देनेवाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ ११ ॥

नानारीतिस्वान्तमालिन्यलेशहीनध्यातस्वीयपादारविन्दाम् ।
हस्तभ्राजत्सन्नताभीतिसर्वाभीष्टालीस्पृङ्मुद्रिकां नौमि गौरीम् ॥१२॥

अनेकों प्रकार के मानसिक मलों—काम-क्रोधादिकों के लेश मात्र संसर्ग से रहित निर्विकार जनों द्वारा ध्यात पादारविन्दों वाली एवं प्रणत जनों के लिये अभय एवं वरद मुद्राओं से भ्राजमान हाथों वाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ १२ ॥

अम्भोजातस्वासनाम्भोजनेत्रपाथोजातारातिधृन्मुख्यदेवैः ।
जातीमल्लीतोयभूमुख्यपुष्पमालाश्रेणीपूजितां नौमि गौरीम् ॥१३॥

ब्रह्मा, विष्णु और महेश प्रमुख देवों द्वारा जाती, मल्ली तथा कमल की मालाओं से पूजित गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ १३ ॥

शान्ताशेषस्वीयबाह्येन्द्रियालीरोधश्रद्धाक्षान्तिमुख्यप्रदात्रीम् ।
संसाराम्भोराशिमग्नस्वभक्तसर्वायासव्रातहां नौमि गौरीम् ॥१४॥

शम, दम, श्रद्धा, क्षमा आदि प्रमुख गुणों की प्रदात्री एवं संसार-सागर में निमग्न अपने भक्तों के सम्पूर्ण श्रम का निवारण करने वाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ॥ १४ ॥

स्वीयाङ्गालीयोगयुक्तप्रमुखधसंस्पर्शादिव्रातपादाब्जभृङ्गा (हंसी) म् ।
पादाम्भोजानम्रसङ्घापराधक्षान्त्यम्भोधिस्वाशयां नौमि गौरीम् ॥१५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने पादाब्ज के भृंगों का अपने अंगों के योग आदि से त्राण करने वाली तथा प्रादप्रणत भक्तों के अपराधों को क्षमा करने में क्षमा सिन्धु स्वरूप हृदय वाली गौरी को प्रणाम करता हूँ ।। १५ ।।

सर्वाभीष्टश्राणकस्वार्चनायाः श्रीगौर्या ये स्तोत्रमेतत्पठन्ति ।
तेषां प्राक् स्यात् सर्वविद्याचिरायुर्देहारोग्यश्रीयशोमुख्यसम्पत् ।।१६।।

अपनी अर्चना से सभी अभीष्टों की दात्री श्री गौरी के इस स्तत्र का पाठ जो लोग करते हैं उन्हें शीघ्र ही समस्त विद्यायें, दीर्घ आयु, शारीरिक आरोग्य, लक्ष्मी, यश आदि प्रमुख सम्पत्तियाँ मिल जाती हैं ।। १६ ।।

श्रीगीर्विधिस्तुतिः

[हरनर्तनम्]

चित्तसम्भवरोषलोभविमोहमत्सरदृप्तता-
रूपशास्त्रविनिर्जिताशयदुर्लभाङ्घ्रिसरोरुहौ ।
ऐहिकौर्ध्विकसर्वभोग्यपदार्थजालविराजिता-
मण्डितस्वमनोऽब्जलभ्यपदौ भजे हृदि गीर्विधी ।।१।।

काम, क्रोध, लोभ, विमोह, मत्सर, अभिमानरूप दोषों से शास्त्र के मत को पराभूत करनेवाले हृदय से जिनके चरणारविन्द दुर्लभ बने रहते हैं, ऐहिक सुखों एवं स्वर्गीय आनन्दों के दाता समस्त पवार्थों की स्पृहा से शून्य मन वालों को जिनके चरण सुलभ हैं ऐसे वाणी और विधि का भजन मैं हृदय में करता हूँ ।।१।।

पाकशासनहव्यवाहनभास्करात्मजनिर्ऋति-
श्रीजनुःस्थलनायकानिलमुख्यपूजितपादुकौ ।
पादपाथसिसम्भवद्वयभृङ्गदुर्मतिजारठी-
मुख्यकष्टनिवारणैकपदौ (प्रवणौ) भजे हृदि गीर्विधी ।।२।।

इन्द्र, अग्नि, सूर्य-पुत्र यम, निर्ऋति, लक्ष्मी के पिता के प्रभुनारायण, पवन प्रमुख देवताओं से पूजित पादुकावाले, चरणारविन्द के भृंगभूत भक्तों की दुर्बुद्धि,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वृद्धता आदि प्रधान कष्टों को अपने चरणों से नष्ट कर देनेवाले, वाणी-विधाता का मैं मन में भजन करता हूँ ॥२॥

यत्पदामृतजन्मयुग्मसकृत्स्मृतिप्रभवत्रस्वधी-
विक्तलेशतिरस्कृतद्रविणेशजीवसहस्रताम् ।
अप्यकिञ्चनवंशशेखरमन्दबुद्धिमहीधवाः
प्राप्नुवन्त्यतिसत्वरं सततं भजे हृदि गीर्विधी ॥३॥

जिनके पादारविन्द के एक बार का भी स्मरण हजारों धनपति और वाचस्पति की सम्पत्ति और विद्या को तिरस्कृत करनेवाली लक्ष्मी और सरस्वती को समर्पित कर अतीव दरिद्र एवं मन्द जन को भी समृद्ध एवं बुद्धिमान् बना देता है उन वाणी और विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥३॥

नित्ययौवनमण्डितक्षितिधारकाङ्गसमुद्भव-
तौहिनाद्रितनूभवाभवमातृतातपदस्थितौ ।
जन्ममृत्युजरावियोगरुजादिरूपभवाम्बुधि-
मग्नदीननमत्कृपाजलधी भजे हृदि गीर्विधी ॥४॥

नित्य यौवन से मण्डित गिरिराज कुमारी गौरी के प्राणधन शंकर के माता-पिता, जन्म, मृत्यु, जरा, वियोग, रोगादि रूप संसार-सागर में निमग्न दीन भक्तों के लिये कृपासिन्धु वाणी और ब्रह्मा का भजन मैं मन में करता हूँ ॥४॥

मत्तकुञ्जरकोशसैन्धवपत्तिमुख्यविराजित-
श्रीकदम्बवितारणोद्धतपादपद्मसमर्चकौ ।
जन्मकोटिसहस्रसञ्चितसाम्प्रतार्जितपातक-
व्रातकाननदाववह्नितती भजे हृदि गीर्विधी ॥५॥

अपने पादारविन्द के पूजकों को मत्त-मतंग, कोष, घोड़े, पैदल सिपाही आदि प्रमुख पदार्थों से विराजित राजलक्ष्मी आदि का वितरण करनेवाले, हजारों कोटि-कोटि जन्मों में संचित एवं इस जन्म में उपार्जित पापापुंजरूपी कानन के लिये दावानल रूप वाणी और विधि का मैं मन में भजन करता हूँ ॥५॥

कालरूपमहासरीसृपमण्डलक्षितिपालक-
दिव्यभोगकृतस्वतल्पकपूरुषोत्तममोददौ ।
नैजविग्रहराजमानमहार्घमिल्व (वि) विजित-
तप्तकाञ्चनसर्वदर्पतती (पद्मगर्भरुची) भजे हृदि गीर्विधी॥६॥

कालरूप महासर्पेन्द्र शेष के दिव्य शरीर की पुरुषोत्तम को हर्ष-प्रद शय्या के रूप में व्यवस्था करनेवाले, अपने अनुगम शरीर की दीप्ति से तप्तकार्त्तस्वर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

की आभा को भी मन्दप्रभ बनानेवाले वाणी और ब्रह्मा का मन में मैं भजन करता हूँ ॥६॥

वल्लकीधरपाणिपद्मपराशरात्मजतत्तनू-
भूमृकण्डुकलेवरोद्भवशौनकादिमुनिस्तुतौ ।
यः क्षराक्षरवस्त्वतीतप्रभुत्तमःप्रथितश्रुति-
व्रातलोकचयेष्वदः पददौ भजे हृदि गीर्विधी ॥७॥

वीणापाणि नारद, व्यास, शुक, मार्कण्डेय, शौनक, मुनियों से स्तुत, क्षर और अक्षर से अतीत पुरुषोत्तम को प्रख्यात वेदों में वर्णित लोकों में उत्तम स्थान देनेवाले वाणी और विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥७॥

नैजपादपयोजनुर्मधुकृत्सकामजनावली-
सर्वकाङ्क्षितदापनव्रतदीक्षितस्वकटाक्षकौ ।
कृत्रिमेनरगीश्चयोदितधर्ममुख्यचतुर्विध-
पूरुषार्थवितारकाङ्घ्रिनती भजे हृदि गीर्विधी ॥८॥

अपने पादारविन्द के मधुकर रूप सकाम भक्तों से लिये समस्त अभीष्ट पदार्थो को दान करने की दीक्षा में दीक्षित कटाक्षों वाले, अपने चरणों में प्रणामार्पण करनेवालों को वेद-बोधित पुरुषार्थचतुष्टय का प्रतिपादन करनेवाले वाणी और विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥८॥

अङ्घ्रिसन्नतमस्तकस्थसहस्रपत्रमुखाम्बुभू-
व्रातमध्यकृतालयत्वविबोधकाम्बुजविष्टरौ (सनपङ्कजौ) ।
नैजवासविकासितानतहृत्पयोरुहदीपित-
ब्रह्मबोधमहाप्रदीपमणी भजे हृदि गीर्विधी ॥९॥

अपने चरणों में सम्यक् नत भक्तों के मस्तकों में रहनेवाले सहस्रदल कमलों के मध्य में निवास करनेवाले चित्तत्त्व के प्रबोधक पादाम्बुजों वाले, अपने वास-स्थली के समीप अर्थात् मन्दिर के पास आनत जनों के हृत्पुण्डरीक में ब्रह्मबोध नामक महामणि को दीपित करनेवाले वाणी और विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥९॥

नीरधिव्रजनीविकाभुवरादिलोकचतुर्दशी-
मण्डलीजननीजनुःप्रदताविभास्वरमूर्त्तिकौ ।
तोयराशिचतुष्टयावरणाङ्कनायकतामुखा-
भीष्टदानपरायणस्वमती भजे हृदि गीर्विधी ॥१०॥

भू-लोक प्रमुख चतुर्दश भुवनों को उत्पन्न करनेवाली महाशक्ति को आविर्भूत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करनेवाले दिव्य विग्रहधारी, चतुःसागरावेष्टित मही के आधिपत्य प्रमुख अभीष्ट पदार्थों को देने में अनुरक्त चित्तवाले वाणी और विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥१०॥

नैजपादमिषाभृतोद्भवचिन्तनालवकृन्मनो-
मानसाश्रयगाढ़सन्तमसार्ककोटिकटाक्षकौ ।
कुष्ठपाण्ड्वपसंस्मृतिज्वरराजयक्ष्ममुखाखिल-
व्याधिजालमहौषधिस्मरणौ भजे हृदि गीर्विधी ॥११॥

अपने पादपद्मों के चिन्तन के लेश से भी मन में स्थिर गहन अविद्यान्धकार को दूर करनेवाले कोटि सूर्य समप्रभ कटाक्षवाले, स्मरणमात्र से कुष्ठ, पाण्डु, अपस्मार, ज्वर, राजयक्ष्मा प्रमुख समस्त व्याधि जाल को नष्ट कर देनेवाले वाणी और विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥११॥

पुष्प (पञ्च) सायकतत्सहोदरपञ्चकाकृतिशात्रव-
व्रातकाहलधीविकारविवर्जितव्रजचिन्तितौ ।
स्वीयपादसरोजनुर्जनिधूलिलेशपराशया-
भीष्टदापनभीविनाशकरौ भजे हृदि गीर्विधी ॥१२॥

कामादि षट्सपत्नों से निर्विकार मतिवाले भक्तों से ध्यात, अपने पादारविन्द के परागकण से पवित्रात्माओं के लिये अभीष्ट पदार्थों को प्रस्तुत करके भय-निवारण करनेवाले वाणी और विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥१२॥

यत्स्नुषातनुसम्भवस्वकलेवरत्वयुतौ स्वयं
यौ तथा च निजस्नुषातनुजातकायपदस्थितौ ।
एनयोश्च तयोरपि प्रणतानिशप्रमदावली-
दायिनैजचरित्रतारुचिरौ भजे हृदि गीर्विधी ॥१३॥

जो वाणी और विधिरूपसे प्रकट दम्पति कभी तो हर-गिरिजा के पुत्र और पुत्रवधू के रूप में परिणत हो जाती हैं तथा कभी-कभी स्वयं हरगिरिजा की भूमिका में अवतीर्ण हो जाती हैं एवं कभी-कभी उन्हें ही अपने पुत्र और पुत्रवधू के रूपमें बना लेती हैं इस तरह शक्ति-संयुत त्रिदेवोंके विभिन्न रूप में अभिव्यक्त होने वाले और प्रणत-जनों को निरन्तर सुख देने वाले शोभन चरित्र से मनोहर वाणी और विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥१३॥

अन्तरिन्द्रियशान्तिबाह्यविनिग्रहाखिलसोढ्ता-
सर्वसङ्गविहीनतास्तिकतामुखप्रदचिन्तनौ (संस्मृती) ।
गण्यभिन्नजंतुमूर्तिव्रजनैजरूपमहाम्बुधि-
मग्ननम्रजनाखिलश्रमहौ भजे हृदि गीर्विधी ॥१४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिनके चिन्तन से मानसिक शान्ति, इन्द्रिय विजय, सहन शक्ति, आसक्ति-राहित्य एवं आस्तिकता प्रमुख तत्त्वों की प्राप्ति होती है एवं जिनके रूप-महासिन्धु में निमग्न नम्र जनों के अनन्त जन्म-मरण के क्लेश नष्ट होते हैं उन वाणी-विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥१४॥

पादपद्मनमस्कृतिप्रियमानसालियमादिभी-
वारणार्थमतिद्रुतं प्रतिपादितात्मयमादिकौ ।
क्षान्तिवारुणकेतनायितचित्तपङ्कजमर्षित-
भक्तवर्गकृताखिलाघतती भजे हृदि गीर्विधी ॥१५॥

अपने पादारविन्द में नमन करने से प्रसन्न होने वाले, भक्तों को यमराज आदि के भय से बचाने के लिये आत्म-संयम आदि के वरदान देने वाले, भक्त-वृन्द के समस्त पाप-पुंज को अपने क्षमा-सागर रूप हृदय-पङ्कज में क्षमा करने वाले वाणी-विधि का भजन मैं मन में करता हूँ ॥१५॥

नम्रसर्वसमीहितार्थवितारकस्मृतिपादयो-
र्गीःपयोजजयोपदस्तुतिमादरात् पठतामिमाम् ।
दीर्घमायुररोगितासुकलत्रसच्चरितात्मज-
मानहीनरमाकला (वचो) र्णवता भवेयुरतिद्रुतम् ॥१६॥

जिनके चरणों की स्मृति प्रणत-जनों के समस्त अभिलषित पदार्थों को देती रहती है उन वाणी और विधि की स्तुति का पाठ करने वाले लोगोंको अतिशीघ्र दीर्घ आयु, आरोग्य, उत्तम पत्नी, सच्चरित पुत्र, असीम धन-सम्पत्ति आदि मिल जाते हैं ॥१६॥

श्रीगोपालकृष्णस्तुतिः

[शार्दूलविक्रीडितम्]

गोकर्णाखिलमङ्गलायितमहासत्त्वाङ्घ्रिलग्नाशयं
गोकर्णाखिलगर्वचर्वणचणस्वक्षान्तिविश्राणकम् ।
गोकर्णाधिपभोगभाञ्चिततनुच्छायं जगत्पावनं
गोकर्णाधिखिलान्तरारिहृतये गोपालकृष्णं भजे ॥१॥

समस्त मंगलों के आयतन महाप्राण गोकर्ण के चरणों में आसक्त चित्त, गोकर्ण के सम्पूर्ण गर्व को चबा जाने में प्रसिद्ध अपनी क्षमा के दाता, गोकर्ण के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अधीश्वर की शारीरिक कान्ति से मिश्रित दैह्निक छायावाले, जगत् को पवित्र बनानेवाले, कामादि समस्त आन्तरिक शत्रुओं के नाशार्थ गोपालकृष्ण को भजता हूँ ॥१॥

●

श्रीगौरीस्तुतिः

[नन्दनम्]

अगणितकोटिलोकजननीमनेकपाद्यर्चितां (गणेट्षडास्यार्चितां)
निरवधिकारुणीजलनिधिं शुभालिविश्राणिकाम् ।
रथगजवाजिमुख्यदनतिं स्मरारिचित्तेश्वरीं
हृदयसरोजनुष्यविरतं नमामि गौरीमहम् ॥१॥

अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड की जननी, गणपति प्रभृति से अर्चित, निःसीम करुणा के सागर, शुभ-समूह की दात्री, प्रणाम करनेवालों को रथ, गज, वाजि प्रमुख पदार्थों को देनेवाली, कामरिपुशंकर की हृदयेश्वरी गौरी को मैं हृदयारविन्द में नमन करता हूँ ॥१॥

जितसुभकामकाप्यचरणां (सकलकलावलीप्रदकृपां) नतप्रमोदप्रदां
प्रणतजनेष्टदाननियमां भुजङ्गतल्पानुजाम् ।
जलनिधिजातभासिशिरसं श्रितेष्टदानव्रतां
हृदयसरोजनुष्यविरतं नमामि गौरीमहम् ॥२॥

काम को जीतने वालों को सुलभ (अपनी कृपा से समस्त कला-कलापों की दात्री), प्रणतजनों को प्रमोद देनेवाली, भक्तजनों को अभीष्ट वस्तु देने का नियम करनेवाली, शेषशायी की अनुजा, चन्द्र-कला से मण्डित शिर, शरणागतों को अभीष्ट फल देनेवाली गौरी को मैं हृदयारविन्द में नमन करता हूँ ॥२॥

नतकरुणाभृतोद्भवभुवं ललाटनेत्रप्रियां
सुरललनादिचर्चितपदां (गेयचरणां) मनोज्ञवर्ष्मोज्ज्वलाम् ।
कणभुगहीन्द्रमुख्यनयदां शशाङ्कधृद्वल्लभां
हृदयसरोजनुष्यविरतं नमामि गौरीमहम् ॥३॥

प्रणतजनों के लिये कृपा-सिन्धु, त्रिलोचन की वल्लभा, सुरांगनाओं से पूजित पाद-पद्मोंवाली, मनोज्ञ शरीर-कान्ति से समुज्ज्वल, वैशेषिक, पातञ्जल प्रभृति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शास्त्रों के रहस्य-ज्ञापन करनेवाली, चन्द्रशेखर की प्रेयसी गौरी को मैं हृदय-सरोज में नमन करता हूँ ॥३॥

अखिलसुरव्रजार्चितपदां समृद्धिसङ्घातदां
प्रणवनिजाभिधानलिसि (सि) तां तदर्णजापिप्रियाम् ।
विषयपराङ्मुखालिसुलभामिहोर्ध्वभव्यप्रियां
हृदयसरोजतुष्यविरतं नमामि गौरीमहम् ॥४॥

समस्त देव-वृन्द से वन्दित पादोंवाली, समृद्धि-समुदाय की दात्री, प्रणवाख्य अपने नाम से सुशोभित, प्रणव जप करनेवालों पर प्रसन्न रहनेवाली, विषय-विमुखजनों को सुलभ, ऐहिक और स्वर्गीय रम्य फलों की प्रेमिका गौरी को मैं हृदय-सरोज में नमन करता हूँ ॥४॥

अधरविधूतबिम्बरुचिकां तनूजितोद्यद्रविं
मनोरिपूपगूढवपुषं समस्तभूतिप्रदाम् ।
गणपतिषण्मुखादिकलितामजाच्युताद्यर्चितां
हृदयसरोजतुष्यविरतं नमामि गौरीमहम् ॥५॥

अपने अधर से बिम्बाफल की आभा को निष्प्रभ करनेवाली, शरीर की कान्ति से उदीयमान रवि को जीतनेवाली, कामारि से आलिंगितांगी, समस्त विभूतियों की दात्री, गणेश, षण्मुख प्रभृति से पूजित, ब्रह्मा, विष्णु आदि से अर्चित गौरी को मैं मनःसरोज में नमन करता हूँ ॥५॥

●

श्रीगौरीसिन्धुजाताब्रह्मरमणीस्तवः

[स्रग्धरा]

भक्ताभीष्टप्रयात्रीर्गजरथमुखदा दीनकारुण्यसिन्धू-
र्नागेड्वर्ण्यापदाना नतसुखजननीः पूरिताङ्घ्रिश्रिताशाः ।
ईहाशून्याप्यपादा विविधविभवदाः स्वर्गिनार्यादिगीताः
श्रीगौरीसिन्धुजाताम्बुजजनिरमणीर्भावयाम्यन्तरङ्गे ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तों के अभीष्ट पदार्थों को देनेवाली, गज, रथ प्रमुख वस्तुओं की दात्री, दीनजनों के लिये करुणार्णव, शेषनाग से गीति-कीर्ति, प्रणतजनों को सुखद, शरणागतों की अभिलाषा को पूरक, निष्काम जनों को सुलभ, अनेकानेक वैभव देनेवाली, अप्सरा आदिकों से प्रशंसित श्री गौरी, लक्ष्मी और सरस्वती को मैं मन में भावना करता हूँ ॥१॥

कारुण्याब्धिस्वचित्ताः सलिलजनयनाश्चन्द्रराजत्स्वशीर्षा
लावण्याब्धिस्वकाया नतनयचयदाश्चन्द्रहुङ्कारिहासाः।
ॐ जापि प्रीतचित्ता इहपरसुखदा ॐ निजाख्यामनोज्ञाः
श्रीगौरीसिन्धुजाताम्बुजजनिरमणीर्भावयाम्यन्तरङ्गे ॥२॥

करुणा-सागर स्वरूप चित्तों वाली, कमलनयन, चन्द्रमा से अलंकृत शिर हैं जिनके ऐसे लावण्य-सिन्धुरूप शरीरोंवाली, प्रणतजनों को समस्त नीतियाँ सिखाने वाली, अपने हासों की उज्ज्वलता से चन्द्र को भीत करनेवाली, प्रणव जप करनेवालों पर प्रसन्नचित्त, ऐहिक और पारलौकिक सुखों की दात्री, अपने प्रणव नाम को सर्वाधिक पसन्द करनेवाली, श्री गौरी, लक्ष्मी और शारदा को मैं मन में भावना करता हूँ ॥२॥

अज्ञानाख्यान्धकारप्रहृतिदिनमणिस्वीयदिव्योपदेशा
भक्तालीसर्वकष्टप्रशमनसकलाभीष्टभव्यप्रदात्रीः।
शोणाब्जन्यक्कृदङ्घ्रिविरतिदचरणाः पार्वतीमागिरः श्रीः
श्रीगौरीसिन्धुजाताम्बुजजनिरमणीर्भावयाम्यन्तरङ्गे ॥३॥

अपने सूर्याभ दिव्य उपदेशों से अज्ञानान्धकार दूर करनेवाली भक्तजनों के सम्पूर्ण कष्टों को नष्ट करके अखिल अभीष्ट पदार्थों की दात्री, रक्तकमल से भी मनोहर चरणों से वैराग्य देनेवाली, पार्वती, लक्ष्मी और वाणी की भावना मैं मन में करता हूँ ॥३॥

●

श्रीभृगुसुतावसुधातुलसीहरिस्तुतिः

[द्रुतविलम्बितम्]

भजदभीष्टदनिर्जरभूरुहान्
भवभयव्रजभञ्जनतत्परान्।
भुजगभृङ्गविजिष्णुकचान् भजे
भृगुसुतावसुधातुलसीहरीन् ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भजन करनेवालों के लिये कल्पतरु, भव-भय-भंजन में तत्पर, भुजग और भृंग की नीलिमा को जीतनेवाले कचों से युक्त भार्गवी, वसुधा, तुलसी और हरि का मैं भजन करता हूँ ।।१।।

चरणधिक्कृतपाथसिसम्भवान्
वरदपादपयोभवसंस्मृतीन् ।
शरद[दुद]प्रदजिष्णुपटान् भजे
भृगुसुतावसुधातुलसीहरीन् ।।२।।

जलज-विजेता चरणोंवाले, स्मरण मात्र से वरदायक चरणाम्बुजों वाले, शरदम्बराभ उज्ज्वल वस्त्रभारी भार्गवी, वसुधा, तुलसी और हरि का मैं भजन करता हूँ ।।२।।

प्रणतकाम्यवरस्पृशितत्परान्
दिविजनम्यपदाम्बुजनुर्युगान् ।
निखिलरम्यगुणाम्बुनिधीन् भजे
भृगुसुतावसुधातुलसीहरीन् ।।३।।

प्रणतजनों के काम्य पदार्थों के वितरण में तत्पर, देववन्द्य युगल चरणाम्बुजों वाले, समस्त सद्गुणों के सागर भार्गवी, वसुधा, तुलसी और हरि का मैं भजन करता हूँ ।।३।।

कचपराजितकृष्णभुजङ्गमान्
प्रणतदीनजनालिकृपाम्बुधीन् ।
प्रणयकृत्तकृतान्तभयान् भजे
भृगुसुतावसुधातुलसीहरीन् ।।४।।

काले साँपों को अपने बालों से पराजित कर देनेवाले, प्रणतदीनजनों के लिये करुणासिन्धु, प्रेमसे यम-भीति के निवारक भार्गवी, वसुधा, तुलसी और हरि का मैं भजन करता हूँ ।।४।।

चरणपङ्कजसन्नतमेनका-
जनिधवाब्जजनारदशौनकान् ।
कनकनीरदवर्णतनून् भजे
भृगुसुतावसुधातुलसीहरीन् ।।५।।

मेनका के जामाता, पद्मयोनि, नारद और शौनक से अभिवन्दित पादपद्मोंवाले, स्वर्णाभ और घनश्यामल शरीर धारण करनेवाले भार्गवी, वसुधा, तुलसी और हरि को मैं भजता हूँ ।।५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वसननिर्जितशारदनीरदान्
लघुभवाभिधनीरधिपारदान् ।
चरणसन्नतकाङ्क्षितदान् भजे
भृगुसुतावसुधातुलसीहरीन् ॥६॥

अपने वस्त्रों से शारद नीरद को जीतने वाले, क्षुद्र संसार-सागर से पार कर देनेवाले, चरणों में नत जनों को अभिलषित पदार्थ प्रदाता, भार्गवी, वसुधा, तुलसी और हरि का मैं भजन करता हूँ ॥६॥

पदनमद्विनतातनुसम्भवान्
पदयुगीविनताघनिकृन्तकान् ।
तनुलसत्कमलाभरणान् भजे
भृगुसुतावसुधातुलसीहरीन् ॥७॥

वैनतेय से वन्दित पादों वाले, चरण-युगल में प्रणतजनों के पापपुंज को नष्ट करनेवाले, कमलाभरणों से सुशोभमान शरीरों वाले भार्गवी, वसुधा, तुलसी और हरि का मैं भजन करता हूँ ॥७॥

कणभुगादिनयव्रजबोधदान्
ऋणमुखार्त्तिहराङ्घ्रिरजःकणान् ।
रणनिवारितदैत्यततीन् भजे
भृगुसुतावसुधातुलसीहरीन् ॥८॥

काणाद दर्शन आदि शास्त्रों के बोधक, अपने चरणों की धूलि के कण से ऋणादि कष्टों के नाशक, रण में दैत्यों को पराजित करनेवाले भार्गवी, वसुधा, तुलसी और हरि का मैं भजन करता हूँ ॥८॥

अखिलकष्टविनष्टिपुरःसरं
प्रणमदिष्टसमष्टिवितारकाः ।
निजपदाष्टकसंस्तुतपादुका
धनमुखाष्टकमाशु ददत्यमी ॥९॥

प्रणतजनों के अखिल क्लेश नाशनपूर्वक इष्ट-समष्टि के दाता, अपने इस पादाष्टक से वन्दित पादुकावाले ये देवधनादि आठों सिद्धियों को शीघ्र ही दे देते हैं ॥९॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीजलनिधिपुत्रीस्तवः

[कुसुमविचित्रा]

निरवधिकोटित्रिभुवनसंज्ञा-
स्वुजभवनाण्डप्रचयसवित्रीम् ।
कुसुमकदम्बस्वशरसवित्रीं
हृदि कलये श्रीजलनिधिपुत्रीम् ॥१॥

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डों की जननी तथा कुसुमसायक की सवित्री श्रीजलधिसुता का हृदय में ध्यान करता हूँ ॥१॥

निरुपमनैसर्गिककरुणाम्भो-
निधिहृदयां श्रीकमलजगेहाम् ।
नतजनसर्वेप्सितवरदात्रीं
मनसि दधे श्रीजलनिधिपुत्रीम् ॥२॥

अनुपम स्वाभाविक करुणावरुणालय स्वरूप हृदय वाली, सुन्दर क[illegible] को आलय बनाने वाली तथा प्रणतजनों के समग्र मनोरथों को पूर्ण करने वाली श्री जलधिसुता का हृदय में ध्यान करता हूँ ॥२॥

रथगजवाजिप्रमुखसमस्ता-
भ्युदयदपादाम्बुजनतिलेशाम् ।
असुरहृवक्षःस्थलकृतवासां
शरणमये श्रीजलनिधिपुत्री(कन्या)म् ॥३॥

चरणसरोज में लेशतः प्रणतजनों के भी अभ्युदय को सम्पादन करने में रथ, गज, वाजि आदि समस्त प्रमुख पदार्थों की दात्री, असुर निकन्दन भगवान् के वक्षःस्थल में निवास करनेवाली श्रीजलधिसुता की शरण लेता हूँ ॥३॥

जितनिजचित्तेन्द्रियततिवीक्ष्यां
नतजनमोदाम्बुनिधिशशाङ्काम् ।
अखिलकलालीस्पृशिचणपूजां
हृदि कलये श्रीजलनिधिवासाम् ॥४॥

चित्त और इन्द्रियों को वश में रखनेवालों के लिये दृश्य, प्रणतजनों के मोद सिन्धु के लिए पूर्ण चन्द्र, पूजा करने वालों को सकल कला-कलापों के दान में प्रसिद्ध श्री जलधिसुता को हृदय में भजता हूँ ॥४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उरगपभोगोज्ज्वल [तम] तल्प (शय्य)-
प्रवणहृदम्भोजनुषमजस्रम् ।
(प्रवणहृदम्भःप्रजनुषमम्बाम्)
उडुरमणाग्रप्रभवशरीरां
मनसि दधे श्रीकमलजगेहाम् ॥५॥

शेषशायी भगवान् के अत्यन्त रम्य तल्प पर सतत आनन्द में संलग्न हृदयारविन्द वाली, चन्द्र की अग्रजा श्री पद्मालया को हृदय में धारण करता हूँ ॥५॥

विदनजनाली (पद्विनताली) हृदयगकाङ्क्षा-
धिकसकलार्थस्पृशिरतचित्ताम् ।
निखिलनिलिम्पव्रजनुतपादां
मनसि दधे श्रीकमलजगेहाम् ॥६॥

प्रणतजनों के हार्दिक मनोरथों से भी अधिक अर्थों को देने में आसक्तचित्त एवं समस्त देव वृन्द से वन्दित चरणोंवाली पद्मालया को हृदय में धारण करता हूँ ॥६॥

स्वनिकट (सविध) राजत्सकलसमृद्धि-
द्रुततरदानोद्धृतनतपूगाम् ।
अमृतजनुर्दृग्दृढ (असुरजनालीरिपु) परिरब्धां
शरणमये श्रीजलनिधिजाताम् ॥७॥

अपने सन्निधान में विराजमान समस्त समृद्धियों को अति शीघ्र प्रदान कर प्रणतजनों का उद्धार करनेवाली एवं कमलनयन नारायण से दृढ़ आलिंगित श्री जलधि कन्या की शरण जाता हूँ ॥७॥

तनुमतिसुषमाप्रभृतिसमस्त-
स्वगुणनिकायप्रमुदितकान्ताम् ।
विभवदभूयोभवहरपादां
मनसि भजे श्रीजलनिधिपुत्रीम् ॥८॥

अपने शरीर और बुद्धि की सुषमा प्रभृति समस्त गुणगणों से कान्त को प्रमुदित करनेवाली, धन देनेवाली तथा भवसागर से पार करनेवाली श्रीजलधिनन्दिनी को मन में भजता हूँ ॥८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कमलजनैजप्रियविषमाक्ष-
प्रमुखसुरालीनुतपादाब्जाम् ।
अमितकृपाम्भोनिधिनिजचित्तां (हृदयाब्जां)
मनसि दधे श्रीजलनिधिपुत्रीम् ।। ।।९।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रभृति प्रमुख देवताओं से प्रणत पादारविन्दवाली और अमित कृपा सिन्धु रूप अपने चित्त से प्रशस्त श्री जलधिसुता को मन में धारण करता हूँ ।।९।।

सुरुचिरशोणाधरजितबिम्बां
निजवदनाब्जाधरितनिशेशा (शशाङ्का)म् ।
निखिलनयालीप्रदकरुणाढ्यां
मनसि भजे श्रीजलनिधिकन्याम् ।।१०।।

अति रुचिर एवं रक्त अधर से बिम्ब को जीत लेने वाली, अपने मुखारविन्द से चन्द्र को निष्प्रभ बना देने वाली, समस्त शास्त्रों के तत्त्व ज्ञान को प्रदान करने की कृपा से समृद्ध श्री जलनिधि कन्या को मन में भजता हूँ ।।१०।।

निजपदपूजासुलभितभूमि-
त्रिदिवगभोगस्वपदपरागा (चरणधूलि) म् ।
सितकरशीतस्वहृदयपद्मां (वृत्ति)
शरणमये श्रीजलनिधिजाताम् ।।११।।

अपने पद के पूजकों को चरण रज से ऐहिक तथा आमुष्मिक भोगों को देने वाली, चन्द्रमा के समान शीतल हृदयारविन्द वाली श्री जलधिकुमारी की शरण लेता हूँ ।।११।।

प्रणवरहस्यप्रणयियमीन्द्र-
प्रमदविधानप्रथितयशस्का (निजाख्या) म् ।
प्रणवयुतश्रीमनुजप (प्रणवजपश्रीश्रीजप) तुष्टां
हृदि कलये श्रीजलनिधिपुत्रीम् ।।१२।।

प्रणव के रहस्य में प्रेम करने वाले योगीश्वरों के आनन्द विधान में प्रथित कीर्त्ति, प्रणवपूर्वक श्रीमन्त्र के जप से सन्तुष्ट होने वाली श्री जलनिधि की कन्या को हृदय में धारण करता हूँ ।।१२।।

विषयसुखेच्छारहितजिताक्ष-
व्रजसुलभाप्यस्वपदपयोजाम्
त्रिभुवनपाल (पातृ) प्रमुहृदयेशीं
शरणमये श्रीजलनिधिकन्याम् ।।१३।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वैषयिक सुखों की इच्छा से रहित एवं जितेन्द्रिय जनों के लिये अपने पादारविन्द को सुलभ बनाने वाली, त्रिलोक पालक भगवान् के हृदय को अधीश्वरी श्री जलधिसुता की शरण में जाता हूँ ॥१३॥

निजतनुदिव्यच्छविनिकुरुम्ब-
प्रहसितराकाहिमकरकोटिम् ।
यममुखभीतिप्रशमनचुञ्चुं
हृदि निदधे श्रीजलनिधिपुत्रीम् ॥१४॥

अपने शरीर की दिव्य कान्ति छटा से पूर्णिमा के कोटि-कोटि सुधाकर का उपहास करने वाली एवं यमादि को भीति के प्रशमन में प्रसिद्ध श्री जलनिधि नन्दिनी को हृदय में धारण करता हूँ ॥१४॥

श्रीतुलसीस्तवः

[प्रमदाननम्]

भ्रमराम्बुदाहिकचां भवाखिल [दुःखशोक] हरां
वरदानसक्तहृदं सरोजकरां शरासनवाससम् ।
अतिरम्यवर्ष्मधियं भजत्प्रियदां निलिम्पनमस्कृतां
हृदि भावयाम्यनिशं [मुदा] हरिवल्लभां तुलसीमहम् ॥१॥

भ्रमर, मेघ एवं सर्प सदृश कृष्णकेश वाली, संसार के सम्पूर्ण दुःख, शोकों की शमनी, वरदान देने में आसक्त चित्त, कर में कमल धारण करने वाली, शुक्लाम्बरधारिणी, अतीव रम्य शरीर और बुद्धि वाली भक्तों के समीहित पदार्थों की दात्री, देववन्दिता, हरिवल्लभा तुलसी की मैं मन में प्रमोद से सदा भावना करता हूँ ॥१॥

करुणामृताम्बुनिधिं कृतार्थनतां कृतान्तभयापहां
घनमेचकावयवां मनोरथदां सुरव्रजसंस्तुताम् ।
वरपूगदानरतां भवार्तिहरां फणिच्छविकुन्तलां
हृदि भावयाम्यनिशं [मुदा] हरिवल्लभां तुलसीमहम् ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करुणासिन्धु, प्रणतजनों को कृतार्थ करने वाली, यमभीतिनाशिनी, घनश्याम सदृश श्याम अंगों वाली, मनोरथदायिनी, देववृन्दनमस्कृत, वर-समूहों के दान में रत, भव-बाधा को दूर करने वाली, सर्पाभ श्यामल केशों वाली हरिवल्लभा तुलसी की भावना मैं प्रमोद से मन में सदा करता हूँ ॥२॥

विनतासनाङ्घ्रिरतां नताघहरां घनस्तनमण्डितां
हरिणापजिन्नयनां नयनावधूतमृगां नयव्रजदायिकाम् ।
ज्वरमुख्यसर्वनतालिकष्टहरामभीष्टदसंस्मृतिं
हृदि भावयाम्यनिशं [मुदा]हरिवल्लभां तुलसीमहम् ॥३॥

विष्णु के चरणों में रति करने वाली, प्रणतजनों के पापों की नाशिनी, घन स्तनों से अलंकृत, नयनों से मृगों को जीतने वाली, चन्द्रमुखी, शास्त्रों की प्रबोधिका, प्रणत जनों के ज्वर प्रमुख कष्टों की नाशिनी, अपनी सम्यक् स्मृति से अभीष्टपदार्थों की दात्री हरिवल्लभा तुलसी की भावना मैं मन में मोद के साथ सदा करता हूँ ॥३॥

श्री पद्मप्रभवरमणीस्तवः

[मन्दाक्रान्ता]

अत्रोर्ध्वं चाखिलविधिकृतिप्राप्यभोगालिवाञ्छा-
हीनस्वान्तव्रजसुलभसंदृष्टिपादारविन्दाम् ।
सारागाद्यैर्मलिनमनसां दुर्लभस्वाङ्घ्रिपद्मां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥१॥

ऐहिक और पारलौकिक-अखिल विधि विधानों से प्राप्य सम्पूर्ण भोगों की स्पृहा से रहित अन्तःकरण वाले निष्काम-उपासकों को जिनके पादारविन्द के दर्शन सुलभ हैं, एवं राग द्वेषादि विकारों से मलिनमना लोगों के लिये जिनके पादपद्म दुर्लभ हैं ऐसी ब्रह्मा की प्रियतमा वाणी की भावना मैं अपने हृदय में करता हूँ ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वीयापाङ्गप्रपतनलवोन्मूलितस्वीयभक्त-
व्राताशेषामयततिजराजारठोमुख्यकष्टाम् ।
स्वःसेनानीश्वशुरहविरान्मुख्यदेवार्चिताङ्घ्रि
देवीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥२॥

अपने अपांग-पात के लेश मात्र से ही निज भक्तजनों के अशेष रोग-समूह तथा वार्धक्य के कष्टों को उन्मूलित करने वाली, कार्त्तिकेय, नारायण, अग्नि प्रमुख देवताओं से समर्चित पादारविन्द वाली स्वयम्भू की वल्लभा वाणी की भावना मैं हृदय में करता हूँ ॥२॥

यक्षाधीशत्रिदशगुरुसंह्लेपकद्रव्यविद्ये
यत्पादाम्भोभवयुगसकृत्संस्मृतेर्लेशतो द्राक् ।
अत्यन्ताकिञ्चनजनिजडानप्यहो संश्रयेते
श्रीमत्पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥३॥

जिनके चरणारविन्द का एक बार भी किया गया स्मरण शीघ्र ही कुबेर की सम्पदा और वाचस्पति की विद्या को लज्जित करने वाली सम्पत्ति और संवित् अत्यन्त दरिद्र और अतीव जड की सेवा में लग जाती हैं उस सुशोभन पद्म से प्रकट ब्रह्माजी की रमणी वाणी की भावना मैं अन्तर्हृदय में करता हूँ ॥३॥

क्षीराम्भोधिप्रभवविहितस्वावतंसप्रियाम्बा-
तातभ्राजच्छिखरगपुरीनायकप्राणकान्ताम् ।
भक्तव्राताखिलविधशुचाहर्तृकारुण्यवीक्षाम्
अम्बां पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥४॥

क्षीर सागर से उद्भूत चन्द्रमा को अपना अवतंस बनाने वाले चन्द्रशेखर की प्रिया अम्बिका के पिता हिमालय के भ्राजिष्णु शिखर पर बसी हुई नगरी (स्वर्ग) के नायक ब्रह्माजी की प्राणप्रिया, अपने करुणापूर्ण वीक्षण से भक्तवृन्द के समस्त शोकों का अपहरण करने वाली पद्मासन की वल्लभा अम्बिका (सरस्वती माता) की भावना मैं हृदम में करता हूँ ॥ ४ ॥

पादाम्भोजप्रणतजनताजन्मकोट्यर्जिताघ-
व्राताकारामृतधरततेश्चण्डझञ्झासमीरम् ।
वीक्षास्पृष्टद्विरदतुरगस्यन्दनस्वापतेयां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥५॥

अपने चरणारविन्द में प्रणत जनों के कोटि-कोटि जन्मों में उपार्जित पाप पुंजाकार घनघोर बादलों को छिन्न-भिन्न करने वाले प्रचण्ड झंझावात स्वरूप, दृष्टिपात मात्र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से हाथी, घोड़ा, रथ आदि दुर्लभ पदार्थों का स्वामित्व प्रदान करने वाली पद्मासन प्रिया सरस्वती की भावना मैं हृदय में करता हूँ ॥ ५ ॥

छायासंज्ञापतिकिरणसंस्पर्शदेदीप्यमान-
तप्तस्वर्णाभिमतदलनप्रौढवर्ष्मप्रभासम् ।
गीर्वाणाध्वप्रभवभवभुग्वर्णनीयस्वकीर्त्ति
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥६॥

अपने शरीर की प्रौढ़ प्रभा से सूर्य की किरणों के संस्पर्श से देदीप्यमान उत्तम सुवर्ण की आभा का दलन करने वाली एवं सहस्र मुख द्विजिह्वराज शेष से वर्णनीय कीर्त्ति वाली पद्मासन की प्रिया वाणी की भावना मैं हृदय में करता हूँ ॥ ६ ॥

कृष्णद्वीपोद्भवतनुजनुःशौनकाद्यक्षजिष्णु-
वंशोत्तंसव्रतनुतमहाभूममाहात्म्यशक्तिम् ।
ब्रह्मात्म्यैक्यप्रमुखनिखिलज्ञानदस्वीयमन्त्रां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥७॥

कृष्णद्वैपायन व्यास सूनु शुक, शौनक आदि महर्षियों के जितेन्द्रिय कुल में उत्पन्न भूषण-भूत मुनीन्द्रों के द्वारा नियम से जिनकी अति समृद्धिशाली महामहिम शक्ति का नमन किया जाता है, और अपने मन्त्र जप में संलग्न भक्तों को अद्वैत तत्त्वादि का परिपूर्ण ज्ञान करा देने वाली पद्मप्रभव ब्रह्मा की प्रिया वाणी की भावना मैं हृदय में करता हूँ ॥७॥

आशापालीविरहितमनःस्वाङ्घ्रिनम्रावलीना-
मात्मज्ञानस्पृशिविरचिताशेषबन्धालिनाशाम् ।
नानावाञ्छावशगततये श्राणिताभीष्टभोगां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥८॥

अपने चरणों में प्रणामार्पण करने वाले निष्काम भक्तों के मन को आशा-पाश से विमुक्त कर आत्मज्ञान के समर्पण से सम्पूर्ण बन्धनों को काट देने वाली एवं सकाम भक्तों के अभिलषित भोगों का प्रदान करने वाली पद्मासन की प्रिया वाणी की भावना मैं मन में करता हूँ ॥ ८ ॥

आम्नायालीनिगमशिखरादिष्टधर्मार्थकाम-
बन्धोच्छेदप्रदनिजपदाम्भोजयुग्मप्रणामाम् ।
फुल्लाम्भोजप्रभृतिकुसुमव्रातसम्पूजिताङ्घ्रि
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥९॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने युगल पादाम्भोज को प्रणाम करने वालों के लिये वेद और वेदान्त में प्रतिपादित पुरुषार्थ चतुष्टय—धर्म अर्थ काम और मोक्ष को देने वाली, खिले हुए कमल आदि कुसुमावली से पूजित पादारविन्दों वाली पद्म-प्रभव पितामह की प्रिया वाणी की भावना मैं अपने मन में करता हूँ ॥९॥

कीलालाधीण्णिलयरशनामुख्यलोकत्रयाली-
वासिव्रातावृतनिजमहाशासनप्रौढपादाम् ।
क्षोणीनाथीकृतनिजपदाम्भोजभृङ्गान्तरङ्गां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥१०॥

समुद्र-रशना उर्वी प्रमुख त्रिलोक के निवासियों द्वारा महान् शासन करने में समर्थ जिनके चरण घिरे रहते हैं एवं अपने चरणारविन्द में आसक्त मनो-मिलिन्द वालों को भूपति बनाने वाली पद्म-प्रसूत पितामह की जाया वाणी की भावना मैं मन में करता हूँ ॥१०॥

पादाम्भोजप्रणतधिषणामालिनीकाननाली-
भस्मीकर्तृस्वचरणसरःसञ्जनुर्दाववह्निम् ।
आधिव्याधिप्रशमनपटुस्वीयचिन्ताङ्घ्रिपद्मां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥११॥

पादाम्भोज में प्रणत-मति की निराशारूपी भ्रमरी की विहारभूमि कानना-वली को अपने पाद-पद्मरूपी दावानल से भस्म करनेवाली, आधि, व्याधि के प्रशमन में पटु स्व चरण सरोज की स्मृति वाली पद्म-प्रभव पितामह की प्रिया वाणी की भावना मैं मन में करता हूँ ॥१२ ॥

कोशव्रातस्थिरचरमुखाशेषवस्तुस्वरूप-
ज्ञानध्यानप्रशमितमनोध्वान्तसञ्चिन्तिताङ्घ्रिम् ।
वीणामुद्राघटमुखलसन्नैजपाण्यब्जजातां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥१२॥

अपने चरणों की स्मृति करनेवालों के कोश राशि, स्थावर एवं जंगम समस्त पदार्थों से ज्ञान और ध्यान से आन्तर तिमिर को प्रशान्त कर देनेवाली, वीणा, मुद्रा एवं अमृत-कलश आदि पदार्थों से शोभायमान हाथों वाली पद्मप्रभव पितामह की प्रिया वाणी की भावना मैं मन में करता हूँ ॥ १२ ॥

स्वासुप्रेयोजलधितनुजाविष्टरश्रोत्रमर्म-
क्षोणीधर्तृ (भर्तृ) प्रजनितनुजामूलधृन्मुख्यदेवैः ।
मोदोद्रेकप्रचुरमनसा सन्ततं पूज्यमानां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥१३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपनी प्राणप्रिया लक्ष्मी के सहचर नारायण एवं हेमाचल की दुहिता के वल्लभ शङ्कर प्रमुख देवताओं द्वारा आनन्द पूर्ण हृदय से सतत पूज्यमान पद्म-प्रभव पितामह की वल्लभा वाणी की भावना मैं मन में करता हूँ ॥ १३ ॥

संसाराब्धिप्रपतितपदाम्भोजयुग्मप्रणम्र (प्रणन्त्र)
दीनव्रातश्रमततिनिकृत्संस्मृतिस्वीयपादाम् ।
चेतःशान्तीन्द्रियदमसुखाशेषसम्पत्प्रदात्रीं (सम्पन्निदानं)
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥१४॥

अपने चरणों की स्मृति से संसार-सागर में निमग्न होने पर भी तुम्हारे पाद-पद्मों में प्रणतिपात निवेदन करनेवाले दीन-जनों की समग्र आकुलता को नष्ट करने वाली, चित्त की शान्ति और इन्द्रियों पर विजय आदि अशेष सम्पत्ति की दात्री पद्म-प्रभव पितामह की प्रिया वाणी का ध्यान मैं मन में करता हूँ ॥ १४ ॥

मानातीतामृतनिधिनिभस्वीयकल्लोलवीची-
कारुण्याढ्यातिमृदुहृदयक्षान्तभक्ताखिलाधाम् ।
कार्त्तान्तादिप्रणतभयहृद्योगसंस्पृक्कटाक्षां
वाणीं पद्मप्रभवरमणीं भावयाम्यन्तरङ्गे ॥१५॥

अपार सागर के सदृश कल्लोल मालाओं से समृद्ध करुणा-सिन्धु के लहराने से कोमल हृदय द्वारा भक्त-वृन्द के अखिल पातकों को क्षमा कर देने वाली, अपने कृपा कटाक्ष के संस्पर्श से यम-भय आदि का निवारण करनेवाली पद्म-प्रभव पिता-मह की प्रिया वाणी की भावना मै मन में करता हूँ ॥ १५ ॥

श्रीपद्मजोत्संगजाताष्टकस्तोत्रम्

[स्रग्विणी]

स्वीयपद्भक्तिमत्कल्पधात्रीरुहं
संस्मृताशेषभीमण्डलीभञ्जकम् ।
शारदाम्भोधरस्वोत्तमाङ्गोद्भवं
पद्मजोत्सङ्गजातं भजे सादरम् ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने चरणों की भक्ति करने वाले लोगों के अभिलषित पदार्थों को देने में कल्पतरु, सांसारिक सम्पूर्ण भय-समूह के नाशक, शरत्कालिक मेघ के समान शुक्ल केश वाले ब्रह्मा के उत्सङ्ग (गोद) से प्रसूत नारद का मैं सादर भजन करता हूँ ।। १ ।।

पाणिधूताखिलाम्भोजनुर्डम्बरं
मेनकाद्यप्सरस्तुच्छताधीयुतम् ।
शौनकादीडितस्वीयपादाम्बुजं
पद्मजोत्सङ्गजातं भजे सादरम् ।।२।।

अपने करके सौन्दर्य से अखिल अम्भोरुह की विशेषताओं को कँपा देनेवाले, मेनका आदि उत्कृष्ट-अप्सराओं को तुच्छ समझनेवाले, शौनक आदि ऋषियों द्वारा जिनके चरण-कमल की स्तुति की गई हो उन ब्रह्मा के उत्संग से प्रसूत नारद का मैं सादर भजन करता हूँ ।। २ ।।

नम्रलोकेप्सिताशेषसंस्पर्शकं
देवतावृन्दनम्याङ्घ्रिपङ्केरुहम् ।
ज्ञानवैराग्यरम्यात्मधीतीक्ष्णतं
पद्मजोत्सङ्गजातं भजे सादरम् ।।३।।

नम्रजनों के सम्पूर्ण अभीष्टों के दाता, देववृन्द से जिनके पाद-पद्म प्रणम्य हैं, ज्ञान-वैराग्य से रमणीय तीव्र आत्मज्ञान वाले ब्रह्मा के उत्सङ्ग से आविर्भूत नारद का मैं सादर भजन करता हूँ ।। ३ ।।

क्षीरकुन्देन्दुकर्पूरभास्वत्कचं
शारदाभ्रच्छविं स्वीयवस्त्रद्युतिम् ।
नम्रलोकाघविध्वंससक्ताशयं
पद्मजोत्सङ्गजातं भजे सादरम् ।।४।।

दूध, कुन्द-पुष्प, चन्द्रमा और कर्पूर के समान धवल केश वाले, शरत्कालिक मेघ के समान स्वच्छ वस्त्र की द्युति से अलंकृत, प्रणतजनों के पाप-नाश करने में आसक्त-चित्त वाले ब्रह्मा के उत्संग से उत्पन्न नारद का मैं सादर भजन करता हूँ ।।४ ।।

भक्तवर्येष्टकाम्यावलीदायकं
संसृतागाधपाथोनिधेः पारदम् ।
स्वर्णकुक्षिप्रसन्नत्वहेतुप्रदं
पद्मजोत्सङ्गजातं भजे सादरम् ।।५।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रेष्ठ भक्तों के अभीष्ट मनोरथों के दाता, गहरे संसार-सागर के पार करने वाले हिरण्य-गर्भ की प्रसन्नता के हेतुओं के सम्पादक ब्रह्मा के उत्संग से उत्पन्न नारद का मैं सादर भजन करता हूँ ॥५॥

कृष्णपादाम्बुभूचञ्चरीकाशयं
कृत्स्नदीनालिकारुण्यवारां निधिम् ।
कृत्तमूलान्तकाद्युत्थभीतिव्रजं
पद्मजोत्सङ्गजातं भजे सादरम् ॥६॥

कृष्ण के पादारविन्द में जिनका चित्त चंचरीक है, समस्त दीनों के लिये जो करुणा का सागर है, यमराज आदि से उत्पन्न सम्पूर्ण भय-समूहों की जड़ को जिसने काट दिया है उस ब्रह्मा के उत्संग से प्रसूत नारद का मैं सादर भजन करता हूँ ॥६॥

शिष्टसर्वेष्टवस्तुप्रदायिस्मृतिं
व्यासकीरादिसंश्लाघितज्ञानकम् ।
वैनतेयासनानुग्रहालीभृतं
पद्मजोत्सङ्गजातं भजे सादरम् ॥७॥

जिनकी स्मृति शिष्ट-जनों को अभीष्ट-वस्तु देती है, जिनके ज्ञान की प्रशंसा व्यास, शुक्र आदि ने की है, गरुडवाहन भगवान् के परम अनुग्रह को जिसने पाया है उस ब्रह्मा के उत्संग से उत्पन्न नारद का मैं सादर भजन करता हूँ ॥७॥

पाणिविन्यस्तवीणानिशक्वाणकं
काणभुज्यादिविद्यावलीश्राणकम् ।
बाणजेत्रङ्घ्रिसम्भूरजोबाणकं
पद्मजोत्सङ्गजातं भजे सादरम् ॥८॥

जिनके हाथ में सदा वीणा का मधुर निनाद हुआ करता है, वैशेषिक आदि दर्शनों के तत्त्वज्ञान को जो देता रहता है, बाणासुर के विजेता भगवान् के चरणाम्भोज की धूलि को आत्मरक्षा के लिए बाण समझने वाले ब्रह्माजी के उत्संग से प्रसूत नारद का मैं सादर भजन करता हूँ ॥ ८ ॥

इष्टसर्वप्रदानव्रतप्रोज्ज्वलं
कष्टपारम्परीभूतनिर्मूलकम् ।
अष्टकं संपठन् श्रद्धयाऽदोजवा-
दष्टसिद्धीर्लभेताजजानुग्रहात् ॥९॥

सभी इष्ट वस्तुओं को देने के व्रत से पूर्ण समुज्ज्वल, कष्ट परम्परा के मूल का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निर्मूलन करने वाले इस अष्टक का श्रद्धा से पाठ करने वाला भक्त आरम्भ में हो नारद की कृपा से आठों सिद्धियों को पा लेता है ॥ ९ ॥

श्रीपद्मास्तुतिः

[कामः]

विश्वस्रष्ट्री पायात् पद्मा ॥१॥
सर्वदात्री पद्मा पालन करें ॥१॥
सूतानङ्गा पायात् पद्मा ॥२॥
काममाता पद्मा पालन करें ॥२॥
विष्णोः कान्ता पायात् पद्मा ॥३॥
विष्णु-वल्लभा पद्मा पालन करें ॥३॥
कारुण्याब्धिः पायात् पद्मा ॥४॥
करुणासिन्धु पद्मा पालन करें ॥४॥
इष्टस्रष्ट्री पायात् पद्मा ॥५॥
अभीष्टदात्री पद्मा पालन करें ॥५॥
हस्त्यादिस्पृक् पायात् पद्मा ॥६॥
हाथी आदि की दात्री पद्मा पालन करें ॥६॥
राज्यस्रष्ट्री पायात् पद्मा ॥७॥
राज्यदात्री पद्मा पालन करें ॥७॥
अब्धेः कन्या पायात् पद्मा ॥८॥
सिन्धुसुता पद्मा पालन करें ॥८॥
दैत्यारिष्टा पायात् पद्मा ॥९॥
दैत्यनाशिनी पद्मा पालन करें ॥९॥
ईहाहन्त्री पायात् पद्मा ॥१०॥
तृष्णानाशिनी पद्मा पालन करें ॥१०॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आनन्दस्पृक् पायात् पद्मा ॥११॥
आनन्ददात्री पद्मा पालन करें ॥११॥

विद्याराज्ञी पायात् पद्मा ॥१२॥
विद्याधिपति पद्मा पालन करें ॥१२॥

नागेट्स्तुत्या पायात् पद्मा ॥१३॥
नागराजपूज्या पद्मा पालन करें ॥१३॥

चन्द्राग्रेजा पायात् पद्मा ॥१४॥
चन्द्रमा की अग्रजा पद्मा पालन करें ॥१४॥

चन्द्रोत्तंसा पायात् पद्मा ॥१५॥
चन्द्रालङ्कृता पद्मा पालन करें ॥१५॥

नम्रेष्टस्पृक् पायात् पद्मा ॥१६॥
प्रणतों को अभीष्टदात्री पद्मा पालन करें ॥१६॥

देवाराध्या पायात् पद्मा ॥१७॥
देवाराध्य पद्मा पालन करें ॥१७॥

ऋद्धिस्पृक्पत् पायात् पद्मा ॥१८॥
ऋद्धिदात्री पादों वाली पद्मा पालन करें ॥१८॥

अब्जावासा पायात् पद्मा ॥१९॥
कमलनिवासिनी पद्मा पालन करें ॥१९॥

भूतिस्रष्ट्री पायात् पद्मा ॥२०॥
भूतिदात्री पद्मा पालन करें ॥२०॥

स्कन्दार्च्याङ्घ्रिः पायात् पद्मा ॥२१॥
कुमार से पूज्यपादा पद्मा पालन करें ॥२१॥

विध्याराध्या पायात् पद्मा ॥२२॥
विधि की आराध्या पद्मा पालन करें ॥ २२ ॥

भर्त्राराध्या पायात् पद्मा ॥२३॥
पति से आराध्या पद्मा पालन करें ॥२३॥

विष्ण्वाराध्या पायात् पद्मा ॥२४॥
विष्णु को आराध्या पद्मा पालन करें ॥२४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शम्भ्वाराध्या पायात् पद्मा ॥२५॥
शम्भु की आराध्या पद्मा पालन करें ॥२५॥

वाण्याराध्या पायात् पद्मा ॥२६॥
वाणी की आराध्या पद्मा पालन करें ॥२६ ॥

कमलाराध्या पायात् पद्मा॥ २७॥
कमलाराध्या पद्मा पालन करें ॥२७॥

दुर्गाराध्या पायात् पद्मा ॥२८॥
दुर्गाराध्या पद्मा पालन करें ॥२८॥

मीनस्वक्षी पायात् पद्मा ॥२९॥
मीनसमान मनोहर नेत्रों वाली पद्मा पालन करें ॥२९॥

अम्भोजाक्षी पायात् पद्मा ॥३०॥
कमल नयनी पद्मा पालन करें ॥३०॥

एणीनेत्री पायात् पद्मा ॥३१॥
मृगनयनी पद्मा पालन करें ॥३१॥

लाकिन्यर्च्या पायात् पद्मा ॥३२॥
लाकिनी-समर्च्य पद्मा पालन करें ॥३२॥

लावण्याब्धिः पायात् पद्मा ॥३३॥
लावण्यसिन्धु पद्मा पालन करें ॥३३॥

एणाङ्कास्या पायात् पद्मा ॥३४॥
चन्द्रमुखी पद्मा पालन करें ॥३४॥

शास्त्रालीया पायात् पद्मा ॥३५॥
शास्त्रालया पद्मा पालन करें ॥३५॥

शोणाब्जाङ्घ्रिः पायात् पद्मा ॥३६॥
रक्तारविन्दपादा पद्मा पालन करें ॥३६॥

शश्वच्छङ्कृत् पायात् पद्मा ॥३७॥
सदा कल्याणकारिणी पद्मा पालन करें ॥३७॥

शश्वच्छ्रीदा पायात् पद्मा ॥३८॥
सदा समृद्धिदात्री पद्मा पालन करें ॥३८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ॐकाराख्या पायात् पद्मा ॥३९॥
ॐकारनाम्नी पद्मा पालन करें ॥३९॥

ॐपद्मालो पायात् पद्मा ॥४०॥
प्रणव पद्म की भ्रमरी पद्मा पालन करें ॥४०॥

योग्यचर्याङ्घ्रिः पायात् पद्मा ॥४१॥
योगिजन समर्च्यपादा पद्मा पालन करें ॥४१॥

विश्वाधीशी पायात् पद्मा ॥४२॥
विश्वाधिपति पद्मा पालन करें ॥४२॥

भर्मच्छाया पायात् पद्मा ॥४३॥
स्वर्णप्रभा पद्मा पालन करें ॥४३॥

कामार्यर्च्या पायात् पद्मा ॥४४॥
कामारिपूज्या पद्मा पालन करें ॥४४॥

भव्यस्रष्ट्री पायात् पद्मा ॥४५॥
भव्यदात्री पद्मा पालन करें ॥४५॥

सर्वाघघ्नी पायात् पद्मा ॥४६॥
सर्व पापनाशिनी पद्मा पालन करें ॥४६॥

सर्वार्त्तिघ्नी पायात् पद्मा ॥४७॥
सभी आर्त्तियों की नाशिनी पद्मा पालन करें ॥४७॥

•

श्रीपद्मास्तुतिः

[कामः]

संसारघ्नी पायात् पद्मा ॥१॥
संसार नाशिनी लक्ष्मी रक्षा करे ॥ ॥ १

वार्भूहस्ता पायात् पद्मा ॥२॥
हाथों में कमल धारण करने वाली लक्ष्मी रक्षा करे ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रात्रीड्वस्त्रा पायात् पद्मा ॥३॥
चन्द्राभ शुक्ल वसना पद्मा रक्षा करे ॥ ३ ॥

स्वर्णस्पर्ष्ट्री पायात् पद्मा ॥४॥
स्वर्णदात्री पद्मा रक्षा करे ॥ ४ ॥

सर्वार्तिघ्नी पायात् पद्मा ॥५॥
सभी पीडाओं को नष्ट करने वाली लक्ष्मी रक्षा करे ॥ ५ ॥

भोगीड्वेणी पायात् पद्मा ॥६॥
सर्पेन्द्रसदृश वेणी वाली लक्ष्मी रक्षा करे ॥ ६ ॥

एणाङ्कास्या पायात् पद्मा ॥७॥
विधुवदनी लक्ष्मी रक्षा करे ॥ ७ ॥

मेनादीड्या पायात् पद्मा ॥८॥
मेनादियों से वन्द्य लक्ष्मी रक्षा करे ॥ ८ ॥

रम्भाद्यर्च्या पायात् पद्मा ॥९॥
रम्भादिकों से पूज्य लक्ष्मी रक्षा करे ॥ ९ ॥

भूभृच्छ्रोणी पायात् पद्मा ॥१०॥
विशाल श्रोणी वाली लक्ष्मी रक्षा करे ॥ १० ॥

विष्णुप्रेष्ठा पायात् पद्मा ॥११॥
विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मी रक्षा करे ॥ ११ ॥

नागार्यर्च्या पायात् पद्मा ॥१२॥
गरुड पूज्या लक्ष्मी रक्षा करे ॥ १२ ॥

तार्क्ष्याद्यर्च्या पायात् पद्मा ॥१३॥
तार्क्ष्य आदि से पूज्य लक्ष्मी रक्षा करे ॥ १३ ॥

कष्टघ्नी मा पायात् पद्मा ॥१४॥
कष्टहरणी पद्मा मेरी रक्षा करे ॥ १४ ॥

शोकघ्नी मा पायात् पद्मा ॥१५॥
शोकनाशिनी पद्मा मेरी रक्षा करे ॥ १५ ॥

दुःखघ्नी मा पायात् पद्मा ॥१६॥
दुःखघ्नी लक्ष्मी मेरी रक्षा करे ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इष्टस्रष्ट्री पायात् पद्मा ॥१७॥
इष्टदायिनी लक्ष्मी रक्षा करे॥ १७ ॥

लोकालीसूः पायात् पद्मा ॥१८॥
विश्वजननी लक्ष्मी रक्षा करे ॥ १८ ॥

●

श्री पद्मास्तुतिः

[स्वागता]

मेनकादिकलिताङ्घ्रिसरोजा
शौनकादिमुनिगीतपदाब्जा ।
पारदाभवनजाभिधसिन्धो-
र्नीरदाभचिकुराऽवतु पद्मा ॥१॥

मेनका आदि से वन्दित पादपद्मों वाली, शौनक आदि मुनियों द्वारा गीत चरणारविन्द माहात्म्य वाली, पद्म सागर के पारद सदृश गोरांगी एवं नीरदाभ केशों वाली पद्मा रक्षा करे ॥ १ ॥

●

श्री अच्युतप्रियतमास्तुतिः

[शार्दूलविक्रीडितम्]

एणाक्षीमणिरच्युतप्रियतमा वाणीशिवासंस्तुता
काणादादिसमस्तशास्त्रचयदा वेणीजितात्यम्बुदा ।
वीणापाणिमुखार्चिताङ्घ्रिकमला श्रोणीजितक्ष्माधरा
वीणाधृत्करपङ्कजा मम शुभश्रेणीः प्रदेयात् सदा ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुन्दरियों में श्रेष्ठ, अच्युत की प्रियतमा, वाणी और गौरी से सम्यक् स्तुत, काणाद आदि समस्त शास्त्रों को प्रकाशित करने वाली, अपनी वेणी से भ्रमर और वारिद को जीत लेने वाली, वीणापाणि नारदादि से समर्चित पादाम्बुजों वाली, श्रोणी से पर्वतों को जीत लेने वाली, करकंज में वीणा धारण करने वाली (लक्ष्मी) सदा मुझे कल्याण-राशि दे ॥ १ ॥

श्रीपद्मास्तवः

[जयानन्दः]

सुमस्वीयेषुक्रुद्गृधिलुभिमुखस्वान्तरारि-
व्रजाधीनस्वीयाशयनिकरलभ्यान्यपादे (विमुखपन्नीरजाते)।
इहामुत्रावाप्याखिलविधसुखव्रातकाङ्क्षा-
विहीनस्वान्तालीसुलभचरणां नौमि पद्माम् (पाहि पद्मे)॥१॥

काम, क्रोध, तृष्णा, लोभ प्रमुख आभ्यन्तरिक शत्रुओं के वशीभूत चित्त वालों से विमुख पादारविन्द वाली एवं ऐहिक तथा पारलौकिक सर्वविध सुखों की आकांक्षा से विमुक्त-चित्त वालों के लिये सुलभ चरणों वाली पद्मा को प्रणाम करता हूं ॥१॥

सुनासीराम्भोधिक्षितिपतिदिनेट्चन्द्रमुख्या-
मरालीप्रह्लादप्रमुखदितिभूसेव्यपादाम्।
स्वपादाम्भोजातप्रवणहृदयाम्भोभवाली-
जरादुर्मृत्यादिप्रशमनचणां नौमि पद्माम्॥२॥

इन्द्र, वरुण, सूर्य, चन्द्र प्रमुख देवताओं एवं प्रह्लाद प्रमुख दैत्यों से सेवनीय चरणों वाली एवं अपने पादारविन्द से अनुरक्त-हृदयारविन्द वालों की जरा, अपमृत्यु आदि विपत्तियों के शमन करने में प्रसिद्ध पद्मा को नमन करता हूं ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दरिद्रक्षोणीशा अतिजडधियो (जडनृपतयो) प्याशु यस्याः
सकृत्पादव्याजामृतजनियुगीचिन्त (वन्द) नेन ।
भवन्ति स्वीयश्रीवचनविभवोद्रेकधूता
मराधीशाचार्याभिमतिततयो नौमि पद्माम् ॥३॥

एक बार भी जिसके युगल चरणसरोज के चिन्तन से अतीव दरिद्र तथा सर्वाधिक जडमति जन भी शीघ्र ही अपनी समृद्धि से देवराज इन्द्र एवं वाग्वैभव से वाचस्पति के अभिमान को नष्ट कर देते हैं उस पद्मा को प्रणाम है ॥३॥

कृतानङ्गक्रोधप्रभृतिभयकृन्नक्रपारं-
परीव्याप्तस्वार्णोभवजलधिमग्नानुकम्पे ।
धरित्रीधर्त्रालीधरणिधवजापूर्वजात-
स्वकीयाङ्गस्वान्ताम्बुजदिनमणिं नौमि पद्माम् ॥४॥

काम, क्रोध प्रभृति भयंकर नक्रों की पंक्तियों से परिपूर्ण जलराशि वाले भवसागर में निमग्न जनों पर अनुकम्पा करने वाली एवं शेष तथा गिरिजा के अग्रज के अंग तथा हृदयारविन्द को विकसित करने में सूर्य रूप पद्मा को प्रणाम करता हूं ॥४॥

करीन्द्रव्राताश्वव्रजततिचमूस्यन्दनाग्र्य-
व्रजादिश्रीराजीवितरणपटुस्वाङ्घ्रिधूलिम् ।
पदाब्जानम्रालीबहुजनिकृतागण्यपाप-
च्छटारण्यप्लोषप्रिय (योद्यत) दवशुचिं नौमि पद्माम् ॥५॥

करीन्द्रों के झुंड, घोड़ों के समूह, सेना, रथादि अग्रगण्य समृद्धि-समुदाय को अपने चरण की धूलि से प्रदान करने में पटु एवं पदाब्ज में आनत जनों के अनेक जन्मार्जित पातक पुंजों के गहन वन को जलाने में दावानल रूप पद्मा को प्रमाण करता हूं ॥५॥

चतुर्वक्त्रोमेशानलजनिवपुर्दन्दशूक-
क्ष्माभृज्जिह्वानामविषयलवस्वापदानाम् ।
तुलावार्ताहीनामितसुषमताभ्राजमान-
स्वकीयाङ्गच्छायाविजितकनकां नौमि पद्माम् ॥६॥

चतुर्मुख ब्रह्मा, पंचमुख शंकर, षण्मुख कार्त्तिकेय, सहस्रमुख द्विजिह्वाधिपति शेषनाग भी जिसके यशोगान का लेश मात्र ही कर पाते हैं उस अतुल एवं अमित

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सौन्दर्य से भ्राजमान अपने अंगों की कान्ति से सुवर्ण को परास्त कर देने वाली पद्मा को प्रणाम करता हूँ ।।६।।

अजोत्सङ्गोद्भूतस्वतनुपवनव्याधिवेद-
व्रजव्यासाचार्यप्रभवमुखसंस्तूयमानाम् (कीर्तिताख्याम्) ।
स्थिराश्वत्थातीतत्रिभुवनकदम्बान्तरात्म-
स्वरूपात्मज्ञानप्रदनिजमनुं नौमि पद्माम् ।।७।।

नारद, उद्धव, व्यास, शुक्र प्रमुख मुनीन्द्रों से संस्तुत एवं अपने मन्त्र के प्रभाव से नश्वर अश्वत्थ कल्प त्रिभुवन के मध्य में विराजमान आत्म तत्त्व का सम्यग् ज्ञान करा देने वाली पद्मा को प्रणाम करता हूँ ।।७।।

सकामस्वाङ्घ्र्यब्ज प्रणतजनताकाङ्क्षितार्थ-
व्रजद्राक्संस्पर्शप्रवणनिजहृत्पङ्कजाताम् ।
अकामस्वीयाङ्घ्रिप्रवणनिजधीचित्तपद्मे
प्रबोधार्कज्वालास्फुरितचरणां (कृतनिजपदां) नौमि पद्माम् ।।८।।

अपने पादारविन्द में प्रणत सकाम भक्तों के समस्त समीहित पदार्थों को देने में अनुरक्त हृदयारविन्द वाली एवं निष्काम भाव से अपने चरणों के ध्यान में संलग्न भक्तों की बुद्धि तथा हृत्पुण्डरीक में अपने चरणों से ही आत्म बोध रूपी सूर्य की प्रभा बिखेरने वाली पद्मा को प्रणाम करता हूँ ।।८।।

श्रुतिश्रुत्यन्तोक्तिव्रजगदितधर्मार्थकामा-
वलीमुक्तीः स्प्रष्टुं (दातुं) भुजयुगयुगीद्योत (भास) मानाम् ।
मनोधीवृत्त्यालीदमननिपुणाक्षालिजिष्णु-
प्रकाण्डस्वान्ताम्भःप्रभवनिलयां नौमि पद्माम् ।।९।।

वेद तथा वेदान्त में प्रतिपादित धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चारों पुरुषार्थों को देने के लिये चार हाथों से सुशोभमान एवं मन और बुद्धि की वृत्तियों को दमन करने में निपुण, जितेन्द्रियों में अग्रगण्यजनों के हृदयारविन्द को ही अपना निवास स्थान बना लेने वाली पद्मा को प्रणाम करता हूँ ।।९।।

धरित्रीपातालावधिकनिखिलस्थानवासि-
प्रजापारम्पर्याहृतनिजपदाम्भोजयुग्माम् ।
त्रिलोकीमध्यस्थाभिमतधरणीपालकत्व-
प्रमुख्यस्पर्शादिप्रियनिजमतिं नौमि पद्माम् ।।१०।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भूलोक से पाताल तक समग्र भुवनों के निवासी जनों द्वारा समाहृत-पादारविन्द वाली एवं त्रैलोक्य के भीतर कहीं भी भक्तों के अभिमत भूपतित्व प्रमुख प्रिय पदार्थों के देने में प्रीतचित्त पद्मा को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१०॥

ज्वरार्शोऽपस्मारक्षयमुखसमस्तामयाली-
समूलोच्छेदच्छित्स्मरणचरणाम्भोजरेणुम् (युग्माम्)
अशेषानिष्टालीप्रजनककुधीरूपघोरा-
सुराधीनोच्छेदोद्धृतपदनतां नौमि पद्माम् ॥११॥

अपने चरणारविन्द के रेणु की स्मृति से ही ज्वर, अर्श, अपस्मार, क्षय प्रमुख समस्त रोगों का समूल नाश कर देने वाली एवं चरणनति से समस्त अनिष्ट फलों को देने वाले दुर्बुद्धि रूप घोर राक्षस की अधोनता का उच्छेद करके उद्धार करने वाली पद्मा को प्रणाम करता हूँ ॥११॥

कराम्भोजाताली धृतदरथाङ्गादिमुख्या-
युधालीभीतास्तङ्गमितविभवस्वर्गिशत्रुम्।
मनोभूमात्सर्यावधिकविकृतिव्रातहीन-
स्वधीनित्यध्यातस्वपदवनजां नौमि पद्माम् ॥१२॥

कर कमलों में गृहीत भयंकर चक्र आदि आयुधों से भीत देव-शत्रुओं के वैभव को अस्तंगत कर देने वाली तथा कामादिषट्‌सपत्नों से अविकृत मति वालों द्वारा नित्य ध्यात-पादाम्बुजों वाली पद्मा को प्रणाम करता हूँ ॥१२॥

पयोजातोद्भूतत्रिपुरदहनक्ष्माधरक्षित्-
पयोराशीशानप्रमुखविबुधोत्तंसपूगैः।
वचःसूमेन्द्राणीप्रमुखललनारत्नयुक्तैः
प्रफुल्लाम्भोजातार्चितपदयुगीं नौमि पद्माम् ॥१३॥

सरस्वती, उमा, इन्द्राणी प्रमुख देवियों से युक्त ब्रह्मा, शंकर, इन्द्र, वरुण प्रमुख उत्तम देवों द्वारा प्रफुल्ल अम्भोज से पूजित युगल पादाब्जों वाली पद्मा को प्रणाम करता हूँ ॥१३॥

मनःशान्त्यक्षालीदमसकलसोढृत्वसर्व-
प्रहाणश्रद्धादिस्पृशिनिपुणताढ्याङ्घ्रिचिन्ते।
स्वपादाब्जद्वन्द्वस्मृतिसुखरतस्वान्तपद्म (वर्ग) (लोका)
श्रमालीनिःशेषप्रशमनपटुं नौमि पद्माम् ॥१४॥

चरण के ध्यान करने वालों को मानसिक शान्ति, सर्वेन्द्रिय-निग्रह, तितिक्षा,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वस्व त्याग, एवं श्रद्धा आदि दैवी सम्पत्ति के दान करने की निपुणता से समृद्ध तथा अपने युगल पादाम्भोज की स्मृति में प्रधानतया आसक्त भक्तों से हृदयारविन्द की सर्वविध परेशानी को पूर्णतया प्रशमन करने में समर्थ पद्मा को प्रणाम करता हूँ ॥१४॥

पदाम्भोजालीनां यममुखभयव्रातहृत्यै
यमाद्यष्टस्वाङ्गाञ्चितमतिनिरोधप्रदात्रीम् ।
अगण्यस्वीयप्राक्तनजनिचयानुष्ठिताघ-
व्रजत्राणस्वाङ्घ्रिप्रणतनिकरां (प्रवणहृदयां) नौमि पद्माम् ।१५।

चरणारविन्द के प्रेमी भ्रमरों के यम-भय आदि को दूर करने के लिये यम-नियम आदि आठों अंगों से समृद्ध योग द्वारा मति निरोध करने वाली एवं अपने चरणों में प्रणत जनों के असंख्य प्राक्तन जन्मों में किये गये पातक पुंजों से त्राण करने वाली पद्मा को प्रणाम करता हूँ ॥१५॥

भजत्सर्वाभीष्टप्रदपदसकृद्वन्दनाया
रमादेव्याः पादस्तवनपरपद्मालिपाठा ।
करस्थाधात्री स्यान् मितिरहितमासर्वविद्या-
चिरायुः कीर्त्यङ्गद्रढिममुखसम्पत्तिपूगः ॥१६॥

एक बार भी पद-वन्दन कर लेने से भक्तों के समस्त अभीष्टों को पूरा कर देने वाली रमा देवी के चरणों के इस स्तोत्र का पाठ करने में रत भक्तों के हाथ में पृथ्वी, अमित लक्ष्मी, सभी विद्यायें, दीर्घ आयु, कीर्त्ति, नैरुज्य आदि दुर्लभ सम्पत्ति-पुंज हो जाता है ॥१६॥

•

श्रीपार्वती-सिन्धुजा-सरस्वतीस्तवः

[अश्वललितम्]

नतजनलिप्सितार्थदपदा रथेभतुरगादिदापनपटू-
र्नयनपदादिशास्त्रदकृपा अपारकरुणाकरस्वहृदयाः ।
विनतमुदम्बुराशिशशिनो जितेन्द्रिययतीन्द्रलभ्यचरणा
हृदि कलयामि पर्वतसुताजलेड्जनिसरस्वतीरनिशम् ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने चरणों से भक्तजनों के समीहित पदार्थों का लाभ कराने वाली, रथ, गज, वाजि आदि देने में पटु, कृपा-मात्र से वैशेषिक आदि शास्त्रों का बोध कराने वाली, अत्यन्त कारुणिक हृदयों वाली, भक्तों के आनन्द-सिन्धु को उद्वेलित करने के लिये चन्द्र, जितेन्द्रिय यतीन्द्रों के लिये सुलभ, पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती को निरन्तर मैं हृदय में स्मरण करता हूँ ॥१॥

प्रणमदभीष्टदाननिपुणाः कलाव्रजविहारकाङ्घ्रिविनुताः
श्रितसकलर्द्धिदायिचरणाः सुपर्वनिकुरुम्बपूजितपदाः ।
चकितमृगीविजिष्णुनयना अहेतुकरुणाजनिक्षितिहृदो
हृदि निदधामि भूधरसुताजलेड्जनिसरस्वतीरनिशम् ॥२॥

प्रणाम करने वालों के अभीष्ट-समर्पण में पटु, चरणों में प्रणिपात करने वालों के लिये समस्त कलाओं की दात्री, चरणों को शरण में आगत जनों को सम्पूर्ण समृद्धियों को देने वाली, देववृन्द वन्दित पादों वाली, चकित हरिणी के लोल-लोचन को जीतने वाले नयनों से भूषित, अकारण करुणा-वरुणालय पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती को मैं मन में सदा ध्यान करता हूँ ॥२॥

इहपरसौख्यदाननिरता हृताभिमतबिम्बिकाधररुचः
प्रणवजपादितुष्टमनसः श्रुतिस्मृतिपुराणविश्रुतपदाः ।
ललितरुचिस्वकायलतिकाः सुपर्वललनालिगीतचरणा
हृदि निदधे क्षमाधरसुताजलेड्जनिसरस्वतीरनिशम् ॥३॥

ऐहिक और पारलौकिक सुख देने में निरत, अधरकी कान्ति से बिम्ब की आभा को अभिभूत करनेवाली, प्रणव जप करने वालों पर प्रीतचित्त, श्रुति, स्मृति और पुराणों में विश्रुत-कीर्तिवाली, अत्यन्त मनोहर कलेवर वाली, देवांगनाओं से गीत-कीर्ति पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती को मैं मन में धारण करता हूँ ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीपूर्णाम्बापुष्कलाम्बाशास्तृस्तोत्रम्

(शालिनी)

पादाम्भोजस्प्रष्टृसर्वेष्टदातॄन्
संसारघ्नान् मेशगौरीशलाल्यान् ।
लोकाध्यक्षान् विश्वशास्तॄन् प्रपद्ये (भजेऽहं)
श्रीपूर्णाम्बापुष्कलाम्बाप्रशास्तॄन् ॥१॥

अपने चरणारविन्दों के स्पर्श करने वालों को समग्र अभीष्ट पदार्थ देने वाले, संसार-शामक, हरिहर से लालनीय, विश्व के अधीश्वर, जगन्नियन्ता श्री पूर्णाम्बा, पुष्कलाम्बा और शास्तृ की शरण लेता हूँ ॥१॥

भव्याकारान् सर्वकाम्यार्थदातॄन्
कारुण्याब्धीन् दिव्यरम्यस्वभावान् ।
कीनाशघ्नान् देववन्द्यान् प्रपद्ये
श्रीपूर्णाम्बापुष्कलाम्बाप्रशास्तॄन् ॥२॥

अतीव सुन्दर, समस्त काम्य पदार्थों के दाता, करुणा के सागर, दिव्य एवं रम्य स्वभाव वाले, मृत्युनाशक, देववन्द्य श्रीपूर्णाम्बा, पुष्कलाम्बा और शास्तृ की शरण लेता हूँ ॥२॥

भक्तत्रातॄञ्छातकुम्भाभकायान्
भीतिघ्नाङ्घ्रीन् कुन्दशङ्खाभवस्त्रान् ।
इष्टस्प्रष्टॄन् भृङ्गकेशान् प्रपद्ये
श्रीपूर्णाम्बापुष्कलाम्बाप्रशास्तॄन् ॥३॥

भक्तों के रक्षक, सुवर्णाभ शरीर वाले, चरणों से भय नाशक, कुन्द और शंख सदृश उज्ज्वल वस्त्रधारी, अभीष्ट-दायक, भृंगकेश श्रीपूर्णाम्बा, पुष्कलाम्बा और शास्तृ की शरण लेता हूँ ॥३॥

मेधादातॄँस्तार्क्ष्यबध्वादिसेव्याँ-
ल्लावण्याब्धीन् भक्तसर्वार्त्ति (ध) भेतॄन् ।
एणाङ्कास्यान् दीनपालान् प्रपद्ये
श्रीपूर्णाम्बापुष्कलाम्बाप्रशास्तॄन् ॥४॥

मेधादायक, तार्क्ष्य की बहुओं से सेव्य, लावण्यसिन्धु, भक्तों की सभी पीडाओं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के नाशक, चन्द्रवदन, दीनजनरक्षक श्रीपूर्णाम्बा, पुष्कलाम्बा और शास्तृ की शरण लेता हूँ ॥४॥

श्रीभद्रकालीस्तुतिः

[शार्दूलविक्रीडितम्]

पीयूषांशुवसन्तमित्रतनुभू [भू] तावलीरूपधृक्-
शत्रुव्रातपराजित [तैक] मनसामत्यन्तदूरस्थिताम् ।
[सन्त्यक्तैहिक] पारलौकिकमनोराज्याप्यपादाम्बुजां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥१॥

∴ काम, क्रोधादि विकारों से विजित-चित्त वालों से अत्यन्त दूर रहने वाली, ऐहिक और पारलौकिक मनोराज्य कल्प सुखों का परित्याग करने वालों को सुलभ श्री भद्रकाली को चित्त-पद्म में सर्वदा हर्ष से धारण करता हूँ ॥१॥

क्षोणीधर्तृ निकायपक्षदलनस्वस्वर्वबीशानल-
चण्डांशुक्षणदाधिपादिदिविषत्सङ्घातसंसेविताम् ।
पादाम्भोजनिषक्तमानसजरादुर्मृत्युमुख्यापहां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥२॥

∴ इन्द्र, कुबेर, अग्नि, सूर्य, चन्द्र प्रभृति देव-वृन्दसे सेवित, अपने पादारविन्द में आसक्त-चित्त भक्तों के जरा, अपमृत्यु मुख्य कष्टों को दूर करने वाली श्री भद्रकाली को मैं हृत्पुण्डरीक में हर्ष से सदा धारण करता हूँ ॥२॥

विद्यावित्तविहीनशीर्षमणयोऽप्याकस्मिकीमेव यत्-
पादाम्भोजनतिं विधाय सपदि प्रज्ञावसुभ्यामहो ।
गीर्वाणार्यधनेश्वरौ विदधते नम्रोत्तमाङ्गौ ह्रिया
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥३॥

∴ विद्या और वित्त से हीन जनों में अग्रगण्य जिनके चरणाम्भोज में अकस्मात्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भी प्रणाम करके तत्काल प्राप्त प्रज्ञा और समृद्धि से वाचस्पति और धनपति को लज्जा से नत मस्तक बना देते हैं उन श्री भद्रकाली को हृत्पुण्डरीक में सदैव हर्ष से मैं धारण करता हूँ ॥३॥

कष्टव्रातसहस्रकोटिभरिते संसारपाथोनिधौ
मग्नानां स्वपदाम्बुजे प्रणमतां कारुण्यपीयूषधिम् ।
स्वर्णोर्वीधरसम्भवातुहिनवत्सौभाग्यपुञ्जाकृतिं
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥४॥

सहस्र कोटि कष्टावली से परिपूर्ण संसार-सागर में निमग्न जन भी जिनके चरणों में प्रणाम समर्पण करते हैं उनके लिये करुणा-सिन्धु हो जाने वाली, सुमेरु और हिमालय के सौभाग्य पुंज ही शरीर धारण कर भासित होने वाली श्री भद्रकाली को हृदयारविन्द में सतत मोद से मैं धारण करता हूँ ॥४॥

दन्तीन्द्राननकृत्तिकोरसि जनुःपायिप्रसूविग्रहां
दन्तीन्द्राश्वचमूरथादिकमलाविश्राणकस्वार्चनाम् ।
पादाब्जानतवर्गसर्ववृजिनव्रातापहारप्रियां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥५॥

गणपति और कार्त्तिकेय को स्तन्य पान कराने वाले शरीर को धारण करने वाली, अपनी अर्चना करने वालों को गजराज, अश्व, चमू, रथ आदि समृद्धि की दात्री, पादाब्ज में प्रणत भक्तों के समस्त पातक पुंजों के नाशन में प्रेम करने वाली, श्रीभद्रकाली को मैं हृदयारविन्द में सदा हर्ष से धारण करता हूँ ॥५॥

गीर्वाणव्रजवर्त्मजातविहितस्वीयाशनालीक्षमा-
पालाङ्गारचितस्वतल्पदयितावाणीलसत्पार्श्विकाम् ।
प्रोद्यद्भासरनाथकोटिनिखिलाहङ्कारहात्मत्विषं
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥६॥

अपने परिपार्श्वको लक्ष्मी और सरस्वती से सुशोभित रखने वाली, अपनी शारीरिक कान्ति से उदीयमान सहस्र कोटि सूर्य की आभा के अहंकार को नष्ट करने वाली श्रीभद्रकाली को मैं हृदयारविन्द में सतत हर्ष से धारण करता हूँ ॥६॥

अश्वग्रीवसरोजजो (मरालयो) (सुराग्रतो) रुजवपुर्द्वैपायनाङ्गप्रभू-
कुम्भोद्भूतशरीरशौनकमुखैर्मौन्युत्तमैरीडिताम् ।
स्वीयाख्याक्षररूपमन्त्रजपकृल्लक्ष्म्याक्षरात्मज्ञतां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हयग्रीव, नारद, शुक, अगस्त्य, शौनक प्रभृति प्रमुख मुनीन्द्रों से वन्दित; अपने नामरूप मन्त्रों को जपने वालों को वैभव और तत्त्वज्ञान से अलंकृत करने वाली श्रीभद्रकाली को मैं हृदयारविन्द में सतत हर्ष से धारण करता हूँ ॥७॥

कारुण्योर्मिकटाक्षपातकणिकासम्प्रापिताशीर्व्रज-
प्रेप्सुस्वीयपदाम्बुजातविनतत्राताखिलेष्टावलीम् ।
धर्मादीनखिलान् पुमर्थनिकरान् विश्राणयन्तीं जवात्
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥८॥

अपने चरणारविन्दमें विनत जनों को सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुओं जो करुणातरंग से परिप्लुत कटाक्ष-पात के लेश मात्रसे ही प्रस्तुत कर देने वाली, वेग से धर्मादि पुरुषार्थ-चतुष्टयको प्रदान करती हुई श्री भद्रकालीको मैं हृदयारविन्द में हर्ष से सदा धारण करता हूँ ॥८॥

फुल्लाम्भोरुहकेतकीस्थलजनुःपद्मैः श्रवःकुण्डली-
जातीचम्पकमल्लिकामुखसुमश्रेष्ठैः सदा पूजिताम् ।
धात्रीमुख्यसमस्तलोकविततेरेकातपत्राधिपां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥९॥

विकसित पद्म, केतकी, स्थलकमल, श्रवःकुण्डली, चमेली, चम्पा, मल्लिका प्रमुख उत्तमोत्तम पुष्पों से सदा पूजित, पृथ्वीलोक प्रभृति समस्त लोकों पर एक-छत्र आधिपत्य रखने वाली श्रीभद्रकालीको मैं हृदयारविन्द में हर्षसे सदा ध्यान करता हूँ ॥९॥

जीवब्रह्मविभेदबोधदनुभूसंहारदाक्षिण्ययुक्-
स्वीयापाङ्गनिपातमात्रकणिकारूपस्वकीयायुधा (पातुलस्वायुधा) म्
नामार्णस्मृतिमात्रधूतसकलव्याध्यादिपारम्परां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥१०॥

जीव और ब्रह्म के भेदका बोध कराने वाली, दानवीमाया के संहार करने में दक्ष कटाक्षपात के एक कण मात्र को आयुध रूप में धारण करने वाली, नाम-मन्त्र के स्मरण मात्र से समस्त व्याधि आदि की परम्परा को विकम्पित करने वाली श्रीभद्रकाली को हृदयारविन्द में मोद से धारण करता हूँ ॥१०॥

चत्वारोऽपि महाब्धयो रशनिकाभावं प्रपद्यासते
यस्यास्तत्सकलक्ष्मापरिवृढस्थानादिविश्राणिकाम् ।
भण्डाद्यामरशात्रवासुहरणप्रौढस्वलीलालवं [वां]
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥११॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चतुःसमुद्र वलयिता समस्त उर्वी के आधिपत्य की दात्री, भण्ड प्रभृति देव-शत्रुओं के प्राण हरणकी लीला करने वाली श्रीभद्रकाली को हृदयारविन्द में हर्ष से धारण करता हूँ ॥११॥

कोदण्डाशुसुमेक्षुपुण्ड्रसृणिकाचर्मादिनानायुधा (प्रमुख्यायुधा) म्
उद्दण्डोद्धतदुष्टदैत्यहृतये दोर्दण्डराज्याहृतम् ।
कामक्रोधमुखान्तरार्थजितधीध्याताङ्घ्रिनीरोद्भवां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥१२॥

उद्धत और उद्दण्ड दुष्ट दैत्यों के संहार के लिये हाथों में धनुष, बाण, पुष्प, इक्षु, पुण्ड्र, सृणि और ढाल प्रभृति अनेक आयुधों को धारण करने वाली, काम क्रोधादि-आन्तरिक शत्रुओं पर विजय पाने वालों के द्वारा जिनके पादपद्मों का ध्यान किया जाता है उन श्रीभद्रकाली को मैं हृदयसरोज में मोद सहित धारण करता हूँ ॥१२॥

भर्मस्वोदरभर्मतल्पकनकस्वीयाक्षसंहारक-
भर्माकारवसुन्धराजननकृद्रेतोमुखैरर्चिताम् ।
स्वीयासुप्रियनेत्रराजदनलज्वालाप्रदग्धासुदां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥१३॥

हिरण्यकशिपु, हिरण्याक्ष एवं अपने रेतस् से स्वर्णोर्वी के जनन करने वाले प्रमुख जनों से समर्चित और अपने प्राणप्रिय नेत्रों के जाज्वल्यमान अनल की ज्वाला से दुष्टों के प्राणों का दलन करने वाली श्री भद्रकाली को समोद मैं हृदयारविन्द में धारण करता हूँ ॥१३॥

मोक्षाभीप्सुविनम्रकाङ्क्षितमनःशान्तीन्द्रियालीदम-
सर्वक्षान्तिमुखप्रदाननिपुणस्वीयाङ्घ्रिपद्मस्मृतिम् ।
हृत्वाऽऽयासततिं (दुःखततिं) प्रणम्रविततेर्विश्राणयन्तीं सुखं (मुदं)
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥१४॥

अपने पाद पंकज की स्मृति करने वालों को मोक्ष, अभीष्ट पदार्थ, मानसिक शान्ति, इन्द्रिय-दमन, सर्व विध दुःख सहिष्णुता आदि दुर्लभ वस्तुओं के दान में निपुण प्रणतजनों के आयास (दुःख) को नष्ट कर सुख प्रदान करने वाली श्री भद्रकाली को हृदयारविन्द में मैं समोद धारण करता हूँ ॥१४॥

निर्दाक्षिण्यमशेषदुष्टजनतासंहारशक्तापि या
देवी स्वाङ्घ्रिसरोजनम्रदुरितव्रातक्षमाशेवधिः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

योगाधीश्वरताप्रदानमुखतो मृत्यादिभीसङ्घहां
चित्ताम्भःप्रभवे दधामि सततं श्रीभद्रकालीं मुदा ॥१५॥

समस्त दुष्टजनों के संहार में पूर्ण समर्थ भी देवी अपने पादावनत भक्तों के पापपुंज को क्षमा करने में क्षमा-समुद्र हो जाती हैं उन योगीश्वरत्व आदि दुर्लभ पदों को देकर मृत्यु प्रभृति दुःखों को नष्ट करने वाली श्रीभद्रकाली को मैं हृद-यारविन्द में सहर्ष धारण करता हूँ ॥१५॥

श्रीभवानीवाणीताम्रपर्णीस्तुतिः

[सोमराजी]

भवाशेषभीतिभ्रमव्रातहन्त्रीम् ।
भजत्कल्पवल्लीं भजेऽहं भवानीम् ॥१॥

संसार के समस्त भयों एवं भ्रमों को नष्ट करने वाली तथा भजन करने वालों के लिये कल्पतरु भवानी को मैं भजता हूँ ॥१॥

करापास्तपद्मां शरन्मेघवस्त्राम् ।
वरव्रातदात्रीं भजेऽहं भवानीम् ॥२॥

करों से कमल को जीतने वाली, उज्ज्वलवस्त्रधारी, सर्वविध वरदान देने वाली भवानी को मैं भजता हूँ ॥२॥

नमत्काम्यदात्रीं जगन्नम्यपादाम् ।
सदा रम्यशीलां भजेऽहं भवानीम् ॥३॥

नमन करने वालों की कामनाओं की पूरयित्री, विश्ववन्द्य चरणों वाली, सदैव रमणीय शील वाली भवानी को मैं भजता हूँ ॥३॥

हरिप्रापकार्चां कृतान्तापनेत्रीम् ।
कृपावारिराशिं भजेऽहं भवानीम् ॥४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपनी अर्चना से भगवान् तक पहुँचाने वाली, यमराज को हटाने वाली, कृपासिन्धु भवानी को मैं भजता हूँ ।।४।।

सुवर्णाभवर्णां निलिम्पाङ्गनेड्याम् ।
भजत्कल्पवृक्षां भजेऽहं भवानीम् ।।५।।

स्वर्णाभ वर्ण वाली, देवांगना से वन्द्य, भक्तों के कल्पवृक्ष भवानी को मैं भजता हूँ ।।५।।

जनाभीष्टदात्रीं भवक्लेशहन्त्रीम् ।
पयोधृच्छिरोजां भजेऽहं भवानीम् ।।६।।

प्रणतों को अभीष्ट वर देने वाली, भव-बाधा को समाप्त करने वाली, नील-नीरदाभ केशों वाली भवानी को मैं भजता हूँ ।।६।।

विनम्राघहर्त्रीं विनम्रावरालीम् ।
स्तनोद्धूतभूध्रां भजेऽहं भवानीम् ।।७।।

विनम्र जनों के पातकों का हरण करने वाली, प्रणतों को समग्र वर देने वाली, भूधर से भी विशाल स्तनों वाली भवानी को मैं भजता हूँ ।।७।।

प्रगीताष्टकानामरं कष्टहर्त्रीम् ।
द्रुताभीष्टदात्री प्रदद्यादभीष्टम् ।।८।।

इस अष्टक का पाठ करने वालों के कष्टों को अतिशीघ्र नष्ट करने वाली एवं समग्र अभीष्टों को देने वाली भवानी को मै भजता हूँ जो मनोरथ को पूरा करे ।।८।।

●

श्रीभवानुजास्तुतिः

[प्रमाणिका]

कनत्सुवर्णवर्णिकां कृपादिरम्यसद्गुणान् ।
शरत्पयोदवाससं भवानुजां भजेऽनिशम् ।।१।।

तप्तहेम के वर्ण वाले शरीर को धारण करने वाली, कृपादि रमणीय गुणों वाली, उज्ज्वल वस्त्र धारण करने वाली सरस्वती का मैं सदा भजन करता हूँ ।।१।।

९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कचावधूतनीरदे रुचाभिभूतहारिके ।
कुचावधूतभूधरे भवानुजे शुभाय मे ॥२॥

अपने बालों से नीरद की कालिमा को परास्त करने वाली, कान्ति से हाटक को पराजित करने वाली भूधरों से भी विशाल और कठोर स्तनों वाली सरस्वती मेरा कल्याण करें ॥२॥

भजत्सुपर्वभूजने भुजङ्गभृङ्गकुन्तले ।
भवाम्बुराशितारिके भवानुजे भवाशु मे ॥३॥

भक्तों के कल्पतरु, भुजंग और भृंग तुल्य बालों वाली, सरस्वती मुझे भव-सागर से शीघ्र पार करने वाली हो ॥३॥

•

श्रीभानुतनुभूस्तुतिः

[शार्दूल-ललितम्]

भाग्याम्भोजरविर्भुजङ्गचिकुरा भक्तामरलता
वार्दाभात्मतनुर्नतेष्टवरदा वार्जच्छविकरा ।
रम्याङ्गी सुरपूगनव्यचरणा काम्याम्बुजदृशा
भूयाद् भूतिततिप्रदा भगवती श्रीभास्करसुता ॥१॥

भाग्य-कमल के सूर्य, भुजंगाभ केश वाली, भक्तों की कल्पवल्ली, वारिदाभ शरीरवाली, नतजनों को इष्ट पदार्थों का वर देने वाली, कञ्ज-सुन्दर करों वाली, रम्याङ्गी, देववृन्द से वन्द्य चरणों वाली, कमनीय कमलों के सदृश नेत्रोंवाली भगवती श्री सूर्यतनया कालिन्दी विभूति-राशि देने वाली हों ॥१॥

कारुण्याम्बुनिधिः कृतान्तसहका कृष्णाङ्घ्रिनिरता
केशापास्तघना घनाभतनुभा दुःखालिहरणी ।
इष्टव्रातवितारिकष्टततिहृच्छिष्टार्चितपदा
भूयाद् भूतिततिप्रदा भगवती मार्तण्डतनया ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करुणा के सागर, यमराज की बहन, कृष्ण के चरणों में अनुरक्त, केशों से बादलों को जीत लेने वाली, श्यामल कान्ति वाली, दुःख पुंज का निवारण करने वाली, समस्त अभीष्ट पदार्थों के दायक, कष्टों के नाशक एवं शिष्ट समर्चित पादों वाली भगवती भानुजा यमुना ऐश्वर्य दायिनी हों ॥२॥

वीणाधृद्विनुता मृणालमृदुला शोणाम्बुजकरा
मेनाभूसहभूप्रिया कनकदा दीनार्तिशमनी ।
मेनाधीशनिभानना धरणिधृत् पीनस्तनयुगी
भूयाद् भूतिततिप्रदा भगवती घस्रेशतनुजा ॥३॥

नारद वन्दित, मृणाल-मृदुल, रक्तारविन्दवत् करों वाली, पार्वती के सहोदर की वल्लभा, स्वर्ण दान करने वाली, दीन जनों की पीडा को शान्त करने वाली, मेना के पति तुल्य मुख वाली, भूधरोपम स्तनों वाली दिनेश तनया भगवती यमुना भूति-तति को देने वाली हों ॥३॥

अथवा (शार्दूलविक्रीडिते)

भाग्याम्भोजरवि र्भुजङ्गचिकुरा भक्तामरक्षोणिभू-
र्वादीभात्मतनुर्नतेष्टवरदा वारिप्रभू (कीलालभू) पाणिका ।
रम्याङ्गीसुरपूगनम्यचरणा काम्यामृतोद्भूहशा
भूयाद् भूतिततिप्रदा भगवती श्रीभानुवर्ष्मोद्भवा ॥१॥

कारुण्याम्बुनिधिः कृतान्तसहजा कृष्णाङ्घ्रिवार्जन्यलिः
केशापास्तघना घनाभतनुभा भक्तालिदुःखालिहृत् ।
इष्टव्रातवितारिकष्टहरणी शिष्टालिसम्पूजिता
भूयाद् भूतिततिप्रदा भगवती मार्तण्डवर्ष्मोद्भवा ॥२॥

वीणाधृद्विनुता मृणालमृदुला शोणाब्जजित्पाणिका
मेनाभूसहभूप्रिया कनकदा दीनार्तिनिर्मूलिनी ।
मेनाधीशनिभानना धरणिधृत्पीनोन्नतस्वस्तनी
भयाद् भतिततिप्रदा भगवती घस्रेशवर्ष्मोद्भवा ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभारतीस्तुतिः

[शार्दूलविक्रीडितम्]

तुङ्गातीरविहारसक्तनिजहृत्तुङ्गार्त्तिसङ्घातहृत्
सङ्गातीतमनोविहाररसिकानङ्गात्ततापापहृत् ।
गङ्गानीरविनिर्मलप्रकृतिदा गङ्गातरङ्गोपमा
शृङ्गासञ्चितसाहितीमुखकला शृङ्गारजन्मावनिः ॥१॥

तुगंभद्रा के तट पर विहार करने में आसक्तचित्त, उग्र पीडाओं की नाशिनी, असंग मुनियों के मन में विहार करने से रसानुभव करने वाली, काम से जनित ताप का अपहरण करने वाली, गंगाजल के समान विशुद्ध प्रकृति बनाने वाली, गंगा की तरंगों के समान, शृंगार की सुषमा से समुद्भासित मुख-कला वाली एवं शृंगार की जन्मभूमि (भारती सकल समीहितों को शीघ्र दें) ॥१॥

श्रुत्यन्तान्तसमस्तशास्त्रनिकरप्रावीण्यविश्राणक-
स्वीयांघ्र्यब्जसकृत्स्मृतिः कलिमलप्रध्वंसनैकव्रता ।
षट्शास्त्रोदितपूर्वपक्षकलिताशङ्कानिरासोज्ज्वलं
राद्धान्तप्रतिपादितार्थमखिलं देयादरं भारती ॥२॥

अपने चरणारविन्द की एक बार भी स्मृति करने वालों को वेदान्त पर्यन्त समस्त शास्त्रों में प्रवीणता प्रदान करने वाली, कलिमल के प्रध्वंसन का व्रत धारण करने वाली, भारती छवों शास्त्रों में उक्त दुःसमाधेय शङ्काओं के निरास करने में समर्थ सिद्धान्तों से प्रतिपादित समग्र अभीष्टों (मोक्ष आदिकों) को शीघ्र ही दे ॥२॥

●

श्रीभारतीस्तुतिः

भक्तिमत्स्वर्द्रुमं भावये भारतीम् ॥१॥

भक्तों के कल्पतरु भारती की भावना करता हूँ ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हृद्रुजोन्मूलिकां भावये भारतीम् ॥२॥

मानसिक रोगों (कामादिकों) की नाशिनी भारती की भावना करता हूं ॥ २ ॥

षट्पदीकुन्तलां भावये भारतीम् ॥३॥

भ्रमराभ केशोंवाली भारती की मैं भावना करता हूँ ॥ ३ ॥

पाणिधूताम्बुजां भावये भारतीम् ॥४॥

कर से कमल को जीतने वाली भारतो की भावना करता हूँ ॥ ४ ॥

इन्दुवर्णाम्बरां भावये भारतीम् ॥५॥

चन्द्राभ शुक्लाम्वर धारणी भारती की भावना करता हूँ ॥ ५ ॥

भक्तसर्वेष्टदां भावये भारतीय ॥६॥

भक्तों के समस्त अभीष्टोंको देने वाली भारती की भावना करता हूँ ॥६॥

आत्मभूवल्लभां भावये भारतीम् ॥७॥

स्वयम्भू की प्रिया भारती की भावना करता हूँ ॥७॥

निर्जराल्यर्चितां भावये भारतीम् ॥८॥

देववृन्द समर्चिता भारती की भावना करता हूँ ॥८॥

रम्यनैजाकृतिं भावये भारतीम् ॥९॥

रमणीय निजाकृति भारती की भावना करता हूँ ॥९॥

कृष्णासाकोद्भवां भावये भारतीम् ॥१०॥

कृष्ण से उत्पन्न भारती की भावना करता हूँ ॥१०॥

कृत्तभीसञ्चयां भावये भारतीम् ॥११॥

भय-समूहों की नाशिनी भारती की भावना करता हूं ॥११॥

कारुणीसागरं भावये भारतीम् ॥१२॥

करुणासिन्धु भारती की भावना करता हूँ ॥१२॥

मेनकासंस्तुतां भावये भारतीम् ॥१३॥

मेनकाभिवन्दित भारती की भावना करता हूँ ॥१३॥

शौनकादिस्तुतां भावये भारतीम् ॥१४॥

शौनकादि से स्तुत भारती की भावना करता हूँ ॥१४॥

स्वर्णनीकाशभां भावये भारतीम् ॥१५॥

स्वर्णभ कान्ति वाली भारती की भावना करता हूँ ॥१५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तसन्तोषदां भावये भारतीम् ॥१६॥
भक्तों को सन्तोष देने वाली भारती की भावना करता हूँ ॥१६॥

संसृतेःपारदां भावये भारतीम् ॥१७॥
संसार से पार कर देने वाली भारती की भावना करता हूँ ॥१७॥

पारदाभच्छविं भावये भारतीम् ॥१८॥
पारदाभ छवि वाली भारती की भावना करता हूँ ॥१८॥

नीरधृद्वेणिकां भावये भारतीम् ॥१९॥
घन सदृश वेणी वाली भारती की भावना करता हूँ ॥१९॥

नम्रपापापहां भावये भारतीम् ॥२०॥
नतजनों के पाप नाश करने वाली भारत की भावना करता हूँ ॥२०॥

तार्क्ष्यसंसेवितां भावये भारतीम् ॥२१॥
गरुडचूजिता भारती की भावना करता हूँ ॥२१॥

पीनतायुक्स्तनीं भावये भारतीम् ॥२२॥
पीनस्तनों वाली भारती की भावना करता हूँ ॥२२॥

वीणिकाधृत्करां भावये भारतीम् ॥२३॥
हाथों में वीणा धारण करने वाली भारती की भावना करता हूँ ॥२३॥

शोणपद्माङ्घ्रिकां भावये भारतीम् ॥२४॥
रक्तकमलाभ चरणों वाली भारती की भावना करता हूँ ॥२४॥

एणिकालोचनीं भावयें भारतीम् ॥२५॥
मृगनयनी भारती की भावना करता ॥२५॥

कष्टसंहारिणीं भावये भारतीम् ॥२६॥
कष्टसंहारिणी भारती की भावना करता हूँ ॥२६॥

इष्टविश्राणिकां भावये भारतीम् ॥२७॥
इष्टदात्री भारती की भावना करता हूँ ॥२७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभार्गवीस्तवः

[पृथ्वी]

भवाब्जदृशिपद्मभूनुतपदे भवान्यम्बुस-
म्भवप्रभववल्लभोल्लसितपार्श्वभागद्वये ।
भवाभिधभयानकाम्बुनिधिवाडवानुग्रहे ।
भवाम्बुनिधिसम्भवे भवविभूतये भार्गवि ॥१॥

शिव, विष्णु और ब्रह्मा से वन्दित पादों वाली, भवानी और सरस्वती से समुल्लसित युगल पार्श्वों वाली, भव नामक भयंकर सागर के शोषक वड़वानल स्वरूप अनुग्रह वाली, सिन्धुजा भार्गवी सांसारिक सम्पत्तियों को देने वाली हों ॥१॥

भुजङ्गकुलभूमिभृत्प्रवरभोगिशायिप्रिया-
भुजङ्गमपयोधरभ्रमरताभ्रमस्पृक्कचा ।
भ्रमव्रजसमूलसंहृतिचणाङ्घ्रिपद्मस्मृति-
र्भजज्जनपरम्परेप्सितदकल्पवृक्षोऽवतात् ॥२॥

शेषशायी भगवान् की वल्लभा, भुजग, वारिधर तथा भ्रमर का भ्रम उत्पन्न करने वाले कचों से भूषित, चरणारविन्द की स्मृति से ही भ्रम आदि दोषों को समूल उन्मूलित करने में प्रसिद्ध एवं भक्तजनों के अभीप्सित दान में कल्पवृक्ष रूप भार्गवी रक्षाकरें ॥२॥

स्मरप्रजननक्षितिस्वतनुमात्मबीजाक्षरैः
स्मरज्जनमनोगताखिलपदार्थदानव्रताम् ।
करच्छविनिवारिताखिलनिजस्मयाम्भोरुहां
शरज्जलवितारकच्छविनिजाम्बरां (शुकां) संभजे ॥३॥

अपने शरीर से काम को उत्पन्न करने वाली, अपने बीजमन्त्रसे स्मरण करने वाले जनों के मनोगत समस्त पदार्थों को देने का व्रत धारण करने वाली, अपने हाथ की छवि से अम्भोरुह के सम्पूर्ण गर्व का निवारण करने वाली एवं शरदभ्राभ शुक्ल वस्त्र धारण करने वाली भार्गवी को भजता हूँ ॥३॥

चराचरचयाकृतित्रिभुवनाम्बिकां कायभा-
पराजितनिजप्रभास्मयविशेषयुक्पारदाम् ।
करालभवसागरप्रपतितानमत्पारदं
परागलवसंस्मृतेः परमभूतिदाङ्घ्रिं भजे ॥४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थावर-जंगमात्मक त्रिभुवन की उत्पादयित्री, अपनी कायकान्ति से उज्ज्वल प्रभा से गर्वीले पारद को पराजित कर देने वाली, कराल भवसागर में प्रपतित जनों को प्रणाम करते ही पार कर देने वाली, चरण-धूलि के कण की स्मृति से परम विभूतिदायी चरणों वाली भार्गवी को भजता हूँ ॥४॥

धराधरधवोद्भवाधबगदाधराजार्चिते-
ऽधरारुणमहामहोऽधरितदर्पबिम्बे रमे ।
धराधरकठोरतोल्लसिततुङ्गपीनस्तनि
मरालघनडम्बरापहृति (नय) चुञ्चुगत्युज्ज्वले ॥५॥

शंकर, गदाधर और ब्रह्मा से अर्चित, अधर की अरुणिमा के महान् तेज से विम्ब के दर्प को नीचा दिखाने वाली, भूधर की कठोरता से उल्लसित तुंग और पीन पयोधर वाली एवं मराल के घनी भूत पुंजों की समुज्ज्वल गति के अपहरण करने में प्रसिद्ध रमा की जय हो ॥५॥

श्रुतिस्मृतिपुराणवाङ्निकरगम्यसौम्याशयां
विकुण्ठनिलयस्थितानुपमरम्यहर्म्यालयाम् ।
पदाम्बुजनतावलीनिखिलधर्म्यकाम्यालिदां
भजामि भुवनत्रयाधिपतिकाम्यरम्याकृतिम् ॥६॥

श्रुति, स्मृति और पुराण वाङ्मय से समझने योग्य सौम्य चित्त वाली, वैकुण्ठ-लोक के अनुपम रम्य हर्म्य में संस्थित, पादावनतजनों को समस्त धर्म, काम आदि पुरुषार्थों की दात्री तथा त्रिभुवनाधीश्वर नारायण के लिये भी काम्य रमणीय आकृति वाली रमा को भजता हूँ ॥६॥

कृपामृतमहार्णवी (निधीं) कृतस्वहृदयाम्बुजाताम्बुजा-
कृपाणमुखशस्त्रसंहृतसुपर्वविद्विड्व्रजा (सुपर्वशत्रुव्रजा)।
कृमिप्रभृतिकञ्जजावधिनमस्कृता भस्मसात्-
कृतानतजनावलीकृतसमस्तपापेऽवमाम् (पापावतात्) ॥७॥

अपने हृदयारबिन्द को कृपामृत का महासागर बना लेने वाली, कृपाण आदि प्रमुख शस्त्रों से देवताओं के शत्रुओं का संहार करने वाली, कृमि से ब्रह्मा पर्यन्त समस्त प्राणियों से नमस्कृत एवं आनत जनों के समस्त पातक पुञ्ज को भस्म कर देने वाली पद्मा मेरी रक्षा करें ॥७॥

कृतस्वकृतितास्पृशिप्रवणपादपद्मस्मृति (धूलिस्पृशि):
कृतान्तकृतभीतिधिक्कृतिलसन्नमस्कृद्व्रजा ।
कृतान्तपुरगात्मसम्भवसमर्पणा दक्षिणा-
कृतात्मगुरुनिष्क्रियाप्रतिमकृष्णकान्तावतात् ॥८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने पादपद्म की स्मृति में प्रवण जनों को अपने कृतित्व का दान करने वाली, यम जनित भीति को धिक्कारने वाले भव्य नमन से नतों को अनुगृहीत करने वाली, यमलोक में गये हुये अपने गुरु पुत्र को स्वकीय आत्मज के समर्पण से वापस कर अपनी गुरु दक्षिणा से गुरुदेव को प्रत्युपकृत करने वाले अप्रतिम कृष्ण को कान्ता रक्षा करें ॥७॥

विनम्रविनतातनुप्रभववाहनाम्भोजभू-
वनप्रभवरिप्वलङ्कृतशिरःप्रमुख्यामराम् ।
वनप्रभवसम्भवप्रियतमाशचीसेवितां
धनाभिमतिवारकद्युतिलसत्स्ववेणीं भजे ॥९॥

विष्णु, ब्रह्मा तथा चन्द्रशेखर प्रमुख अमरों से विनुत, सरस्वती शची आदि से सेवित तथा अपनी कृष्ण वेणी से घन के दर्प का दलन करने वाली लक्ष्मी को भजता हूँ ॥९॥

अनन्तपरिरम्भणाधिकृततानुरूपत्वभा-
गनन्तजनसूप्रदानुगुणपीनतुङ्गस्तनीम् ।
कनत्कनकदर्पहृच्छविविराजिताङ्गप्रभू-
मनःप्रभवसुन्दरावयवसन्ततिं सन्दधे (मां भजे) ॥१०॥

अनन्त भगवान् के आलिंगन योग्य रमणीय शरीर वाली, अनन्तजनों को जननी होने के अनुरूव पीन एवं तुंग स्तनों वाली एवं चमकते कनक को आभा को विजित करने वाली छवि से विराजमान अंगों से काम सदृश सुन्दर सन्ततियों की जन्मदात्री लक्ष्मी को भजता हूँ ॥१०॥

कणादफणिनायकप्रभृतिशास्त्रदायीक्षणां
प्रणामकरणेक्षणक्षणनिवारितापद्गणाम् ।
ऋणामयमुखाशुभक्षपणनैपुणीश्राणिकां
गणाधिपसुरेण्नुतां हृदि भजे त्रिकोणालयाम् ॥११॥

अपने वीक्षण मात्र से न्याय, व्याकरण आदि दुर्गम शास्त्रों को प्रबोधित कर देने वाली, प्रणाम करने वालों पर दृष्टिपात के साथ ही सम्पूर्ण आपत्तियों का निवारण करने वाली, ऋण, व्याधि आदि प्रमुख अशुभों को नष्ट करने में निपुण वरों को देने वाली, तथा गणपति एवं सुरपति से नमस्कृत त्रिकोण निलया पद्मा को हृदय में भजता हूँ ॥११॥

१०

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रणाङ्गणावतारणप्रमुखकारणप्राणहृत्-
कृपाणमणितूणकेषुगणपाणिताभीषणाम् ।
प्रणन्त्रृजनतागणप्रणयरक्षणप्रीणन-
प्रणीतकरुणार्णवप्रणयिवीक्षणां मां भजे ॥१२॥

रणांगण में अवतीर्ण होने वालों में अग्रगण्य दैत्यों के प्राणनाशक कृपाण, मणिमय तूणीर, वाणगण आदि को हाथों में धारण करने से भयंकर, एवं प्रणत जनों के प्रणय-रक्षण, प्रसादन आदि के लिये अपनी दृष्टियों को करुणार्णव रूप बना लेने वाली लक्ष्मी को भजता हूँ ॥१२॥

फणाधरफणामणिच्छुरितवर्णिकां नूपुर-
प्रघूर्णवरटारणच्चरणधूतशोणाम्बुजाम् ।
मृणालमृदुदोर्लताप्रणयकङ्कणालीक्वणत्-
कणालिचणपाणिजक्वणितदिव्यवीणां भजे ॥१३॥

फणिराज के फण में भ्राजमान मणि के समान भास्वर कान्ति वाली, नूपुर के अनुरणन से मराली की मधुर ध्वनि को अधरित करने वाली, चरणों से रक्तकमल को कम्पित कर देने वाली एवं मृणाल-कोमल बाहुवल्लरी के प्रेमी कंगन के क्वणन से उल्लसित उँगुलियों द्वारा दिव्य वीणा को निनादित करने वाली देवी को भजता हूँ ॥ १३ ॥

गुणालिगणभूषणा विजितबिम्बशोणाधरां
क्षणच्छविचलेक्षणक्षण (द्युति) पराजितैणां रमाम् ।
सुपर्णपतिकर्षणप्रवणताप्रवीणाकृतिं
सुवर्णमदहृत्तनुप्रभवपञ्चवाणां भजे ॥१४॥

गुणावलियों को ही भूषण रूपमें धारण करने वाली, अपने रक्त अधर से बिम्बाफल को पराजित करने वाली, अपनी चंचल एवं सुघर आँखों से हरिणी को जीत लेने वाली, गरुडध्वज को आकृष्ट करने में समर्थ रम्भाकृति वाली, सुवर्ण की प्रभा को शरीर-कान्ति से नष्ट करने वाली तथा पञ्चवाण की जननी रमा को भजता हूँ ॥ १४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभार्गवीस्तोत्रम्

[हंसमाला]

भक्तकल्पद्रुमो भीतिभङ्गव्रता ।
भृङ्गवेण्यस्तु मे भव्यकृद्भार्गवी ॥ १ ॥

भक्तों के कल्पतरु, भय निवारण का व्रत रखने वाली और भ्रमराभ वेणी से विभूषित भार्गवी (लक्ष्मी) मेरा कल्याण करें ॥ १ ॥

पद्मजित्पाणिका पीतवस्त्रावृता ।
इष्टदात्र्यस्तु मे भव्यकृद्भार्गवी ॥ २ ॥

अपने कर से कमल को जीतने वाली, पीताम्बर धारण करने वाली और अभीष्ट वस्तु देने वाली भार्गवी मेरा कल्याण करें ॥ २ ॥

पद्मनाभप्रिया रम्यपद्मासना (लया) ।
देवराट्पूजिता भव्यकृद्भार्गवी ॥ ३ ॥

पद्मनाभ की वल्लभा, रम्य पद्म को आसन या आलय बनाने वाली और देवराज से सम्पूजित भार्गवी मेरा कल्याण करें ॥ ३ ॥

कृत्स्नलोकालिसूः कृत्तभीतिव्रजा ।
कृष्णवेण्यस्तु मे भव्यकृद्भार्गवी ॥ ४ ॥

समस्त भुवन-निवहों की जननी, भय प्रभृति उद्वेजक वृत्तियों को नष्ट करने वाली और कृष्ण वेणी से विमण्डित भार्गवी मेरा कल्याण करें ॥ ४ ॥

तारकेट्सोदरी नारदादीडिता (शौनका—) ।
स्वर्णगात्र्यस्तु मे भव्यकृद्भार्गवी ॥ ५ ॥

चन्द्रमा की सगी बहन, नारदादि ऋषियों से स्तुत और हेमाभ देह धारण करने वाली भार्गवी मेरा कल्याण करें ॥ ५ ॥

नम्रसर्वेष्टदा संसृतेःपारदा (कुम्भभूः) ।
कुन्ददन्तास्तु मे भव्यकृद्भार्गवी ॥ ६ ॥

प्रणतजनों के समस्त अभिलषित पदार्थों की दात्री, संसार-सागर से पार कर देने वाली और कुन्द के समान दाँत वाली भार्गवी मेरा कल्याण करें ॥ ६ ॥

भक्तपापापहा पीनतुङ्गस्तनी ।
नम्रताक्ष्यास्तु मे भव्यकृद्भार्गवी ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तों के पापों को नष्ट करने वाली, पीन और तुङ्ग स्तनों वाली, और विनम्र गरुड़ को वाहन बनाने वाली भार्गवी मेरा कल्याण करें ॥ ७ ॥

वीणिकापाणिका वाणजेडार्यसूः ।
एणनेत्र्यस्तु मे भव्यकृद्भार्गवी ॥ ८ ॥

हाथ में वीणा धारण करने वाली, वाणासुर की कन्या उषा के प्राणधन अनिरुद्ध के पिता प्रद्युम्न की माता, और मृग नयनी भार्गवी मेरा कल्याण करें ॥ ८ ॥

इष्टविश्राणिका कष्टनिर्मूलिका ।
अष्टकानन्दिता भव्यकृद्भार्गवी ॥ ९ ॥

अभीष्ट वस्तुओं की दात्री, कष्टों की संहर्त्री और अष्टक से अभिनन्दित भार्गवी मेरा कल्याण करें ॥ ९ ॥

श्रीभारतमातृस्तोत्रम्

चरणानतसकलेष्टददिविजक्षितिजनुषं
भवसाध्वसमुखखञ्जकचरणस्मृतिकणिकाम् ।
मनुषध्रुवपृथुसौम्यजभरतावितविषयां
सततं भज हृदयामृतभवभारतजननीम् ॥ १ ॥

पाद-प्रणत जनों के समस्त अभीप्सित पदार्थों के देने में कल्पतरु, अपने चरणों के लेश मात्र स्मरण से भी सांसारिक भयों का भंजन करने वाली, मनु, ध्रुव, पृथु, पुरूरवा, भरत आदि नरेन्द्रों से संरक्षित भारत माता को अपने हृत्पुण्डरीक में सदा भजो ॥ १ ॥

निजभास्वरकरहापितसरसीरुडिममंती
शरदम्बुदनिभनिर्मलवसनावृतवपुषम् ।
पदसंनतवरदापनकृतिवत्परहृदयां
सततं भज हृदयामृतभवभारतजननीम् ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने मनोहर कर से उत्तम कमल की श्री को जीत लेने वाली, शरत्कालिक मेघ के समान स्वच्छ वस्त्रों से आवृत शरीर वाली, चरणावनतजनों को वर दिलाने में तत्पर हृदय वाली भारत माता को हृदयारविन्द में सदा भजो ॥ २ ॥

निखिलावनितलमध्यगजनकामितविभवां
करुणानलविधिवार्धिजमुखनिर्जरविनुताम् ।
वहुधान्यदवसुधा (हृदयङ्गमधरणी) तलविषयाग्रिममहिषीं
सततं भज हृदयामृतभवभारतजननीम् ॥ ३ ॥

समस्त भूमण्डल के मध्य में रहने वाले जनों से स्पृहणीय वैभव वाली, वरुण, वह्नि, विधि, चन्द्र प्रधान देवताओं से संस्तुत, अनेकों प्रकार के अन्नों को देने वाली भूमि के स्वामी की अग्रमहिषी भारत माता को हृदय सरोज में सदा भजो ॥ ३ ॥

कमलप्रियकमलाहित (दिननायकरजनीपति) कुलसंभव तनुभाग्
रघुनायकयदुपुङ्गवमुखलालितचरणा (भूपतिजननी)म् ।
कनकव्रजमुखवैभवततिपूरितवपुषं
सततं भज हृदयामृतभवभारतजननीम् ॥ ४ ॥

सूर्य और चन्द्र के कुल में उत्पन्न राम और कृष्ण प्रमुख पुरुषोत्तमों से लालित चरणों वाली, सुवर्ण आदि प्रधान वैभव-निवह से परिपूर्ण शरीर वाली भारत माता को हृदयारविन्द में सतत भजो ॥ ४ ॥

नतसन्नतियमसाध्वसमुखकश्मलशमनीं (हरणीं)म्
सकलात्तिहृकरुणामृतकरुणालयहृदयाम् ।
त्रिदशालयतरुणीमणिगणसंनुतविभवां
सततं भज हृदयामृतभवभारतजननीम् ॥ ५ ॥

प्रणतजनों के प्रणिपात से मृत्यु-भय प्रमुख कष्टों को दूर करने वाली, समग्र आर्त्तियों को नष्ट करने वाले करुणामृत के सिन्धु रूप हृदय वाली, देवलोक की उत्तम अप्सराओं के समुदाय से पूजित-सम्पत्ति वाली भारत माता को हृदयारविन्द में सतत भजो ॥ ५ ॥

पदभक्तिकृदखिलेप्सितवरदायकनमनां
भवसागर-परपारद-[हृदयाहित] करुणाम् ।
गुणलम्भितनिखिलावनितलभूषण (महिषीगण) मणितां
सततं भज हृदयामृतभवभारतजमनीम् ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चरणों में भक्ति उत्पन्न करने वाले नमन से समस्त अभिलषित पदार्थों की दात्री, भवसागर से पार करने वाली करुणा से आपूर्ण हृदय वाली, गुणों से सम्पूर्ण भूमण्डल के चूडामणित्व को प्राप्त करा देने वाली, भारत माता को हृदयारविन्द में सदा भजो ॥ ६ ॥

विनतव्रजकृतपातकमदवारणमृगपं
कमलासनकमलेक्षणकमलारिधृदरम् ।
धरणीधरपयसीधरवरुणालयरशनां
सततं भज हृदयामृतभवभारतजननीम् ॥ ७ ॥

प्रणतजनों के पाप रूप मत्त-मातंग के लिये सिंह रूप, ब्रह्मा, विष्णु और शङ्कर से वन्दित, एवं समुद्र-रशना तथा भूधर-पयोधर भारत माता को हृदयारविन्द में सदा भजो ॥ ७ ॥

मुरलीधरकरपालितनिजगोधनरुचिरां
नयनांघ्रिकक्रणभुङ्मुखनयसन्ततिमहि (लसि) ताम् ।
तरुणारुणकरुणाञ्चितनयनावितजनतां
सततं भज हृदयामृतभवभारतजननीम् ॥ ८ ॥

गोपाल से पालित गोधन से समृद्ध, अक्षपाद, कणाद-प्रमुख मुनीन्द्रों के बनाये न्यायादि शास्त्र समुदाय से पूजित, रक्तिम और करुणापूर्ण नेत्रों से जनता की पालयित्री भारतमाता को हृदयारविन्द में सदा भजो ॥ ८ ॥

दिविषत्सरिदहरीश्वरतनुजामुखतटिनी (कुलभूषण)—
जलपावितनिजकुक्षिगसकलास्तिकवितितिम् ।
द्रुतरीक्षतिनिजशासनविभवाञ्चितमखिलं
निजसेवनलवतत्परजनकष्टहृचरणाम् ॥
(जननीपदयुगसेवनकणिकारतमनसं)
पठतामिदममरार्चितचरणाम्बुजविनुतम् ॥ ९ ॥

गंगा, यमुना प्रभृति प्रमुख नदियों के जल से धरावस्थित आस्तिक जनों को पवित्र करने वाली, तरु-तरी के नाशक अपने शासन आदि से वन्दितवैभव, अपनी लेशमात्र सेवा में तत्परजनों के कष्टों को चरणों से ही हटा देने वाली, माता के युगल चरण की स्वल्प सेवा में भी रक्तचित्र भक्तों को—जो इस स्तोत्र का पाठ करते हैं उन्हें देववन्दित पादारविन्द वाला एवं लोक नमस्कृत बना देने वाली भारतमाता की जय हो ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्री भार्गवीदेवीस्तुतिः

[आर्या]

भजकालिकल्पवल्ली भवभीतिविभञ्जकस्मरणा ।
भ्रमरभुजगाभवेणी भूयाद्भव्याय भार्गवी देवी ॥१॥

भक्त वृन्द की कल्पलतिका, स्मृति से ही भव-भीति नाशिनी, भ्रमर तथा भुजग के समान वेणी वाली भार्गवी देवी कल्याणदायिनी हों ॥१॥

(पदनिर्जितपाथोजा)

पद्जितपद्मा-पद्माशरदभ्रनिभाम्बरावृतस्वाङ्गी ।
वरदानरतस्वान्ता भूयाद्भव्याय भार्गवी देवी ॥२॥

चरणों से सरोज को जीत लेनेवाली, शरदभ्र के समान स्वच्छवस्त्र से वेष्टित शरीर वाली, वर देने में आसक्तचित्त भार्गवी देवी कल्याण कारिणी हों ॥२॥

सौम्या सरोजनयना नम्या नित्यं निलिम्पवरनिकरैः ।
रम्याङ्गबुद्धि हृदया (चेष्टा) (कृत्या) (शीला) भूयाद्-
भव्याय भार्गवी देवी ॥३॥

सौम्य, सरोज लोचना, नित्य उत्कृष्ट देवों से प्रणम्य, रमणीय अंग, बुद्धि, और हृदय वाली भार्गवी देवी कल्याण कारिणी हों ॥३॥

कृष्णब्रह्मशिवेड्या कृत्तपदानतकृतान्तमुख्यभया ।
कृपणकृपाम्बुधिहृदया भूयाद्भव्याय भार्गवीदेवी ॥४॥

विष्णु, अज तथा शिव से वन्द्य, पादावनत जनों के यमादिजनित भयों को नष्ट कर देने वाली, दीन जनों पर कृपासिन्धु स्वरूप हृदय वाली भार्गवी देवी कल्याण कारिणी हों ॥४॥

मेनारम्भाद्यर्च्या व्यासतनूजप्रमुख्यमुनिविनुता ।
(शौनक नारदमुखर्षिततिविनुता)
कनकन्यक्कृत कान्ति र्भूयाद्भव्याय भार्गवी देवी ॥५॥

मेनका, रम्भा आदि सुरसुन्दरियों से समर्च्य, शुकादि मुनीन्द्रों द्वारा प्रणत, अपनी कान्ति से हेम को नीचा दिखाने वाली भार्गवी देवी कल्याण कारिणी हों ॥५॥

वरदा पदनम्रेभ्यः पारदपादा भवाख्यजलराशेः ।
नीरदनीकाशकचा भूयाद् भव्याय भार्गवी देवी ॥६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चरण में नम्रजनों के लिये वरदायिनी, संसार सागर से पार करने वाले पाद पोत वाली, जलदाभवेणी वाली भार्गवी देवी कल्याण कारिणी हों ॥६॥

विनताघहृतप्रवणा विनतानन्दभूविराज (नाथ) निजवाहा।
पीनोत्तुङ्गस्वकुचा भूयाद्भूत्याय भार्गवी देवी ॥७॥

प्रणत जनों के पाप नाशन में तत्पर, दिव्य वैनतेय को अपना वाहन बनाने वाली, पीन और उन्नत कुचों वाली भार्गवी देवी कल्याणदा हों ॥७॥

वीणापाण्यादिनुता काणादगौतममुखनयसन्ततिदा।
एणाङ्कसहप्रभवा भूयाद्भूत्याय भार्गवी देवी ॥८॥

सरस्वती आदि से वन्दित, न्याय, वैशेषिकादि दुर्गम शास्त्रों के रहस्य बोध कराने वाली, चन्द्रमा की सोदरी भार्गवी देवी कल्याण करें ॥८॥

कष्टोन्मूलनपूर्वकमिष्टश्राणनचणस्वसंस्मृत्याः।
अष्टकपाठी तूर्णं नष्टाज्ञानोऽष्टसिद्धिभाक् प्रभवेत् ॥९॥

अपनी स्मृति से कष्ट नाशन पूर्वक इष्ट समर्पण में प्रसिद्ध देवी के इस अष्टक के पाठ करने वाले झटिति विगताज्ञान होकर आठों सिद्धियों को स्वायत्त कर लेंगे ॥ ९ ॥

●

श्री भीष्मतनुजा-वसुदेवभूस्तोत्रम्

[हरनर्तनम्]

शौनकादिमुनीडिते कनकाभिमानहरिच्छवी
कृष्णदारसहोद्भवे हरिपार्थकाम्यकलेवरे।
वीणिकाधरपाणिके घनपीनतुङ्गपयोधरे (कुचाञ्चिते)
भीष्मराजतनूद्भवावसुदेववर्ष्मभुवौ भजे ॥१॥

शौनकादि मुनियों से ईडित अपनी काय-कान्ति से सुवर्ण के अभिमानको नष्ट करने वाली, लक्ष्मी को सोदर बहन, हरि और पार्थ से काम्य कलेबर वाली, वीणा से शोभितपाणि वाली, घन, पीन और तुंग पयोधर वाली श्री वैदर्भी तथा वासुदेव को भजता हूँ ॥१॥

●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीश्रीभूतुलसीस्तुतयः

[दोधकम्]

विश्वजगज्जननीः सुरपूज्या
दीनकृपाजलधीन् हरिकान्ताः ।
स्यन्दनमुख्यनतेप्सितदात्रीः
श्रीवसुधा (धरणी) तुलसीः कलयेऽहम् ॥ १ ॥

समस्त ब्रह्माण्डों की जननी, देववन्द्य, दीनजनों पर करुणा के सागर, नारायण की वल्लभा, नत-जनों को रथ आदि प्रमुख ईप्सित पदार्थों की दात्री लक्ष्मी, वसुधा और तुलसी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

रागविजित्सुलभा नतपोष्टीः
सर्वकलाकुशला (निपुणा) अहिपार्च्याः ।
चन्द्रकलाधनुता वरदात्रीः
श्रीधरणी (वसुधा) तुलसीः कलयेऽहम् ॥ २ ॥

जितराग के लिये सुलभ, नतजनों के पोषक, सभी कलाओं में कुशल, शेषसमर्च्य, चन्द्रशेखर से प्रणत, वरदायिनी लक्ष्मी, वसुधा और तुलसी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

पद्मजविष्णुहरादिनताङ्घ्रीः
काङ्क्षितसर्वशुभप्रददीक्षाः ।
नाकि (स्वर्गि) निकायनता धनदात्रीः
श्रीवसुधातुलसीः कलयेऽहम् ॥ ३ ॥

ब्रह्मा, विष्णु और शङ्कर आदि प्रधान देवों से आनत चरणों वाली, सम्पूर्ण अभिलषित शुभ पदार्थों को देने की दीक्षा में दीक्षित, देववृन्द-वन्दित, धनदायिनी लक्ष्मी, वसुधा और तुलसी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

आन्तरशत्रुहपादसमर्चाः
कुङ्कुमशोभितनूर्जलजास्याः ।
कुस्यदुमाग्रभवाः शुभदात्रीः
श्रीवसुधातुलसीः कलयेऽहम् ॥ ४ ॥

चरणार्चना करने से आन्तरिक शत्रुओं को नष्ट करने वाली, कुङ्कुम से शोभित शरीर वाली, कमलानन, पापघ्नी, उमा की अग्रजा, कल्याणदायिनी लक्ष्मी, वसुधा और तुलसी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ॐ जपतुष्टहृदः प्रणवाख्या
मस्करिलभ्यपदाङ्‍घ्रिजगदम्बाः ।
बिम्बविजिष्णवधराः सुखदात्रीः
श्रीवसुधातुलसीः कलयेऽहम् ।। ५ ।।

प्रणव जप से सन्तुष्ट होने वाली, प्रणव नाम वाली, यतीन्द्र द्वारा लभ्य पादों वाली, जगज्जननी, बिम्बा फल को परास्त करने वाले अधर से विराजमान, सुखद लक्ष्मी, वसुधा और तुलसी को मैं प्रणाम करता हूँ ।। ५ ।।

भाजितभर्मसरोरुहवासा
(भर्मविजित्वरकान्तिशरीराः)
वर्ष्ममनःसुषमाजनिधात्रीः ।
स्वर्ललनाकलिता [कलकीर्त्तीः]
श्रीवसुधातुलसीः कलयेऽहम् ।। ६ ।।

अपने शरीर की कान्ति से सुवर्ण को जीत लेने वाली, तन और मन की सुन्दरता का पोषण करने वाली, स्वर्गांगना से प्रणत, निर्मल, कीर्त्तिशालिनी लक्ष्मी, वसुधा और तुलसी को मैं प्रणाम करता हूँ ।। ६ ।।

●

श्रीभैष्मीरूपभार्गवीस्तवः

[ताटङ्क]

भक्तिपरायणजनताभीप्सितदानव्रीडितकल्पलते
भवनिजनामकभीकरसागरतारणनिपुणसकृद्विनते ।
भ्रमरभुजङ्गाम्भोधरविभ्रमधारकमेचककचलसिते
जय जय भार्गवि भैष्मीरूपिणि करुणां कुरु मयि चरणनते ।। १ ।।

भक्ति-परायण जनता को अभीप्सित वस्तु के दान से कल्पलता को भी लज्जित बना देने वाली, एक बार भी प्रणाम करने से भयंकर भव-सागर से पार कर देने वाली, भ्रमर, भुजंग और अम्भोधर के सौन्दर्य को धारण करने वाले काले केशों से विलसित, रुक्मिणी रूप से अवतीर्ण लक्ष्मी तेरी जय हो जय हो तथा चरणों में आनत मुझ पर करुणा करो ।। १ ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नीरजजित्वरनिजकरनीरजलालितलीलाकमलतते
शारदनीरदसन्निभवासोऽलङ्कृतललितशरीरलते ।
मारनिषूदनमुखविनुताङ्घ्रे माराम्बाच्युतकृतसुरते
हीरकहारे जय जय भार्गवि करुणां कुरु मयि चरणनते ॥ २ ॥

कमलों को जीत लेने वाले कर कमलों में लीलारविन्दों का लालन करने वाली, शरत्कालीन बादलों के समान धवलवस्त्र से अलंकृत ललित शरीर वाली, माराराति प्रमुख देवताओं से पूजित चरणों वाली, काम की माता के रूप में अच्युत से विहार करने वाली, हीरों के हार पहनने वाली लक्ष्मी, तेरी जय हो जय हो और तुम चरणों में नत मुझ पर करुणा करो ॥ २ ॥

सौम्याकृत्यनुरूपगुणावलि सौम्यतराखिलवृत्तिमते
धौम्यादिनुते जय जय भार्गवि करुणां कुरु मयि चरणनते ॥ ३ ॥
काम्याशेषपदार्थ वितारणकौशलमोदितपादनते (चरणनते)
रम्याखिलनैजाङ्गमनोहरलक्ष्मीनिर्जितकान्तधृते ।

चरणों में प्रणति निवेदन करने वालों के सम्पूर्ण स्पृहणीय पदार्थों को वितीर्ण करने की कुशलता से आमोदित, अपने अंगों की लोकोत्तर सुषमा से अच्युत को भी अधीर बना देने वाली, आकृति की सौम्यता के अनुरूप ही उत्तम गुण गणों से और अधिक मनोहर चित्तवृत्ति एवं बुद्धि वाली, धौम्य अदिकों से प्रणत भार्गवि, तेरी जय हो जय हो और तुम चरण में नत मुझ पर कृपा करो ॥ ३ ॥

कृष्णाम्बरदरवञ्चककृष्णाम्बरधरसोदरकृष्णरते
कृतयुगसुकृतध्यानवदाख्याकृतकृत्यीकृतियदुकान्ते ।
कृच्छ्रपायकृतान्तकरस्थितिभीतविनम्रकृपाभरिते
कृष्णाहिकचे जय जय भार्गवि करुणां कुरुमयि चरणनते ॥ ४ ॥

काले बादलों को भी मात करने वाले नीलाम्बर धारी बलराम के अनुज कृष्ण में रत, सत्ययुग के धर्म के समान पवित्र नाम से यदुपति को कृतकृत्य कर देने वाली, दुःखद यम के हाथों में पड़जाने के भय से डरे हुए विनम्र लोगों पर करुणा से भरपूर, कृष्णसर्पाभकेशों वाली भार्गवि तेरी जय हो जय हो और तुम चरण में नत मुझ पर कृपा करो ॥ ४ ॥

आनतमेनामुखविस्मापकहंसीहुङ्कृतपादगते
शौनकमुखमुनिचिन्तितनिजतनुकान्तिपराजितकनकलते ।
एनस्ततिदन्तावलदारकपञ्चास्यायितपदविनुते
दीनजनावनि जय जय भार्गवि करुणां कुरु मयि चरणनते ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणत मेना आदि को विस्मित करने वाली मराली को चरणों की गति से पराभूत कर देने वाली, शौनक आदि मुनियों द्वारा ध्यात अपने शरीर की कान्ति से स्वर्णलता को भी परास्त कर देने वाली, जिनके चरणों का प्रणाम पाप पुंज रूपी कुंजर पर सिंह के समान आक्रमणकारी है, उस दीन जनों की पालिका भार्गवी की जय हो तथा चरणनत मुझ पर कृपा करो ॥ ५ ॥

चरणनतावल्यभयश्राणकमुद्राञ्चितकरजलजाते
नीरदनिचयाहङ्कृतिशातकवर्णविभूषितकेशतते ।
पारदकान्ते संसृतिपारदपादे योगिगणध्याते
नारदवरदे जय जय भार्गवि करुणां कुरु मयि चरणनते ॥ ६ ॥

चरणों में नतजनों को अभय दान करने की मुद्रा से मनोहर कर कमलों वाली, वारिद आदि के अहंकार को क्षीण करने वाले श्यामल वर्ण से विभूषित केश कलापों वाली, पारद के समान कान्ति वाली, संसार-सागर से पार कर देने में समर्थ पादों वाली, योगिवृन्द से ध्यात, नारद को वर देने वाली भार्गवि, तेरी जय हो जय हो और तुम चरणनत मुझ पर करुणा करो ॥ ६ ॥

कनकघटाकृतिकुचयुगकर्कशताजितधात्रीधरजाते
मानविवर्जितमहिमोद्गायकनिजवाग्धात्रीधरजाते ।
मानविवर्जितचरितावर्जितदितिदनुवंशभवाराते
विनताविनते जय जय भार्गवि करुणां कुरु मयि चरणनते ॥ ७ ॥

स्वर्ण-कलश के समान अपने दोनों स्तनों की कठोरता से शैलों को परास्त कर देने वाली, वाणी और गिरिजा से अपनी अमित महिमा का गान कराने वाली, दैत्यों और दानवों के शत्रु भगवान् को अमित चरितों से आकृष्ट कर लेने वाली, विनता से विनत भार्गवि, तेरी जय हो जय हो और तुम चरणों में नत मुझ पर करुणा करो ॥ ७ ॥

वीणाधृङ्मुनिमुखभक्तेप्सितवरदस्वपदपयोजाते
वीणावादनगीतमुखोपास्तिश्रान्तिकवसुदेवसुते ।
काणादादिमशास्त्र[द]करुणावरुणनिकेतनभीष्मसुते
शोणाधरिके(शोणांघ्र्यब्जे) जय जय भार्गवि करुणां कुरु मयि चरणनते ॥ ८ ॥

अपने चरणारविन्द से नारदादि प्रमुख भक्त-मुनियों के अभीप्सित वरों को देने वाली, वीणा वादन, गीत आदि प्रमुख उपासना से वासुदेव को मोहित कर देनेवाली, न्यायादि शास्त्रों की बोधिका, करुणा वरुणालय, भीष्मसुता, शोण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अधर वाली भार्गवि तेरी जय हो जय हो और तुम चरणनत मुझपर करुणा करो ॥ ८ ॥

अष्टकमेतद्वैदर्भ्या(रुक्मिण्या)कृतिकमलादेवीस्तोत्रपरं
कष्टपयोनिधिपूर्णविशोषणदीक्षादीक्षितवडवाग्निम् ।
इष्टनिकायश्राणननिपुणं भक्तिश्रद्धाभ्यां गृणताम्
अष्टकमैश्वर्याणां वितरति सर्वैश्वर्येश्वररमणी ॥ ९ ॥

आपत्ति-सागर को पूर्णतया शुष्क कर देने में वडवानल रूप, रुक्मिणी के रूप में अवतीर्ण लक्ष्मी के अभीष्ट पूरक इस अष्टक स्तोत्र को श्रद्धा और भक्ति से पाठ करने वालों को समस्त ऐश्वर्यों से पूर्ण नारायण की रमणी रुक्मिणी आठों ऐश्वर्यों को दे देती हैं ॥ ९ ॥

श्री भैष्मीस्तुतिः

[मालिनी]

जयतु जयतु भक्ताभीष्टदा कल्पवल्ली
जयतु जयतु भूयो भावभीतिप्रभेत्री ।
जयतु जयतु भृङ्गाम्भोदभोगिस्वकेशा
जयतु जयतु भैष्मी भार्गवी नम्यरूपा ॥ १ ॥

भक्तों के अभीष्ट दान में कल्पलता, पुनः पुनः सांसारिक भयों की नाशिनी, भृंग, अम्भोद और सर्पों के समान केशों वाली, भार्गवी की प्रणम्या भैष्मी (रुक्मिणी) की जय हो जय हो ॥ १ ॥

जयतु जयतु हस्तश्रीजिताम्भःप्रजाता
जयतु जयतु कायन्यक्कृतस्वणवर्णा ।
जयतु जयतु नम्राशेषकाम्यप्रदात्री
जयतु जयतु भैष्मी भार्गवी नम्यरूपा ॥ २ ॥

हाथ की शोभा से अम्भोज की विजेत्री, काया से सुवर्ण की आभा को धिक्कारने वाली, नम्रजनों के अशेष काम्य पदार्थों की प्रदात्री, भार्गवी की प्रणम्या रुक्मिणी की जय हो जय हो ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जयतु जयतु काम्यापङ्कजातेक्षणेन
जयतु जयतु नम्या [सर्व] लोकप्रजाभिः ।
जयतु जयतु रम्या स्वाङ्गलावण्यदीप्त्या
जयतु जयतु सौम्या भार्गवी नम्यरूपा ॥ ३ ॥

कमल नयन के लिए काम्य, ब्रह्माण्ड के निवासियों की प्रणम्या, अपने अंगों के लावण्य की कान्ति से रमणीय भार्गवी की प्रणम्या, सौम्य रुक्मिणी की जय हो जय हो ॥ ३ ॥

जयतु जयतु कृष्णाह्लाददातृस्ववृत्ता
जयतु जयतु कृत्तस्वाङ्घ्रिनम्रालिभीतिः ।
जयतु जयतु कृत्स्नद्रव्यरूपा कृपाब्धिः
जयतु जयतु भैष्मी भार्गवी नम्यरूपा ॥ ४ ॥

अपने आचरण से कृष्ण को आह्लादित करने वाली, अपने चरणों में नम्र लोगों के भय को नष्ट कर देने वाली, सम्पूर्ण द्रव्यों के रूप में विराजमान, कृपा-सिन्धु, भार्गवी की प्रणम्या रुक्मिणी की जय हो जय हो ॥ ४ ॥

जयतु जयतु मेनाद्यप्सरःसेविताङ्घ्रिः
जयतु जयतु दीनानम्ररक्षाव्रताढ्या ।
जयतु जयतु केनाम्नायशीर्षादिगीता
जयतु जयतु भैष्मी भार्गवी नम्यरूपा ॥ ५ ॥

मेनका प्रभृति अप्सराओं से सेवित चरणों वाली, दीन और आनत जनों की रक्षा के व्रत से आढ्य, केन आदि उपनिषदों में गीतकीर्त्ति, भार्गवी की प्रणम्या रुक्मिणी की जय हो जय हो ॥ ५ ॥

जयतु जयतु पादाम्भोजनम्येष्टदात्री
जयतु जयतु पद्मा पारदात्री भवाब्धेः ।
जयतु जयतु भोगीण्नीरधृच्छीर्षजाला
जयतु जयतु भैष्मी भार्गवी नम्यरूपा ॥ ६ ॥

पादाम्भोज को प्रणम्य मानने वालों को अभीष्ट दायिनी, पद्मा, भवसागर से पार करने वाली, सर्पराज एवं नीरधराभ केशों वाली, भार्गवी की प्रणम्या रुक्मिणी की जय हो जय हो ॥ ६ ॥

जयतु जयतु नम्याशेषपापापहर्त्री
जयतु जयतु वीनस्वीयवाहोरसिस्था ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जयतु जयतु वाणात्मोद्भवेट्तातमाता
जयतु जयतु शोणाम्भोजधिक्कारिपादा ॥ ७ ॥

नम्य मानने वालों के समग्र पापों का हरण करने वाली, पक्षिराज गरुड को वाहन बनाने वाले भगवान् के हृदय में स्थित, वाणात्मजा उषा के पति (अनिरुद्ध) के पिता (प्रद्युम्न) की माता एवं रक्तकमल को धिक्कारने वाले चरणों वाली रुक्मिणी की जय हो जय हो ॥ ७ ॥

जयतु जयतु लक्ष्मीः कष्टजातप्रभेत्री
जयतु जयतु सर्वाभीष्टजालप्रदात्री ।
जयतु जयतु तुष्टा शिष्टपूज्याब्जनेत्री
जयतु जयतु भैष्मी भार्गवी नम्यरूपा ॥ ८ ॥

लक्ष्मी, कष्ट-समूहों का भेदन करने वाली, समस्त अभीष्टों के समुदाय को देने वाली, सन्तुष्ट रहने वाली, शिष्टपूज्या कमलनयना, भार्गवी की प्रणम्या भैष्मी की जय हो जय हो ॥ ८ ॥

श्रीभैष्मीस्तुतिः

अविजितमनसिजमुख्यान्तररिपुततिबहुदूरे ।
जितमतिजनसुलभाङ्घ्रे तव पदनतमव भैष्मि ॥ १ ॥

काम प्रमुख आन्तरिक शत्रुओं को न जीत सकने वालों से बहुत दूर एवं जितेन्द्रियों के लिए सुलभ चरणों वाली रुक्मिणी अपने चरणों में नत होने वालों की रक्षा करें ॥ १ ॥

सुरपतिबलिमुखपूज्यस्वचरणसरसिजयुग्मे ।
हृतनतकुमृतिजरादे तव पदनत मव भैष्मि ॥ २ ॥

सुरासुराधीशों से पूज्य स्व चरणाम्बुजों वाली एवं प्रणत जनों की अपमृत्यु, जरा आदि को दूर करने वाली रुक्मिणी अपने चरणों में नत जनों की रक्षा करें ॥ २ ॥

प्रकलितधनपगुरुन्यक्कृतचणपुरुधनविद्ये ।
निजपदनिरतजनानां तव पदनतमव भैष्मि ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने चरणों में निरतजनों के लिये पुष्कल धन के समर्पण से धनपति को तथा अगाध विद्या के दान से वाचस्पति को लज्जित बनाने वाली रुक्मिणी अपने चरणों में नतजनों की रक्षा करें ॥ ३ ॥

गिरिपतितनुजनिवाणी मुखनतविमलचरित्रे ।
धरधरकरपरिरब्धे तव पदनतमव भैष्मि ॥ ४ ॥

गिरिजा एवं शारदा प्रभृति देवियों को अपने विमल चरित्र से नत कर देने वाली, गोवर्धनधारी से आलिंगित रुक्मिणी अपने चरणों में नतजनों की रक्षा करें ॥ ४ ॥

गजरथतुरगधनादिप्रदनिजकणिककटाक्षे ।
कृतनतवृजिनविनाशे तव पदनतमव भैष्मि ॥ ५ ॥

अपनी कटाक्ष-कणिका से गज, रथ, तुरग आदि समृद्धियों की दात्री, नतजनों के पापों की हन्त्री रुक्मिणी अपने चरणों में नतजनों की रक्षा करें ॥ ५ ॥

विधिहरशुचिभवनागाधिपमुखमुखततिवर्ण्ये ।
तनुरुचिहसितसुपर्णे तव पदनतमव भैष्मि ॥ ६ ॥

विधि, हर, कार्त्तिकेय, गजानन प्रमुख देवताओं से गीतकीर्त्ति, शारीरिक कान्ति से सुवर्ण का उपहास करने वाली रुक्मिणी अपने चरणों में नतजनों की रक्षा करें ॥ ६ ॥

स्वरलवपरिहृतदर्पीकृतपरभृतशुकमुख्ये ।
स्वचरणनतशुकमुख्ये तव पदनतमव भैष्मि ॥ ७ ॥

कोकिल, शुक आदि मधुर स्वर वाले पक्षियों के दर्प को अपने स्वर के लेश से नष्ट कर देने वाली, शुकादि प्रधान मुनियों से नत चरणों वाली रुक्मिणी अपने चरणों में आनतों की रक्षा करें ॥ ७ ॥

श्रितजनसकलसमीहाव्रजवितरणरतचित्ते ।
अभयदवरदकराब्जे तव पदनतमव भैष्मि ॥ ८ ॥

आश्रित लोगों की सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करने में रतचित्त एवं अभय तथा वरद मुद्राओं से सुशोभित करकंजों वाली रुक्मिणी अपने चरणों में नतजनों की रक्षा करें ॥ ८ ॥

पदयुगविनमदविद्याप्रशमनपटुलववीक्षे ।
सुमशरतनुजनयित्रि तव पदनतमव भैष्मि ॥ ९ ॥

चरण-युगलों में प्रणाम करने वालों की अविद्या को लेश मात्र दृष्टिपात करके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नष्ट कर देने वाली, प्रद्युम्न की माता रुक्मिणी अपने चरणों में नत जनों की रक्षा करें ॥ ९ ॥

स्ववशगभुवनसमूहस्ववसतिजनिनिकुरम्बे ।
क्षितिपतिचरणनिषक्ते तव पदनतभव भैमि ॥ १० ॥

समस्त भुवन समूहों को अपने वशमें करके अपने निवास स्थान तक पहुँचाने वाली एवं भूपति भगवान् कृष्ण के चरणों में आसक्त रुक्मिणी अपने चरणों में नत जनों की रक्षा करें ॥ १० ॥

स्मृतिलवहृतनतसर्वज्वरमुखविविधरुगाले ।
असुरहृपदकमलाले तव पदनतमव भैमि ॥ ११ ॥

लेश मात्र स्मरण करने वाले भक्तोंके ज्वर आदि समस्त विविध रोगोंके समूह को नष्ट कर देने वाली, दैत्यारिके चरण-कमल की भ्रमरी रुक्मिणी अपने चरणों में नत जनों की रक्षा करें ॥ ११ ॥

श्रुतिततगदितपुमर्थस्पृशिपटुलवपदभक्ते ।
पदनतविजितविकारे तव पदनतमव भैष्मि ॥ १२ ॥

चरणों में अत्यन्त भक्ति करने वालों को भी वेदोक्त चतुर्विध पुरुषार्थों की दात्री, चरणों में नत जनों के विकारों को पराजित कर देने वाली रुक्मिणी अपने चरणों में नत जनों की रक्षा करें ॥ १२ ॥

कमलजनिजपतिशम्भुत्रिदशपनुतपतिभक्ते ।
जलनिधितनुजनिरूपे तव पदनतमव भैष्मि ॥ १३ ॥

जिसकी पतिभक्ति को बन्दना ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन्द्र, आदि करते हैं, वे साक्षात् लक्ष्मी स्वरूपा रुक्मिणी अपने चरणों में नतजनों की रक्षा करें ॥ १३ ॥

स्वचरणनतिलवलभ्याशयशमसुखगुणजाले ।
श्रमहृतिनिपुणकटाक्षे तव पदनतमव भैष्मि ॥ १४ ॥

अपने चरणों में लेश मात्र भी नमन करने वालों के हृदयमें शम, दम आदि गुणावली को सुलभ बना देने वाली, श्रम निवारण करने में दक्ष कटाक्ष वाली रुक्मिणी अपने चरणों में नत जनों की रक्षा करें ॥ १४ ॥

यमसुखनिखिलनिजाङ्गव्रजयुतमतिजयदात्रि ।
श्रितकृतवृजिनसहिष्णो तव पदनतमव भैष्मि ॥ १५ ॥

यम, नियम आदि आठों अंगों से युक्तमति पर विजय का वर देने वाली, आश्रित जनों के किये अपराधोंको सह लेने वाली रुक्मिणी अपने चरणों में नत जनों की रक्षा करें ॥ १५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभैष्मीवासुदेवस्तुतिः

[हरनर्तनम्]

संसृतिघ्नपदार्चनौ नतलोकनाकधरारुहौ
हस्तधूतपयोरुहौ भ्रमराहिनीरदकुन्तलौ ।
भक्तिमद्वरदायकौ वरपीतवर्णपटावृतौ
भीष्मराज तनूद्भवावसुदेववर्ष्मभुवौ भजे ॥ १ ॥

चरणों की अर्चना करने वालों के संसार नाशक, नत-जनों के कल्पतरु, कमलों को कँपा देने वाले हाथों से विराजमान, भ्रमर, अहि, नीरदाभ केशों वाले, भक्तों के वरदायक, सुन्दर पीताम्बरधारी रुक्मिणी और वासुदेव को भजता हूँ ॥ १ ॥

योगिनम्यपदाम्बुजौ गुणजालरम्यपदाम्बुजौ
दीनकोटिकृपाम्बुधी नतिकृत्कृतान्तनिकृन्तकौ
(नम्रकोटिकृपाम्बुधी)
मेनकामुखसुन्दरीनुतदिव्यविग्रहतल्लजौ
भीष्मराजतनूद्भवावसुदेववर्ष्मभुवौ भजे ॥ २ ॥

योगियों से प्रणम्य पादाब्जों वाले, गुणगणों से रमणीय चरणाम्बुजों वाले, दीन (नम्र) जनों के लिए कोटि-कोटि कृपा सागर, नमन करने वालों के यम-भय का निवर्हण करने वाले, मेनका प्रमुख सुन्दरियों से प्रशंसित प्रख्यात दिव्य शरीर वाले रुक्मिणी और वासुदेव को भजता हूँ ॥ २ ॥

वैनतेयमुखादृतौ विनताघपूगविनाशकौ
भृङ्गभोगिशिरोरुहौ कणभुक्प्रमुख्यनयप्रदौ ।
एणपङ्कजलोचनौ भवपारदायकपादुकौ
भीष्मराजतनूद्भवावसुदेववर्ष्मभुवौ भजे ॥ ३ ॥

गरुड़ आदिकों से समादृत, प्रणत जनों के पापपुंज के नाशक, भृंग और भुजंग के सदृश बाल वाले, काणाद प्रमुख शास्त्रों के प्रबोधक, मृगनयनी एवं अरविन्दाक्ष, भवसिन्धु से पार कर देनेवाली पादुका वाले भैष्मी और वासुदेव को भजता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीमल्ललितादेवीस्तुतिः

[पादाकुलकम्]

त्रिभुवनजननीं करिवदनाम्बां
करुणासिन्धुं कलितनतेष्टाम् ।
राज्यश्रीदां क्षितिधरतनुजां
नौमि श्रीमल्ललितादेवीम् ॥ १ ॥

जगज्जननी, गजानन की अम्बा, कृपासिन्धु, प्रणतजनों को इष्टदात्री, राज्य लक्ष्मी देनेवाली, गिरिराजकुमारी श्रीमती ललिता देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

वैराग्याप्यां मोदितविनतां
विद्याधीशीं (दात्रीं) फणिधृत्कान्ताम् ।
चन्द्रोत्तंसां नतवरदात्रीं
कलये श्रीमल्ललितादेवीम् ॥ २ ॥

वैराग्य से लभ्य, विनत जनों को मुदित करने वाली, विद्यादात्री, भुजगालंकृत-पतिवाली, चन्द्रमा को शिरोभूषण बनाने वाली, नतजनों को वर देने वाली श्रीमती ललिता देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

सुरकलिताङ्घ्रिं सम्पत्स्रष्ट्रीं
शम्भ्वाश्लिष्टां विभवदचरणाम् ।
विधिहरिशिवमुखपूजितपादां
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीम् ॥ ३ ॥

देववन्दित पादों वाली, सम्पत्तिदायिनी, शम्भु-समालिंगिता, वैभवदायी चरणों वाली, विधि, हरि, शिव प्रमुख देवों से पूजित पादों वाली श्रीमती ललिता देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

शोणाब्जपदां करुणानिलयं (सकरुणहृदयां)
लावण्याब्धिं शशिशिशुचूडाम् ।
नयततिदात्रीं निटिलाक्षसतीं
नौमि श्रीमल्ललितादेवीम् ॥ ४ ॥

रक्त कमलाभ चरणोंवाली, करुणहृदय, लावण्यसिन्धु, बालेन्दुशेखरा,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शास्त्रतत्त्वार्थबोधिका, त्रिलोचनवल्लभा श्रीमती ललिता देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

इहपरसुखदां प्रणवनिजाख्यां
ह्रीं (ॐ) जपतुष्टां विरतिविधात्रीम् ।
कनकभगात्रीं तनुमतिरम्यां
कलये श्रीमल्ललतादेवीम् ॥ ५ ॥

ऐहिक और पारलौकिक सुखों की दात्री, प्रणव नाम वाली, अपने बीज मन्त्र के जप से सन्तुष्ट होने वाली, वैराग्यदायिनी, कनक-प्रभ देह वाली, शरीर और बुद्धि से रम्य श्रीमती ललिता देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

अन्तकसूदनहृत्कमलार्कं
कामोज्जीवकनैजकटाक्षाम् ।
त्रीक्षणजायां त्रिभुवनपालां
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीम् ॥ ६ ॥

मृत्युञ्जय के हृदय कमल के लिये सूर्य, अपने कटाक्ष से काम को उज्जीवित कर देने वाली, त्रिनयनवनिता, त्रिभुवन पालिका श्रीमती ललिता देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

तूर्णं कष्टव्रातनिहन्त्रीं सत्वरमिष्टसमष्टिविधात्रीम् ।
अष्टैश्वर्यप्रभृतिविधात्रीं नौमि श्रीमल्ललितादेवीम् ॥ ७ ॥

समस्त कष्टों को शीघ्र ही नष्ट करने वाली, झटिति अभीष्ट पदार्थों को दे देने वाली, अष्टैश्वर्य आदि की दात्री श्रीमती ललिता देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीमहागणेश्वरस्तुतिः

[शार्दूलविक्रीडितम्]

अप्यन्यामरमारिराधयिषवो यत्पादपङ्केरुह-
द्वन्द्वाराधनमन्तरायहृतये कुर्वन्त्यवश्यं बुधाः ।
यत्पूजाबलतो ह्यभूत्पुरहरो वाराणसीनायकः
श्रेयोवारणविघ्नवारणहरिः श्रीवारणास्योऽवतात् ॥ १ ॥

अन्य देवों की आराधना करने के इच्छुक विज्ञ जन भी विघ्न-विघात के लिए जिसके पादारविन्द युगल की आराधना अवश्यमेव किया करते हैं, एवं जिसकी पूजा के प्रभाव से पुरारि वाराणसी के अधीश्वर हो जाते हैं तथा श्रेय के निवारण में लग्न विघ्नरूपी हाथी के लिये जो सिंह बन जाते हैं वे गजानन रक्षा करें ॥ १ ॥

[स्रग्धरा]

श्रीगौर्यङ्के निषण्णः प्रथमशिशुमणिः स्तन्यपानप्रवृत्तः
पीत्वा वक्षोजमेकं मुहुरितरकुचान्वेषणे भग्नयत्नः ।
आद्याभ्यां दम्पतिभ्यां रुदितपरवशो लोकमातापितृभ्यां-
माश्वासं प्रापितो यः कथमपि महतायत्नजातेन सोऽव्यात् ॥२॥

श्री गौरी की गोद में प्रथम एवं उत्तम शिशु के रूप में विराजते हुये जो स्तनपान में प्रवृत्त हैं, एवं एक स्तन के पी चुकने पर दूसरे स्तन को बारम्बार ढूँढ़ने में संलग्न होने पर भी (अर्धनारीश्वर के एक ही ओर स्तन हैं) न पा सकने के कारण रोदन रत ज़ो शिशु विश्व के माता-पिता तथा आद्य दम्पति उमा महेश्वर द्वारा महान् प्रयत्न से कथंचित् आश्वस्त किया जाता है वह गजानन रक्षा करें ॥ २ ॥

[शार्दूलविक्रीडितम्]

हेरम्बो निजगण्डचुम्बनविधौ लोलौ स्वकीयप्रसू-
तातौ वीक्ष्य किशोरचापलवशात् पित्राननेन द्रुतम् ।
श्रीगौरीमुखमेलनेच्छुरपनीयैष स्वकीयं मुखं
भेष्कारादिपुरःसरं परिहसन् कोलाहली पातु नः ॥ ३ ॥

माता और पिता को अपने कपोल चुम्बन में चंचल देखकर बाल लीला की लालसा से हेरम्ब ने माता के मुख को पिता के मुख से मिला देने के लिये अपने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुख को शीघ्र ही हटा लिया। इस तरह उन दोनों के मुख को परस्पर चुम्बन रत देखकर कौतुक के साथ जोर से हँसते हुए गजानन हम लोगों की रक्षा करें ॥ ३ ॥

हे हेरम्ब पुरान्धकान्तकमखानङ्गान्तकाङ्कोद्भव,
हे हेतिप्रचयप्रचण्डमहता विभ्राजिताशामुख।
हे हेतुप्रभवान्यपूर्णकरुणावारांनिधे शंकर,
हे हेमोदर विघ्नवारणहरे पायादपायादिमम् ॥ ४ ॥

हे हेरम्ब, त्रिपुर, अन्धक, दक्षयज्ञ तथा अनंग के नाशक शंकर के सुत, अपने आयुधों के प्रचण्ड तेज से समस्त दिशाओं के प्रकाशक, अकारणकरुणावरुणालय, कल्याणकारिन् हे सुवर्णप्रभ उदर वाले, विघ्न विनाशक गणपति इस जन की अपाय से रक्षा करो ॥ ४ ॥

हे हेरम्ब कलाधरीयशिशुभृन्नागेशबद्धोदर,
हे हेलालवमात्रसंविदलिताशेषानतार्तिव्रज,
हे हेयग्रहणीयभिन्न परमानन्दस्वरूप प्रभो
हे हेमोदर विघ्नवारणहरे पायादपायादिमम् ॥ ५ ॥

हे हेरम्ब, बाल-कलाधरधारी शिव के नागराज से बद्ध उदर वाले, लीला के लेशमात्र से आनतजनों की सम्पूर्ण आर्त्तियों के नाशक, हेयोपादेय भिन्न परमानन्दस्वरूप, प्रभुवर, हेमोदर, विघ्नध्वंसक हे गणेश इस जन की अपाय से रक्षा करो ॥ ५ ॥

हे हेरम्ब, पुनर्जनुर्हर, हरब्रह्माच्युताद्यर्चित,
हे हेमादितनूभवातनुभवामोदाब्धिदोषाकर, ।
हे हेमोदर धातृरस्यसकलाम्नायप्रबोधप्रद,
हे हेमोदर विघ्नवारणहरे पायादपायादिमम् ॥ ६ ॥

हे हेरम्ब, पुनर्जन्म के नाशक, शिव; विधि, हरि प्रभृति से अर्चित, हे हैमवती-नन्दन, आमोद सागर के चन्द्र, हेमोदर, विधाता के लिये रसनीय समस्त वैदिक तत्त्व के प्रबोधक, हेमोदर, विघ्ननाशक इसे अपाय से बचाओ ॥ ६ ॥

शैलाध्यक्षनिजासनस्य तनयो हर्यक्षवाहात्मजो
भूत्वा मूषिकवाहनोऽसि भगवन् पञ्चास्यसूनुर्गजः।
अस्मांश्छ्रोत्रियवंशशेखरभवानाचारहीनान् भवा,
ञ्छ्रेष्ठानुष्ठितकारिपामरजनन्यायादवत्वग्रजः ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शैलराज कैलाश को आसन के रूप में उपयोग करने वाले शम्भु के तनय तथा सिंहवाहिनी जगदम्बा के आत्मज होकर भी तुम चूहे को वाहन बनाते हो तथा पंचानन के पुत्र होने पर भी गजानन बने बैठे हो। ऐसी स्थिति में श्रोत्रिय कुल के अलंकार से उत्पन्न होने पर भी आचारहीन हम लोगों की रक्षा श्रेष्ठजनानुकारी पामर जनों की रक्षा के न्याय से आप करें ॥ ७ ॥

[वसन्ततिलका]

बद्धोऽस्यहो गणपते भवभक्तिरज्ज्वा
दोषाकरं धरसि मत्तमतङ्गजोऽसि।
बद्धेऽनिशं मयि तथा भवभक्तिरज्ज्वा
दोषाकरे मदयुते सततं दयस्व ॥ ८ ॥

हे गणपति, तुम भव (शिव) भक्ति के पास से बद्ध हो, दोषाकर को धारण करते हो तथा मत्त मतङ्गज हो ऐसी स्थिति में भव (संसार) भक्ति की रस्सी से बँधे हुये, दोषाकर (दोषों के आकर) तथा मद से युक्त मुझ पर आत्मभाव से सदा दया करो ॥ ८ ॥

[उपजातिः]

प्रत्यङ्मुखो विघ्नप दृश्यसेऽस्मिन्
सदस्यतोऽस्मासु तवानतेषु।
पराङ्मुखत्वस्य विसर्जनेन
प्रत्यङ्मुखत्वं सफलीकुरुष्व ॥ ९ ॥

हे विघ्नराज, तुम इस सदस् में प्रत्यङ्मुख (आत्मदर्शनोन्मुख) हो इसलिए तुम्हारे समक्ष आनत हम लोगों पर पराङ्मुखता का परित्याग कर प्रत्यङ्मुखत्व को सफल करो ॥ ९ ॥

●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्री मा + भू + हरिस्तुतिः

[मञ्जुभाषिणी]

विविधैहिकौर्ध्विकफलालिकामना-
कृतिबन्धबद्धहृदयालिदुर्लभाः ।
विजिताखिलैषणजनव्रजाप्यप-
द्वनसम्भवा अवत माक्ष्माच्युताः ॥ १ ॥

विविध ऐहिक और पारलौकिक फलों की कामना से किये गये कर्मों के बन्धन से बद्धहृदय लोगों को दुर्लभ, समस्त एषणाओं को जीत लेनेवालों को सुलभ लक्ष्मी, पृथ्वी और हरि रक्षा करें ॥ १ ॥

मघवाश्रयाशिवरुणादिदेवता-
बलिमुखदैत्यकुलशेखरार्चिताः ।
अपमृत्युवार्धकमुखार्त्तिवारकाः
स्वपदानता अवत माक्ष्माच्युताः ॥ २ ॥

इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि देवताओं एवं बलि प्रभृति दैत्यकुलचूडामणि से समर्चित, अपमृत्यु, वार्धक्य प्रमुख क्लेशों के नाशक, वन्दित पादारविन्द लक्ष्मी, भूमि और अच्युत रक्षा करें ॥ २ ॥

मतितैक्ष्ण्यलेशधनलेशवर्जिता
अपि यत्पदाब्जसकृदानतेर्बलात् ।
धिषणाविलासधनलेशधिक्कृत-
धिषणार्थपा अवत माक्ष्माच्युताः ॥ ३ ॥

लेश मात्र भी तीक्ष्ण बुद्धि से रहित एवं स्वल्पतम धन से वंचित लोग भी जिनके चरणों का एक बार भी प्रणाम करके वाचस्पति की बुद्धि और कुबेर के वैभव को मात करने वाली बुद्धि और विभूति पा लेते हैं वे लक्ष्मी, पृथ्वी और अच्युत रक्षा करें ॥ ३ ॥

नतदीनलोकनिखिलार्त्तिनाशकृत्-
करुणाकटाक्षलहरीतरङ्गिताः ।
विधिदारभूध्रपतिवर्ष्मसम्भवा-
प्रमुखेडिता अवत माक्ष्माच्युताः ॥ ४ ॥

प्रणत दीन जनों के सम्पूर्ण कष्टों का नाश करनेवाले करुणापूर्ण तरंगित

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कटाक्षों को धारण करने वाले, सरस्वती, गिरिजा आदि प्रमुख शक्तियों से वन्दित लक्ष्मी, पृथ्वी और अच्युत रक्षा करें ॥ ४ ॥

करिकुम्भगर्वहृदुरःसमुद्भवे
करिवक्त्रवह्निभवसूसहोद्भव ।
पदपद्मसन्नतकृताघनाशन-
व्रतदीक्षिता अवत माक्ष्माच्युताः ॥ ५ ॥

करि-कुम्भ के गर्व को नष्ट करने वाले स्तनों से विभूषित, गजानन और षडानन की माता के सोदर, पाद-पद्मों में प्रणतजनों से किये गये पापों के नाश करने के व्रत में दीक्षित लक्ष्मी, पृथ्वी और अच्युत रक्षा करें ॥ ५ ॥

भुजगामृतप्रदषडङ्घ्रिकुन्तले
भुजगाधिनायककलेवरासन ।
तनुकान्तिनिर्जितसुवर्णकाञ्चना-
भिनवाम्बुदा अवत माक्ष्माच्युताः ॥ ६ ॥

भुजग, वारिद और भ्रमर के समान बालों वाली, शेषशायी, तनुकान्ति से तप्त कांचन और नील नीरद की प्रभा को जीत लेने वाले लक्ष्मी, पृथ्वी और अच्युत रक्षा करें ॥ ६ ॥

द्रुहिणोरुसम्भवपराशरात्मभू-
मुखमौनिरत्नकलिताङ्घ्रिनीरजाः ।
पिककोकिलार्णवसमस्तदर्पहृन्-
मधुरस्वरा अवत माक्ष्माच्युताः ॥ ७ ॥

नारद, व्यास प्रमुख मुनीन्द्रों से पूजित पादपद्म, अपने मधुर स्वर से कोयल और पुंस्कोकिल के स्वरों को जीत लेनेवाले लक्ष्मी, पृथ्वी और अच्युत रक्षा करें ॥ ७ ॥

पदपङ्कजानतमनोरथावली-
द्रुतपूरणैकनिरतात्ममानसाः ।
पुरुषार्थपूगयुगपद्वितारक-
स्वचतुर्भुजा अवत माक्ष्माच्युताः ॥ ८ ॥

पादारविन्द में आनत जनों के सम्पूर्ण मनोरथों को अति शीघ्र पूर्ण करने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में निरत चित्त, अपने चारों हाथों से एक साथ ही चारों पुरुषार्थों के दायक लक्ष्मी, पृथ्वी और अच्युत रक्षा करें ॥ ८ ॥

कमलोत्थशत्रुसहजातविग्रहाः
कमलानुजन्मकमलाहृदिस्वराः ।
निजपारमार्थिकमहाविभूतिद-
स्वकटाक्षका अवत मापदाच्युताः ॥ ९ ॥

चन्द्रमा की सोदर एवं लक्ष्मी के प्रत्येक जन्म में साथ देने वाले, पारमार्थिक महाविभूतियों को अपने कटाक्ष से ही देने वाले लक्ष्मी और नारायण का मैं भजन करता हूँ ॥ ९ ॥

वसुधाभुवस्त्रिदशराण्णिकेतन
प्रमुखाखिलत्रिभुवनाधिनायकाः ।
चतुरम्बुराशिरशनापतीकृत-
स्वपदानता अवत मापदाच्युताः ॥ १० ॥

अपने चरणों में आनत जनों को भूपति, देवराज एवं त्रिभुवनेश्वर बनाने वाले एवं चतु सागर पर्यन्त भू-मण्डल का साम्राज्य समर्पित करने वाले लक्ष्मी और नारायण को मैं भजता हूँ ॥ १० ॥

ज्वरकुष्ठभूमिधरयक्ष्ममुख्यरुङ्-
निकरघ्नसंस्मृतिलवस्वपादुकाः ।
निजबाहुविक्रमलवेन संहृता-
खिलदुर्जना अवत मापदाच्युताः ॥ ११ ॥

अपनी पादुका के लेश मात्र स्मरण से ज्वर, कुष्ठ, राजयक्ष्मा प्रमुख रोग समूहों को नष्ट करने वाले, अपने बाहुबल के लेश से ही समस्त दुष्टों का संहार करने वाले लक्ष्मी और नारायण रक्षा करें ॥ ११ ॥

अतिभीषणारिमुखशस्त्रधारकाः
प्रणताभयेष्टदकराम्बुसम्भवाः ।
धिषणाविकारलववर्जितार्चित-
स्वपदाम्बुजा अवत मापदाच्युताः ॥ १२ ॥

अति भयङ्कर शत्रुओं के ऊपर शस्त्र उठाने वाले, प्रणतों को अभय एवं अभीष्ट के दाता कराम्बुजों वाले, निर्विकार मतिमानों से पूजित पादपद्म लक्ष्मी और नारायण रक्षा करें ॥ १२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सरसीजविष्टरसुधांशुशेखर-
द्विरदास्यषण्मुखपुलोमजेण्मुखैः।
पुलोमजेट्तुलसिकाऽञ्जनुर्मुख-
सुमनोऽर्चिता अवत मापदाच्युताः॥ १३॥

ब्रह्मा, चन्द्रशेखर, गणेश, कार्त्तिकेय, इन्द्र आदि प्रधान देवों द्वारा इन्द्रपुष्प, तुलसी, कमल आदि पुष्पों से समर्चित लक्ष्मी नारायण रक्षा करें॥ १३॥

मतिशान्तिदान्तिसकलाशुभक्षमो-
परतिप्रमुख्यगुणरत्नपूगदाः।
भवमृत्युचक्रभवसर्वरीतिक-
श्रमवारका अवत मापदाच्युताः॥ १४॥

मति, शम, दम, सकल अशुभों की तितिक्षा, उपराम प्रमुख गुणरत्नों के दाता, संसार में अवश्यंभावी मृत्यु की चक्की में पिसने के सर्व विधि क्लेश के संहारक लक्ष्मी और नारायण रक्षा करें॥ १४॥

यममुख्यसाध्वसकृदस्वहारकृद्
यममुख्ययोगविभवप्रदार्चनाः।
अखिलापराधनिकुरम्बमर्षक-
प्रियमानसा अवत मापदाच्युताः॥ १५॥

जिनकी अर्चना यमादिकृत भय आदि का नाश कर के यम-नियम प्रमुख योग समृद्धि को देती है, वे सर्वविधि अपराधों को क्षमा करने में प्रीतिचित्त लक्ष्मी नारायण रक्षा करें॥ १५॥

प्रणतेष्टदानरतमानसाब्धिजा-
धरणीहृषीकपतिसंस्तुतिं पठन्।
प्रभवेदनन्तकमलाधराकला-
प्रमुखाखिलेष्टविभवालिवासभूः॥ १६॥

प्रणत जनों के समीहित अर्थ को देने में प्रसन्नचित्त लक्ष्मी, पृथिवी और नारायण के स्तोत्र का पाठ करता हुआ अनन्त लक्ष्मी, वसुधा और कला प्रमुख समस्त अभीष्ट पदार्थों का आश्रय बन जाता है॥ १६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीमोहिनीस्तोत्रम्

[हरिणी]

तुहिनधरणीधारिक्षोणीधवाङ्गसमुद्भवा-
रमणहृदयाम्भःसञ्जातप्रमोददभास्करम् ।
जननमरणागाधाम्भोधिप्रपातवशार्दित-
स्वहृदयनमत्कारुण्याब्धिं भजे हृदि मोहिनीम् ॥ १ ॥

गिरिराज-किशोरी उमा के प्राणधन शंकर के हृदयारविन्द को विकसित करने वाले सूर्य, जन्म-मरण के अगाध सागर में गिरे रहने के कारण पीडित जनों के प्रणाम करते ही करुणा-सिन्धु वन जाने वाले मोहिनी भगवान् को मैं हृदय में भजता हूँ ॥ १ ॥

स्वतनुजननीभ्राम्यद्भोजिक्ष्मेशतनूल्लसद्-
रुचिरवपुषा गीर्वाणार्थं गृहीतनवाकृतिम् ।
अतुलसुषमभ्राजद्वर्ष्मप्रभालवहापिता-
खिलनिजमदीभूतस्वर्णं दधे हृदि मोहिनीम् ॥ २ ॥

देव हित के लिये अपने शरीर के उत्पादक भोजीन्द्र की देह से समुल्लसित सुन्दर काया से नवीन अवतार धारण करने वाले, अतुलनीय सुषमा से भ्राजमान शरीर की कान्ति के लेश मात्र से सुवर्ण के सौन्दर्य-दर्प का दलन करने वाले मोहिनी भगवान् को मैं हृदय में भजता हूँ ॥ २ ॥

अगणितमहारत्नस्वर्णोज्ज्वलाभरणोल्लसत्-
करकमलसञ्जातभ्राजत्सुधारसभाजनाम् ।
कृतनिजमहासौन्दर्यादिप्रलोभवशंवदा-
मररिपुसुधापानभ्रंशां भजे हृदि मोहिनीम् ॥ ३ ॥

अगणित महामणि एवं सुवर्ण के आभरण से भ्राजिष्णु तथा कर कमल में अमृत-कलश धारण किये हुये, अपने लोकोत्तर सौन्दर्य से मोहित दैत्यों को अमृत-पान में ठग लेने वाले मोहिनी भगवान् को मैं हृदय में भजता हूँ ॥ ३ ॥

शुकपरभृतन्यक्कृद्वाणीं पराशरसज्जनुः-
शुकमुखमुनिश्रेष्ठव्रातप्रकीर्त्तितवैभवाम् ।
वचनजननीक्षीराम्भोधिप्रजातकलेवरा-
गिरिजननुतस्वीयाङ्घ्र्यब्जां दधे हृदि मोहिनीम् ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुक और कोकिल की वाणी से भी मधुरवाक्, व्यास, शुक प्रमुख मुनीन्द्र-मण्डल से गीतकीर्त्ति, वाणी, लक्ष्मी और गौरी से प्रणत-पाद मोहिनी भगवान् को मैं हृदय में भजता हूँ ॥ ४ ॥

श्रीमोहिनीस्तव

[मणिमाला]

फालेक्षण (फालाम्बक) हव्यान्निर्दग्धमनोभू-
काम्याकृतिराजल्लीलाधृतिकाले ।
लावण्यनिरीक्षासम्भ्रान्तघृताची-
मेनामुखचित्ते श्रीमोहिनि पाहि ॥ १ ॥

शंकर के ललाटस्थ तृतीय नेत्र से भस्मीकृत काम के समान कमनीय शरीर धारण करने की लीला करने वाले, घृताची, मेनका आदि अप्सराओं को अपने दिव्य सौन्दर्य दर्शन से सम्भ्रम में डाल देने वाले श्री मोहिनी भगवान् रक्षा करें ॥ १ ॥

क्षोणीधरजिष्णुश्रोणीस्तनबिम्ब-
न्यक्कार्यधरौष्ठभ्राजत्तनुलक्ष्म्या ।
आत्मीयतनूभूवैवश्यविराजत्-
तत्सूदनबुद्धे श्रीमोहिनि पाहि ॥ २ ॥

पर्वतों के विजेता स्तनों एवं बिम्ब फल को पराजित करने वाले अधर से सुशोभमान शरीर सौन्दर्यशाली, अपने अनुपम लावण्य के वशीभूत दैत्यों को क्लेशित करने की बुद्धि रखने वाले श्री मोहिनी भगवान् रक्षा करें ॥ २ ॥

नम्रावलिकष्टव्रातप्रशमेष्ट-
स्पर्शव्रतचुञ्चुस्वीयाङ्घ्रिसरोजे ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्रंसन्निजनीवीबन्धोद्यमराज-
द्धस्ताङ्गुलिजाले श्रीमोहिनि पाहि ॥ ३ ॥

भक्तों के कष्टों के नाश एवं अभीष्ट पदार्थों के वितरण का व्रत धारण करने में ख्यात चरणाम्बुज शाली, सरकती हुई नीवी के बन्धन को दृढ़ करने में उद्यमशील अँगुलियों वाली श्री मोहिनी रक्षा करें ॥ ३ ॥

पाथः स्पृशिकर्तृव्योमोद्भवभोक्तृ-
न्यक्कृच्छविराजच्छीर्षप्रभवाले ।
अम्भोजनिसर्वाहङ्कारनिहन्तृ-
स्वीयाङ्घ्रिकरादे श्रीमोहिनि पाहि ॥ ४ ॥

अपने शीर्षस्थ कुन्तलों से नील नीरद एवं उरग की छवि को नीचा दिखाने वाले, अपने हाथ और पैरों से कमल के सौन्दर्य, सौकुमार्य आदि समस्त गुणों के अहंकार को नष्ट करने वाले श्री मोहिनी भगवान् रक्षा करें ॥ ४ ॥

घस्रेशविभासिस्वर्णच्छविराजद्-
वस्त्रावृतनैजाम्भोजद्युतिकाये ।
पादाम्बुजभक्ताभीष्टाधिकसर्व-
स्पर्शप्रियचित्ते श्रीमोहिनि पाहि ॥ ५ ॥

भास्कर प्रभा तथा सुवर्ण की छवि के समान सुशोभमान अम्बर से आवृत मनोहर द्युतिमान् शरीर वाले, पादाम्बुज के भक्तों को इष्ट पदार्थों से अधिक वरदान देने में प्रसन्न चित्त रहने वाले श्री मोहिनी भगवान् रक्षा करें ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीमोहिनीस्मरारिशास्तृस्तवः

[नन्दनम्]

जगदधिपान् गणेशशुचिभूमनोभवाद्यादृतान्
सदयहृदः प्रणम्रजनताखिलेष्टदानव्रतान् ।
इभमुखदान् समस्तशुभदस्वपादपद्मार्चनां-
स्त्रिभुवनमोहनाकृतिहरिस्मरारिशास्तॄन् भजे ॥ १ ॥

संसार के अधीश्वर, गणपति, कीर्त्तिकेय, काम आदि से समादृत, सदय-हृदय, प्रणत जनों के अखिल अभीष्टों के दान का व्रत धारण करने वाले, गज आदि प्रधान वस्तुओं के दाता, अपने पाद पद्म की अर्चना से समस्त कल्याणों को देने वाले, मोहिनी रूपधारी नारायण, शिव और शास्ता को मैं भजता हूँ ॥ १ ॥

यमिसुलभान् पदाश्रितजनप्रमोदवार्ध्यब्धिजान्
नयनिपुणान् भुजङ्गपतिप्रकीर्त्यमाहात्म्यकान्
विधुवदनान् विनम्रनिखिलेप्सितार्थविश्राणकां-
स्त्रिभुवनमोहनाकृतिहरिस्मरारिशास्तॄन् भजे ॥ २ ॥

संयमी जनों को सुलभ, चरणाश्रित जनों के आनन्द-सिन्धु के लिए चन्द्र, नयनिपुण, शेषनाग से कीर्त्तित माहात्म्य वाले, चन्द्रानन, प्रणत जनों के सम्पूर्ण अभीष्ट पदार्थों को देने वाले, त्रिभुवन को मोहित करने वाले मोहिनी रूपधारी विष्णु, शिव और शास्ता को मैं भजता हूँ ॥ २ ॥

त्रिदशनुतान् समृद्धिनिकरप्रदानदक्षस्मृतीन्
विरतिरतान् समस्तविभवाभयप्रदाय्यर्चनान् ।
रुचिरतनून् हिरण्यजठरप्रमुख्यदेवार्चितां-
स्त्रिभुवनमोहनाकृतिहरिस्मरारिशास्तॄन् भजे ॥ ३ ॥

देववन्दित, समृद्धि समुदाय को देने में निपुण-स्मृति वाले, वैराग्यरत, अपनी अर्चना से सम्पूर्ण वैभव देने वाले, मनोहर देहधारी हिरण्यगर्भ प्रमुख देवों से अर्चित त्रिभुवन मोहक मोहिनी रूपधारी विष्णु, शिव और शास्ता को मैं भजता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवितनतांश्रमूरुनयनत्रिदृक्सरोजेक्षणाञ्-
छिवमतिदान् मनोज्ञतनुताप्रमुख्यजन्मावनीः ।
नयचयदान् परस्परमहानुरागपूर्णाशयां-
स्त्रिभुवनमोहनाकृतिहरिस्मरारिशास्तॄन् भजे ॥ ४ ॥

रक्षित जनों से नत, मृगलोचन, त्रिलोचन और कमल-नयन, कल्याणकारी बुद्धि के दाता, सुन्दर शरीर से जन्म और रक्षा के कार्य को करने वाले, शास्त्र-समूह के बाधक, परस्पर उत्तम प्रेम से परिपूर्ण हृदय वाले त्रिभुवन मोहक मोहिनी रूपधारी विष्णु, शिव और शास्ता को मैं भजता हूँ ॥ ४ ॥

कमलपदान् महीत्रिदिवगाखिलेष्टवस्तुप्रदान्
प्रणवपरान् कृतेतरवचःप्रकीर्त्तिताङ्घ्रिद्वयान् ।
अघहनतांस्तनूजितकनत्सुवर्णशङ्खाब्धिजां-
स्त्रिभुवनमोहनाकृतिहरिस्मरारिशास्तॄन् भजे ॥ ५ ॥

कमलवत् पदों वाले, भूलोक एवं स्वर्लोक के अखिल अभीप्सित पदार्थों के दाता, प्रणवपरायण, अपौरुषेय वाणी से प्रकीर्तित चरण-युगल वाले, नयन से ही पापों के नाशक, शरीर की शोभा से भास्वर सुवर्ण, शंख और चन्द्र को जीतने वाले त्रिभुवन मोहन, मोहिनी रूपधारी विष्णु, शिव और शास्ता का मैं भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीमोहिनीशंकरशास्तृस्तुतिः

[नन्दनम्]

भवशमनान् भुजङ्गचिकुरान् पदानतेष्टप्रदान्
सितवसनान् भजत्सुरतरून् करावधूताम्बुजान् ।
सुरविनुतान् मनोज्ञचरितान् प्रणन्तृकाम्यप्रदान्-
जलनिधिजाकलत्रगिरिजाकलत्रशास्तॄन् भजे ॥ १ ॥

संसार-निवर्तक, भुजंग सदृश बालों वाले, पादावनत जनों के समग्र अभीष्टों के दाता, श्वेत वस्त्रधारी, भक्तों के कल्पतरु, करों से कमलश्री को जीतने वाले, देव-वन्दित, मनोज्ञ चरित वाले, प्रणाम करने वालों के मनोरथ पूरक लक्ष्मी वल्लभ, उमाकान्त और शास्ता को मैं भजता हूं ॥ १ ॥

यमदमनान् कृतार्द्रहृदयान् सुधाशिनाभ्यर्चितान्
मुनिविनुतान् सुवर्णमुखदाँस्तिलोत्तमादीडितान् ।
जनिभृतिहरान् नतेष्टवरदान् पयोदशीर्षोद्भवान्-
जलनिधिजाकलत्रगिरिजाकलत्रशास्तॄन् भजे ॥ २ ॥

यम के दमनकारी, सदय-हृदय, देवेन्द्र पूजित, मुनिनमस्कृत, सुवर्ण आदि के दाता, तिलोत्तमा आदि से प्रशंसित, जन्म-मृत्यु के नाशक, प्रणत जनों को अभीष्ट कर देने वाले, पयोदशीर्ष-समुद्भव लक्ष्मीवल्लभ, उमाकान्त और शास्ता को मैं भजता हूँ ॥ २ ॥

गरुडनुतान् मनोहरकृतीन् प्रणम्रपापापहान्
नयगणदान् सरोजनयनान् विनोदवाद्योत्सुकान् ।
नतवरदान् विपत्तिहरान् समस्तसिद्धिप्रदान्-
जलनिधिजाकलत्रगिरिजाकलत्रशास्तॄन् भजे ॥ ३ ॥

गरुडवन्दित, मनोहर कार्य करने वाले, प्रणाम करने वालों के पापनाशक, शास्त्रसमूह के बोधक, सरोजनेत्र, मनोरंजक वाद्यों में उत्सुक, प्रणतों को वर-दायक, विपत्तियों के नाशक, समस्त सिद्धियों के दायक लक्ष्मी वल्लभ, उमाकान्त और शास्ता को मैं भजता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीमोहिनीमन्मथशत्रुशास्तृस्तवः

[उपजातिः]

श्रीमोहिनीमन्मथशत्रुशास्तॄन्
भजत्सुरागान् भवसागरौर्वान् ।
भृङ्गाभकेशान् करनिर्जिताब्जा-
च्छरद्घनाभस्वपटान् प्रपद्ये ॥ १ ॥

भक्तों के प्रेमी, भव-सागर के शोषक वडवानल, भृंगाभकेशों वाले, हाथों से कमलों को विजित करने वाले, शरद् घन के समान स्वच्छ वस्त्रों वाले विष्णु, शिव, और शास्ता की मैं शरण लेता हूँ ॥ १ ॥

नम्रालिकाम्याखिलदान् प्रपद्ये
सुपर्वनम्यान् गुणपूगरम्यान् ।
कृतार्थताजन्मनिमृत्युहर्तॄ-
ञ्छ्रीमोहिनीमन्मथशास्तृशास्तॄन् ॥ २ ॥

नम्रजनों की अखिल कामनाओं के दाता, देववन्द्य, सद्गुणों से रमणीय, कृतार्थता-सम्पादक, जन्म-मृत्यु के नाशक, श्री विष्णु, शिव और शास्ता को शरण मैं लेता हूँ ॥ २ ॥

वरप्रदातॄन् घनतुल्यकेशान्
नताघनाशान् विनताजवाहान् ।
एणाङ्कधिक्कृद्वदनान्प्रपद्ये
श्रीमोहिनीमन्मथशास्तृशास्तॄन् ॥ ३ ॥

वरदायक, घनाभकेशों वाले, प्रणतों के पापनाशक, गरुड आदि को वाहन बनाने वाले, चन्द्रमा से भी मनोज्ञ मुख श्री विष्णु, शिव और शास्ता की मैं शरण लेता हूँ ॥ ३ ॥

शोणाम्बुजाङ्घ्रीन् कणभुङ्मुखेड्यान्
कष्टालिहन्तॄन् सकलेष्टदातॄन् ।
सिद्ध्यष्टकस्पर्शकृतः प्रपद्ये
श्रीमोहिनीमन्मथशास्तृशास्तॄन् ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रक्तकमल तुल्य चरणों वाले, कणाद आदि मुनियों से वन्द्य, कष्टों के नाशक, सकल इष्ट पदार्थों के दायक, आठों सिद्धियों के दाताश्री विष्णु, शिव और शास्ता को मैं शरण लेता हूँ ॥ ४ ॥

●

श्रीमोहिनीशंकरस्तवः

वरप्रदपदौ सरोभवकरौ नतावनकृति-
प्रियौ सुरुचिरौ सुपर्वा (निलिम्पा) चितौ ।
भुजङ्गमकचौ भजत्सकलदौ भवोन्मूलकौ
भजामि हृदि शास्तृसूजनकमोहिनीशङ्करौ ॥ १ ॥

वरदायक चरणों वाले, कमलतुल्य करों वाले, नतजनों की रक्षा को प्रिय मानने वाले, अत्यन्त सुन्दर, देवपूजित, भुजगतुल्य केशों वाले, भक्तों को सर्वस्व अर्पित करने वाले, संसार नाशक शास्ता के माता पिता मोहिनी और शंकर को मैं हृदय में भजता हूँ ॥ १ ॥

मुनीन्द्रविनुतौ सुरव्रजनतौ सुवर्णाम्बुज-
प्रभौ घनकचौ भवप्रशमनौ नतेष्टप्रदौ ।
कृतार्थितनतौ कृतान्तशमनौ कृपावारिधी
दधामि हृदि शास्तृसूजनकमोहिनीशङ्करौ ॥ २ ॥

मुनीन्द्रों से विनुत, देववृन्दवन्दित, स्वर्ण-कमल प्रभ, घनतुल्लकेशों वाले, संसार-शामक, नत को अभीष्ट वस्तु देने वाले, प्रणाम करने वालों को कृतकृत्य करने वाले, यम का शमन करने वाले, कृपावारिधि शास्ता की माँ तथा जनक मोहिनी और शंकर को मैं हृदय से भजता हूँ ॥ २ ॥

भजत्प्रियकृतौ नताण्डजपती नताघच्छिदौ
कलस्वलपनौ कलानिकरदौ कलाभृन्मुखौ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अभीष्टदपदस्मृती प्रणतकष्टविच्छेदकौ
दधामि हृदि शास्तृसूजनकमोहिनीशङ्करौ ॥ ३ ॥

भक्तों के प्रिय का सम्पादन करने वाले, गरुड-वन्दित, प्रणतजनों के पाप नाशक, मनोज्ञ मुखवाले, कलाओं के दाता, चन्द्रमुख, स्मृति से ही अभीष्ट दायक, प्रणतजनों के कष्टहारी शास्ता की माँ तथा जनक मोहिनी और शंकर को मैं हृदय में भजता हूँ ॥ ३ ॥

●

श्रीरमास्तुतिः

[अनुष्टुभ्]

अनन्तकोटिब्रह्माण्डमण्डलीजननीं रमाम् ।
अनेकपमुखानेकरूपसम्पत्प्रदां भजे ॥ १ ॥

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डों की जननी, गजानन आदि प्रमुख देवों को विपुल समृद्धि का दान करने वाली रमा का मैं भजन करता हूँ ॥ १ ॥

आकारपारकारुण्यपीयूषस्य हरिप्रिये ।
आशाधिकवरस्रष्टृपादुके पाहि भार्गवि ॥ २ ॥

आकार से ही परम करुणामृत शाली-हरि की वल्लभे, अपनी चरणपादुका से आशातीत वर देने वाली लक्ष्मी, रक्षा करो ॥ २ ॥

इभसप्तिमुखाशेषसम्पत्स्पर्शिकृपालये ।
इन्दुसोदर्युपेन्द्रस्य इन्दिरे पाहि सर्वदा ॥ ३ ॥

हाथी, घोड़े आदि प्रमुख सम्पत्ति को देने में कृपागार, चन्द्रमा की सहोदर बहन, नारायण की प्रिया इन्दिरा, सदा रक्षा करो ॥ ३ ॥

ईहारहितहृत्प्रीतभक्तानन्दाब्जघस्रप ।
ईशानि सर्वसम्पत्तेर्वल्लभे पाहि भार्गवि ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निष्काम भक्तों के ऊपर प्रीति रखने वाली, भक्तों के आनन्द-कमल को विकसित करने में दिनपति रूप समस्त सम्पदाओं की स्वामिनी लक्ष्मी रक्षा करो ॥ ४ ॥

उडुनाथधरब्रह्मनिजकान्तमुखार्चिते ।
उरगाधीशविभ्राजद्भोगिशायिप्रियेऽव माम् ॥ ५ ॥

चन्द्रशेखर, ब्रह्मा तथा नारायण से समर्चित, सर्पराजों में विराजमान शेष की शय्या पर शयन करने वाली प्रिया मेरी रक्षा करो ॥ ५ ॥

ऊरीकृतनताभीष्टपूगपूर्त्तिव्रते रमे ।
अशेषसुरकोटीरनिघृष्टचरणेऽव मे ॥ ६ ॥

प्रणतजनों के अभीष्टों को पूर्ण करने के व्रत को स्वीकार कर लेने वाली, समस्त देवताओं के मुकुट से स्पृष्टचरणों वाली रमे मेरी रक्षा करो ॥ ६ ॥

ऋद्धिदे नमतां तूर्णं नमदिच्छानुसारतः ।
कन्दर्पजनकाश्लिष्टे कमले पाहि सर्वदा ॥ ७ ॥

प्रणाम करने वालों की इच्छा के अनुसार अतिशीघ्र ऋद्धि देने वाली, नारायण से समालिंगित लक्ष्मी सदा मेरी रक्षा करो ॥ ७ ॥

ॠकारनिजरूपायै भक्तसर्वेष्टभूतिदे ।
विद्यारण्यमुखस्तोतृवरदायै नमोऽस्तु मे ॥ ८ ॥

भक्तों को समग्र अभीष्ट वैभव की दात्री, ॠकारस्वरूप, विद्यारण्य आदि स्तावकों को वर देने वाली लक्ष्मी, तुझे मेरा प्रणाम हो ॥ ८ ॥

ऌकाररूपे दुर्गेशद्रुहिणाब्जदृगर्चिते ।
अव्याजकरुणाजन्मसद्मने मे नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥

ऌकाररूपे, शिव, विधि और हरि से समर्चित, सहज करुणा की जन्मभूमि लक्ष्मी तुझे मेरा प्रणाम हो ॥ ९ ॥

ॡस्वरूपात्तलारुण्यललाटे लाकिनीश्वरि ।
लक्ष्मीर्लावण्यकारुण्य-सुधासिन्धुः सदावतात् ॥ १० ॥

ॡकारस्वरूप, भ्राजमान भाल वाली, लाकिनीश्वरी, लावण्य और कारुण्यामृत की सिन्धु लक्ष्मी सदा रक्षा करो ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एणाङ्कशीतलस्वान्ते काणादमुखशास्त्रदे(वन्दिते)।
शोणाधरे हरिप्रेयस्येणाक्षि कृपयाव मे ॥ ११ ॥

चन्द्र के समान शीतल हृदय वाली, दार्शनिक वृन्द वन्दित, रक्ताधरे, हरिवल्लभे, मृगाक्षि लक्ष्मी कृपया रक्षा करो ॥ ११ ॥

ऐहिकामुष्मिके सौख्ये करस्थे यन्नतावलेः।
भक्तालीदयमानाक्षीं विष्णुपत्नीं नमाम्यहम् ॥ १२ ॥

जिनके भक्तों के हाथों में ऐहिक और पारलौकिक सभी सुख हस्तगत हो जाते हैं उन भक्त-वत्सला लक्ष्मी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १२ ॥

ॐकारवाच्यता यस्या वेदवेदान्तकीर्त्तिते।
ॐकारजपसन्तुष्टां वन्दे वैकुण्ठवल्लभाम् ॥ १३ ॥

वेद वेदान्त में कीर्तित जिस देवी का वाचक प्रणव है, प्रणव जप करने वालों पर सन्तुष्ट रहने वाली हरिप्रेयसी को मैं वन्दना करता हूँ ॥ १३ ॥

औदासीन्यलसच्चित्ततृणीकृतजगन्नुताम्।
औशनस्यादिविद्यालीलभ्यपादां भजे रमाम् ॥ १४ ॥

वैराग्य भूषित हृदय से जगत् को तुच्छ समझने वाले भक्तों से वन्दित, शुक्र-नीति आदि विद्याओं से गम्य रमा का मैं भजन करता हूँ ॥ १४ ॥

अङ्गकान्तिझरीकृष्टजगन्नाथहृदम्बुजाम्।
अन्तकान्तककान्ताङ्गीर्लसत्पार्श्वं भजे रमाम् ॥ १५ ॥

शरीर की दिव्य सुषमा से हृषीकेश को वश में कर लेने वाली, मृतुञ्जय की भार्या भवानी को पार्श्व में रखने वाली रमा को मैं भजता हूँ ॥ १५ ॥

अश्च उश्च मकारश्च यदालम्बनतायुजः।
अनन्तशुभसन्तानदात्रीं सिन्धुसुतां भजे ॥ १६ ॥

अकार, उकार और मकार अर्थात् ॐकार जिसका सहारा लेकर प्रतिष्ठित है उस अनन्तकल्याण की परम्परा को देने वाली सिन्धुजा लक्ष्मी का मैं भजन करता हूँ ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीरमाहरिस्तवः

[रुचिरा]

भवार्तिहौ भजदमरक्ष्माजनी
अभीष्टदौ भुजगकचौ भयापहौ ।
शरदमृतप्रदभयदौ वरप्रदौ
रमाहरी मम भवतां विभूतये ॥ १ ॥

सांसारिक क्लेशों के नाशक, भक्तों के कल्पतरु, अभीष्ट दायक, भुजगाभ केशों वाले, भय नाशक, अपनी आभा से शरद् के बादलों को भी भीत बना देने वाले, वरप्रद लक्ष्मीनारायण मेरे लिये विभूति दायक हों ॥ १ ॥

स्वपाणिनिर्जितकमलौ नतेष्टदौ
मनोज्ञधीगुणवपुषौ सुरार्चितौ ।
कृपानिधी विहितकृतान्तभीहृती
रमाहरी मम भवतां विभूतये ॥ २ ॥

अपने करों से कमल को जीत लेने वाले, प्रणत जनों के इष्टदायक, मनोज्ञ प्रज्ञा और शरीर वाले, देव पूजित, कृपानिधि, यम के भय का हरण करने वाले, लक्ष्मीनारायण मेरी विभूति के हेतु हों ॥ २ ॥

पदानमत्सुरललनामुनिव्रजौ
सुवर्णवार्धरभटनप्रभाञ्चितौ ।
भवापहौ चरणनतेप्सिताळिदौ
रमाहरी मम भवतां विभूतये ॥ ३ ॥

देवांगनाओं एवं मुनियों से नमस्कृत पादों वाले, सुवर्ण और वारिद की प्रभा से स्पर्धा करने वाली कान्ति से समृद्ध, भय नाशक, चरणों में नतजनों के समस्त अभीष्टों के दायक, लक्ष्मीनारायण मेरे लिये विभूतिदायक बनें ॥ ३ ॥

नताघहौ जलधररुग्वशीर्षधौ
स्ववाहनीकृतविनतातनूभवौ ।
पतञ्जलिप्रमुखनयप्रदस्मृती
रमाहरी मम भवतां विभूतये ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नत जनों के पाप नाशक, वारिदाभ केशों वाले, वैनतेय को वाहन बनाने वाले, स्मृति से ही पातञ्जलादि प्रमुख शास्त्रों के अवबोधक लक्ष्मीनारायण मेरी विभूति के लिये हों ॥ ४ ॥

निजात्मजप्रियसहजन्ममामकौ
अनर्थहौ निखिलशुभप्रदायकौ ।
वराभयाम्बुभवलसत्कराम्बुजौ
रमाहरी मम भवतां विभूतये ॥ ५ ॥

मदनवन्धुचन्द्र की सोदारी एवं उसको अपनाने वाले, अनर्थ नाशक, निखिल शुभों के प्रदायक, वर, अभय, अजय और कमल से विभूषित कर कमलों वाले लक्ष्मीनारायण मेरी विभूति के कारण बनें ॥ ५ ॥

●

श्रीरमाहरिस्तुतिः

[तनुमध्या]

भक्तामरवल्ली भीतिव्रजहन्त्री ।
भृङ्गच्छविवेणी पायात्तनुमध्या ॥ १ ॥

भक्तों की कल्पलता, भयादिनाशिनी, भृंगाभ वेणी वाली क्षीणमध्यांग देवी पालन करें ॥ १ ॥

पदाम्बुजनम्रसंसारकलिघ्नी ।
षट्पादभवेणी पायात्तनुमध्या ॥ २ ॥

पादाब्ज में प्रणत जनों को कलिनाशिनी, भृंग तुल्य वेणी वाली क्षीणकटि देवी रक्षा करें ॥ २ ॥

हस्तास्तपयोजा कुन्देन्दुभवस्त्रा ।
नम्रेष्टदपूजा पायात्तनुमध्या ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कमल विजयी करों वाली, कुन्द, इन्दुवत् शुक्ल वस्त्र वाली, पूजा से भक्तों के अभिलाषा की पूरयित्री क्षीण-कटि देवी रक्षा करें ॥ ३ ॥

काम्यव्रजदात्री नम्याङ्घ्रिसरोजा ।
रम्याऽखिलगोत्रा पायात्तनुमध्या ॥ ४ ॥

समस्त मनोरथों की दात्री, अभिवाद्य चरणाम्बुजों वाली, रम्य, अखिल गोत्रा कृशकटि देवी रक्षा करें ॥ ४ ॥

कृष्णा बककान्ता कृत्तानतमृत्युः ।
कृत्स्नार्त्तकृपाब्धिः पायात्तनुमध्या ॥ ५ ॥

श्यामा, विश्वरक्षक की कान्ता, आनत जनों की मृत्यु नाशिनी सम्पूर्ण आर्त्त-जनों के लिये कृपासिन्धु कृशकटि देवी रक्षा करें ॥ ५ ॥

स्वर्णच्छविकाया स्वर्णस्पृशिसक्ता ।
मेनामुखपूज्या पायात्तनुमध्या ॥ ६ ॥

स्वर्णाभकाय, स्वर्णदान में आसक्त, मेनादि वन्द्य, कृशकटि लक्ष्मी रक्षा करें ॥ ६ ॥

पादानतपाला भूयो जनिहन्त्री ।
वार्दाभकचाभा पायात्तनुमध्या ॥ ७ ॥

चरणों में प्रणत जनों की पालिका, पुनर्जन्मनाशिनी, वारिदाभ केशों वाली कृशकटि लक्ष्मी रक्षा करें ॥ ७ ॥

नम्राल्यघदग्ध्री भक्तेप्सितदोग्ध्री ।
नम्राहिरिपुर्मा पायात्तनुमध्या ॥ ८ ॥

भक्तों की पाप-नाशिनी, भक्तों की अभीष्ट पूरयित्री, गरुड पूजिता कृशकटि लक्ष्मी रक्षा करें ॥ ८ ॥

तार्क्ष्यार्चितपादा पीनस्तनरम्या ।
वीणाञ्चितहस्ता पायात्तनुमध्या ॥ ९ ॥

गरुड पूजित पादों वाली, पीतस्तन से रम्य, वीणा से सुशोभित हाथों वाली कृशकटि रक्षा करें ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शोणाधरबिम्बा शोणाम्बुजपादा ।
काणादमुखार्च्या पायात्तनुमध्या ॥ १० ॥

शोण अधर वाली, रक्तारविन्दपादा, काणाद प्रभृति से पूज्य, कृशकटि देवी रक्षा करें ॥ १० ॥

एणाङ्कसहोत्था प्राणप्रसवित्री ।
इष्टावलिदात्री पायात्तनुमध्या ॥ ११ ॥

चन्द्रमा की सोदर भगिनी, प्राणदात्री, अभीष्टों को देने वाली, कृशकटि देवी रक्षा करें ॥ ११ ॥

कष्टव्रजहर्त्री रीणारिसुमाली ।
एणार्त्तिकृदक्षा पायात्तनुमध्या ॥ १२ ॥

विपत्तियों का हरण करने वाली, प्रस्नुत आदि पुष्पों वाली, अपनी आँखों की सुषमा से मृगों को आर्त्ति पहुँचाने वाली कृशकटि देवी रक्षा करें ॥ १२ ॥

वीणाकरपूज्या काणाद्यनुकम्पा ।
तुष्टाष्टकपाठाभीष्टं प्रविदध्यात् ॥ १३ ॥

वीणापाणि से पूज्य, कणाद आदि पर कृपा करने वाली, अष्टकपाठकों पर सन्तुष्ट रहने वाली देवी अभिलषित दात्री हों ॥ १३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीरमाहरिस्तवः

[शार्दूलविक्रीडितम्]

देवारातिव्रजभयगदास्यन्दनाङ्कथम्बुजात-
मुख्यभ्राजन्निजकरसरःसम्भवद्वन्द्वयुग्मे ।
चित्तक्षोभप्रमुखरहितस्वान्तसङ्क्रान्तिताङ्घ्रे
देवि श्रीमत्कमलनिलये देहि पादावलम्बम् ॥ १ ॥

दैत्यों को त्रस्त करने वाले गदा, चक्र, पद्म प्रमुख आयुधों से भ्राजमान युगल कर कमल शालिनी, चित्त-क्षोभ आदि विकारों से रहित जनों के हृदय में ध्यात पादों वाली, देवी श्री कमलालया अपने चरणों का अवलम्बन दें ॥ १ ॥

विश्वस्रष्टृत्रिदिवनिवसत्क्षात्र [च्छात्रव] पत्रातसंहृद्-
गङ्गाधर्तृत्रिदशधरणीनाथमुख्यार्च्यपादे ।
श्रीवाग्देवीधरधरसुताभासमानस्वपार्श्वे
देवि श्रीमत्कमलनिलये देहि पादावलम्बम् ॥ २ ॥

ब्रह्मा प्रभृति देवताओं के शत्रुओं की संहारिणी, शिव, इन्द्र प्रमुख देवताओं से पूज्य पादों वाली, अपने परिपार्श्व को शारदा और भवानी से भासित करने वाली देवी श्रीकमलालया अपने चरणों का अवलम्बन दें ॥ २ ॥

स्वीयाङ्घ्र्यम्भःप्रभवयुगलीस्मर्तृलोकावलीद्राग्-
वश्यस्वान्तप्रशमनिखिलस्वाक्षदान्तिक्षमाढये ।
सर्वायासव्रजशमनकृत्स्वीयपादप्रणामे
देवि श्रीमत्कमलनिलये देहि पादावलम्बम् ॥ ३ ॥

अपने युगल चरणारविन्द के स्मरण करने वाले लोगों को अति शीघ्र इन्द्रिय-निग्रह, प्रशम, समस्तेन्द्रियजय, क्षमा आदि से आढय कर देने वाली, अपने चरणों के प्रणाम से समग्र आयास को प्रशान्त करने वाली देवी श्रीकमलालया अपने चरणों का अवलम्बन दें ॥ ३ ॥

स्वारोषाङ्गव्रजयुतमनोवृत्तिरोधादिसिद्धि-
स्पर्शोच्छिन्नप्रणतयमभीमुख्यभीते जवेन ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्षान्तानम्रव्रजविरचिताशेषदुष्कर्मजाले
देवि श्रीमत्कमलनिलये देहि पादावलम्बम् ॥ ४ ॥

[illegible] चित्त को समग्र वृत्तियों के निरोध आदि में क्रोधादि प्रमुख विकारों से [illegible] कर देने वाली, सिद्धि देकर प्रणतजनों के मृत्यु प्रमुख भयों को वेग से [illegible] प्रणत जनों के समस्त दुष्कर्मों को क्षमा करने वाली देवी श्री कमलालया चरणों का अवलम्बन दें ॥ ४ ॥

●

श्रीरमेशगौरीशजस्तुतिः

[नन्दनम्]

विजितनिजाक्षलभ्यचरणौ तदन्यलभ्येतरौ
प्रणतजनापमृत्युदलनौ सुधाशिसंसेवितौ ।
धनपतिदेवदेशिकविजित्स्वभूतिवाक्सन्नतौ
नतमवतं कृपाजलनिधी रमेशगौरीशजौ ॥ १ ॥

जितेन्द्रियों के लिये सुलभ, विषयासक्त जनों के लिए दुर्लभ, प्रणतजनों की अपमृत्यु के निवारक, देवताओं द्वारा सम्यक् प्रकार से सेवित, अपने भक्तों को कुवेर तथा सुराचार्य को विजित कर लेने वाले धन एवं वाग्वैभव का प्रदान करने वाले कृपासिन्धु रमेश एवं उमेश के पुत्र नत जनों की रक्षा करें ॥ १ ॥

अघततिसन्तमसाहरधिपौ गजास्यमुख्यादृतौ
कनकशशाङ्कजिद्रुचितनू भुजङ्गराडीडितौ ।
नतजनकारुणीजलनिधी रमाद्रिजाप्रीणकौ
नतमवतं सतीमणिशिरोमणिप्रसूताङ्गकौ ॥ २ ॥

पापपुंजरूपी गाढान्धकार के लिये सूर्यरूप, गजानन प्रमुख देवों से समादृत, अपने-अपने शरीर को कान्ति से सुवर्ण और चन्द्रमा को जीत लेने वाले, शेष-संस्तुत,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणत जनों के लिये करुणासिन्धु, रमा और उमा को आनन्दित करने वाले, सर्वोच्च पतिव्रताओं के आत्मज प्रणतजनों की रक्षा करें ॥ २ ॥

कलशजमुख्यपूजितपदौ विमुक्तिदाख्यास्मृती
श्रितनिखिलेष्टदाननिरतौ पुमर्थपूगप्रदौ ।
वनरुहमुख्यपुष्पकलितौ वितीर्णतत्त्वामृतौ
नतमवत कृपा[illegible]निधी रमेशगौरीशजौ ॥ ३ ॥

कुम्भज प्रमुख मुनियों से पूजित, स्मृति मात्र से विमुक्ति [illegible], आश्रित जनों के लिये समस्त अभीष्ट पदार्थों के दान में निरत, पुरुषार्थ-चतुष्टय के प्रदाता, जलज आदि पुष्पों से समर्चित, तत्त्व ज्ञान रूपी अमृत का वितरण करने वाले, कृपासिन्धु रमेश और गौरीश के पुत्र नतजनों की रक्षा करें ॥ ३ ॥

नरपतितात्रमुख्यदपदौ समस्तलोकाधिपौ
प्रकलितदैत्यपूगदमनौ ज्वरादिरुङ्नाशकौ ।
विकृतिविहीनचित्तविनुतौ वराभयस्पर्शकौ
नतमवतं कृपाजलनिधी रमेशगौरीशजौ ॥ ४ ॥

भूपतित्व प्रमुख पदों के दायक, समस्त लोकों के अधीश्वर, दैत्य-मण्डल का दमन करने वाले, ज्वरादि रोगों के नाशक, निर्विकार चित्त वाले लोगों से विनुत, वर और अभय मुद्राओं से विभूषित, कृपासिन्धु, रमेश और गौरीश के पुत्र नतजनों की रक्षा करें ॥ ४ ॥

त्रिधिहरिशम्भुशक्रदहनप्रमुख्यदेवादृतौ
श्रमततिकृन्तनप्रियहृदौ शमादिदानव्रतौ ।
कृतनतमन्तुपूगसहनौ यमादिभीकृन्तनौ (यमादियोगप्रदौ)
नतमवतं कृपाजलनिधी रमेशगौरीशजौ ॥ ५ ॥

विधाता, विष्णु, शंकर, इन्द्र, अग्नि प्रमुख देवों से समादृत, दुःखमात्र के निवारण में प्रीतचित्त, शमादि के दान का व्रत रखने वाले, प्रणतजनों के आचरित अपराधों को क्षमा करने वाले, यमादि-भीति के नाशक, कृपासिन्धु रमेश और गौरीश के पुत्र नतजनों की रक्षा करें ॥ ५ ॥

●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीराधास्तवः

[वसन्ततिलका]

सङ्ख्याविहीनजलजप्रभवाण्डकोटि-
रक्षाप्रमुख्यनिजकार्यनियुक्त[illegible]म् ।
राधां भजे [illegible]गर्भहिरण्यरेत-
श्चन्द्राप्सरःप्रमुखविस्मयदाङ्गकान्ताम् ॥ १ ॥

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों की रक्षा आदि प्रमुख व्यवस्थाओं के लिये अपने कान्त नारायण को नियुक्त करने वाली एवं हिरण्यगर्भ, हिरण्यरेतस्, चंद्रमा, अप्सरा आदि प्रमुख मनोहर देवों को भी अपने कमनीय अंगों से विस्मित कर देने वाली राधा को भजता हूँ ॥ १ ॥

अव्याजपाररहिताङ्घ्रिसरोजनम्र-
दीनावलीपुरुकृपामृतवारिराशिम् ।
राधां भजेऽखिलनतव्रजमानसाशा-
सङ्घातपूरणपराजितकल्पवल्लीम् ॥ २ ॥

अपने चरण-सरोज में नम्र दीन जनों पर निश्छलरूप से अपार एवं महान् कृपा-सुधा-सिन्धु स्वरूप एवं समस्त भक्तों की मानसिक अभिलाषाओं को पूर्ण करने में कल्पलता को पराजित कर देने वाली राधा को मैं भजता हूँ ॥ २ ॥

राष्ट्राधिपोचितरथद्विरदाश्वसेना-
कोशादिदानचणनैजकटाक्षलेशा (पदाब्जधूलिम्) ।
श्रीदेवकीवसुसुरात्मभवस्वकीय-
मोदाब्धिपूर्णशशिनं कलयामि राधाम् ॥ ३ ॥

अपने कटाक्ष के लेश से ही राष्ट्राधिपति के योग्य रथ, हाथी, घोड़े, सेना, कोश आदि के दान से प्रसिद्ध एवं श्रीदेवकी और वसुदेव के आत्मज श्रीकृष्ण के अपने आनन्द सिन्धु के लिए पूर्णचन्द्र श्री राधा को भजता हूँ ॥ ३ ॥

कामक्रुधागृधिमुखाखिलदोषजाल-
दूराशयप्रचयलभ्यपदाम्बुजाताम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राधां भजामि निजपादपयःप्रजात-
युग्मां नतामृतसमुत्थदिनेशकोटिम्
(युग्मानतप्रमदसिन्धुशशाङ्ककोटिम्) ॥ ४ ॥

काम, क्रोध, लोभ प्रमुख समस्त विकारों से असंस्पृष्ट-चित्त लोगों के लिए सुलभ पादारविन्द वाली एवं प्रणत जन रूपो कमल के लिये सूर्य स्वरूप अथवा अपने चरणारविन्द युगल में आनतजनों के आनन्द सिन्धु को उद्वेलित करने वाली चन्द्रकला स्वरूप राधा को भजता हूँ ॥ ४ ॥

सस्वाङ्गराजि (पूग) शिखरश्रुतिशास्त्रमुख्य-
विद्याकलाव्रजकलापविबोधदात्रीम् ।
व्योमोद्भवाशनकदम्बकसार्वभौम-
भोगस्वतल्परमणीं कलयामि राधाम् ॥ ५ ॥

सांग वेद, वेदान्त आदि प्रमुख विद्याओं एवं चतुःषष्टि कलाओं के कलाप के ज्ञान करा देने वाली एवं पवनाशन पन्नग मण्डल के सम्राट् शेष को तल्प बना लेने वाले भगवान् की वल्लभा राधा को भजता हूँ ॥ ५ ॥

नक्षत्रराजिहृदयेश्वरराजिनैज-
शीर्षाब्जसम्भवमुखस्पृहणीयभाग्याम् ।
ऊरीकृतात्मपदपङ्कजनम्रलोक-
सर्वेष्टदाननियमां कलयामि राधाम् ॥ ६ ॥

शशांकशेखर शंकर एवं अम्बुजजन्मा विधाता आदि प्रमुख देवों से भी स्पृहणीय भाग्य वाली एवं अपने पादारविन्द में प्रणत जनों के सम्पूर्ण मनोरथों के दान के नियम को स्वीकार कर लेने वाली राधा को मैं भजता हूँ ॥ ६ ॥

इन्द्राग्निभानुभवनिर्ऋतिपाशिवायु-
सोमादिदिक्पतिसमर्च्यनिजाङ्घ्रिपद्माम् ।
राधां भजे सपदि पादविनम्रकाम्या-
सर्वर्द्धिदानविधितुष्टहृदम्बुजाताम् ॥ ७ ॥

इन्द्र, अग्नि, भानु, भव, निर्ऋति, वरुण, पवन, चन्द्र आदि दिक्पालों द्वारा समर्चनीय पादारविन्दों वाली एवं पाद-प्रणत जनों की कामनाओं तथा समस्त समृद्धियों को तत्काल पूर्ण करने के विधान से सन्तुष्ट हृदयारविन्द वाली राधा को भजता हूँ ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्षोणीधरक्षितिधरात्मभवाग्रजात-
गाढोपगूढहृदयङ्गमवर्ष्मवल्लीम् ।
सिद्ध्यष्टकप्रभृतिसर्वविभूतिजाल-
संस्पर्शदक्ष (सक्त) चरणां कलयामि राधाम् ॥ ८ ॥

गिरिजा के अग्रज द्वारा गाढालिंगित मनोज्ञ देहवल्ली वाली एवं आठों सिद्धियों सहित समस्त विभूतियों के दान में दक्ष (सक्त) चरणों वाली राधा को भजता हूँ ॥ ८ ॥

सर्वान्तरायततिवारकवीतिहोत्र-
सञ्जातमुख्यदिविषत्प्रमुखार्च्यपादाम् ।
राधां भजे द्रुहिणसोमशिखामणीन्द्र-
सम्प्राप्यवैभववितारकपादपूजाम् ॥ ९ ॥

गणपति, कार्तिकेय प्रमुख देवाग्रगण्यों द्वारा पूज्य पादों वाली एवं ब्रह्मा तथा शंकर के लिए ही प्राप्य वैभव को अपने चरणों की पूजा करने वालों को दे देने वाली राधा को भजता हूँ ॥ ९ ॥

वाग्देवताधरणिधृत्तनुसम्भवेन्द्र-
कान्तादिसेवितमहाकमलास्वरूपाम् ।
राधां भजामि दिविषल्ललनालिकाम्यां
लावण्यजन्मवसुधायितनैजकायाम् ॥ १० ॥

सरस्वती तथा गौरी से महालक्ष्मी रूप में सेवित एवं देवांगना वृंद से स्पृहणीय लावण्य की जन्मभूमिभूत अपनी काया वाली राधा को भजता हूँ ॥ १० ॥

एणैतदङ्कहृदयस्थसमस्तदर्प-
निर्मूलनप्रवणनैजविलोचनास्याम् ।
काणादगौतममुखाखिलशास्त्रबोध-
संस्पर्शिपादविनतिं कलयामि राधाम् ॥ ११ ॥

अपने लोचन से मृग एवं मुख से मृगांक के सम्पूर्ण दर्प का निर्मूलन करने वाली एवं चरणों के प्रणाम से कणाद, गोतम आदि से प्रणीत शास्त्रों का बोध करा देने वाली राधा को भजता हूँ ॥ ११ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शोणस्वकीयरदनच्छदविम्बकान्ति-
स्तोमप्रभावपरिभावित (ह्रापित) विम्बगर्वाम् ।
राधां भजामि कलितेहपरत्रसौख्य-
धाराप्रवाहकरुणार्द्रकटाक्षलेशाम् ॥ १२ ॥

अपने रक्त अधर-विम्ब के प्रभा-जाल के प्रभाव से विम्वाफल के गर्व को पराजित कर देने वाली एवं करुणा से आर्द्र कटाक्ष के लेश से ही धारा-प्रवाह के रूप में ऐहिक और पारलौकिक सुखों की सम्पादयित्री राधा को भजता हूँ ॥१२॥

ॐकारमेव निखिला निगमाः सशीर्षा
यस्याभिधामभिदधत्यदसीयकान्ताम् ।
ॐकारमुख्यजपमुख्यसमस्तसिद्धि-
दायिस्वपादरजसं कलयामि राधाम् ॥ १३ ॥

जिस परात्पर परब्रह्म की ॐकार संज्ञा को समस्त वेद एवं वेदान्त अभिहित किया करते हैं—उस परमेश्वर की वल्लभा एवं प्रणव प्रधान मन्त्रों के जप में मुख्यतया संलग्न लोगों को अपने चरण की धूलि से समस्त सिद्धियों को देने वाली राधा को भजता हूँ ॥ १३ ॥

ताटस्थ्यमेव सततं सकलेषु भावे-
ष्वङ्गीकरोति हृदि यो द्रुतमेतदाप्याम् ।
(यस्तदवाप्यपादाम्)
राधां भजे निजकलेवरकान्तिपूर-
लेशस्पृहाप्रवण (भरित) मानसशातकुम्भाम् ॥ १४ ॥

समग्र भावों में उदासीनता को ही सदा धारण करने वालों के लिये अपने चरणों को शीघ्र ही सुलभ वना देने वाली तथा अपने कलेवर की कान्ति-धारा के लेश मात्र में स्पृहा करने वालों के मन को सुवर्ण से भर देने वाली राधा को भजता हूँ ॥ १४ ॥

दन्तादिवक्त्रशिशुपालकपौण्ड्रशाल्व-
कंसादिसूदनमनोहरमूलशक्तिम् ।
पादाम्बुसम्भवरजःशरणागताली-
काङ्क्षाधिकेष्टशुभदां कलयामि राधाम् ॥ १५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दन्तवक्त्र, शिशुपाल, पौण्ड्र, शाल्व, कंस आदि दुर्दान्त दैत्यों के संहारक भगवान् श्रीकृष्ण को मनोहर मूलशक्ति एवं चरणारविन्द के पराग की शरण में आये हुये भक्तों की स्पृहा से अधिक इष्ट एवं शुभ देने वाली राधा को भजता हूँ ॥ १५ ॥

श्रीराधास्तुतिः

[नन्दनम्]

नतवरदामिभाश्वमुखसम्पदालिदाङ्घ्रिस्मृतिं
शुभततिदां जिताक्षजनताद्रुताप्यपादाम्बुजाम् ।
फणिपनुतामशेषजगतीप्रसिद्धविद्येश्वरीं
हृदयपयोजनुष्यविरतं दधामि राधामहम् ॥ १ ॥

प्रणत जनों को वर देने वाली, चरणों के स्मरण से ही हाथी, घोड़े आदि प्रमुख सम्पदाओं को देने वाली, कल्याण परम्परा की दात्री, जितेन्द्रियों को शीघ्र ही दर्शन दान से अनुगृहीत करने वाली, फणिपति से प्रणत, सम्पूर्ण विश्व की प्रसिद्ध विद्याओं की अधीश्वरी राधा को मैं हृदयारविन्द में सतत धारण करता हूँ ॥ १ ॥

अमितकृपां कराङ्घ्रियुगलीविनिर्जिताम्भोरुहां
स्थिरसुखदां निजाधरमुखावधूतबिम्बोडुपाम् ।
भयहरणीमुरोजयुगलीपरास्तधात्रीधरां
हृदयपयोजनुष्यविरतं दधामि राधामहम् ॥ २ ॥

अमित कृपालु कर एवं चरण युगल से अम्भोज की विजेत्री, स्थायी सुखों की दात्री, अपने अधर से बिम्बा एवं मुख से चन्द्रमा को तिरस्कृत कर देने वाली, भयनाशिनी, विशाल स्तनों से भूधरों को परास्त करने वाली राधा को मैं हृदयारविन्द में सतत धारण करता हूँ ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धनपतिदां समस्तदिविषत्(भू)प्रकाण्डपूगार्चितां
मुनिकलितां रमेशभगवत्पदाब्जभृङ्गाशयाम् ।
नलिनदृशं पदाब्जयुगलीनमत्कृपाम्भोनिधिं
हृदयपयोजनुष्यविरतं दधामि राधामहम् ॥ ३ ॥

धनपति बना देने वाली, समस्त देव वृन्दों से समर्चित, मुनिवन्दिता, भगवान् रमेश के चरणारविन्द के भ्रमरायमाण मन वाली, कमलनयनी, चरण युगल में नमन करने वालों पर कृपा-सिन्धु, राधा को मैं हृदयारविन्द में सतत धारण करता हूँ ॥ ३ ॥

ललिततनुं त्रिलोकललनाललामगीताननां
नतविबुधां मरालवहनादिमामरालिसंसेविताम् ।
प्रणवरतां विबोधितमनुप्रकाण्डगूढाशयां
हृदयपयोजनुष्यविरतं दधामि राधामहम् ॥ ४ ॥

ललित शरीर वाली, त्रैलोक्य की सर्वोत्तम सुन्दरियों से प्रशंसित मुख वाली, विबुधाभिवन्दित, हंसवाहनादि देववृन्द से संसेवित, प्रणव में रत, मन्त्रों के अत्यन्त गूढ अभिप्रायों को बोधित करने वाली, राधा को मैं हृदयारविन्द में सतत धारण करता हूँ ॥ ४ ॥

कनकरुचिं मनोभवमुखाखिलारिजिद्वन्दितां (पूजितां)
दृगङ्घ्रिकणभुक्प्रमुख्यशास्त्रावलीदायिकाम् ।
श्रुतिततिमस्तकेन च तथा [सन्ततासेवितां]
हृदयपयोजनुष्यविरतं दधामि राधामहम् ॥ ५ ॥

सुवर्णाभ कामादि षट् सपत्नों के विजेताओं द्वारा वन्दित, अक्षपाद कणाद आदि प्रणीत शास्त्रों की ज्ञापिका, वेदों के शिरोभूत उपनिषद् आदि से सतत सेवित राधा को मैं हृदयारविन्द में सतत धारण करता हूँ ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीराधाकृष्णस्तुतिः

[पृथ्वी]

मनोभवमुखार्चितौ त्रिभुवनेश्वरीनायकौ
प्रणम्रसकलेष्टदौ नतकृपाजनुर्भूरुहौ ।
परस्पररताशयौ रथगजादिसम्पत्प्रदौ
दधामि हृदि राधिकायदुकुलावतंसौ मुदा ॥ १ ॥

मनोज प्रमुखों से अर्चित, त्रिभुवन की अधीश्वरी एवं अधीश्वर, प्रणत जनों को सकल समीहित देने वाले, प्रणतों के लिए कृपाकल्पतरु, परस्पर अनुरक्तचित्त, रथ, गज आदि सम्पत्तियों के दाता राधा और यदुकुलावतंस कृष्ण को प्रसन्नता से हृदय में धारण करता हूँ ॥ १ ॥

मुदम्बुधिसुधाकरौ विजितमानसाप्याङ्घ्रिकौ
भुजङ्गपतिसंस्तुतौ सरससर्वविद्याधिपौ ।
वितीर्णनतवाञ्छितौ विधिकलाधराद्यादृतौ
दधामि हृदि राधिकायदुकुलावतंसौ मुदा ॥ २ ॥

आनन्द सिन्धु के सुधाकर, जितेन्द्रियों से प्राप्य पादों वाले, शेष संस्तुत, समग्र सरस विद्याओं के अधिपति, प्रणत जनों की वांछा के दायक, विधि एवं कलाकर आदि से समादृत राधा और यदुकुलावतंस कृष्ण को प्रसन्नता से हृदय में धारण करता हूँ ॥ २ ॥

अशेषभवभूतिदौ गिरिजवर्ष्मभामाग्रजौ
प्रणम्रसकलर्द्धिदौ सुरसमूहसम्भावितौ ।
सरोजजमुखेडितौ षडरितूर्णविध्वंसकौ
दधामि हृदि राधिकायदुकुलावतंसौ मुदा ॥ ३ ॥

समस्त सांसारिक विभूतियों के दाता, गिरिजावल्लभ के अग्रज, प्रणम्रों की समस्त समृद्धियों के दाता, देववृन्द से सम्मानित, ब्रह्मा प्रमुख देवों से स्तुत, कामक्रोधादि षट्सपत्नों के शीघ्र ही विध्वंसक राधा और यदुकुलावतंस कृष्ण को प्रसन्नता से हृदय में धारण करता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दृगाढ्यनिटिलेडितौ प्रणतकारुणीसागरौ
मनोज्ञतनुलक्षणौ दिविभवाङ्गनासंस्तुतौ ।
कणादमुखशास्त्रदौ हरिणचिह्नशीताशयौ
दधामि हृदि राधिकायदुकुलावतंसौ मुदा ॥ ४ ॥

भालाक्ष से ईडित, प्रणत जनों के लिए करुणासागर, शुभ लक्षणों एवं सौन्दर्य से शोभित शरीर वाले, देवांगनाओं से सम्यक् स्तुत, काणाद प्रमुख शास्त्रों के बोधक, मृगांक सदृश शीतल चित्त वाले राधा और यदुकुलावतंस कृष्ण को प्रसन्नता से हृदय में धारण करता हूँ ॥ ४ ॥

इहोपरिसुखप्रदौ रुचिविधूतबिम्बाधरौ
सदा प्रणवजापिसक्तपौ प्रणवनैजनामाकृती ।
सुवर्णजलधृच्छवी विषयपाशहीनप्रियौ
दधामि हृदि राधिकायदुकुलावतंसौ मुदा ॥ ५ ॥

ऐहिक और और्ध्वलौकिक सुखों के प्रदाता, अधरों से बिम्बा की रक्तिमा को तिरस्कृत करने वाले, सतत प्रणव जप करने वालों की रक्षा करने में आसक्त, अपने नाम और रूप को प्रणव स्वरूप बनाने वाले, सुवर्ण और जलधर के समान कान्ति वाले, विषय के पाश से मुक्त लोगों को प्रिय राधा और यदुकुलावतंस कृष्ण को प्रसन्नता से हृदय में धारण करता हूँ ॥ ५ ॥

श्रीराधादेवीस्तोत्रम्

[शिखरिणी]

निजाङ्घ्र्यम्भोजातप्रणयनिरतव्रातहृदय-
स्थिताशेषाभीष्टस्पृशिविधिविधूतामरतरुम् ।
भजे राधादेवीं जननमरणक्लेशभवभी
प्रमुख्याशेषार्त्तिप्रशमनपटुस्वाङ्घ्रिरजसम् ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने पादपद्मों के प्रणय में निरत भक्तों के हृदय में स्थित समस्त अभीष्टों के दान से कल्पतरु को भी कम्पित कर देने वाली, एवं जन्म-मरण के क्लेशरूपी भवभीति प्रमुख समग्र आर्तियों के प्रशमन में समर्थ स्व चरणों की धूलि के कण से राधा देवी को भजता हूँ ॥ १ ॥

स्वशीर्षोद्भूतालिच्छविविनिहतव्योमजनिभुक्-
षडङ्घ्र्यम्भोधर्तृप्रभृतिनिविडाहङ्कृतिभराम् ।
भजे राधादेवीं निजकरयुगीपादयुगली-
प्रभोद्रेकोद्भूताभिमतिततिशोणाम्बुजनुषम् ॥ २ ॥

अपने शिरोरुह की छवि से सर्प, षट्पद एवं अम्भोधर प्रभृति की श्यामता के दर्पातिशय को विनष्ट कर देने वाली, एवं अपने युगल करकमलों तथा पादाब्ज-द्वन्द्वों की प्रभा के समुद्रेक से रक्त कमल के अभिमान को चूर्ण करने वाली राधा देवी को भजता हूँ ॥ २ ॥

शरत्कालाम्भोधृत्सितकिरणकर्पूरतुहिन-
प्रमुख्याहङ्कारप्रशमनपटुस्वीयवसनाम् ।
भजे राधादेवीं निजचरणकञ्जातनतिकृत्-
समस्ताभीष्टालीवितरणनिषक्तात्महृदयाम् ॥ ३ ॥

शरत् कालिक मेघ, चन्द्र, कर्पूर, हिम प्रमुख उज्ज्वल पदार्थों के अहंकार को शान्त करने में समर्थ धवल वस्त्रों वाली एवं अपने पादारविन्द में नत जनों के सम्पूर्ण अभिलषित पदार्थों को देने में आसक्त चित्त वाली राधा देवी को भजता हूँ ॥ ३ ॥

अनङ्गत्वे सत्यप्यखिलभुवनक्षोभ[ण]करा-
क्रमप्राग्भाराढ्यस्मरजनककाम्यात्मवपुषम् ।
भजे राधादेवीमगणितयदूत्तंसनिकरो-
ल्लसद्रासक्रीडाप्रमुखपदरम्यस्वविहृतिम् ॥ ४ ॥

अनंग होने पर भी समस्त ब्रह्माण्ड को क्षुब्ध करने के प्रबल आडंबर से समृद्ध स्मर के पिता श्री कृष्ण के लिये स्पृहणीय तनु एवं असंख्य उत्तम यदुवंशियों से सुशोभमान रास लीला में अपने विहार को प्रधान स्थान दिलाने वाली राधा देवी को भजता हूँ ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुखच्छायाद्यंशव्रजविषयकेर्ष्याभरितहृत्-
घृताचीरम्भादित्रिदिवललनाकाम्यसुषमाम् ।
भजे राधादेवीं कमलभवनोत्सङ्गजशुका-
निलव्याध्यक्रूरप्रभृतिमुनि [नम्य] स्वचरणाम् ।। ५ ।।

मुख की कान्ति एवं प्रसन्नता आदि के लेश मात्र में भी ईर्ष्यालु घृताची, रम्भा आदि देवांगनाओं के द्वारा जिसकी सुषमा काम्य है एवं नारद, शुक, उद्धव, अक्रूर प्रभृति मुनिजनों से प्रणम्य चरणों वाली राधा देवी को भजता हूँ ।। ५ ।।

महालक्ष्मीकान्तत्रिभुवनगुरुप्रेमपदता-
प्रदानैकस्वप्राग्रचित [शुभ] पुण्यालिसुभगाम् ।
भजे राधादेवीं चरणनलिनानम्रजनता-
कृतान्तादिक्लेशव्रजशमनकृद्वीक्षणलवाम् ।। ६ ।।

त्रैलोक्य के गुरु एवं महालक्ष्मी के वल्लभ के लिये प्रेमास्पदत्व प्रदान करने में पूर्वाचरित शुभ कर्मों से सौभाग्यशालिनी एवं अपने लेश मात्र दृष्टिपात से चरणारविन्द में आनत जनों की कृतान्त आदि से जनित क्लेश राशि को प्रशान्त कर देनेवाली राधा देवी को भजता हूँ ।। ६ ।।

महाकष्टव्रातानुभवफलनिर्वेदभरित-
स्वहृद्दीनस्वान्तप्रणतजनकारुण्यजलधिम् ।
भजे राधादेवीं जितकनकवर्णाद्यलतिका-
नुरूपप्रह्लादप्रदमतिमनःसद्गुणचयाम् ।। ७ ।।

महान् कष्टों के अनुभव के फलस्वरूप लब्ध निर्वेद से परिपूर्ण हृदय एवं दैन्य से आकीर्ण हृदय वाले प्रणत जनों के लिए करुणासिन्धु स्वरूपिणी एवं कनक की आभा को जीत लेने वाली कोमल अंगलतिका के अनुरूप बुद्धि एवं मन में सद्गुणगणों को भरकर परमाह्लाद प्रदान करने वाली राधा देवी को भजता हूँ ।। ७ ।।

भवाम्भोराश्यन्तः पतितगतिहीनानतजन-
व्रजालीनां पारप्रदनिजपदाम्भोजनमनाम् ।
भजे राधादेवीं बहुभवकृतागण्यदुरित-
च्छटाभस्मीकर्तृस्वचरणरजोलेशकणिकाम् ।। ८ ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने पादाम्भोज में नमन मात्र से भवसागर में निमग्न तथा गतिहीन आनत जनों को पार कर देने वाली एवं अनेकानेक जन्मों में किये गये असंख्य पापों के ढेर को अपने चरण-रज के अत्यल्प कण से भस्म कर देने वाली राधा देवी को भजता हूँ ॥ ८ ॥

अहोरात्रध्यानास्पदितकमलाचित्तसरसी-
जनुर्घस्रेशांघ्रिद्वयमहिमपूर्णानुभविनीम् ।
भजे राधादेवीं धरणिधरतुङ्गातिकठिनो-
रसीजातद्वन्द्वस्थगितभगवद्वर्ष्मधिषणाम् ॥ ९ ॥

अहोरात्र ध्येय कमला के चित्ताम्भोज के प्रफुल्ल करने वाले दिनपति स्वरूप नारायण के युगल चरणों की महिमा का पूर्ण अनुभव करने वाली एवं भूधर सदृश उत्तुङ्ग और अति कठोर उरोज युगल से भगवान् के शरीर एवं बुद्धि को ढँक लेने वाली राधा देवी को भजता हूँ ॥ ९ ॥

मृगीबिम्बाम्भोधिप्रभवभुजगीकुन्दकमल-
प्रभाधिक्कृन्नेत्राधरमुखशिरोभूरदपदाम् ।
भजे राधादेवीं कनकनिकरेप्सिततति-
प्रदस्वीयापाङ्गप्रसृमरकृपाम्भोधिलहरीम् ॥ १० ॥

अपने नेत्र से मृगी, अधर से बिम्ब, मुख से चन्द्रमा, शिरोरुह से भुजंगी, दाँत से कुन्द और चरण से कमल की प्रभा को धिक्कारने वाली एवं सुवर्णादि अभीप्सित वस्तुओं को देने वाले अपने अपांग में कृपासागर की प्रसरणशील लहरियों से सुन्दर राधा देवी को भजता हूँ ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीराधिकास्तुतिः

[चामरम्]

भक्तकाङ्क्षितार्थदानधूतकल्पवल्लिके
भीकरार्त्तिदायिजन्ममृत्युवार्धिवारिके ।
भोगिभृङ्गवारिवाहकान्तिकान्तकुन्तले
भव्यदा भवाशु गोपिकावतंसराधिके ॥ १ ॥

भक्तों के अभीष्ट पदार्थों को देने में कल्पलता को भी कँपा देने वाली, भयंकर पीड़ाजनक जन्म-मृत्यु के सागर का वारण करने वाली, सर्प, भृंग एवं नीरद की आभा के समान कमनीय कृष्ण केशों वाली तथा गोपांगनाओं में भूषण स्वरूपा राधा शीघ्र ही कल्याण दायिनी हों ॥ १ ॥

पादहापिताम्बुजप्रजातसर्वडम्बरे
शारदाम्बुदप्रदाभिमानवारकाम्बरे ।
नम्रलोकवाञ्छितेष्टसर्ववस्तुसाधिके
भव्यदा भवाशु गोपिकावतंसराधिके ॥ २ ॥

जलजों की सम्पूर्ण समृद्धि को चरणों से छीन लेने वाली, शरत्कालिक बादलों की उज्ज्वलता को मात करने वाले वस्त्र को धारण करने वाली, भक्तों के समस्त अभिलषित पदार्थों को देने वाली एवं गोपांगनाओं में भूषणस्वरूपा राधा शीघ्र ही कल्याणकारिणी हों ॥ २ ॥

आदितेयसुन्दरीप्रणम्यपादपङ्कजे
मारतातभार्गवीशकाम्यदिव्यविग्रहे ।
प्रेमभक्तिबुद्धिमुख्यरम्यसद्गुणव्रजे
भव्यदा भवाशु गोपिकावतंसराधिके ॥ ३ ॥

देवांगनाओं से प्रणम्य पादाम्बुजों वाली, काम के पिता तथा लक्ष्मी के वल्लभ द्वारा स्पृहणीय दिव्य देह वाली, प्रेम, भक्ति, बुद्धि प्रमुख रमणीय सद्गुण गणों वाली एवं गोपिकावतंस राधा शीघ्र ही कल्याण दायिनी हों ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अङ्गबुद्धिचारुतादिकृष्टकृष्णमानसे
रङ्गनाथसङ्गभूकृतान्तभीतिभञ्जने ।
तुङ्गभूमिभृत्स्तने कृपाम्बुराशिमानसे
भव्यदा भवाशु गोपिकावतंसराधिके ॥ ४ ॥

शरीर तथा बुद्धि की चारुता से कृष्ण के मन को आकृष्ट कर लेने वाली, रंगनाथ की संगिनी, यमभीति भंजनकारिणी, उच्च पर्वत के समान स्तनों वाली, हृदय से करुणा सिन्धु तथा गोपिकावतंस राधिका शीघ्र ही कल्याण दायिनी हों ॥ ४ ॥

शौनकोद्धवादिविस्मयप्रदाद्भुताशये
मेनकादिमाप्सरोगणार्चितात्मलावणि ।
मानवर्जितीप्रभूतभर्मकायकान्तिके
भव्यदा भवाशु गोपिकावतंसराधिके ॥ ५ ॥

अपने अद्भुत कारुणिक हृदय से शौनक, उद्धव आदि को विस्मित कर देने वाली, मेनका प्रभृति प्रमुख अप्सराओं की मण्डली से अपने लोकोत्तर सौन्दर्य की अर्चना करने वाली, स्वर्णाभकाय होने पर भी अहंकार शून्य तथा गोपिका-वतंस राधिका शीघ्र ही कल्याण दायिनी हों ॥ ५ ॥

आननप्रभातिरेकधूतदर्पतारकेट्
संसृताधिपारदे स्ववर्णधूतपारदे ।
नैजनीलकुन्तलाभधूतकान्ति नीरदे
भव्यदा भवाशु गोपिकावतंसराधिके ॥ ६ ॥

अपने मुख के प्रभातिशय से चन्द्रमा के दर्प का दलन करने वाली, सांसारिक पीड़ाओं से पार करने वाली, अपने शरीर की कान्ति से पारद को भी तिरस्कृत करने वाली, अपने नील कुन्तलों की चमक से नवीन नीरद की प्रभा को मात कर देने वाली तथा गोपिकावतंस राधा शीघ्र ही कल्याण दायिनी हों ॥ ६ ॥

पादनम्रलोकसर्वपापनाशतत्परे
वेदरूपपक्षिराजवाहनाङ्घ्रितत्परे ।
यादवेन्द्रभोग्यपीनतोरसीजभूधरे
भव्यदा भवाशु गोपिकावतंसराधिके ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पादावनत जनों के सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने में तत्पर, वेदस्वरूप गरुड़ को वाहन बनाने में तत्पर चरणों वाली, यादवेन्द्र के भोग योग्य पीन पयोधर रूप पर्वत को धारण करने वाली तथा गोपिकावतंस राधा शीघ्र ही कल्याण दायिनी हों ॥ ७ ॥

एणसर्वगर्वहारिलोचनद्वयाञ्चिते
शोणतादिलक्षणास्तविम्बडम्बराधरे ।
वीणिकाधरात्मपाणि मौनिमुख्यसंस्तुते
भव्यदा भवाशु गोपिकावतंसराधिके ॥ ८ ॥

मृगों के सम्पूर्ण गर्व को नष्ट करने वाले लोचन-युगल से विभूषित, रक्तिमा आदि शुभ लक्षणों से विम्बा फल के सौन्दर्य गर्व को अस्त कर देने वाले अधर वाली, वीणापाणि नारद प्रमुख मुनीन्द्रों से संस्तुत तथा गोपिकावतंस राधा शीघ्र ही कल्याणकारिणी हों ॥ ८ ॥

एतदष्टकं विशुद्धभक्तियुक्तमानसः
सर्वकष्टकृन्तनप्रवीणमन्वहं पठन् ।
ईप्सितेष्टजालदातृराधिकाङ्घ्र्यनुग्रहात्
तूर्णमष्टसिद्धिसाधनान्यवाप्य मोदते ॥ ९ ॥

निर्मल भक्ति से संयुक्त चित्त वाले भक्त जन सम्पूर्ण कष्टों के नाशन में समर्थ इस अष्टक को प्रतिदिन पढ़ते हुए ईप्सित अभीष्टों के समूहों को देने वाली राधा के चरणानुग्रह से शीघ्र ही आठों सिद्धियों एवं शमदमादि साधनों को पाकर मुदित हो जाते हैं ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीराधादेवीस्तवः

[पादाकुलकम्]

कुम्भिक्षितिपतिकुम्भन्यक्कृत्कुम्भाकृतिकुचकुड्मललसिते ।
कुम्भीपाकप्रमुखभयाब्धेः कुम्भजचरणे जय जय राधे ॥ १ ॥

करीन्द्र-कुम्भ को पराजित करनेवाली कुम्भाकार कुचकलिका से विलसित, एवं कुम्भीपाक प्रमुख भय-सिन्धु के शोषण करने में कुम्भजस्वरूप चरणों वाली राधा की जय हो जय हो ॥ १ ॥

दन्तिस्यन्दनसैन्धवसेनाकोशमुखाखिललक्ष्मीदार्च्ये ।
प्रणताघौघप्रशमननिपुणस्वाङ्घ्रिपरागे जय जय राधे ॥ २ ॥

अपनी अर्चना से हाथी, रथ, घोड़ा, सेना, कोश प्रधान समस्त सम्पत्तियों की दात्री एवं अपने चरणों की धूलि से प्रणतजनों के पाप पुंजों का प्रशमन करने में निपुण राधा की जय हो जय हो ॥ २ ॥

अखिलसरीसृपधरणीपालस्वशयनकान्तापदवीरुचिरे ।
कनकाहङ्कृतिभेत्तृच्छायाभास्वरकाये जय जय राधे ॥ ३ ॥

समस्त सरीसृपों के अधिपति शेष को अपना तल्प बनाने वाले भगवान् की वल्लभा के पद पर आसीन होनेसे रुचिर एवं कनक के दर्प को दलन करने वाली कान्ति से भास्वर शरीर वाली राधा की जय हो जय हो ॥ ३ ॥

परभृतवरटाशिखिशुकदर्पोन्मूलनदक्षसस्वरलेशे ।
ब्रह्मोत्सङ्गजशुकमुखगीतस्वाङ्घ्र्यपदाने जय जय राधे ॥ ४ ॥

अपनी वाणी के लेशमात्र माधुर्य से कोकिल, मराली, मयूर तथा शुक के दर्प को उन्मूलन करने में दक्ष एवं नारद, शुक प्रमुख मुनीन्द्रों द्वारा अपने चरणों की महिमा के गीत गाये जाने वाली राधा की जय हो जय हो ॥ ४ ॥

प्रणतसकामश्रेणीकाङ्क्षापूरणनियममनोहरचरणे ।
भोगसमीहाविरहितचेतोनतभवनाशे जय जय राधे ॥ ५ ॥

सकाम भक्तों की कामनाओं को पूरा करने के नियम से मनोहर चरणों वाली एवं निष्काम उपासकों के संसार को नष्ट करने वाली राधा की जय हो जय हो ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विकसितपाथःसम्भवमल्लीमुखसुमगर्भितकवरीभारे ।
कान्तचतुर्भुजदायितधर्मप्रभृतिपुमर्थे जय जय राधे ॥ ६ ॥

अपनी जूटिका में प्रफुल्ल कमल, मल्लिका प्रमुख पुष्पों को गूँथने वाली एवं अपने पति नारायण के चारों हाथों से धर्मादि चतुर्विध पुरुषार्थों को दिलाने वाली राधा की जय हो जय हो ॥ ६ ॥

अम्बुधिमेखलनिखिलक्षोणीपालीकृतनिजपादविनम्रे ।
धरणीसुतलादिमलोकतलव्रताताधीश्वरि जय जय राधे ॥ ७ ॥

समुद्र-रशना उर्वी के समस्त सम्राटों को अपने चरणों में विनम्र बना लेने वाली एवं भूतल, सुतल आदि समग्र लोकों की अधीश्वरी राधा की जय हो जय हो ॥ ७ ॥

अघबकधेनुककंसप्रमुखाखिलदुष्टासुहतनुपरिरब्धे ।
ज्वरमुखसर्वामयचयहन्तृस्मरणपदाब्जे जय जय राधे ॥ ८ ॥

अघ, बक, धेनुक, कंस प्रमुख अखिल दुष्टों के प्राणों के घातक भगवान् कृष्ण के शरीर से आलिंगित एवं ज्वर आदि प्रमुख समस्त रोगों को अपने चरणों की स्मृति से ही नष्ट कर देने वाली राधा की जय हो जय हो ॥ ८ ॥

विकृतिविहीनस्वीयस्वान्तैः सन्ततपूजितपदपाथोजे ।
भीतिनिवर्हणवरविश्राणनदीक्षाकान्ते जय जय राधे ॥ ९ ॥

निर्विकार हृदय वाले भक्तों द्वारा सन्तत पूजित पादाम्बुजों वाली एवं भय-नाशक वरों के देने की दीक्षा से मनोहर राधा की जय हो जय हो ॥ ९ ॥

वचनसवित्री जलनिधिपुत्री महिषनिहन्त्रीमुखरूपाढ्ये ।
विश्वम्भरविधुखण्डविराजद्विधिमुखविनते जय जय राधे ॥१०॥

सरस्वती, लक्ष्मी तथा महिषमर्दिनी देवियों के सौन्दर्य से समृद्ध, एवं विश्वम्भर, चन्द्रशेखर तथा चतुर्मुख प्रमुख देवों से विनत राधा की जय हो जय हो ॥ १० ॥

शमदममुखसाधनसम्पत्तिव्रजविश्राणकचरणस्मरणे ।
शरणागतजनसर्वश्रान्तिध्वंसपटीयसि जय जय राधे ॥ ११ ॥

चरणों के स्मरण से ही शम-दमादि साधन सम्पत्तियों को देने वाली एवं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शरणागत जनों की सम्पूर्ण भ्रान्तियों को विध्वंस करने में अत्यन्त चतुर राधा की जय हो जय हो ॥ ११ ॥

यमनियमादिसमस्तस्वाङ्गव्रातसमुज्ज्वलयोगदपादे ।
करुणाक्षान्तप्रणतजनानुष्ठितनिखिलाघे जय जय राधे ॥ १२ ॥

यम, नियम आदि अष्टांगों से समुज्ज्वल योग को देने वाले चरणों वाली एवं प्रणत जनों से विहित समग्र पातकों को करुणा से क्षमा कर देने वाली राधा की जय हो जय हो ॥ १२ ॥

भवति समृद्धिर्धनपतिकाम्या मतिरपि लसति बृहस्पतिवन्द्या ।
प्रणतिपुरस्सरमङ्घ्रिसरोजश्रद्धातः स्तुतिमेनां पठताम् ॥ १३ ॥

प्रणाम पूर्वक राधा के चरणारविन्द में श्रद्धा रख कर इस स्तोत्र का पाठ करने वालों को धनपति के लिए स्पृहणीय सम्पत्ति तथा बृहस्पति के लिए भी वन्दनीय बुद्धि सुलभ हो जाती है ॥ १३ ॥

अथ राधादेवीस्तुतिः

[नन्दनम्]

अघशमनीं द्विदन्ततुरगप्रमुख्यलक्ष्मीप्रदां
स्मरजितदुर्लभां जिताक्षसुलभस्वपादपाथोरुहाम् ।
(स्वकीयपादाम्बुजाम्)
हृतकुमृतिं सुरासुरसमर्चिताङ्घ्रिपद्मद्वयां
(विजितधनाधिपामरगुरुस्वकोशवाक्त्वप्रदां)
हृदि करुणासुधाजलनिधिं दधामि राधामहम् ॥ १ ॥

पापनाशिनी, द्विरद, तुरग आदि लक्ष्मी की दात्री, कामाधीन जनों के लिए दुर्लभ, जितेन्द्रियों को अपने पादाब्ज सुलभ कर देने वाली, अपमृत्युविनाशिनी,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुर एवं असुर से समर्चित युगल पादारविन्दों वाली (अपने प्रदत्त कोश से धनाधिपति को एवं दत्त वाक्तत्त्व से वाचस्पति को जीतने वाली) करुणा सुधा-सिन्धु राधा को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ १ ॥

मुनि विनुतां परात्परतराक्षरार्थबोधप्रदां
नृपपददां महीप्रमुखसर्वलोकपूगेश्वरीम् ।
स्वपदपयोजभक्तजनताखिलश्रमोन्मूलिनीं
परमपदप्रकाशनपटुं दधामि राधामहम् ॥ २ ॥

मुनियों से विनुत, परात्परतर अक्षर तत्त्व के अर्थ की बोधिका, नृपत्वदायिनी, भू-प्रमुख समस्त लोकावली की अधीश्वरी, अपने पादपाथोज में भक्ति करने वालों के अखिल श्रमों का उन्मूलन करने वाली, परमपद को प्रकाशित करने में पटु राधा को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ २ ॥

सकलसहां (दुरितहरां) यमादिसकलाङ्गयुक्तयोगप्रदां
स्वपदकृपाकटाक्षकणिकां नमज्जनाभीष्टदाम् ।
त्रिभुवनपावनाङ्घ्रिकमलीकृतश्वपाकस्मृतिं
प्रणतजनेप्सितार्थदपदां दधामि राधामहम् ॥ ३ ॥

समस्त अपराधों को क्षमा कर देने वाली, यम आदि आठों अंगों से युक्त योगविद्या की दात्री, कृपा कटाक्ष की कणिका से स्वपद में अनुरक्त करने वाली, नमन करने वालों को अभीष्ट फल देने वाली, अपने चरणारविन्द की स्मृति से चाण्डाल को भी त्रिभुवन पावन बना देने वाली, प्रणत जनोंके अभीप्सित पदार्थों को चरणों से पूर्ण करने वाली राधा को मैं धारण करता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीराधायादवेन्द्र (कृष्णचन्द्र) स्तवः

[स्रग्धरा]

चेतोमालिन्यहेतुस्मरतदनुजनुःपञ्चकाकारशत्रु-
त्राताजस्य स्वकीयाशयबहुसुलभस्वाङ्घ्रिपाथोजयुग्मौ ।
तादृग्दोषप्रपूर्णस्वहृदयजनतादुर्लभस्वीयपादौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ(कृष्णचन्द्रौ)हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम्

मन को मलिन बनाने के हेतुभूत काम, क्रोध आदि पाँचों शत्रुओं से असंस्पृष्ट मति वाले लोगों के लिये अपने युगल पादारविन्द को अत्यधिक सुलभ बना देने वाले, एवं उक्त कामादि विकारों से परिपूर्ण हृदय वालों के लिये अपने चरणों को अति दुर्लभ बना देने वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृत्पुण्डरीक में सतत धारण करता हूँ ॥ १ ॥

वार्धक्यव्याधिराजीतनुबलधिषणावैभवह्रासमुख्या-
शेषानिष्टव्रजेभ्योऽवितचरणसरोजन्मयुग्मप्रणम्रौ ।
वृद्धश्रोत्राग्निपाशिप्रमुखसुरवराराधितस्वाङ्घ्रिपद्मौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ २ ॥

बुढ़ापा, रोग, बल-क्षय, बौद्धिक उत्कर्ष का ह्रास आदि समस्त अनिष्ट विषयों से अपने युगल पादारविन्द में प्रणत जनों को रक्षा करने वाले तथा वृद्धश्रवा, अग्नि, वरुण प्रमुख श्रेष्ठ देवताओं से आराधित पादपद्मों वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृत्पुण्डरीक में सतत धारण करता हूँ ॥ २ ॥

यत्पादाम्भः प्रजातप्रवणमतिजडाकिञ्चनाधीशितारो-
ऽप्याराद्वाग्वैखरीतो विबुधपतिगुरुं द्रव्यतो राजराजम् ।
लज्जाक्रान्तस्वचित्तानतनिजशिरसौ कारयन्ति प्रकामं
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ ३ ॥

जिनके पादारविन्द में अनुरक्त चित्त हो जाने पर महामूर्ख अतिशीघ्र वैखरी वाग्विभूति से वाचस्पति को तथा महादरिद्र अपने वैभव से शीघ्र ही कुबेर को लज्जित कर नतशिरस्क बना देते हैं उन श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृत्पुण्डरीक में सतत धारण करता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वान्तोद्भूतप्रमुख्यान्तररिपुनिकराकारयादोनिकायै-
रत्यन्तं भीतिहेतु(दायि)(दातृ)प्रभवजलनिधेः पारसंस्पृक्कृपाब्धी।
गीर्देवीसिन्धुकन्याधरपजनिशचीगीतनैजापदानौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ ४ ॥

कामादि प्रमुख आभ्यन्तर शत्रु-समूहरूपी ग्राहगणों से अत्यन्त भयंकर संसारसागर से पार कर देने में कृपासिन्धु एवं सरस्वती, लक्ष्मी, गौरी तथा शची द्वारा गीतकीर्त्ति श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृत्पुण्डरीक में सतत धारण करता हूँ ॥ ४ ॥

सङ्ख्यातीतस्वकीयप्रभवततिकृतागण्यनिःसीमपाप-
व्रातारण्यस्य दावाभरवदनशिखापाङ्गपातौ नतानाम्।
हस्त्यश्वस्यन्दनादिप्रचुरविभवसंस्पर्शसक्तान्तरङ्गौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ ५ ॥

प्रणत जनों के अपने अनन्त जन्मों में किये गये असंख्य और असीम पाप-पुञ्ज रूपी महावन को भस्म कर देने में दावानल की शिखा के रूप से अपांगपात करने वाले, हाथी, घोड़े, रथ आदि प्रचुर वैभव के देने में आसक्त चित्त श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृत्पुण्डरीक में धारण करता हूँ ॥ ५ ॥

स्वर्णन्यक्कारिवर्णा वरकनकमयालङ्कृतित्रातराज-
द्धर्माङ्कारभेदप्रवणजलधराहङ्कृतिच्छित्स्ववर्णौ।
भोगीन्द्राभस्ववेणीभुजगततिमहीपालभोगस्वतल्पौ
(भुजगदमनकृन्नृत्यनैपुण्यभाजौ)
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ ६ ॥

अपने-अपने शरीर की आभा से सुवर्ण को धिक्कारने वाली तथा स्वर्णालंकारों की प्रभा से चमकते सुवर्ण का अहंकार नष्ट करने वाली एवं जलधर के दर्प-दलन करने वाले सर्पराज के सदृश वेणी से विभूषित एवं सर्पराज को अपना तल्प बना लेने वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदयारविन्द में सतत धारण करता हूँ ॥ ६ ॥

विध्युत्सङ्गप्रजातश्रुतिविततिपृथक्कर्तृवर्ष्मप्रजात-
मैत्रेयाक्रूरकुन्तीजविदुरपवनज्याधिमुख्येडिताङ्घ्री।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सच्चिन्मोदस्वरूपाक्षरपरममहाशक्तिशक्तस्वरूपौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ ७॥

नारद, शुक, मैत्रेय, अक्रूर, पाण्डव, विदुर, उद्धव आदि प्रमुख भक्तों से वन्दित, सच्चिदानन्दस्वरूप, अक्षर तत्त्व होने से महाशक्ति तथा महाशक्तिमान् श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदयसरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ ७ ॥

अत्रामुत्राप्यभोगव्रजविमुखमनःसंयमाक्षप्रकाण्ड-
व्रातस्वान्ताब्जफुल्लीकृतिनिपुणपदौ मोक्षदौ ज्ञानभानू ।
काम्यालीकाङ्क्षिपादानतजनसकलाभीष्टदानव्रताढ्यौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ ८ ॥

ऐहिक और आमुष्मिक भोगों से पराङ्मुख हृदय वाले श्रेष्ठ जितेन्द्रियों के हृदयारविन्द को प्रफुल्ल करने में समर्थ चरणों वाले, मोक्षदायक, ज्ञान के भानु, मनोरथों की प्राप्ति की अभिलाषा से पादावनत जनों के सम्पूर्ण अभीष्ट पदार्थों को देने के व्रत से समृद्ध श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदय-सरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ ८ ॥

क्षीराब्धिभ्राजदम्भःप्रभवगगनसञ्जातभोज्यन्ववाय-
क्षोणीशाधिष्ठिताङ्गाभिनवतनुलसद्दिव्यलावण्यवार्धी ।
कादाचित्कस्त्रपादप्रणतिमुखफलद्धर्ममुख्याखिलार्थौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ ९ ॥

क्षीरसागर में शोभमान पद्म तथा नागराज शेष पर अधिष्ठित अपने नवीन शरीर को स्वर्गीय लावण्य-सागर से समृद्ध बनाकर विलसित होने वाले, कदाचित् भी प्रमाण करने वालों को धर्मादि पुरुषार्थों को फलवान् बनाने वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदय-सरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ ९ ॥

सर्वक्षोणीभुवःस्वःप्रमुखनिजमनःकाङ्क्षिताशेषलोका-
ध्यक्षत्वादीष्टजालस्पृशिमुखविहितोद्धारपादप्रणम्रौ ।
(पादाब्जभक्तौ)
ब्रह्माण्डप्राणिमात्रार्चितनिजविबुधाकारसञ्जातलेशौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ १० ॥

भू, भुवः, स्वः प्रमुख समस्त लोकवासियों के अपने-अपने मनोऽभिलाष-लोकाधिपतित्व आदि इष्ट-समूहों को देकर अपने चरणों में आनत जनों का उद्धार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करने वाले, अपनी आंशिक विभूतियों से सम्पन्न देव-विग्रहों की पूजा ब्रह्माण्ड के समस्त प्राणियों से कराने वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदय-सरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ १० ॥

स्वीयाङ्घ्रिब्ज्याजपाथःप्रभवजनिरजोलेशसंस्पर्शमुख्य-
पूतस्वान्ताखिलेष्टस्पृशिभयहृतिसंसूचिमुद्राढ्यहस्तौ ।
स्वामोघापाङ्गपातप्रकलितशमनानम्रसर्वामयाली
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ ११ ॥

अपने पादाम्बुजों के परागकण के संस्पर्श आदि प्रधान व्यापारों से पूतचित्त भक्तों के सम्पूर्ण मनोरथों के साधक तथा भय-निवारक वरद एवं अभय मुद्राओं से शोभित हाथ वाले, अपने अमोघ अपांग-पात से आनत जनों के समग्र आमयों का प्रशमन करने वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदय-सरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ ११ ॥

राकारात्रीशहृद्ये (चन्द्रज्योत्स्नामनोज्ञे) दिनपतिकुलजा-
कूलतो रासगोष्ठ्यां
सान्द्रानन्दाब्धिमग्नस्वमतिविहृतिकृद्वल्लवीरत्नकान्तौ ।
अद्वैतब्रह्मसिद्धिप्रभृतिबहुतरग्रन्थसद्गीतकीर्त्ती (सुध्यातपादौ)
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ १२ ॥

पूर्णचन्द्र से मनोहर यमुना के तट पर आयोजित रासगोष्ठी में सान्द्र आनन्द सागर में निमग्न होकर विहार करने में विभोर राधा और माधव, अद्वैत सिद्धि, ब्रह्म सिद्धि प्रभृति अनेकानेक ग्रन्थों में सम्यक् प्रकार से गीतकीर्ति श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदय-सरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ १२ ॥

श्रीपार्वत्यत्रिदृग्भू (श्रीगौरीमौनिदृग्भू) पृथुकधरशिरो-
वाक्प्रसूतोयभूभू-
पौलोमीशक्रसंज्ञारविमुखदिविषद्दम्पतीड्रत्नपूगैः ।
सानन्दं स्तूयमानत्रिभुवनजनतापावनस्वीयकीर्त्ती
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ १३ ॥

गिरिजा-शंकर, वाणी-ब्रह्मा, शची-शक्र प्रमुख देव दम्पत्तियों के समूहों द्वारा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आनन्द के साथ स्तूयमान त्रैलोक्य-वन्द्य पावन कीर्त्ति वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदय-सरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ १३ ॥

संसारागाधपाथोनिधिपतनजनुःकष्टकोटिव्रजार्त-
स्वान्तस्वानम्रदीनव्रजजनिनिधनो (मरणो)
च्छेदसन्तुष्टचित्तौ ।
शान्तिक्षान्तिप्रमुख्याखिलसुगुणमणिव्रातदस्वाङ्घ्रिचिन्तौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ १४ ॥

अगाध संसार-सागर में पतन के हेतुभूत करोड़ों-करोड़ों जन्मों से क्लेशित-चित्त हो अपने चरणों में आनत जनों के जन्म-मरण की परम्परा को उच्छिन्न करने में प्रीतचित्त एवं अपने चरणों का ध्यान करने वालों को शान्ति, क्षान्ति प्रमुख सद्गुण मणियों के प्रदान से समृद्ध करने वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदय-सरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ १४ ॥

पादाम्भूभक्तिभाजां यमनियममुखस्वाङ्गसङ्घातराज-
द्राजादिस्वाष्टयोगप्रशमितयमभीमुख्यसर्वार्त्तिहेतू ।
सामोदक्षान्तपादाम्बुजनतरचितानन्तपापोपपापौ
श्रीराधायादवेन्द्रौ हृदयसरसिजे सन्ततं धारयेऽहम् ॥ १५ ॥

चरणारविन्द में भक्ति करने वालों की यम-नियम आदि अंगों से भ्राजमान अष्टांग राजयोग द्वारा यम-भीति प्रमुख समस्त आर्त्तियों के कारणों का उन्मूलन करने वाले एवं पादाम्बुजों में नतजनों द्वारा विहित अनन्तानन्त पापों एवं उपपापों को साम रूपी शीतल जल से क्षमा कर देने वाले श्री राधा और यादवेन्द्र को मैं हृदय-सरोज में सतत धारण करता हूँ ॥ १५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीराधाहरिस्तवः

[नन्दनम्]

पदशरणागतागतिजनत्रिविष्टपोर्वीरुहौ
जनिमृतिवारिराशिपतितप्रणम्रपोतायितौ ।
सलिलधराम्बरप्रभवभुक्षडङ्घ्रिभास्वत्कचौ
हृदयसरोजनुःकुहरके भजामि राधाहरी ॥ १ ॥

चरण की शरण में आगत अनाथों के लिये कल्पवृक्ष, जन्म-मरण के सागर में पतित विनत जनों के लिये पोत रूप, वारिधर, सर्प और भ्रमर के समान चमकते केशों वाले राधा और हरि को हृदयारविन्द के अन्दर भजता हूँ ॥ १ ॥

अभिमतसर्ववस्तुनिकरप्रदानदीक्षाधरौ
कृतनतिदीनलोकभयहृत्करावधूताम्बुजौ ।
कनकमृणालपीतधवलादिभाढ्यभूषाञ्चितौ
हृदयसरोजनुःकुहरके भजामि राधाहरी ॥ २ ॥

अभिमत समस्त वस्तुओं के प्रदान करने की दीक्षा में दीक्षित, अम्बुज जेता करों से प्रणाम करने वाले दीन जनों के भयहारी, स्वर्ण की पीतिमा और मृणाल की धवलिमा से समृद्ध आभूषणों से विभूषित, राधा और हरि को हृदयारविन्द के अन्दर भजता हूँ ॥ २ ॥

कृतकृतितामवापितपदाम्बुजातनम्रव्रजौ
निजमहिमास्तकृत्स्ननतिकृत्कृतान्तमुख्यापदौ ।
कृमिमुखदेवतान्तनिखिलप्रजाकृपाम्भोनिधी
हृदयसरोजनुःकुहरके भजामि राधाहरी ॥ ३ ॥

चरणाम्बुजों में प्रणत जनों को कृतकृत्य कर देने वाले, अपनी महिमा से पादाम्भोज में नत समस्त जनों के कृतान्त जन्य प्रमुख क्लेशों को अस्त कर देने वाले, आकीट देवता पर्यन्त समग्र प्रजाओं पर कृपासिन्धु राधा और हरि को हृदयारविन्द के अन्दर भजता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निजनिजवाञ्छिताखिलवरप्रतुष्टसर्वप्रजौ
विनतजनावलीविरचिताखिलाघनिर्मूलकौ
(सम्प्लोषकौ)
उप (परि) मितिपार (सीम) हैन्यविलसद्भवाब्धिपारप्रदौ
हृदयसरोजनुःकुहरके भजामि राधाहरी ॥ ४ ॥

अपनी-अपनी कामनाओं के अनुरूप समस्त वरों के दान से सम्पूर्ण प्रजाओं को सन्तुष्ट करने वाले, प्रणत जनों द्वारा विहित समस्त पातक पुंज के नाशक, अपार और असीम भवसागर से पार करने वाले राधा और हरि को हृदयारविन्द के अन्तराल में भजता हूँ ॥ ४ ॥

श्रीराधाहरिस्तवः

[नन्दनम्]

झटितिवितीर्णभक्तजनतासमस्तकाम्यव्रजौ
सुरललनासुरातिशयनस्वकीयरम्याकृती ।
अहिरिपुमुख्यसर्वदिविजप्रकाण्डनम्याङ्घ्रिकौ
निजहृदि पद्मिनीशुकवनेश्वरौ भजामि राधाहरी ॥ १ ॥

भक्तजनों के समस्त अभीप्सित पदार्थों को अतिशीघ्र वितीर्ण करने वाले, अपनी रम्य आकृतियों से देवांगनाओं की सुषमा और देवों के सौन्दर्य को अधरीकृत बनाने वाले, इन्द्रादि प्रधान देवताओं द्वारा प्रणम्य पादों वाले, पद्मिनी वन और शुकवन के अधीश्वर राधा और हरि को अपने मन में भजता हूँ ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्री राधिकास्तवः

[हरिणी]

अगणितमहाब्रह्माण्डालीसहस्रशतावली-
र्जनयितुमलं यत्सङ्कल्पः क्षणात्तदसुप्रियाम् ।
क्षितिधरसुतानाथाम्भोजप्रजातशचीण्मुख-
त्रिदशनिकरस्तव्यां नित्यं दधे हृदि राधिकाम् ॥ १ ॥

जिसके संकल्प से क्षण मात्र में अनन्तानन्त ब्रह्माण्डों की सृष्टि हो जाती है उस परब्रह्म की प्राणप्रिया एवं गिरीन्द्रतनया के प्राणधन शंकर, ब्रह्मा, शचीपति इन्द्र प्रमुख देव वृन्दों से स्तोतव्य राधा को हृदय में नित्य धारण करता हूँ ॥ १ ॥

परमितितटव्याजाद्यंशव्रजाविषयातुल-
(प्रणतकरुणा) प्रसृमरकृपापीयूषाब्धिस्वहृत्स-
रसीभवाम् ।
निजपदपयोजातद्वन्द्वप्रणम्रजनावली
हृदयनिखिलाभीष्टस्रष्ट्रीं दधे हृदि राधिकाम् ॥ २ ॥

संसार-सागर के अनात्म तट पर फैले हुये विविध विषयों में उलझे हुये जीवों पर करुणा-सुधा-सिन्धु स्वरूप हृदयारविन्द वाली एवं अपने युगल पदपयोज में प्रणाम करने वालों की हार्दिक समस्त अभिलाषाओं की पूरयित्री राधा को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ २ ॥

जितनिजतनुस्वान्ताक्षादिस्वकीयमहारिपु-
व्रजबलमनोदार्ढ्यस्वान्तद्रुताप्यमनोऽम्बुजाम् ।
चरणसरसीजातध्यानस्तवानतिकृज्जन-
प्रमदजलधे राकासोमं दधे हृदि राधिकाम् ॥ ३ ॥

अपने तन, मन और इन्द्रियों के दुर्दमनीय शत्रुओं को जीत लेने वालों के लिये शीघ्र ही प्रीत-चित्त हो जाने वाली, तथा चरण सरोज के ध्यान, स्तवन और नमन करने वाले लोगों के आनन्द-सिन्धु के लिये पूनम के चाँद स्वरूप राधा को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अखिलजगतीकोटिव्रातप्रसिद्धकलानया-
क्रुतिततिलसद्विद्याजालस्पृशिप्रवणाशयाम् ।
त्रिदिवजपयःप्रोद्धृताशिक्षमेशतनूल्लस-
च्छयनरमणीनव्याकारं दधे हृदि राधिकाम् ॥ ४ ॥

कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों में प्रसिद्ध कलाओं एवं शास्त्रों की आकृतियों से विलसित विद्याओं के दान में रक्तचित्त तथा देवलोक के क्षीर से उत्पन्न नवनीत खाने वालों के अधीश्वर के शरीर से सुशोभमान शय्या पर रमणी की नवीन आकृति धारण करने वाली राधिका को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ ४ ॥

उडुनिकरपस्वीयोत्तंसप्रियासरसीरुह-
प्रभवदयितामुख्यस्वःस्त्रीगणस्तुतवैभवाम् ।
स्वचरणयुगीकादाचित्कप्रणामवशादपि
द्रुतकृततदीयाशापूर्त्तिं दधे हृदि राधिकाम् ॥ ५ ॥

चन्द्रशेखर की प्रिया पार्वती, कमल से प्रादुर्भूत ब्रह्मा की प्रेयसी सरस्वती आदि प्रमुख देवांगनाओं से संस्तुत विभूति वाली तथा अपने युगल चरणों में कदाचित् प्रणाम कर लेने वालों की आशाओं को अतिशीघ्र पूर्ण कर देने वाली राधिका को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ ५ ॥

अखिलदिविषत्कोटीरस्थामितार्घमहामणि-
व्रजजशवलच्छायस्वीयारुणाङ्घ्रिसरोरुहम् ।
....

....

समस्त देवताओं के मुकुट में जटित बहुमूल्य महामणियों की आभा के मिश्रण से अपने अरुण चरणारविन्द को अतीव सुन्दर बनाने वाली .... ॥ ६ ॥

मनसिजमनोजातद्वेषस्पृहाप्रमुखाखिला-
न्तररिपुचयोच्छेतृस्वीयाङ्घ्रिधूलिकणस्मृतिम् ।
वचनजननीजानिस्वीयप्रियक्षितिधृत्सुता-
पतिमुखकृतश्लाघापात्रं दधे हृदि राधिकाम् ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने चरण के धूलि-कण की स्मृति से काम, क्रोध, द्वेष, स्पृहा प्रमुख समग्र आन्तरिक रिपुओं का उच्छेद कर देने वाली, वागीश्वरी-वल्लभ ब्रह्मा तथा गिरिजा के प्राणधन शंकर प्रमुख देवों से श्लाघनीय राधिका को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ ७ ॥

सनिजशिखरव्रातम्नायो(व्रातश्रौतो)दितावलयो मुहुः
प्रणवमभिधां यस्या गायन्त्यतिद्रुतमिष्टदाम् ।
प्रणवजपनासक्तस्वान्तातिद्रुतसाधन-
व्रजवितरणासक्तस्वान्तां दधे हृदि राधिकाम् ॥ ८ ॥

वेद और वेदान्त आदि अतिशीघ्र इष्ट-दायिनी जिसकी प्रणव रूपी आख्या का वारंवार यशोगान करते रहते हैं एवं जो प्रणव जप में आसक्त चित्त भक्तों को अतिशीघ्र शमादि साधनों को देने में अनुरक्त-हृदया है उस राधा को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ ८ ॥

श्रीराधिकास्तवः

[हरिणी]

विषयविततिध्यानोद्भूताशयोद्भवरुण्मुखा-
न्तररिपुजितस्वीयस्वान्तादिदुर्लभवीक्षणाम् ।
इहपरसुखश्रेणीवाञ्छाविवर्जितधीजित-
स्मरमुखरिपुव्रातावाप्यां भजे हृदि राधिकाम् ॥ १ ॥

अनन्त विषयों के चिन्तन से जनित कामादि आन्तरिक शत्रुओं से वशीकृत चित्त वालों के लिये दुर्लभ दर्शन वाली एवं ऐहिक तथा पारलौकिक सुखों की कामना से रहित और कामादि रिपुओं पर विजय करने वालों के लिये सुलभ राधिका को मन में भजता हूँ ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धरणिधरसञ्जातस्वाङ्गाहृदम्बुजनुर्दिने-
ऽमृतविहितस्वीयाशेषप्रमुख्यनमस्कृताम् ।
चरणवनभूनम्रव्रातापमृत्युजरामय-
प्रभृतिनिखिलानिष्टघ्नार्चां दधे हृदि राधिकाम् ॥ २ ॥

गिरिराज किशोरी गौरी के हृदयारविन्द को विकसित करने वाले सूर्य स्वरूप शंकर एवं पद्मप्रभव ब्रह्मा आदि प्रमुख देवों से नमस्कृत एवं चरण सरोज में प्रणत होकर अर्चना करने वालों के अपमृत्यु, जरा, आमय प्रभृति निखिल अनिष्टों का शमन करने वाली राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ २ ॥

द्रविणकणिकाहीना जन्मातिमन्दधियोऽपि य-
च्चरणसरसीजातद्वन्द्वस्मृतेः प्रभवन्त्यहो ।
निजविभवगीर्लेशोद्धूताभिमानकदम्बकी
विहितविबुधक्षोणाशार्या भजे हृदि राधिकाम् ॥ ३ ॥

द्रविण की कणिका से भी रहित एवं जन्म से ही अत्यन्त मूढ़मति भी जिसके युगल पादपद्मों की स्मृति से कुबेर के उदग्र अभिमान तथा वाचस्पति के तीव्र अहंकार को नष्ट करने वाले वैभव तथा ज्ञान के अधिपति हो जाते हैं उस राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ ३ ॥

द्विरदकुलराड्वाज्युत्तंसद्विपादरथावली-
प्रमुखनिखिलैश्वर्यव्रातप्रदानपरायणाम् ।
चिदलित(प्रशमित)पदाम्भोजद्वन्द्वप्रणम्रजनावली-
विहितगणनातीताघालीं दधे हृदि राधिकाम् ॥ ४ ॥

मत्त मतंगज, उत्तम अश्व, पदाति एवं रथादि प्रधान समस्त ऐश्वर्यों को प्रदान करने में तत्पर एवं युगल पादारविन्द में विनम्र जनों द्वारा विहित अगणित पाप-पुंजों को नष्ट करने वाली राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ ४ ॥

सुतलदिविषल्लोकाद्याप्याखिलेष्टसुखावली-
व्रजवितरणासक्तस्वान्तां सकामनतालये ।
निगमनिकरप्रोक्तश्रेयश्चतुष्टयसाधक (दायक)-
स्वपदकमलप्रोद्भूतार्चां भजे हृदि राधिकाम् ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सकाम उपासना करने वालों को सुतल से लेकर देवलोक तक में प्राप्त होने योग्य समस्त सुखों को प्रदान करने में आसक्तकारी पुरुषार्थ चतुष्टय की प्रदात्री राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ ५ ॥

विकसितसरोमध्योद्भूताभिनूतनमल्लिका-
स्थलकमलभूजातीमल्लीप्रमुख्यसुमार्चिताम् ।
प्रणतजनताहृत्पाथोजप्रकाशितनिर्मल-
द्वितयरहितस्वात्मज्ञानां दधे हृदि राधिकाम् ॥ ६ ॥

खिले हुये कमल, प्रत्यग्र मल्लिका, स्थल कमल, चमेली, मल्ली प्रमुख पुष्पों से समर्चित एवं प्रणतजनों के हृदयारविन्द में निर्मल तथा अद्वितीय आत्मज्ञान को प्रकाशित कर देने वाली राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ ६ ॥

क्षितितलभुवर्मुख्याशेषत्रिलोकपरम्परा-
विहितवसतिप्राणिव्रातादृताङ्घ्रिपयोरुहाम् ।
क्षितितलसुखस्वस्वान्तेष्टाखिलस्थलभूमिपी-
विहितचरणाम्भोजानम्रां भजे हृदि राधिकाम् ॥ ७ ॥

भूः, भुवः आदि प्रधान लोकों के निवासियों द्वारा समादृत पाद-पद्मों वाली एवं चरणारविन्द में आनतजनों को मनोऽभिलषित भूपतित्व आदि प्रदान करने वाली राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ ७ ॥

सपदि धरणीधृद्यक्ष्मापस्मृतिज्वरमुख्यरुङ्-
निकरदलनप्रौढस्वाङ्घ्र्यम्बुजातसकृन्नतिम् ।
विकृतिकणिकाहीनस्वीयाशयावलिचिन्तित-
स्वचरणवनो (जलो) द्भूतद्वन्द्वां दधे हृदि राधिकाम् ॥ ८ ॥

अपने चरणारविन्द का एक बार भी प्रणाम कर लेने वालों के राजयक्ष्मा, अपस्मार, ज्वर प्रमुख रोगों का शीघ्र ही दलन कर देने वाली तथा निर्विकार हृदय वाले उपासकों से ही उपासित युगल पाद-पद्मों वाली राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ ८ ॥

अमृतभवनप्रोद्भूताङ्कक्ष्मापतिशेखर-
त्रिदिवनिवसन्नाथाप्पित्तप्रमुख्यसमर्चिताम् ।
निजपरमचित्सत्यानन्दाक्षराकृतिबोधन-
प्रवणचरणाम्भोजातार्चां भजे हृदि राधिकाम् ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रह्मा के अंगजन्मा ब्रह्मर्षियों, उदात्त राजाओं एवं सुरराज आदि प्रमुखजनों से समर्चित एवं अपने चरणाम्भोज की अर्चना में निरत जनों को सच्चिदानन्द स्वरूप का बोध कराने वाली राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ ९ ॥

हृदयशमलव्रातोच्छेदीन्द्रियव्रजनिग्रहा-
खिलविधशुचाक्षान्तिश्रद्धाप्रमुख्यवितारणीम् ।
चरणकमलद्वन्द्वालीनां स्वकीयकटाक्षतो
निहतनिखिलश्रान्तिव्रातां दधे हृदि राधिकाम् ॥ १० ॥

मनोमल के नाशक जितेन्द्रियत्व, समस्त प्रकार के शोकों का शमन तथा श्रद्धा आदि प्रधान गुणों का वितरण करने वाली एवं अपने कटाक्ष से चरणारविन्दों के मिलिन्द रूप भक्तों की समस्त श्रान्तियों को नष्ट कर देने वाली राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ १० ॥

स्वपदजलभूसेवासक्तस्वचित्तधियां द्रुतं
यमसुखभयोच्छेदप्रौढस्वचित्तनिरोधदाम् ।
चरणविनतैः प्राचीनेषु स्वजन्मसु चाधुना
विहितवृजिनालीनां सोढ्रीं दधे हृदि राधिकाम् ॥ ११ ॥

अपने पादारविन्द की सेवा में आसक्त मति भक्तों को शीघ्र ही यमादि भीति से मुक्ति तथा प्रबल इन्द्रियों के विरोध का वर देने वाली तथा चरणावनत भक्तों के अतीत, अनागत एवं वर्तमान जन्मों में विहित पाप-पुंजों को क्षमा कर देने वाली राधिका को हृदय में भजता हूँ ॥ ११ ॥

प्रणमदखिलाभीष्टस्पर्शप्रियस्वमनोऽम्बुव-
त्रिदशततये पीयूषस्पृक्स्वपाणिपयोजने ।
चरणविनुतिं शृण्वन् गायन् समस्तकलाविदां
द्रविणमहतां श्रीकीर्तीनां भवेद्द्रुतमग्रणीः ॥ १२ ॥

प्रणाम करने वालों को अखिल अभीष्ट पदार्थों के देने में प्रसन्न हृदयारविन्द वाली एवं देव वृन्द को पाणिपुष्कर से पीयूष प्रदान करने वाली राधिका के चरण में नमन करने वाले इस स्तोत्र को सुनने और गाने वाले लोग समग्र कलावेत्ताओं, प्रचुर धन वालों तथा पुष्कल विभूति और कीर्त्ति वालों में शीघ्र ही अग्रगण्य हो जावें ॥ १२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीराधिकायदुमणिस्तवः

[चन्द्रवर्त्म]

भूतिमुख्यनिखिलेप्सितवरदौ
भीतिजालहृतिदक्षिणचरणौ ।
भोगिभृङ्गचिकुरौ प्रणतसुरौ
राधिकायदुमणी हृदि निदधे(कलये) ।। १ ।।

विभूति आदि समस्त अभीष्ट पदार्थों का वर देने वाले, भय आदि के निवारण में निपुण चरणों वाले, सर्प और भृंग के समान शिरोरुह वाले, देववन्दित राधिका और कृष्ण को हृदय में स्थापित करता हूँ ।। १ ।।

भक्तरक्षणनिजाकृतिकौ
सर्वदाननिपुणौ मुनिविनुतौ ।
दीनपौ शुकमुखार्चितचरणौ
राधिकायदुमणी हृदि निदधे ।। २ ।।

अपनी अपनी आकृति से भक्तों की रक्षा करने वाले, सब कुछ देने में दक्ष, मुनियों से वन्दित, दीनों के पालक, शुक प्रमुख ऋषियों द्वारा पूजित पाद वाले, राधिका और कृष्ण को हृदय में स्थापित करता हूँ ।। २ ।।

पारहीनभवपारदनमनौ
....
....
राधिकायदुमणी हृदि निदधे ।। ३ ।।

नमन मात्र से अपार भवसागर से पार कर देने वाले................राधिका और यदुपति को हृदय में स्थापित करता हूँ ।। ३ ।।

कष्टनाशनपुरःसरसकला(निखिला)-
भीष्टदापनपरायणमनसौ ।
अष्टसिद्धिमुखदापनकुशलौ
राधिकायदुमणी हृदि निदधे ।। ४ ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कष्टों को नष्ट करके समस्त अभिलषित पदार्थों के दान में तत्पर हृदय वाले, अष्ट सिद्धि प्रमुख सुदुर्लभ पदार्थों को प्रस्तुत करने में निपुण राधिका और कृष्ण को हृदय में स्थापित करता हूँ ॥ ४ ॥

पादनम्रविनतातनुजनुपौ
तूर्णकृत्तविनतावलिवृजिनौ(दुरितौ) ।
पीतवस्त्रकनकाम्बुदवपुषौ
राधिकायदुमणी हृदि निदधे ॥ ५ ॥

वैनतेय वन्दित पादारविन्द वाले, विनत जनों के पापों को अतिशीघ्र नष्ट करने वाले, पीताम्बरधारी एवं कनकावदात तथा नीरदाभ—गौर एवं श्यामल शरीर वाले राधिका और यदुपति को हृदय-मन्दिर में स्थापित करता हूँ ॥ ५ ॥

चूर्णिताखिलनतात्तिशमलौ
....
....
राधिकायदुमणी हृदि निदधे ॥ ६ ॥

प्रणतजनों के समस्त पापों को चूर्ण कर देने वाले ... ... राधिका और यदुपति को हृदय-मन्दिर में स्थापित करता हूँ ॥ ६ ॥

●

श्रीरुक्मिणीस्तुतिः

[हरिणी]

धरणिधवतायोग्यानीकद्विदन्ततुरङ्गम-
प्रभृतिसकलस्पर्शासक्तस्वकीयकृपालवाम् ।
विहितविनतक्षोणीभारक्षितीश्वरसैनिक-
प्रचयशमनप्राणप्रेष्ठां दधे हृदि रुक्मिणीम् ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भूपतित्व के अनुरूप सेना, द्विरद, तुरंगम आदि समस्त पदार्थों को लेशमात्र कृपा से भी प्रस्तुत कर देने में रसानुभव करने वाली, एवं पृथ्वी पर भारभूत राजाओं के सैनिकों का संहार कर प्राणप्रियतम नारायण को विनत बना देनेवाली रुक्मिणी को हृदय में धारण करता हूँ ।। १ ।।

सरसिजजनुःशम्भुस्कन्दाहिनायकदुःशक-
स्तुतिनतकृपाजन्मक्षोणीमनोऽम्बुसमुद्भवाम् ।
निटिलनयनक्रोधाप्पित्तप्रदग्धनिजाङ्गभू-
विजितनिखिलप्राणिव्रातां दधे हृदि रुक्मिणीम् ।। २ ।।

चतुर्मुख ब्रह्मा, पंचमुख शंकर, षण्मुख कार्त्तिकेय एवं सहस्रमुख शेष से अशक्य स्तुति वाली, प्रणतजनों पर कृपा की जन्मभूमि स्वरूप हृदयारविन्द वाली, त्रिलोचन के भालनेत्रानल द्वारा दग्धांग स्वपुत्र प्रद्युम्न से सम्पूर्ण प्राणियों को जीत लेने वाली रुक्मिणी को हृदय में धारण करता हूँ ।। २ ।।

मघव (सुरप) दयितामेनारम्भातिलोत्तमिकोर्वशी-
प्रमुखसततोद्गीतस्वीयप्रभावकणिकाकणा (लवा) म् ।
अखिलभुवनाधीशप्रेष्ठां त्रिलोकविजिष्णुसू-
समुचितमहालावण्याब्धिं दधे हृदि रुक्मिणीम् ।। ३ ।।

अपने प्रभाव के अत्यल्प कण का शची, मेनका, रम्भा, तिलोत्तमा, उर्वशी प्रमुख देवांगनाओं द्वारा यशोगान कराने वाली, समस्त भुवनों के अधीश्वर नारायण की वल्लभा, त्रैलोक्य विजयी काम की माता होने से महान् लावण्य सिन्धु रुक्मिणी को हृदय में धारण करता हूँ ।। ३ ।।

मृगधरशिरोरत्नव्राताभिमाननिकृन्तक-
स्मितमुखलसच्छैशिर्याढ्यस्वचित्तपयोभवाम् ।
कणभुगहिराड्दृक्पादादिप्रकीर्त्तितशास्त्रद-
स्वचरणरजःपूजालेशां दधे हृदि रुक्मिणीम् ।। ४ ।।

चन्द्रशेखरादि के अभिमान का निकृन्तन करने वाले प्रसन्न मुख से सुशोभमान एवं सुशीतल हृदयारविन्द वाली, अपने चरण रज की लेशमात्र पूजा करने वालों को काणाद, पातञ्जल, अक्षपाद प्रणीत न्याय आदि शास्त्रों के रहस्य का बोध करा देने वाली रुक्मिणी को हृदय में धारण करता हूँ ।। ४ ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निखिलविषयाल्यौदासीन्योल्लसन्निजधीमनः-
सरसिजयमिश्रेष्ठव्रातद्रुताप्यपदाम्बुजाम् ।
निरुपमनिजाङ्गशेषश्रीविहापितनैजरुग्-
विषयकमदस्वर्णां नित्यं दधे हृदि रुक्मिणीम् ॥ ५ ॥

समस्त विषयों से उदासीन रहने के कारण अति प्रसन्न मन और बुद्धि से विराजमान योगीश्वरों के लिये सुलभ पादारविन्दों वाली, अपने निरुपम अंगों की लोकोत्तर सुषमा से अपनी प्रभा पर अत्यधिक गर्व रखने वाले सुवर्ण को पराजित कर देने वाली रुक्मिणी को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ५ ॥

मधुमुरवकीस्वीयाम्वाग्रेजनुर्नरकादिमा-
खिलसुररिपुच्छेत्तृस्वान्ताम्बुजोद्यदहर्पति
(जातिदिवाकर)म् ।
चरणविनताशेषक्लेशव्रजापनयेप्सित-
स्पृशिपटुपदाम्भोजार्चां दधे हृदि रुक्मिणीम् ॥ ६ ॥

मधु, मुर, कंस, नरक आदि असुरों के उच्छेद में रत हृदयारविन्द वाले नारायण के विकास के लिये भास्कररूपा, चरणावनत भक्तों के समस्त क्लेशों को दूर कर अपने पादाब्ज की अर्चना से समस्त ईप्सित पदार्थों के देने में समर्थ, रुक्मिणी को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ६ ॥

पदहृगधरच्छायाधूतावलेपकतोल्लसज्-
जलजशफरी(हरिणी)बिम्बां नासापराजित-
चम्पकाम् ।
इहपरसुखव्रातस्पर्शप्रवीणपदामृत-
प्रभवयुगलीधूलीपूजां दधे हृदि रुक्मिणीम् ॥ ७ ॥

चरण की सुन्दरता से कमल को, नेत्रों के लावण्य से मीन को तथा अधर की सुषमा से बिम्बाफल के दर्प का दलन करने वाली, नासिका से चम्पक को पराजित कर देने वाली, चरणारविन्द युगल के पराग की पूजा करने वालों को ऐहिक और पारलौकिक सुखों को देने में प्रवीण रुक्मिणी को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

असुरजनताप्रास्तक्षोणीधराखिलभेत्तृता-
प्रविलसदुरोविष्णवाश्लिष्टस्ववक्षसिसम्भवाम्
(स्वकीयकलेवराम्)।
सपदिदिविजा(सुरपरिवृढा)सूयाहेतुप्रकृष्टधनावली-
द्रुतवितरणासक्तस्वान्तां दधे हृदि रुक्मिणीम् ॥ ८ ॥

समस्त असुरराजों के भेदन में प्रसन्नचित्त विष्णु द्वारा अपने उरोज को समालिंगित करा देने वाली, देवराज इन्द्र के लिये भी ईर्ष्या के विषय बनने वाले धनादिकों के शीघ्र दान में आसक्त चित्त रुक्मिणी को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ८ ॥

श्रीविदर्भमहीपतिपुत्रीस्तवः

[दोधकम्]

संसृतिभीतिहरां नतपालां
पादजिताम्बुभवां कलिहर्त्रीम् ।
ईप्सितदायिपदां कनकाभां
नौमि विदर्भमहीपतिपुत्रीम् ॥ १ ॥

सांसारिक भयों को हरने वाली, प्रणत जनों की पालिका, चरणों से अम्बुजों को जीत लेने वाली, कालनाशिनी, ईप्सितदायी चरणों वाली, स्वर्णप्रभ विदर्भ नरेश की पुत्री (रुक्मिणी) को प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

निर्जरनम्यपदां वरदात्रीं
नम्रकृपाम्बुनिधिं हृतदुःखाम् ।
पादनमद्वरदां शुभकर्त्रीं
नौमि विदर्भमहीपतिपुत्रीम् ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देवताओं द्वारा प्रणम्य पादों वाली, वरदायिनी, नम्रजनों पर कृपासिन्धु, दुःखों को दूर कर देने वाली, चरणावनतजनों के लिये वर देने वाली, कल्याण-कारिणी विदर्भ नरेश की पुत्री रुक्मिणी को प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

हेमवितारिनतामघहर्त्रीं
साध्वसनाशकरां कृपयार्द्राम् ।
बिम्बविजिष्णवधरां रुचिराङ्गीं
नौमि विदर्भमहीपतिपुत्रीम् ॥ ३ ॥

नत जनों को स्वर्ण देने वाली, पापनाशिनी, भय का नाश करने वाली, कृपा से आर्द्र, अधर से बिम्बाफल को जीतने वाली, रुचिर अंगों वाली विदर्भ नरेश की पुत्री रुक्मिणी को प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

श्रीरुक्मिणीसत्यभामाहर्यष्टकस्तुतिः

[कोकिला]

चरणसरसिसञ्जनुर्भक्तिमत्कल्पधात्रीरुहान्
सलिलजजनिशङ्करेन्द्रादिनम्याङ्घ्रिपाथोरुहान् ।
अमृतनिचयदानकृच्चञ्चरीकाहिशीर्षोद्रुहान्
सततमहमुपाश्रये रुक्मिणीसत्यभामाहरी(च्युता)न् ॥ १ ॥

चरणारविन्द में भक्ति करने वालों के लिये कल्पवृक्ष, ब्रह्मा, शंकर, इन्द्र आदि द्वारा प्रणम्य पादाम्भोज वाले, नीरद, भ्रमर और भुजग के समान शिरोरुह वाले रुक्मिणी, सत्यभामा और हरि की मैं सतत सेवा करता हूँ ॥ १ ॥

अरुणसरसिसम्भवाहङ्कृतिच्छेदिहस्ताङ्कितान्
विविधभयदसंसृताम्भोधिकुम्भोद्भवानुग्रहान् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अहिमकिरणभासितस्वर्णभास्यम्बरावेष्टितान्
सततमहमुपाश्रये रुक्मिणीसत्यभामाहरीन् ॥ २ ॥

अपने प्रशस्त पाणियों से रक्त-कमल के श्रीदर्प का दलन करने वाले, विविधविध भयों के दायक संसार सागर का शोषण कर लेनें वाले कुम्भजरूपी अनुग्रह वाले, सूर्य के समान भासित सुवर्णाभ अम्बरों से आवेष्टित रुक्मिणी, सत्यभामा और हरि की मैं सतत सेवा करता हूँ ॥ २ ॥

अमलरुचिरसद्गुणव्रातरम्याशयप्रोज्ज्वलान्
विनतविततकामिताशेषकाम्यप्रदाङ्घ्रिस्मृतीन् ।
चरणवनजसन्नताशेषकाङ्क्षाधिकस्पर्शकान्
सततमहमुपाश्रये रुक्मिणीसत्यभामाहरीन् ॥ ३ ॥

निर्मल और मनोज्ञ सद्गुणावली से रम्य अन्तःकरण की उत्तम उज्ज्वलता से विभूषित, चरणों की स्मृति से ही प्रणतजनों के दुर्लभ मनोरथों को पूर्ण कर देने वाले, चरणारविन्द में सम्यक् प्रकार से प्रणत जनों की समग्र आकाक्षाओं से भी अधिक देने वाले रुक्मिणी, सत्यभामा और हरि की मैं सतत सेवा करता हूँ ॥ ३ ॥

अमरनृपतिवीतिहोत्रान्तकृन्मुख्यदिक्पार्चितान्
प्रसभकलितसन्नमन्मृत्युभीत्यादिविध्वंसकान् ।
अगतिकृपणनम्रकारुण्यपाथोनिधिस्वाशयान्
सततमहमुपाश्रये रुक्मिणीसत्यभामाच्युतान् ॥ ४ ॥

देवराज इन्द्र, अग्नि, अन्तक प्रमुख दिक्पालों से समर्चित, अनिच्छा से भी प्रणाम करने वालों के मृत्युभय आदि के विध्वंसक, असहाय, दीन और नम्र जनों पर कृपासिन्धु स्वरूप हृदय वाले रुक्मिणी, सत्यभामा और हरि की मैं सतत सेवा करता हूँ ॥ ४ ॥

अमरनगरसुन्दरीपाणिपद्मार्चितस्वाङ्घ्रिकान्
रजतगिरिशनारदव्यासपुत्रादिसंसेवितान् ।
कनककनकव्यवाःश्राणकन्यंक्कृदङ्गच्छवीन्
सततमहमुपाश्रये रुक्मिणीसत्यभामाच्युतान् ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अमरावती की सुन्दरियों के पाणिपाथोज से पूजित-चरणों वाले, शंकर, नारद, व्यास-पुत्र आदि से संसेवित, देदीप्यमान सुवर्ण एवं नवीन नीरद की सुषमा को अपने अंगों की छवि से धिक्कारने वाले रुक्मिणी, सत्यभामा और हरि की मैं सतत सेवा करता हूँ ॥ ५ ॥

अखिलपतितपावनाङ्घ्रिस्मृतिध्वस्तनम्रांहसो
निखिलभुवनवर्त्तिभोग्यावलीमुक्तिदापाङ्गकान् ।
जननिधननीरधेः पारदान् पारदाभाम्बरान्
सततमहमुपाश्रये रुक्मिणीसत्यभामाच्युतान् ॥ ६ ॥

सर्वाधिपति के पालक चरणों की स्मृति से सेवकों के समग्र पापों को नष्ट कर देने वाले, अपने अपांग वीक्षण से ही समस्त भुवनों के अन्तराल में रहने वाले सम्पूर्ण भोग्य पदार्थों के दाता, जन्म-मरण के सागर से पार करने वाले, पारदाभ-श्वेत वस्त्रधारी रुक्मिणी, सत्यभामा और हरि की मैं सतत सेवा करता हूँ ॥ ६ ॥

गगनजनितनैजभोज्यालिकीलालधृत्कुन्तलां-
श्चरणविनतवैनतेयाकृतिस्वासनाधिष्ठितान् ।
धरणिधरपयोधृद्भूधराभेद्यवक्षोऽञ्चितान्
सततमहमुपाश्रये रुक्मिणीसत्यभामाच्युतान् ॥ ७ ॥

वायुभुक् सर्प, अलि तथा जलधर के समान कुन्तल वाले, चरणों में नत जनों को वैनतेय के समान अपने आसन रूप से प्रतिष्ठित करने वाले, पर्वतों के समान उन्नत स्तनों से सुशोभित तथा दुर्भेद्य वक्षःस्थल वाले रुक्मिणी, सत्यभामा और हरि की मैं सतत सेवा करता हूँ ॥ ७ ॥

वदननलिननिर्जितैणाङ्ककामैणजिच्चक्षुषः
कणभुगधिपगौतमव्यासमुख्योक्तशास्त्रप्रदान् ।
कमलनिभकरोल्लसद्वीणिकावल्लकीवेणुकान्
सततमहमुपाश्रये रुक्मिणीसत्यभामाच्युतान् ॥ ८ ॥

मुखारविन्द से चन्द्रमा को तथा नेत्रों से मृगों को जीतने वाले, कणाद, गौतम तथा व्यास प्रणीत दुर्बोध शास्त्रों के बोधक, कमलाभ करों में विराजमान वीणा, वल्लकी तथा वंशी वाले रुक्मिणी, सत्यभामा और हरि की मैं सतत सेवा करता हूँ ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुरितफलतयागताशेषकष्टालिनिर्मूलका
विहितसुकृततत्यपेक्षाधिकाभीष्टविश्राणकाः ।
पठितचरणसंस्तवानां स्थिरा अष्टसिद्धिध्रुवं
ददति सपदि (झटिति) रुक्मिणीसत्यभामाच्युताः
सन्ततम् (सत्वरम्) ॥ ९॥

पापों के भोग रूप में उपस्थित समग्र कष्टों के निर्मूलक तथा धर्मानुष्ठान जनित उत्तमोत्तम अभीष्ट फलों के दाता, रुक्मिणी सत्यभामा और अच्युत अपने चरणों के स्तावक इस स्तव को पढ़ने वालों को शीघ्र ही निश्चित रूप से स्थिर आठों सिद्धियों को दे देते हैं ॥ ९ ॥

श्रीलक्ष्मीस्तुतिः

[वसन्ततिलका]

कान्तां हरेः कनककुण्डलचारुकर्ण-
नासाकपोलवदनां परदेवताख्याम् ।
कुम्भस्तनीं कुलिशपाणिमुखार्चिताङ्घ्रिं
लक्ष्मीं लसत्कनकजिष्णुतनुं प्रपद्ये ॥ १ ॥

हरि की कान्ता, कनककुण्डल से मण्डित कर्ण, मनोहर नासिका, कपोल और मुख वाली, परा देवता, कुम्भस्तनी, वज्रहस्त-इन्द्रादि प्रधान देवों से समर्चित, भ्राजमान सुवर्ण की आभा को भी फीका करने वाले शरीर को धारण करने वाली लक्ष्मी की शरण गहता हूँ ॥ १ ॥

वन्दे सुमृष्टमणिकुण्डलनिष्ककण्ठीं
दिव्याम्बरां कचभरव्यतिषिक्तमल्लीम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्तुङ्गपीवरपयोधरभारहारां
पद्मालयां सवलयां कमलां कलिघ्नीम् ॥ २ ॥

अत्यन्त भास्वर रत्नों से निर्मित कुण्डल एवं कण्ठहार से विभूषित, दिव्य वस्त्रों वाली, मल्लिका मण्डित धम्मिल वाली, उन्नत और विशाल पयोधर धारण करने वाली, कंकणों से अलङ्कृत, पद्मवासिनी, कलिनाशिनी, कमला को वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

श्रीलक्ष्मीदेवीस्तोत्रम्

[हरिणी]

कमलनिलयां भक्ताभीष्टप्रदत्रिदशद्रुमं
तुहिनवसनां पादाम्भोजप्रणम्रभवापहाम् ।
वरवितितिदां भृङ्गाम्भोदानिलाशशिरोरुहां
मनसि कलये लक्ष्मीदेवीं जगत्पतिवल्लभाम्
(त्रिलोकधवप्रियाम्) ॥ १ ॥

पद्मालया, भक्तों के अभीष्ट पदार्थों को देने में कल्पतरु, स्वच्छ वस्त्रवाली, चरणारविन्द में प्रणत जनों के संसार को नष्ट करने वाली, वर-निकरदायिनी, भृंग, अम्भोद एवं पन्नग के समान काले केशों वाली तथा त्रिलोकनाथ की वल्लभा कमला देवी को मन में नमन करता हूँ ॥ १ ॥

हृतनतमृतिं गीर्वाणालीप्रणम्यपदाम्बुजां
प्रचुरकरुणापूर्णस्वान्तादिरम्यनिजाशयाम् ।
भवहृतिपटुं कृष्णद्वीपप्रजातसमर्चितां
मनसि कलये लक्ष्मीदेवीं जगत्पतिवल्लभाम् ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणत जनों की मृत्यु-नाशिनी, देववृन्द वन्दित पादारविन्द वाली, प्रचुर करुणापूर्ण हृदय आदि से रमणीय अभिप्राय वाली, भवनाशन समर्थ, कृष्णद्वीप में उत्पन्न जनों से समर्चित तथा जगन्नाथ की दयिता लक्ष्मी देवी का मन में ध्यान करता हूँ ॥ २ ॥

अभयदकरां पादानम्राखिलाघनिवारणीं
भुजगचिकुराम्भोजन्मप्रजातसुखार्चिताम् ।
जितविधुमुखां वक्षोजातप्रतर्जितभूधरां
मनसि कलये लक्ष्मीदेवीं जगत्पतिवल्लभाम् ॥ ३ ॥

अभय दायक करों वाली, पादावनत जनों के समस्त पातक पुञ्जों को नष्ट करने वाली, सर्प सदृश केश वाली, ब्रह्मादिकों से अर्चित, अपने मुख से चन्द्र को जीत लेने वाली, वक्षोज से भूधरों को भी भीत कर देने वाली तथा जगन्नाथ की वल्लभा लक्ष्मी देवी का मन में ध्यान करता हूँ ॥ ३ ॥

श्रीलक्ष्मीमहीतुलसीस्तुतिः

[हरिणी]

जितमनसिभूक्रोधादिद्विड्व्रजाप्यपदाम्बुजाः
सुमशररुषामुख्याधीनस्वमत्यतिदुर्लभाः ।
धरणिधरभिद्भ्राजद्धस्ताम्बुराशिमहीपतो (?)
अवत कृपया पद्माधात्रीतुलस्य इमं सदा ॥ १ ॥

काम क्रोधादि आन्तरिक शत्रुओं को जीत लेने वालों के लिये सुलभचरण एवं कामादि विकारों से वशीकृत मति वालों के लिये अत्यन्त दुर्लभ तथा भूधर विदारी इन्द्र के भ्राजिष्णु करों से लालित समुद्राधिपति की पुत्री पद्मा, पृथिवी और तुलसी इस जन की रक्षा करें ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सकृदपिकृतस्वीयाङ्घ्रयम्भःप्रजातयुगस्मृतेः
सपदिकलितव्याधिव्रातापमृत्युजराहृतीः ।
त्रिदशवदनाहर्नाथाब्जप्रमुख्यसुरार्चिताः
मनसि कलये नित्यं लक्ष्मीमही(धरा)तुलसीरहम् ॥ २ ॥

एक वार भी अपने युगल पादारविन्दों की स्मृति करने से तत्क्षण भयानक रोग, अपमृत्यु तथा जरा का अपहरण करने वाली एवं अग्नि, सूर्य, वरुण प्रमुख देवताओं से समर्चित लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य नमन करता हूँ ॥ २ ॥

स्थिरचरपरामर्शोद्धूता(र्शापास्ता)खिलाक्षसुखेप्सुता-
प्रमुखशमलव्रातप्राप्यस्वकीयपदाम्बुजाः ।
शतमखहविर्वाहोग्रांशुक्षपेशमुखार्चिता
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ ३ ॥

स्थिर तथा अस्थिर पदार्थों (नित्यानित्य) के विवेक से समस्त इन्द्रिय सुखों की प्राप्ति रूप प्रधान कश्मलों को अपक्षीण करने वालों के लिये अपने चरणारविन्दों को सुलभ बनाने वाली तथा इन्द्र, अग्नि, सूर्य, चन्द्रादि प्रमुख देवताओं से पूजित लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य निहित करता हूँ ॥ ३ ॥

पदवनजनुर्नम्रा यासां नितान्तमकिञ्चना
अपि जनिजडा लोकाश्चाशु स्वकीयवसूक्तितः ।
सुरपरिवृढं गीर्वाणालीगुरुं च विधुन्वते
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ ४ ॥

जिनके चरणाम्बुजों में प्रणत होने वाले नितान्त दीन, तथा जन्मजात जड लोग शीघ्र ही अपनी समृद्धि तथा वाणी से इन्द्र तथा वाचस्पति को तिरस्कृत कर देते हैं उन लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं अपने मन में सदा ध्यान रखता हूँ ॥ ४ ॥

अमरविततेराहारार्थं वितीर्णकरावलेः
पृथुकविहो[हु]तोत्तंसप्रेष्ठा(:)सहादरवल्लभाः ।
भववननिधिप्रोत्थक्लेशव्रजार्त्तकृपार्णवाः
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देववृन्द के भोजनार्थ अपनी किरणावली का वितरण करने वाली, कवीश्वर प्रशंशित भूषण वाले भगवान् की प्रियतमा, पति के समान सम्मान भाजन एवं भवसागर प्रसूत दुःखों से आर्त्तजनों पर करुणासिन्धु लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ ५ ॥

अगणितजनुर्व्रातै पादप्रणम्रचयैः कृतं
निखिलदुरितं याः स्वीयाक्षालवेन हरन्त्यहो ।
अपिच निखिलां हस्त्यादिश्रीततिं प्रददत्यरं
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ ६ ॥

पादावनत जनों द्वारा अनन्तानन्त जन्मों में किये गये पातक पुंजों को अपनी कृपादृष्टि के लेश मात्र से जो हर लेती हैं एवं शीघ्र ही हाथी आदि समस्त समृद्धियों को दे डालती हैं उन लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में सदा धारण करता हूँ ॥ ६ ॥

दिनपतिकरभ्राजत्स्वर्णकनत्कनकाम्बुजो-
दरवनधरा(मरकता)भिप्रार्थ्यश्रीलवस्वतनुच्छवीः(प्रभाः)।
उरगधरणीभृत्तल्पाङ्गोपगूढकलेवरा
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ ७ ॥

सूर्य की किरणों के समान देदीप्यमान तथा निर्मलीकृत सुवर्ण-कमल की कर्णिका तथा मरकत से भी प्रार्थनीय शोभा से विभासमान कान्ति वाली एवं शेषशायी भगवान् से आलिंगित शरीर वाली लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ ७ ॥

निजपदवनोद्भूतानम्रावलीहृदयाम्बुज-
स्फुटपर(प्रकलित)परब्रह्मानन्दप्रबोधदिवाकरान् ।
शुकपरभृतन्यक्कृत्कण्ठाः शुकादिसमर्चिता
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ ८ ॥

अपने चरणारविन्द में आनत भक्तों के हृदय-सरोज को ब्रह्मानन्द के मकरन्द से परिपूर्ण करने में सूर्यरूप, शुक, कोकिलादि के कण्ठ से भी मधुर कण्ठ वाली, शुक आदियों से सम्पूजित लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इहपरसुखाकाङ्क्षाहीनस्वचित्तसरोजनुः
प्रणतजनतासंसारच्छि(हृद्ग्रन्थिच्छि)त्कटाक्षकटाक्षकाः।
वहुविधसुखाकाङ्क्षाधीनाशयेष्टपदार्थदा
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ ९ ॥

अपने कटाक्ष वीक्षण से ऐहिक और पारलौकिक सुखों में वितृष्ण प्रणत जनों (निष्काम भक्तों) के हृदयारविन्द की ग्रन्थियों को भेदकर मुक्त करने वाली तथा सकाम भक्तों की सर्व विध आकांक्षाओं की पूर्त्ति करने वाली लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ ९ ॥

सरसिजसखाम्भोजारातिस्वरूपसरोजधिक्-
कृतिनिपुणहक्प्राणप्रेष्ठाःसरोभवजित्पदाः।
अतिसुरभिभिःपुष्पव्रातैःसमर्चितपादुका
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ १० ॥

सूर्य चन्द्र रूप नयनारविन्द वाले नारायण की प्रेयसी, चरणों से सरोज को पराजित करने वाली और अत्यन्त सुरभित प्रसूनों से पूजित पादुका वाली लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारता हूँ ॥ १० ॥

निखिलतलयुग्लोकव्रातान्तरेतनतेप्सित-
क्षितिपतिपदस्पर्शप्रीतस्वकीयहृदम्बुजाः।
अखिलभुवनव्रातावासिव्रजादृतशासना
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ ११ ॥

प्रणत जनों को चतुर्दश भुवनाधिपत्य प्रदान करने में प्रसन्नता का अनुभव करने वाले हृदयारविन्द वाली एवं सम्पूर्ण लोक वासियों से समादृत शासन वाली लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ ११ ॥

स्वचरणपयःसञ्जातार्चानिषक्तनिजाशय-
व्रजविषयगाशेषाशानासुरासुनिकृन्तनाः।
प्रणमदखिलव्याधिव्रातप्रशामकचिन्तना
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ १२ ॥

अपने चरणारविन्द की अर्चना में निरत भक्तों के हृदय में अवस्थित विषयानुराग रूपी अज्ञानासुर के प्राण लेने वाली एवं प्रणाम करने वालों के समस्त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रोगों को नष्ट करने की चिन्ता करने वाली लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ १२ ॥

विहितधिषणैरात्मारामैः परात्मसमाधितो
दलितहृदयग्रन्थिव्रातैः प्रचिन्तितपादुकाः ।
रथपदगदाशङ्खाम्भोजोल्लसत्स्वकराम्बुजा
(शङ्खाद्याढ्यस्वकीयकराम्बुजाः)
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ १३ ॥

विहित कर्मों में मनोयोग रखने वाले तथा परमात्म समाधि से हृदय ग्रन्थियों को भेदने वाले आत्मारामों द्वारा सतत ध्यात-पादुका वाली एवं चक्र, गदा, शंख और कमल से सुशोभन कर सरोज वाली लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ १३ ॥

वनजनिजनुःकान्ताधात्रीधरेश्वरवर्ष्मजा
सुरचमुपतिश्वश्रूमुख्यैडितस्वयशश्छटाः ।
द्रुहिणगिरिशस्वर्गाधीशप्रमुख्यसमर्चिता
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ १४ ॥

सरस्वती, धात्री, गौरी तथा सेनानी की सास आदि प्रमुख देवियों द्वारा वन्दित कीर्त्ति वाली तथा ब्रह्मा, शम्भु, सुरेश प्रमुख देवताओं से समर्चित लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ १४ ॥

निरवधिमहाक्लेशव्रातप्रपूर्णभवाम्बुधि-
प्रपतितनमल्लोकाशेषक्ष्मालिनिबर्हणीः ।
मतिमलहरस्वाक्षस्वान्तप्रशान्तिमुखप्रदा
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ १५ ॥

असीम और महान् क्लेशों से परिपूर्ण भवसागर में पूर्णतः पतित होने वालों में नमन-परायण जनों के सम्पूर्ण क्लेशों को नष्ट करने वाली एवं बौद्धिक विकारों को हर कर निर्मल अन्तःकरण में प्रशान्ति आदि प्रमुख तत्त्वों का प्रदान करने वाली लक्ष्मी, मही और तुलसी को मन में मैं सदा ध्यान करता हूँ ॥ १५ ॥

सकृदपिनिजाङ्घ्रयब्जद्वन्द्वप्रणामलवोऽपि यै-
ररचि हृदये तेषामंहःकदम्बकमर्षणीः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यममुखभयध्वान्तादित्यान्यमादिवितारिणीः
मनसि निदधे नित्यं लक्ष्मीमहीतुलसीरहम् ॥ १६ ॥

जिन लोगों ने अपने हृदय में एक बार भी अंशतः चरणारविन्द का ध्यान कर लिया है उनके समस्त पातक पुंजों को नष्ट करने वाली, यम-जनित भय रूपी अन्धकार के लिये सूर्य रूप एवं यम-नियमादि को प्रदान करने वाली लक्ष्मी, मही और तुलसी को मैं मन में नित्य धारण करता हूँ ॥ १६ ॥

●

श्रीललिताम्बिकास्तवः

[उपजातिः]

सारांग्यमुख्याशयमालिनीकृद्-
योषालिदुष्टात्मसुदुर्लभाङ्घ्रिकाम् ।
वैराग्यमुख्यामलसद्गुणाली-
प्राप्यस्वपादां ललिताम्बिकां भजे ॥ १ ॥

रागादि विकारों से मलिनमति हो जाने के कारण रमणी आदि में दूषित-चित्त लोगों के लिये सुदुर्लभ चरणों वाली एवं वैराग्य प्रधान निर्मल सद्गुणगणों से विशिष्ट जनों को अपने पादारविन्द को सुलभ बना देने वाली ललिताम्बा का भजन करता हूँ ॥ १ ॥

स्वर्गाधिपात्माश्रयभुग्दिनेशभू-
निर्ऋत्यबीशान [नि] ल मुख्यपूजिताम् ।
जरापमृत्युज्वरमुख्यरुक्तते-
र्निराकरिष्णुं ललिताम्बिकां भजे ॥ २ ॥

देवराज इन्द्र, अग्नि, सूर्य, भू, निर्ऋति, वरुण, पवन प्रभृति प्रमुख देवताओं से पूजित एवं जरा, अपमृत्यु, ज्वर प्रमुख व्याधि समूहों का निराकरण करने वाली ललिताम्बा को भजता हूँ ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गिरा स्वया निर्जरदेशिकं श्रिया
धनाधिपं ह्रीभरितौ प्रकुर्वते ।
यदङ्घ्रिपाथोजसकृत्प्रणामकृ-
द्दरिद्रमूका ललिताम्बिकां भजे ॥ ३ ॥

जिसके चरणों में एक बार भी प्रणाम करने से दरिद्र अपनी समृद्धि से धनाधिपति कुवेर को एवं मूक अपनी वाणी से सुराचार्य वाचस्पति को लज्जा से भरपूर कर देते हैं उस ललिताअम्बा का भजन करता हूँ ॥ ३ ॥

धराधरोत्तंसशरीरसम्भवा-
चिदग्निकुण्डोद्भवमूर्त्तिधारिणीम् ।
दीनानतव्रातकृपासुधाम्बुधि-
स्वीयान्तरङ्गां ललिताम्बिकां भजे ॥ ४ ॥

भूधरों में अलंकृत हिमाद्रि की आत्मजा गिरिजा के चिदग्निकुण्ड से उद्भूत शरीर को धारण करने वाली एवं दीन तथा आनत जनों के लिये कृपा सुधासिन्धु रूप हृदय रखने वाली ललिताअम्बा का भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

करीन्द्रवक्त्राश्रयभुग्जनुःसुवं
करीन्द्रवाजिप्रमुखप्रदार्चनाम् ;
नम्रव्रजांहोवनदावहव्यवाट्
कटाक्षलेशां ललिताम्बिकां भजे ॥ ५ ॥

गजानन एवं षडानन की जननी, अर्चना करने वालों को गजराज, अश्व प्रमुख पदार्थों की दात्री, अपने कटाक्ष लेश से ही भक्तों के पापरूपी महावन को दावानल की तरह भस्म कर देने वाली ललिताअम्बा का भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

सरीसृपेशानमहाककलेवर-
स्वकीयतल्पानुजनिस्वरूपिणीम् ।
शरीरराजद्रुचिलेशलज्जितो [त-]
सहस्ररश्मिं ललिताम्बिकां भजे ॥ ६ ॥

सर्पराज शेष के महान् कलेवर को अपनी शय्या बनाने वाले भगवान् के पीछे जन्म धारण करने वाली एवं शरीर के देदीप्यमान प्रकाश लेश से सहस्रकिरण सूर्य को भी लज्जित कर देने वाली ललिताअम्बा का भजन करता हूँ ॥ ६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लोपादिमुद्राघटजातविग्रह-
मुखर्षिजायापतिवर्यसंस्तुताम् ।
निजाक्षराकारविबोधदानकृन्-
मन्त्राक्षरालीं ललिताम्बिकां भजे ॥ ७ ॥

लोपामुद्रा एवं कुम्भज प्रमुख ऋषि दम्पतियों से सम्यक् स्तुत, अपने शाश्वत विग्रह के बोध कराने वाले मन्त्रों की अक्षरावली रूपा ललिता अम्बा का भजन करता हूँ ॥ ७ ॥

सकाममैजांङ्घ्रिविनम्रपंक्तये
प्रकाममिष्टव्रजदानतत्पराम् ।
चकासतीं भीषणशस्त्रपूगधृड्-
दोर्दण्डराजीं ललिताम्बिकां भजे ॥ ८ ॥

कामनाओं की उपलब्धि के लिये अपने चरणों में आनत जनों की पंक्ति के लिये पर्याप्त अभीष्ट पदार्थों को देने में तत्पर रहने वाली भ्राजमान एवं भयानक शस्त्रों को धारण करने वाले बाहुदण्डों से सुशोभमान ललिताअम्बा का भजन करता हूँ ॥ ८ ॥

अच्चित्तमिस्रावृतहृत्सरोजनु-
र्विकासकार्ग्रायुतभाविभास्वराम् ।
नम्रालिहृद्यात्मरहस्यकाशनो-
द्युक्तौ यदङ्घ्री ललिताम्बिकां भजे ॥ ९ ॥

घोर अज्ञानान्धकार से आवृत हृदय-सरोज को विकसित करने वाले दस सहस्र सूर्य के समान भास्वर आभा वाली, एवं नम्रजनों के हृदय में आत्मतत्त्व को प्रकाशित कर देने वाले चरणों वाली ललिताअम्बा का भजन करता है ॥ ९ ॥

धात्रीभुवस्वर्मुखलोकसन्ततौ
सञ्चालितस्वीयनिरङ्कुशेशताम् ।
धात्रीमुखेशीकृतनैजपाद्भवाः
प्रजातभक्तां ललिताम्बिकां भजे ॥ १० ॥

भू-लोक, स्वर्लोक आदि लोकों में अपने निर्बाध ऐश्वर्य का संचालन करने वाली एवं अपने चरणों में भक्ति करने वालों को भूपतित्व आदि प्रदान करने वाली ललिता अम्बा का भजन करता हूँ ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भूपालयक्ष्मज्वरकुष्ठमूर्च्छिता-
पस्मारमुख्याखिलरोगहृत्स्मृतिम् ।
भण्डादिचण्डासुरखण्डनस्फुट-
प्रचण्डशक्तिं ललिताम्बिकां भजे ॥ ११ ॥

स्मरण मात्र से राजयक्ष्मा, ज्वर, कुष्ठ, मूर्च्छा, अपस्मार प्रमुख रोगों का हरण करने वाली एवं भण्ड आदि प्रचण्ड असुरों के खण्डन में उग्र शक्ति वाली ललिताअम्बा का भजन करता हूँ ॥ ११ ॥

अष्टादशस्वीयकरालदोस्तति-
भ्राजत्सुरारिव्रजभीषणायुधाम् ।
विकारशून्याशययोगसन्तति-
ध्याताङ्घ्रिपद्मां ललिताम्बिकां भजे ॥ १२ ॥

अपनी प्रचण्ड अष्टादश भुजाओं में दैत्यों के लिये भयंकर एवं भ्राजमान आयुधों को धारण करने वाली एवं निर्विकार हृदय वाले योगियों द्वारा ध्यात पादपद्मों वाली ललिता अम्बा का भजन करता हूँ ॥ १२ ॥

वचःप्रसूब्रह्मरमारमापति-
स्वकीयकान्तप्रमुखामृताशिभिः ।
पुंनागफुल्लाम्रुतजातमल्लिका-
मुख्यार्चिताङ्घ्रिं ललिताम्बिकां भजे ॥ १३ ॥

वाणी और ब्रह्मा एवं लक्ष्मी तथा नारायण प्रमुख देव दम्पतियों द्वारा पुंनाग, प्रफुल्ल कमल, मल्लिका आदि प्रधान पुष्पों से पूजित पादपद्मों वाली ललिता अम्बा का भजन करता हूँ ॥ १३ ॥

चित्तप्रशान्तीन्द्रियदान्तिमुख्यसद्-
गुणावतंसस्पृशिसक्तचेतसम् ।
संसारनैसर्गिकसर्वखेदहृत्-
स्वापाङ्गपातां ललिताम्बिकां भजे ॥ १४ ॥

शम, दम आदि उत्तमोत्तम गुणों के दान में आसक्त चित्त एवं अपने कटाक्ष-पात से संसार के सहज समस्त खेदों को नष्ट करने वाली ललिता अम्बा का भजन करता हूँ ॥ १४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यमादिनैजाङ्गसमेतयोगदां
यमादिभीतिव्रजमूलकृन्तनीम् ।
पादाब्जनम्रावलिसर्वपातक-
क्षमानिधिं श्रीललिताम्बिकां भजे ॥ १५ ॥

अपने अंगों सहित यम नियमादि योगों की दात्री, यमराज आदि से जनित-भयों को समूल नष्ट करने वाली एवं पादाब्ज में प्रणत जनों के समग्र-पापों को क्षमा करने में क्षमा सिन्धु श्री ललिता अम्बा को भजता हूँ ॥ १५ ॥

सर्वेष्टदाम्बापदवन्दनान्वितं
तत्स्तोत्रमेतत् पठतां मुदा द्रुतम् ।
भवेच्चिरायुस्तनुदार्ढ्यहर्म्यमा-
विद्यासतीपुत्रमुखाखिलश्रीः ॥ १६ ॥

समस्त अभीष्ट पदार्थों को देने वाले अम्बा के पद वन्दन से युक्त एवं प्रसन्नता से उनके इस स्तोत्र का पाठ करने वालों को शीघ्र ही दीर्घ आयु, शरीर की दृढ़ता, उत्तम भवन, लक्ष्मी, सरस्वती, सती पत्नी, पुत्र प्रमुख अभिलाषित समृद्धि प्राप्त हो जावे ॥ १६ ॥

●

श्रीललिताललाटाक्षस्तोत्रम्

मत्तमयूरम्]

अम्बुजनिलयावल्लभपङ्कजजाततनू
विघ्ननिवारकवह्निसमुद्भवमुखसेव्यौ ।
अगणितकोटिब्रह्माण्डव्रजसूतातौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नारायण, चतुरानन, विघ्नराज, कार्तिकेय प्रमुख देवों से सेव्य, एवं अनन्त-कोटि ब्रह्माण्डों की जननी और जनक श्री ललिता देवी तथा त्रिलोचन का वन्दन करता हूँ ॥ १ ॥

आशातिक्रान्तेप्सितवस्तुव्रजदान-
स्वीयव्रतजितनिर्जरवृक्षौ नतविततेः ।
निर्व्याजामितकरुणासागरहृत्कमलौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ २ ॥

प्रणत-मण्डली को आशातीत अभीप्सित वस्तुओं के दान का निजी व्रत रखकर कल्पवृक्ष को जीत लेने वाले एवं निश्चल रूप से अमित करुणा-सिन्धु स्वरूप हृदय पुण्डरीक वाले श्री ललिता देवी तथा त्रिलोचन का वन्दन करता हूँ ॥ २ ॥

इष्टापूर्त्तव्रतचर्यामुखकृतिपूगै-
र्भक्तिब्रह्मज्ञानप्रमुखैरपि जुष्टौ ।
श्राणितकाङ्क्षितगजमुखसम्पन्मोक्षादौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ ३ ॥

इष्टापूर्त्त व्रत का अनुष्ठान करने वालों एवं भक्तिभावित तथा ब्रह्मज्ञानियों में प्रमुख जनों द्वारा भी सेवित एवं अभीष्ट गज प्रमुख-सम्पति तथा मोच आदि के दाता श्री ललिता देवी तथा त्रिलोचन का वन्दन करता हूँ ॥ ३ ॥

ईशौ साङ्गाखिलविद्यानामिन्दुधरौ
नतजनमोदाम्भोनिधिराकाचन्द्रमसौ ।
ईहाशून्यस्वान्तजनाप्यस्वीयपदौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ ४ ॥

सांग समस्त विद्याओं के अधीश्वर, चन्द्रमा को धारण करने वाले, प्रणतजनों के आनन्द-सिन्धु के लिये पूनम के चाँद स्वरूप, निरीहजनों द्वारा अपने चरणों का लाभ कराने वाले श्री ललिता देवी तथा श्री त्रिलोचन का वन्दन करता हूँ ॥ ४ ॥

उडुकुलवल्लभडिम्भविभूषितकोटीर-
भ्राजच्छीर्षण्यव्यक्तश्रितजनवात्सल्यौ ।
उरगाधिपमुखसेवितचरणाम्बुजयुगलौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शीर्ष के प्रान्त भाग को बालेन्दु से विभूषित कर आश्रितजनों पर वात्सल्य प्रकट करने वाले एवं सर्पराज प्रमुखों द्वारा सेवित युगल पादों वाले श्री ललिता देवी तथा श्री त्रिलोचन का वन्दन करता हूँ ॥ ५ ॥

ऊर्जितशासनपौलोमीधवमुखदिविज-
व्रातकिरीटोज्ज्वलमणिनीराजितपादौ ।
ऊरीकृतनतकाङ्क्षापूर्त्तिव्रतदीक्षौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ ६ ॥

तेजस्वी शासक शचीपति प्रमुख देवताओं के मुकुट में जटित मणियों द्वारा नीराजित चरणों वाले, प्रणतजनों की वांछा को पूर्ण करने का व्रत स्वीकार करने वाले श्री ललिता देवी तथा श्री त्रिलोचन का वन्दन करता हूँ ॥ ६ ॥

ऋषभारूढौ ऋतसत्यप्रियऋजुचेष्टौ
लक्षितजनतातूर्णानुग्रहकृतिशीले ।
ऋद्धिव्रातश्राणनसक्तौ द्राङ्नमतां
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ ७ ॥

वृषभ पर आरूढ, ऋत और सत्य के प्रेमी, सरल स्वभाववाले, जनों पर आशु तुष्ट होने वाले शील से सुशोभित, प्रणाम करने वालों को शीघ्र ही ऋद्धि आदि देने वाले श्री ललिता देवी तथा श्री त्रिलोचन का वन्दन करता हूँ ॥ ७ ॥

ॠस्वरसंज्ञारूपध्येयावुत्सङ्ग-
स्थितगणनाथक्रौञ्चक्षमाधृच्छिद्रकरौ ।
प्रेम्णासत्वरमानतकाङ्क्षितवैभवदौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ ८ ॥

'ॠ' स्वर की संज्ञा के रूप से ही ध्येय, गणपति एवं कुमार से विभूषित अंक वाले, आनत जनों के अभीप्सित वैभव को प्रेम से शीघ्र ही दे देने वाले श्री ललिता देवी तथा भालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ ८ ॥

ऌमुखाशेषाक्षररूपौ मितिरहितकृपा-
जन्मक्षोणीनिजहृदयामृतसञ्जातौ ।
कमलनिजासनकमलेट्प्रमुखार्चितपादौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

'लृ' प्रमुख समस्त अक्षरों के रूप में विराजमान, अमित कृपा की जन्मभूमि स्वरूप हृदयारविन्द वाले, पद्मासन तथा लक्ष्मीवल्लभ प्रमुख देवों से अर्चित पादों वाले श्री ललिता देवी तथा फालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ ९ ॥

लॄनिजरूपौ लावण्याब्धी नतजनता-
कारुण्यामृतपारावारस्वस्वान्तौ ।
लाकिन्यर्च्यौ शफरीनेत्रविरूपाक्षौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ १० ॥

'लॄ' स्वरूप वाले, लावण्यसिन्धु, प्रणतजनों पर करुणा सुधासिन्धुरूप हृदय-वाले, लाकिनी से समर्च्य, मीननयन तथा विरुपाक्ष श्री ललिता देवी तथा फालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ १० ॥

एणाङ्कार्भकचूडौ शोणाम्बुजपादौ
शोणस्वाधरबिम्बरुचानिर्जितबिम्बौ ।
काणादाक्षस्वपदप्रमुखाखिलनयदौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ ११ ॥

बालचन्द्र को चूडा में धारण करने वाले, रक्त कमलाभ पादों वाले, अपने-अपने रक्त अधरों से बिम्बाफल को जीतने वाले, कणाद एवं अक्षपाद आदि द्वारा रचित शास्त्रों के अवबोधक श्री ललिता देवी तथा फालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ ११ ॥

ऐडविडेयप्रालेयांशुप्रभृतिनुत-
स्वपदाम्भोजौ चन्द्रार्भाञ्चितनिजमौली ।
ऐहिकपारत्रिकसुखदायकपदपूजौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ १२ ॥

कुबेर, चन्द्र आदि द्वारा प्रणत पादाम्भोज वाले, बालचन्द्र से अलंकृत मौलि वाले, पदपूजकों को ऐहिक एवं पारलौकिक सुख देने वाले श्री ललिता देवी तथा फालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ १२ ॥

ॐकारामृतसम्भववरदानिजचेतः-
सज्जन्पूगज्ञानश्राणनरतचित्तौ ।
ॐ बीजाक्षरगूढार्थारण्येयस्वाकारौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ १३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ॐकार के अमृत तत्त्व का वरदान देने वाले, आत्मतत्त्व के ज्ञान को देने में रक्त चित्त, ॐकार एवं बीजमन्त्रों से अपने स्वरूप को व्याख्येय मानने वाले श्री ललिता देवी तथा फालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ १३ ॥

औपासनमुखकर्मकलापाराध्याङ्घ्री
भक्तिज्ञानप्रमुखोपायचयावाप्यौ ।
औदासीन्योज्ज्वलमतियतिहृदयाब्जखौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ १४ ॥

उपासना तथा कर्मकलाप से आराध्य पादों वाले, भक्ति, ज्ञान प्रमुख उपायों द्वारा प्राप्य, उदासीन मतिवाले यतियों के हृदयारविन्द को विकसित करने वाले सूर्य स्वरूप श्री ललिता देवी तथा फालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ १४ ॥

अङ्घ्रिसरोरुहभक्तमृकण्डुप्रभवतनो-
रन्तकपाशच्छेदकरनिजानुगृहीतौ ।
अङ्गविराजत्कान्तिपराजितकनकविधू
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ १५ ॥

अपने पादाम्भोज के भक्त मार्कण्डेय मुनि की अमरता का वरदान देने वाले एवं अपने-अपने अंशों की आभा से सुवर्ण एवं चन्द्रमा को पराजित करने वाले श्री ललिता देवी तथा फालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ १५ ॥

अक्षोभौचध्यातृस्वान्ते यन्नामा-
न्तर्गतपर्णौश्रुतिवाक्ततिभिःकीर्त्यन्ते ।
पादाम्भोजप्रणताखिलशुभदातारौ
वन्दे श्रीमल्ललितादेवीनिटिलाक्षौ ॥ १६ ॥

ध्याताओं के मन में जिनके नामाक्षर के रहस्यभूत तत्त्व वेदवाणी के द्वारा प्रणव रूप से कीर्त्तित है, एवं प्रणतजनों के अखिल मनोरथों को पादाम्बुज युगल से परिपूर्ण करने वाले श्री ललिता देवी तथा फालाक्ष का वन्दन करता हूँ ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पञ्चमी-श्रीललितेन्दुशेखरस्तवः

[रुचिरा]

भजत्सुरक्षितिजनुषौ भवापहौ
भुजङ्गमच्छविचिकुरौ वरप्रदौ ।
तिरस्कृताम्बुजचरणौ महेश्वरौ
भजेऽनिशं हृदि ललितेन्दुशेखरौ ॥ १ ॥

भक्तों के कल्पतरु, संसार नाशक, भुजगोपम केश वाले, वरदायक, चरणों से कमल को तिरस्कृत करने वाले, महेश्वर, ललिता और इन्दुशेखर को हृदय में सदा भजता हूँ ॥ १ ॥

शरद्घनच्छविवसनौ समस्तदौ
सुरावलीनुतचरणौ मनोहरौ ।
पया[यो]ब्धिजाधवसहजन्मभावकौ
भजेऽनिशं हृदि ललितेन्दुशेखरौ ॥ २ ॥

शरद्-घन के समान शुभ्र वस्त्रों वाले, समस्त पदार्थों के दाता, सुरसमूह से प्रणतपाद, मनोहर, लक्ष्मीवल्लभ की सहोदरी तथा तत्पति ललिता और इन्दुशेखर को हृदय में सदा भजता हूँ ॥ २ ॥

कृतान्तभीशमनकृतौ कृपाम्बुधी
सुराङ्गनाविततिनुतौ मुनीडितौ ।
कलानिधिद्युतिवपुषौ कलेड्धरौ
भजेऽनिशं हृदि ललितेन्दुशेखरौ ॥ ३ ॥

मृत्यु भय के शामक, कृपासिन्धु, देवांगनाओं से प्रणत, मुनिवन्दित, सुधांशु-सोदर शरीर वाले, चन्द्रधारी ललिता और इन्दुशेखर को हृदय में सदा भजता हूँ ॥ ३ ॥

पदानतेप्सितवरदौ भवान्तकौ
घनच्छविस्वकचभरौ नताघहौ ।
निजानतप्रियविनताजवाडवौ
भजेऽनिशं हृदि ललितेन्दुशेखरौ ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पदानतों को ईप्सित वर देने वाले, भवनाशक, नीरदाभ कच वाले, नतजनों के पापनाशक, वैनतेय और वाडव को वाहन रूप से स्वीकार करने वालों को प्रिय ललिता और इन्दुशेखर को हृदय में सदा भजता हूँ ॥ ४ ॥

पराकृताम्बुभवकरौ नयालिदौ
शशाङ्कधृन्निजशिरसावनिष्टहौ ।
अभीष्टदस्तुतिपठनस्मृतादिकौ
भजेऽनिशं हृदि ललितेन्दुशेखरौ ॥ ५ ॥

करों से कमल के विजेता, शास्त्रबोधक, अपने-अपने शिर पर चन्द्रमा को धारण करने वाले, अनिष्टनाशक, स्तुति पाठक, स्मरणकारी को अभीष्ट देने वाले श्री ललिता और इन्दुशेखर को हृदय में सदा भजता हूँ ॥ ५ ॥

श्रीललिताषोडशीस्तुतिः

[शकलि भाषाच्छन्दः]

भक्तजनव्रजकल्पलते
भवभयभञ्जकचरणनते ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ १ ॥

भक्तजनों के लिये कल्पलता, चरणों की नति से भव-भय-भञ्जन करने वाली शिववल्लभा शांकरी की जय हो जय हो तथा श्री ललिते देवि, रक्षा करो ॥ १ ॥

भुजग-भ्रमर-शिरोजतते
करनिर्जितपाथोजाते ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जय जय शङ्करि शिवदयिते

जय जय पाहि श्रीललिते ॥ २ ॥

भुजग और भ्रमर के समान शिरोरुह वाली, हाथ की कान्ति से कमल की विजेत्री शिवदयिते, शंकरि तेरी जय हो जय हो तथा विजयशालिनी श्री ललिता देवि, रक्षा करो ॥ २ ॥

करचामीकरवर्ष्मलते

वरवरदापननैजकृते ।

जय जय शङ्करि शिवदयिते

जय जय पाहि श्रीललिते ॥ ३ ॥

स्वर्णिम कर एवं अंगलतिकावाली, उत्तमोत्तम वर देने को ही अपना कार्य मानने वाली शिवदयिते, शंकरि तेरी जय हो जय हो तथा विजयशालिनी श्री ललिता देवि, रक्षा करो ॥ ३ ॥

स्मररिपुकाम्यस्वतनुलते

सुरवरनम्याङ्घ्रिकजाते ।

जय जय शङ्करि शिवदयिते

जय जय पाहि श्रीललिते ॥ ४ ॥

स्मराराति से काम्य शरीरवल्ली वाली, श्रेष्ठ देवताओं द्वारा प्रणम्य पादयुगल वाली शिवदयिते, शंकरि, तेरी जय हो जय हो तथा विजयशालिनी श्री ललिता देवि, रक्षा करो ॥ ४ ॥

हरहृद्रम्यस्वगुणतते

कृपया करुणां कुरु विनते ।

जय जय शङ्करि शिवदयिते

जय जय पाहि श्रीललिते ॥ ५ ॥

हर के हृदय में रमण करने योग्य गुण गणों से युक्त कृपा कर प्रणत मुझ पर करुणा करो । हे शिवदयिते शंकरि तेरी जय हो जय हो तथा विजयशालिनी श्री ललिता देवि, रक्षा करो ॥ ५ ॥

कृत्तकृतान्तकनिजकान्ते

कृष्णारक्षकसहजाते ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ ६ ॥

मृत्युञ्जय की कान्ता, कृष्णा के रक्षक नारायण की सोदरी, शिवदयिते शंकरि, तेरी जय हो जय हो तथा विजयशालिनी श्री ललिता देवि, रक्षा करो ॥ ६ ॥

मेनादेवीतनुजाते
शौनकनुतपदवनजाते ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ ७ ॥

मेना देवी की आत्मजा, शौनक से वन्दित पादारविन्द वाली, शिवदयिते, शंकरि, तेरी जय हो जय हो तथा विजयशालिनी श्री ललिता देवि, रक्षा करो ॥ ७ ॥

कनकह्रेपकभाललिते
वरसन्तोषदपादनते ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ ८ ॥

स्वर्ण को लज्जित करने वाली आभा से ललित, चरणनति से सन्तोषदायक वर देने वाली शिवदयिते, शंकरि, तेरी जय हो जय हो तथा विजयशालिनी श्री ललिता देवि, रक्षा करो ॥ ८ ॥

भवसागरंतारणनिरते
भववामाङ्गाश्लेषरते ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ ९ ॥

संसार-सागर से पार करने में निरत, शंकर के वाम अंग के आलिंगन में रति रखने वाली शिवदयिता शंकरी की जय हो जय हो तथा श्री ललिता देवी विजयशालिनी हों एवं रक्षा करें ॥ ९ ॥

नीरदमेचककचलसिते
पारविहीनकृपाभरिते ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ १० ॥

नीरद के समान काले केशों से सुशोभित एवं असीम कृपा से परिपूर्ण शिवदयिता शङ्करी की जय हो जय हो तथा श्री ललिता देवी विजयशालिनी हों एवं रक्षा करें ॥ १० ॥

मुषिताखिलनिजपापनते
पदपङ्कजनतसुरविततेे ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ ११ ॥

प्रणत जनों के समस्त पापों को नष्ट करने वाली एवं सुर-समूह से वन्दित पादारविन्द वाली शिवदयिता शङ्करी की जय हो जय हो तथा श्री ललिता विजयशालिती हों एवं रक्षा करें ॥ ११ ॥

एणाङ्कार्द्कमुखकान्ते
हरिणा (एणा) ङ्कधर [स्व] शिरःकान्ते ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ १२ ॥

मुख की कान्ति से चन्द्र को निष्प्रभ बना देने वाली, चन्दशेखर की वल्लभा शिवदायिता शङ्करी की जय हो जय हो तथा श्री ललिता विजयशालिनी हों एवं रक्षा करें ॥ १२ ॥

शोणाधरजितबिम्बतते
वीणाधरकरवनजाते ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ १३ ॥

रक्त अधर से विम्ब-वृन्द को जीत लेने वाली, करकंज में वीणा धारण करने वाली शिवदयिता शङ्करी की जय हो जय हो तथा श्री ललिता विजयशालिनी हों एवं रक्षा करें ॥ १३ ॥

मणिगणभूषण (रूषित) कान्तियुते
पीनस्तननतकायलते ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ १४ ॥

मणियों के आभूषणों की कान्ति से युक्त, पीनस्तन से किंचित् नम्र देहलता वाली शिवदयिता शङ्करी की जय हो जय हो तथा श्री ललिता विजयशालिनी हों एवं रक्षा करें ॥ १४ ॥

इष्टस्पर्शस्वकृतिरते
कष्टनिकृन्तकचरणनते ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्रीललिते ॥ १५ ॥

भक्तों के इष्ट पदार्थों को देने में रति करने वाली, चरण की नति से कष्टों का निवारण करने वाली शिवदयिता शङ्करी की जय हो जय हो तथा श्री ललिता विजयशालिनी हों एवं रक्षा करें ॥ १५ ॥

सिद्ध्यष्टकदे पदाब्ज[पाद]नते
सिद्ध्यृद्धि [ऋद्धिसिद्धि] प्रीतस्वसुते ।
जय जय शङ्करि शिवदयिते
जय जय पाहि श्री ललिते ॥ १६ ॥

पादाब्ज को प्रणति करने वालों को आठों सिद्धियाँ देने वाली ऋद्धि और सिद्धि कन्याओं से प्रसन्न शिवदयिता शङ्करी की जय हो जय हो तथा विजयशालिनी ललिता देवी रक्षा करें ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीवचनततिप्रसू--जलधिजा-गिरीन्द्रतनयास्तुतिः

[अश्वललितम्]

निजचरणाम्बुजातयुगलीप्रणामपरभक्तकल्पलतिका
बहुविधदुःखसन्ततिलसद्भव[ा]भिधसमुद्रवाडवशिखाः ।
अनिलनिजाशनाधिपपयोधरभ्रमरजिष्णुनैजकबरीः
वचनततिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनया भजेऽहमनिशम् ॥ १ ॥

अपने युगल पादारविन्द के प्रणाम में परायण भक्तों के लिए कल्पलता, अनेक प्रकार के दुःखग्राम से परिपूर्ण संसार-सागर के शोषणार्थ वडवानल की ज्वाला एवं पन्नगपति, पयोद तथा भ्रमर को जीतने वाले कवरीपाश से विभूषित वाग्देवता, लक्ष्मी और गिरिजा को मैं सदा भजता हूँ ॥ १ ॥

अभयविबोधबहुलप्रकारनिजमुद्रिकालिरुचिरैः
करनिकरैर्वरस्पृशिपरैर्विधुतकमलान्वयस्मयभराः ।
शरदृतुकालिकामृतधरप्रभाविजयकौतुकाढ्यवसनाः
वचनततिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनया भजेऽहमनिशम् ॥ २ ॥

अभय, प्रबोध एवं वरद मुद्राओं से मनोहर करों से कमल-कुल के प्रबल अहङ्कार को नष्ट करने वाली एवं शरत् काल के धवल बादलों की कान्ति को पराभूत करने वाले वस्त्रों से सुसज्जित सरस्वती, लक्ष्मी और गिरिजा को मैं सदा भजता हूँ ॥ २ ॥

सरसिजजन्मानन्तशयनावनीध्रपतिकाम्यदिव्यवपुषः
कमलजजिष्णुशङ्करशचीपतिप्रमुखनम्यपादकमलाः ।
अजरसनामुरारिसुहृदुरःशिवोरुतलरम्यहर्म्यवसतीः
वचनततिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनया भजेऽहमनिशम् ॥ ३ ॥

ब्रह्मा, विष्णु और महेश द्वारा काम्य कमनीय कलेवर वाली, ब्रह्मा, विष्णु, शङ्कर, शचीपति प्रमुख देवों से प्रणम्य पादों वाली एवं ब्रह्मा की रसना, मुरारि के मनोहर वक्षःस्थल तथा शंकर के अतीव रमणीय हर्म्य पर निवास करने वाली सरस्वती, लक्ष्मी तथा गौरी को मैं सदा भजता हूँ ॥ ३ ॥

अचरचरप्रपञ्चसृजिकृत्प्रपालनविनाशकर्तृशक्तिलसतीः
प्रणतकृतान्तभीतिशमनप्रमुख्यहृदयङ्गमस्वविभवाः ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगतिकदीनवत्सलातिकरुणोत्तरङ्गजलधीकृतात्महृदया:
वचनततिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनया भजेऽहमनिशम् ।। ४ ।।

चराचर प्रपंच की रचना, रक्षा तथा संहार करनेवाली शक्तियों से विलसित, अपने-अपने दिव्य वैभव (प्रभाव) से प्रणतजनों के यम-भय आदि प्रमुख क्लेशों को प्रशान्त करने वाली एवं अशरण तथा दीन जनों पर वात्सल्य और करुणा की ऊँची तरंगों से सुशोभमान सागर-स्वरूप अपने हृदय को बनाने वाली सरस्वती लक्ष्मी तथा गौरी को मैं सदा भजता हूँ ।। ४ ।।

प्रणतपुलोमजादिदिविषत्प्रकाण्डललनावतंसमणियुक्-
सनकसनन्दनप्रमुखसंयमीन्द्रनिकरात्यनुग्रहकरीः ।
तुहिनकनत्सुवर्णदिनराड्यमालिपरिपन्थिभाञ्चिततनू-
र्वचनततिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनया भजेऽहमनिशम् ।। ५ ।।

प्रणत इन्द्राणी आदि प्रधान देवांगनाओं को अंगनाओं का शिरोभूषण बनाने वाली, सनक सनन्दन आदि मुनीन्द्रों पर अत्यन्त अनुग्रह करने वाली एवं तुहिन, प्रतप्त चामीकर, दिनपति, यम आदि को कान्ति को पराभूत करने वाली कान्ति से भास्वर शरीर वाली सरस्वती, लक्ष्मी और गौरी को मैं सदा भजता हूँ ।। ५ ।।

पदपयसीसमुद्भवरजःप्रणम्रजनताभीप्सितस्पृशिरताः
परिमितिपारवर्जितमहाभवाभिधपयोधिपारदपदाः ।
निजचिकुरातिनैल्यविभवावधूतसकलाम्बुदाभिमतिका
वचनततिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनया भजेऽहमनिशम् ।। ६ ।।

पदाम्भोज के पराग को प्रणाम करने वाली जनता के अभीप्सित पदार्थों के दान में रत, अपने पदपोत से अपरिमित तथा अपार महाभवसागर से पार कर देने वाली एवं अपने बालों की अत्यन्त नीलिमा से समस्त अम्बुद के अभिमान को विकम्पित कर देने वाली सरस्वती, लक्ष्मी और गौरी को मैं सदा भजता हूँ ।। ६ ।।

चरणसरःप्रजातविनतप्रजालिरचिताखिलाघहरणीः
सलिलपयोविवेक्तृविनताततनुप्रभवपुङ्गवस्वगमनाः ।
घनतरतुङ्गपीनकठिनस्तनावनमितक्षमाधरकुला
वचनततिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनया भजेऽहमनिशम् ।। ७ ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चरणारविन्द में प्रणत जनों के कृत समस्त पापों का हरण करने वाली, मराल एवं वैनतेय के समान गति वाली, अत्यन्त घन, उच्च, पीवर तथा कठोर स्तनों से समस्त पर्वतों को जीत लेने वाली सरस्वती, लक्ष्मी और गौरी को मैं सदा भजता हूँ ।। ७ ।।

सुललितवीणिकामुरलिकाप्रमुख्यबहुवाद्यगानरसिकाः
कणभुगाकर्दमसुताक्षपादशुकतातजैमिनिनुताः ।
हिमकरतातमातृसहजाकलाधरशिरोऽवतंसरमणीः
वचनततिप्रसूजलधिजागिरीन्द्रतनया भजेऽहमनिशम् ।। ८ ।।

अत्यन्त सुन्दर वीणा, वेणु प्रमुख अनेक वाद्य एवं गान में रसिक, कणाद, कपिल, अक्षपाद, व्यास एवं जैमिनि द्वारा विनुत, एवं हिमकर के पिता, मातुल तथा चन्द्रशेखर की रमणी सरस्वती लक्ष्मी और गौरी को सदा मैं भजता हूँ ।। ८ ।।

पदनतकष्टजातशमनस्वकीयपदपङ्कजातयुगली
द्रुततरमिष्टवर्गनिकरप्रदाननिपुणात्मचित्तकमलाः ।
हृदि दधताष्टकं हृदातदङ्घ्रिनुतितत्परं प्रपठता
दुरधिगमाष्टसिद्धिनिकरास्पदत्वमभिलभ्यते द्रुततरम् ।। ९ ।।

अपने युगल पादारविन्द से प्रणत जनों के सम्पूर्ण कष्टों का शमन करने वाली, अपने निर्मल चित्त से अतिशीघ्र भक्तों के अभीष्ट वर्ग के समूह को प्रदान करने में निपुण देवियों के चरण में प्रणाम कर इस अष्टक को हृदय में धारण करके पाठ करने वाले भक्त-गण अत्यन्त शीघ्र ही दुर्लभ आठों सिद्धियों को प्राप्त कर लेते हैं ।। ९ ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रोत्रागविधिस्तुतिः

अनिर्जितनिजाक्षदुर्लभपदौ विरागिप्रियौ
सुरासुरनमस्कृतस्वचरणौ भयोन्मूलकौ ।
स्मरद्धनवचोजितामरमहीशवाचस्पती
कृपामृतमहार्णवस्वहृदयौ भजे वाग्विधी ॥ १ ॥

अपनी इन्द्रियों के वश में रहने वालों के लिये दुर्लभ, विरक्तों के प्रिय, सुरासुर से वन्दित-चरण, भय नाशक, भक्तों को देवराज की विभूति और बृहस्पति की वाणी को पराजित करने वाले धन और वचन के दाता कृपासिन्धु-स्वरूप हृदयों वाले सरस्वती और ब्रह्मा को मैं भजता हूँ ॥ १ ॥

रथेभपृतनाहयप्रभृतिदौ शुगालिच्छिदौ
वितीर्णनमदीप्सिताखिलवरौ मुनीन्द्रेडितौ ।
कटाक्षविशदीकृतश्रुतिमतौ समस्ताधिपौ
जराविविधरोगदुर्मतिहरौ भजे वाग्विधी ॥ २ ॥

रथों, हाथियों और घोड़ों आदि के देने वाले, शोक मोहादि के नाशक भक्तोंको अभीष्ट वर देने वाले, मुनीन्द्रों से वन्दित, वैदिक ज्ञान को कटाक्ष मात्र से विशद करने वाले, चराचर के स्वामी, जरा विविध व्याधि एवं दुर्बुद्धि का हरण करने वाले वाग्-विधि का भजन मैं करता हूँ ॥ २ ॥

वराभयदमुद्रिकाधरकरौ विकारापहौ
शमादिबहुसाधनप्रदपदौ त्रिलोकादृतौ ।
श्रमालिहरपादुकास्मृतिलवौ यमादिप्रदौ
प्रणम्रदुरितावलीसहहृदौ भजे वाग्विधी ॥ ३ ॥

वर और अभय मुद्राओं को धारण करने वाले पाणि वाले, विकार नाशक, चरणों से शमदमादि अनेक साधनों के दायक, त्रैलोक्य में समादृत, चरण-पादुका की स्मृति के लेशमात्र सेही समस्त श्रम को दूर करने वाले, यम-नियम आदि दुर्लभ पदार्थों के दाता, अपने हृदय से भक्तों के पापपुंज को क्षमा कर देने वाले, वाग्-विधि का मैं भजन करता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीवाङ्निकरजनन्यष्टकस्तोत्रम्

[विषममात्रिकम्]

प्रणमत्सुरद्रुनिजपाद-
शमितभवमुख्यसाध्वसाम् ।
भ्रमराम्बुवाहभुजगाभकुन्तलां
कलये पद्मभवरमणीम्(वाङ्निकरजननीं कलये) ॥ १ ॥

प्रणाम करने वालों के लिये कल्पतरु रूप अपने चरणोंसे संसार के मुख्य भयों को प्रशमित कर देने वाली, भ्रमर, वारिद तथा-सर्प के समान कृष्ण-केश वाली वाग्देवता को मैं नमन करता हूँ ॥ १ ॥

वरदानसक्तनिजहस्त
निहतवनजातडम्बराम् ।
शरदम्बुधारि(धर्तृ)निजकान्तिवाससं
कलये पद्मभवरमणीम् ॥ २ ॥

वर देने में तत्पर अपने करों से सरोरुह-समूह को पराभूत करने वाली, शरत्कालिक मेघ तथा अपनी-कान्ति के अनुरूप वस्त्रों को धारण करने वाली वागीश्वरी को मैं नमन करता हूँ ॥ २ ॥

सलिलप्रजातजनिकां
तनुमतिगुणादिरम्यता(रमणी) म् ।
दिविजप्रकाण्डततिनम्यपादुकां
कलये पद्मभवरमणीम् ॥ ३ ॥

अम्भोज जनित, शारीरिक और बौद्धिक गुणों से रम्य, प्रमुख देववृन्द से वन्दित पादुका वाली ब्रह्मा की प्रेयसी (सरस्वती) को मैं नमन करता हूँ ॥ ३ ॥

नतिकृतकृतान्तमुखभीति-
शमनकरुणासुधाम्बुधिम् ।
कलये पद्मभवरमणीं
निजभर्तृकृष्णहरमुख्यपूजिताम् ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणतजनों के मृत्यु प्रमुख भयों के प्रशमन में कृपामृतसिन्धु, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर प्रमुख देवों से पूजित ब्रह्मा की वल्लभा को मैं नमन करता हूँ ॥ ४ ॥

त्रिदिवाङ्गनादिनिकुरुम्ब-
मुनिगणसमर्चिताङ्घ्रिकाम् ।
वाङ्निकरसूजननीं कलये
कनकाभिमानहरकान्तिविग्रहाम् ॥ ५ ॥

देवाङ्गना निकर तथा मुनि-मण्डल से समर्चित चरणों वाली, सुवर्ण की चमक को अपनी शारीरिक-कान्ति से नष्ट करने वाली समस्त वाङ्मय की जननी सरस्वती को मैं नमन करता हूँ ॥ ५ ॥

नतवाञ्छितार्थसुखदायि-
भवजलधिपारदस्मृतिम् ।
वाङ्निकरजननीं कलया-
म्यरुणाधरापजितबिम्बप्रभा(डम्बरा)म् ॥ ६ ॥

जिसकी स्मृति संसार-सागर से पार कर देती है एवं प्रणत जनों के अभीप्सित पदार्थों से सुख-देने वाली हो जाती है तथा जिसके अधर की अरुणिमा से बिम्ब फल पराजित हो जाता है उस वाङ्मय की जननी सरस्वती को मैं नमन करता हूँ ॥ ६ ॥

विनताजवाहमुख्यबन्ध-
विनतवृजिनघ्नपादुकाम् ।
वनजजरमतिलब्धि-
घनपीनतुङ्गकठिनस्तनीं भजे ॥ ७ ॥

जिनकी चरण-पादुका नारायणदि देवों से वन्द्य तथा भक्तों के पापों को नष्ट करने वाली है तथा जिनके घन, पीन, उन्नत और कठोर स्तनों से पद्म प्रसूत ब्रह्मा को रतिलाभ होता है उस सरस्वती को मैं भजता हूँ ॥ ७ ॥

कणभुक्प्रमुख्यनयदायि-
भयहरलसत्कराम्बुजाम् ।
कलये पद्मभवरमणीं
हरिणाङ्कचूड(मौलि)सहजातविग्रहाम् ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वैशेषिक आदि दुर्बोध शास्त्रों की अभिज्ञता देने वाली, भय-नाशन से सुशोभित कराम्बुजों वाली, चन्द्रशेखर की सोदर बहन, ब्रह्माजी की रमणी को मैं नमन करता हूँ ॥ ८ ॥

श्रीवाणीस्तोत्रम्

प्रणतवरदा हस्तद्वन्द्वप्रभाजितपङ्कजा
भवभयहरा निर्वार्मेघप्रभाम्बरवेष्टिता ।
भ्रमरचिकुरा भक्तव्रातत्रिविष्टपवल्लिका(भूरुहा)
भवतु सततं भूत्यै वाणी गिरीशसहोदरी ॥ १ ॥

प्रणतजनों को वर देने वाली, अपने युगल कर-कमलों की प्रभा से पङ्कज-श्री को परास्त कर देने वाली, भव-भय विनाशिनी, निर्जलमेघाभ वस्त्र से आवेष्टिती भ्रमराभ केशवाली, भक्तजनों की कल्पलतिका, शिव की सहोदर बहन सरस्वती सदा विभूति दें ॥ १ ॥

नतशुभकरी कारुण्याब्धिस्वकीयहृदम्बुजा
सुरनुतपदा कृत्तानम्रान्तकोद्भवसाध्वसा ।
रुचिरतनुभा शास्त्रव्रातप्रबोधनपण्डिता
भवतु सततं भूत्यै वाणी पितामहवल्लभा ॥ २ ॥

भक्तों का कल्याण करने वाली, करुणा सिन्धु हृदयारविन्द वाली, देववन्दित पदों वाली, भक्तों को यम-भीति से छुड़ाने वाली, सुन्दर आभा से आभासित देह वाली, समस्त शास्त्रों के प्रबोधन में पण्डिता, पितामह की वल्लभा वाणी सतत कल्याणकारिणी हों ॥ २ ॥

अशुभततिहृद्धस्तभ्राजद्वरप्रदभीहरा
घनकनकरुग्वापूर्णाभ्रप्रभ[भात]शिरोरुहा ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नतदुरितहृत्संसाराम्भोनिमग्नविमोचिनी
भवतु सततं भूत्यै वाणी रमारमणस्नुषा ॥ ३ ॥

अशुभ-समूहों को दूर करने वाले अभय और वरदमुद्रा से विभूषित हस्तों वाली, विद्युद्विलसित सजल जलद पटल के समान केशों वाली प्रणत जनों के पापों की नाशनी, संसार-सागर में निमग्न जनों की उद्धारिणी रमापति की पुत्रवधू वाणी सदा विभूति देने वाली हों ॥ ३ ॥

●

श्रीवाणीरमोमास्तुतिः

[भाराक्रान्ता]

ब्रह्मेन्द्रादित्रिदशविनुता विघ्नेशमुख्यार्चिताः
कारुण्यैकप्रचुरहृदयाः काङ्क्षाधिकश्राणिकाः ।
मोक्षस्पर्शप्रवणधिषणाः साम्राज्यभूतिप्रदा
वन्दे नित्यं हृदयकमले वाणीरमोमा मुदा ॥ १ ॥

ब्रह्मा, इन्द्र प्रभृति देवताओं से विनुत, विघ्नेश्वर प्रमुख देवों से अर्चित, करुणा-परिपूर्ण हृदयों वाली, इच्छा से अधिक देने वाली, मोक्ष देने में तत्पर मति, साम्राज्य की विभूति-दात्री,वाणी, रमा और उमा को मैं अपने हृदय-कमल में प्रसन्नता से नित्य प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

सौभाग्याम्भोनिधिजलधिजानीरागलभ्याङ्घ्रिका
नम्याभीष्टप्रकरदनतीर्विद्याव्रजाधीश्वरीः ।
चन्द्रोत्तंसोरगशयनपत्सम्प्रापकस्वार्चना
वन्देऽजस्रं हृदयकमले वाणीरमोमा मुदा ॥ २ ॥

सौभाग्य-सागर की लक्ष्मी, विरक्तों के लिये सुलभ, जिनकी वन्दना प्रणम्य (देवादि) जनों के अभिलषित पदार्थों की दात्री है, समस्त विद्याओं की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अधीश्वरी, अपनी अर्चना से शिव और विष्णु के चरणों का सन्निधान कराने वाली, वाणी, रमा और उमा को असने हृदय-कमल में प्रसन्नता से मैं नित्य प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

नानाभूति(ऋद्धि)प्रदपदकृपा गीर्वाणकोट्यर्चिता(टीडिता)
लावण्यश्रीजननधरणीः स्वःस्त्रीकलापार्चिताः ।
शास्त्रव्रातप्रदनिजपदा एणाङ्कजिष्णवम्बिका
वन्दे नित्यं हृदयकमले वाणीरमोमा मुदा ॥ ३ ॥

जिनके चरणों की कृपा नाना प्रकार की समृद्धियों को देती रहती है, जो करोड़ों देवताओं से संस्तुत हैं, जो लावण्य-लक्ष्मी की जन्म-भूमि, स्वर्गाङ्गना वृन्द से वन्दित, अपने चरणों से सम्पूर्ण शास्त्रों को देने वाली तथा चन्द्र को जीतने वाली हैं उन अम्बिका वाणी, रमा और उमा को अपने हृत्पुण्डरीक में हर्ष से मैं नित्य प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

अत्रोर्ध्वं च प्रचुरशुभदा निर्धूतबिम्बाधरा
स्वाङ्गच्छायाविजितकनका वैराग्यमुख्यप्रदाः ।
ॐ काराख्याकृतिपरपरा ॐकारजापिप्रिया
वन्देऽजस्रं हृदयकमले वाणीरमोमा मुदा ॥ ४ ॥

इस लोक और स्वर्गादि लोकों में प्रचुर मंगल देने वाली, अपने अधरों से बिम्ब को जीतने वाली, अपने अंग की कान्ति से स्वर्ग को पराजित करने वाली वैराग्य आदि दुर्लभपदार्थों को देने वाली, प्रणव-स्वरूपा, ॐकार जपने वालों को प्रिय समझने वाली वाणी, रमा और उमा को अपने हृदयारविन्द में नित्य हर्ष से मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

कामक्रोधप्रमुखशमनी रागादिनिर्मूलिनी-
अरप्राप्याङ्घ्रीर्मलिनमनसां वैराग्यलभ्येक्षणाः ।
सर्वाभीष्टप्रदशुभमतीः कारुण्यपूरोक्षिणा
वन्देऽजस्रं हृदयकमले वाणीरमोमा मुदा ॥ ५ ॥

काम, क्रोध, प्रमुख दोषों को शमन करने वाली, राग-द्वेषादि द्वन्द्वों को निर्मूल कर देने वाली, मलिन मन वालों को अलभ्य, वैराग्य से ही दर्शनीय वाणी रमा और उमा को अपने हृदयारविन्द में मैं हर्ष से नित्य प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गीर्वाणालीविनुतविभवा दुर्मृत्युमुख्यापहाः
नम्रालीश्रीवचनविभवोद्धूतस्वरोंशार्यकाः ।
सर्वव्याधिप्रशमनपटूस्त्रैलोक्यरक्षाकरी-
र्हस्तभ्राजदभयहवरदा वाणीरमोमाःस्तुवे ॥ ६ ॥

जिनके ऐश्वर्य की देववृन्द विशेष रूप से प्रणाम करते हैं, अपमृत्यु प्रमुख दोषों को दूर कर देने वाली, भक्तजनों को प्रदत्त धन और ज्ञान के वैभव से देवेश्वर और वृहस्पति के भी महत्त्व को क्षीण कर देने वाली, समस्त व्याधियों को नष्ट करने में समर्थ, त्रैलोक्य की रक्षा करने वाली अभय और वरद मुद्रा से सुशोभमान हाथों वाली वाणी, रमा और उमा की मैं स्तुति करता हूँ ॥ ६ ॥

शान्तस्वान्तस्तुतनिजपदा हस्त्यादिसम्पत्प्रदा [ः]
शान्तिक्षान्तिप्रमुखगुणदा (तत्त्वप्रकाशप्रदाः ।)
नम्रायासप्रजहतिरताः क्षान्त्यम्बुराशाशया
वन्दे नित्यं हृदयकमले वाणीरमोमा मुदा ॥ ७ ॥

शान्तचेतस् तपस्वियों से जिनके पदों की स्तुति होती हो, जो हाथी आदि सम्पत्तियाँ को देती हों, जो शान्ति और क्षमा प्रमुख गुणों की दात्री हों, जो तत्त्व ज्ञान के प्रकाश को फैलाती रहती हों, जो भक्तों की व्यग्रता का नाश करने में निरत रहती हों, और जिसके हृदय में क्षमा-सागर लहराता है उन वाणी, रमा और उमा को हृदय-कमल में मैं नित्य हर्ष से भजता हूँ ॥ ७ ॥

•

श्रीविदर्भधरणीधरवर्ष्मभवास्तवः

[नर्कुटकम्]

नतकरुणाम्बुधिं श्रितजनाखिलवाञ्छि[त]दां
जितमतितोषितां नतजनप्रमदव्रजदाम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्विरदरथादिदां [इहपरत्रसुखप्रभवां]
हृदि कलये विदर्भधरणीधववर्ष्मभवाम् ॥ १ ॥

भक्तों के लिये कृपासिन्धु, आश्रितजनों के सम्पूर्ण अभिलषित पदार्थों को देने वाली, जितेन्द्रियों से परितोषित, प्रणतजनों को आनन्दादि देने वाली, हाथी, रथ आदि की दात्री, ऐहिक और पारलौकिक सुखों की सवित्री वैदर्भी (रुक्मिणी) का मैं हृदय में स्मरण करता हूँ ॥ १ ॥

अमरगणेडितां द्रुततरं(प्रणमतां)धनसञ्चयदां
शुकमुखपूजितां हरविधीडितपादयुगाम् ।
शफरिका(झषमृगी)मदहृन्नयनां [भवभूतिकरीं]
हृदि कलये विदर्भवसुधापतिवर्ष्मभवाम् ॥ २ ॥

देववृन्दवन्दित अतिशीघ्र (प्रणाम करने वालों को) धन-राशि देने वाली, शुकदेव प्रमुख मुनियों द्वारा पूजित, शिव, स्वयम्भू से पूजित पादपद्मों वाली, मीन और मृग के मद को मर्दित करने वाले नयनों वाली, सांसारिक विभूति की दात्री विदर्भ नरेन्द्रनन्दिनी रुक्मिणी को मैं मन में भजता हूँ ॥ २ ।

स्मितजितरात्रिपां नयततिप्रदपादयुगी-
मरुणनिजाधरामिहोभयमङ्गलदाम् ।
प्रणवनिजाभिधां मनुवरव्रजदायिनतां
हृदि कलये विदर्भधरणीधववर्ष्मभवाम् ॥ ३ ॥

अपनी स्मिति से चन्द्रमा को जीतने वाली, चरण-युगल से समस्त शास्त्रों की बोधिका, अरुण अधर वाली, इहलोक और परलोक में मंगल दायिनी, प्रणवाभिधाना, नतजनों को श्रेष्ठ मन्त्र आदि की दीक्षा देने वाली विदर्भ नरेन्द्र-नन्दिनी का मैं हृदय में ध्यान करता हूँ ॥ ३ ॥

सकलकलाधिपां प्रणतहृन्निखिलेप्सितदां
सदयहृदम्बुजां विभवदस्वपदस्मरणाम् ।
सुरललनेडितालिसुषमाञ्चितगात्रलतां(नैजतनुं)
(यमिनिकरार्चितांकनकजिन्निजवर्ष्मरुचिं)
हृदि कलये विदर्भधरणीधववर्ष्मभवाम् ॥ ४ ॥

सकल कलाओं की अधीश्वरी, प्रणतजनों के समस्त हार्दिक मनोरथों की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूरयित्री, सदय हृदया, अपने चरण के स्मरण करने वालों को वैभव प्रदान करने वाली, देवांगना वन्दित अति सुषमा समृद्ध गात्र यष्टि वाली (यतीन्द्र समर्चित, स्वर्णप्रभा से उत्कृष्ट कान्ति युक्त शरीर वाली) विदर्भ नरेन्द्र नन्दिनी का मैं हृदय में ध्यान करता हूँ ॥ ४ ॥

●

श्रीवैदर्भीवासुदेवस्तुतिः

[हरनर्त्तनम्]

भक्तजनेप्सितकल्पतरू भवसम्भवभीतिविभञ्जनचुञ्चू
भृङ्गभुजङ्गममूर्धजनी करनिर्जितपाथसिसम्भवदर्पौ ।
शारदनीरदतुल्यपटौ वरदानपरायणचित्तसरोजौ
नौमि विदर्भमहीपतिजावसुदेवशरीरजनी अनुवेलम् ॥ १ ॥

भक्तों के अभीप्सित दान में कल्पतरु, भव-सम्भव-भीति के भंजन में प्रसिद्ध, भृंग और भुजंगम के समान शिरोरुह वाले, हाथों से जलज के दर्पनाशक, शरत्कालीन बादलों के समान स्वच्छ वस्त्रधारी, वर देने में आसक्त चित्तारविन्द वाले वैदर्भी और वासुदेव को अनुक्षण प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

श्राणितसन्नतकाम्यतती दिविषल्ललनापुरुषत्रजनम्यौ
विश्वविमोहनरम्यतनू कृतकृत्स्नजगत्त्रयसन्ततरक्षौ ।
कृत्तकृतान्तमुखोत्थभयौ कृपया भरितस्वहृदम्बुसमुत्थौ
नौमि विदर्भमहीपतिजावसुदेवशरीरजनी अनुवेलम् ॥ २ ॥

प्रणतजनों को अभिलाषाओं के दाता, देवांगना एवं पुरुषसार्थ से प्रणम्य, विश्वविमोहनकारी रमणीय शरीर से सुशोभित, अखिल ब्रह्माण्ड की रक्षा में सतत तत्पर भय-भीति प्रमुख भयों के निवारक, कृपापूर्ण हृदयाम्भोज वाले वैदर्भी एवं वासुदेव को अनुक्षण प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

केनमुखश्रुतिशीर्षनुतौ कनकोदरसूनुशुकार्चितपादौ
मीनसरोभवजित्स्वदृशौ चरणानतलोकवरस्पृशिसक्तौ ।
संसृतिपारदपादनतौ शिरउद्भवनैल्य(विनिर्जित)पराजितवादौं
स्तौमि विदर्भमहीपतिजावसुदेवशरीरजनी अनुवेलम् ॥ ३ ॥

केन आदि उपनिषदों में स्तुत, प्रह्लाद, शुक आदि से समर्चित पादों वाले, अनने-अपने नेत्रों से मीन और वारिज को जीतने वाले, चरणों में आनत भक्तों को वर देने में आसक्त, चरणों को नति करने वालों को भवसागर से पार कर देने वाले, अपने काले वालों से नवीन नीरद की श्यामता को पराजित करने वाले रुक्मिणी और वासुदेव को अनुक्षण प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

मानविवर्जितपापहरौ विनतातनुसम्भवपक्षिपवाहौ
मानविवर्धनधूलिपदौ करपङ्कभवादृतवीणितवेणू ।
काणभुजादिनयाव्रलिदौ हरिणाङ्कसहोदरभामपदस्थौ
स्तौमि विदर्भमहीपतिजावसुदेवशरीरजनी अनुवेलम् ॥ ४ ॥

अमित पापों के नाशक, पक्षिराज गरुड को वाहन बनाने वाले, धूलिधूसर चरणों से मान वर्धन करने वाले, कर कंज में सुरीली बाँसुरी को समादृत करने वाले, काणाद आदि शास्त्रों के दाता, चन्द्रभा की वँहन एवं भगिनी पति के पद पर आसीन वैदर्भी और वासुदेव को अनुक्षण प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

●

श्रीशशिशशिकलाधारिस्तवः

[शिखरिणी]

सरोजव्रातातहङ्कृतिहरकरौ भक्तवरदौ
भवाम्भोधेःपोतौ शरदृतुघनस्वच्छवसनौ ।
प्रणम्राशेषेष्टप्रदपदनतौ नीरदकचौ
भजे वारंवारं शशिशशिकलाधारिशिरसौ ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने-अपने करों से सरोजों के गर्वनाशक, भक्तों के वरद, भवसागर के पोत, शरद्घनोपम शुभ्र वस्त्रों वाले, पदनति से प्रणत जनों के अशेष अभीष्टों के दाता, कृष्ण केश शशि और शशिशेखर को बार बार भजता हूँ ॥ १ ॥

कृतक्लेशोत्तप्तप्रणतजनताकाम्यततिदौ
कृतान्तादिप्रोत्थाखिलभयहरौ नम्यचरणौ ।
कृपापीयूषाम्भोनिधिहृदयतारम्यचरितौ
भजे वारंवारं शशिशशिकलाधारिशिरसौ ॥ २ ॥

क्लेश-संतप्त प्रणत जनों के सम्पूर्ण मनोरथों के दाता, कृतान्त आदि से जनित समस्त भयों के नाशक, प्रणम्य पाद, कृपा सिन्धुस्वरूप हृदय के कारण रम्य चरित शशि और शशिशेखर को बार बार भजता हूँ ॥ २ ॥

पदाम्भोजासूक्तप्रचयवरदौ निर्जरनतौ
शिलादात्मोद्भूतप्रभृतिकलितौ संसृतिहरौ ।
मृणालप्रालेयच्छविनिजतनू स्वर्णमुखदौ
भजे वारं वारं शशिशशिकलाधारिशिरसौ ॥ ३ ॥

पादारविन्द के यशो गायकों को उत्तम वर देने वाले, देववन्दित, शिलादात्मज प्रभृति से पूजित, संसार हारी, मृणाल और हिम की छवि को जीतने वाली आभा से विमण्डित शरीर वाले, स्वर्ण प्रमुख पदार्थों के दाता शशि और शशिशेखर को बार बार भजता हूँ ॥ ३ ॥

भराजीप्रालेयक्षितिधरसुताप्राणदयितौ
नयव्रातस्पर्शिस्मरणचरणौ पापदहनौ ।
रमावर्ष्मोद्भूतप्रियसखरिपू धारितमृगौ
भजे वारं वारं शशिशशिकलाधारिशिरसौ ॥ ४ ॥

तारा और गिरिजा के प्राणधन, चरणों के स्मरण मात्र से शास्त्रों के रहस्य का बोध कराने वाले, पापनाशक, लक्ष्मी पुत्र के प्रिय मित्र काम के शत्रु, मृग को धारण करने वाले शशि और शशिशेखर को बार बार भजता हूँ ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीभूतुलसीहरिस्तवः

[नर्कुटकम्]

स्मरमुखशत्रुवश्यमतिदुर्लभपादयुगान्
विजितनिजाक्षधीसुलभनैजकटाक्षततीन् ।
दिविषदधीड्विरोचनतनूभवमुख्यनुतान्
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ १ ॥

कामादिशत्रुओं से वशीकृत चित्त वालों के लिये अत्यन्त दुर्लभ, अपनी इन्द्रियों और बुद्धि को जीत लेने वालों के लिये कृपा कटाक्ष को सुलभ कर देने वाले, देवेन्द्र, सूर्यसुत प्रमुखों से वन्दित लक्ष्मी, वसुमती, तुलसी और यदुनाथ को हृदय में धारण करता हूँ ॥ १ ॥

वसुधिषणादिभूतिजितगुह्यकराड्धिषणी-
विहितपदाम्बुसम्भवसकृत्स्मृतिपूतजनान् ।
अपमरणाभयव्रजजरापमुखार्त्तिहरान्
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ २ ॥

पादाम्बुज के एक बार भी स्मरण करने से पवित्रजन्मा लोगों को कुबेर और बृहस्पति को भी पराभूत करने वाली विभूति और विद्या देने वाले, अपमृत्यु, अनेकों व्याधि, जरा प्रमुख आर्त्तियों के नाशक लक्ष्मी, वसुमती, तुलसी और यदुनाथ को हृदय में धारण करता हूँ ॥ २ ॥

विधिदयितागिरीन्द्रतनयाकलिताङ्घ्रियुगान्
विविधशुगालिपीडितनमत्करुणाजलधीन् ।
करिरथवाजिपत्तिधनमुख्यदपादनतीन्
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ ३ ॥

सरस्वती और पार्वती से पूजित पादपद्मों वाले, अनेकानेक शोकों को आकुलता से नमन करने वालों के लिये कृपासिन्धु, पाद प्रणत होने वालों को हाथी, रथ, घोड़े और पैदल सिपाही एवं धन देने वाले लक्ष्मी, वसुमती, तुलसी और यदुनाथ को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पदयुगभक्तसर्वदुरितक्षपणप्रवणान्
निजनुतिशक्तभिन्नफणिराण्निकरान् ।
कनकसुवर्णशक्रमणिवारिदजिष्णुरुचीन्
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ ४ ॥

पद द्वन्द्व के भक्तों के समस्त पापों को क्षमा कर देने में तत्पर, अपनी वन्दना में शेष आदि को भी अशक्त सिद्ध करने वाले, चमकते सुवर्ण, इन्द्रनीलमणि और नीलनीरद को जीतने वाले शरीरों को धारण करने वाले रमा, वसुमती, तुलसी और यदुनाथ को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ४ ॥

अधिगमिताक्षरात्मबोधनिजनाममनुप्रमुखान्
शुकमुखमौनिपूगकलिताङ्घ्रिपरागलवान् ।
विधृतगदारथाङ्गदरमुख्यचतुःस्वकरान्
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ ५ ॥

अपने नाम और मन्त्र के प्रभाव से अक्षर आत्मतत्त्व का बोध करा देने वाले, शुक प्रमुख मुनीन्द्रों द्वारा चरणों के वन्दित धूलिकणों वाले, चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण करने वाले रमा, वसुमती, तुलसी और यदुनाथ को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ५ ॥

परमपदार्थबोधमुखपादपयोजयुगी-
नतजनकाङ्क्षितार्थततिदानपरस्वमतीन् ।
स्फुटितपयःप्रजाततुलसीप्रमुखार्च्यपदान्
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ ६ ॥

युगल पादारविन्द में प्रणतजनों को परमार्थ का बोध तथा अभिलषित पदार्थों को देने में तत्पर, विकसित कमल, तुलसी आदि प्रधान पुष्पादिकों से समर्चनीय चरणों वाले रमा, वसुमती, तुलसी और यदुपति को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ६ ॥

निजवशवर्त्तिभूमिभूवरादिवसज्जनता-
निखिलधराधिपतिकृतपदाम्बुजभक्तजनान् ।
ज्वरमुखसर्वरोगहरणप्रवणस्वहृदो
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पादाब्ज के भक्त जनों को—जो कि मनो-निग्रह पूर्वक तपोवन में रहते हैं उन्हें सम्राट् बनाने वाले, ज्वर आदि समग्र रोगों को नष्ट करने में निरतचित्त रमा, वसुमती, तुलसी और यदुपति को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ७ ॥

दितिदनुजाधमासुहरविक्रमलेशभुजान्
वरदभयघ्नचिह्नविलसत्करनीरभवान्
विकृतिविहीनमानससमर्चितपादयुगान्
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ ८ ॥

भुज-बल के लेश मात्र से अत्यन्त नीच दैत्यों और दानवों के प्राण नाशक, वर और अभय आदि चिह्नों से सुशोभमान करकंजों वाले, निर्विकार चित्त भक्तों से पूजित पादपद्म रमा, वसुमती तुलसी और यदुपति को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ८ ॥

वचनकदम्बमातृदयिताद्रितनुप्रभवा-
रमणपुलोमजापतिमुखार्चितनैजपदान् ।
शमदमुख्यसाधनचयस्पृशिसक्तधियौ
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ ९ ॥

वाणीवल्लभ ब्रह्मा, गिरीन्द्र कुमारी के प्राणधन शंकर, शची के पति इन्द्र प्रभृति से समर्चित चरणों वाले, शम दमादि साधनों के समर्पण में आसक्त चित्त रमा, वसुमती, तुलसी और यदुपति को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ ९ ॥

चरणनमस्कृतिप्रवणधीसकलश्रमहान्
यममुखसर्वभीतिनिकरार्दयिताङ्घ्रिनतान् ।
चिरकृतगण्यभिन्नवृजिनालिसहस्वहृदौ
हृदि निदधे रमावसुमतीतुलसीयदुपान् ॥ १० ॥

चरणों में प्रणामार्पण करने की मनीषा वाले लोगों के सम्पूर्ण आयासों के नाशक, चरणों में आनत होने वालों के यमादि प्रधान भयों का नाश करने वाले, चिरकाल से कृत सर्वविध पातकपुंजों को हृदय से क्षमा कर देने वाले रमा, वसुमती, तुलसी और यदुपति को मैं हृदय में धारण करता हूँ ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीशारदाम्बास्तवः

[वसन्ततिलका]

सद्यो जयन्ति विभवैर्नवनिध्यधीशं
पीयूषपायिनिकुरम्बगुरुं च वाण्या ।
यत्पादपद्मविनता अपि दीनरङ्काः
श्रीशारदाम्ब जगदम्ब मदम्ब पाहि ॥ १ ॥

जिनके पादपद्म में प्रणत दीनातिदीन जन भी अपने वैभव से नवों निधियों के अधीश्वर को सद्यः जीत लेते हैं एवं अपनी वाग्विभूति से देववृन्द के गुरु वाचस्पति को तुरत परास्त कर देते हैं वे जगज्जननी मेरी माँ लक्ष्मी एवं सरस्वती, तुम मेरी रक्षा करो ॥ १ ॥

स्वीयाभिधानजपनैजबहुप्रकार-
मन्त्राक्षरादिसुलभीकृततत्त्वबोधे ।
नैजाङ्गरुङ्निहतपारदसर्वदर्पे
श्रीशारदाम्ब जगदम्ब मदम्ब पाहि ॥ २ ॥

अपने नाम जप में तत्पर एवं अनेकानेक निज मन्त्रों के अक्षरों के जपने वालों को तत्त्व-ज्ञान सुलभ कर देने वाली, अपने उज्ज्वल बालों से पारद के सम्पूर्ण गर्व को नष्ट कर देनेवाली माँ जगदम्ब श्री एवं शारदे, मेरी रक्षा करो ॥ २ ॥

पादाम्बुजातयुगजातपरागलेश-
स्पर्शस्मृतिप्रमुखसाध्यसमीहितार्थे ।
तत्त्वप्रकाशनपटुस्वकटाक्षलेशे-
श्रीशारदाम्ब जगदम्ब मदम्ब पाहि ॥ ३ ॥

अपने युगल चरणारविन्दों के धूलि-कण के स्पर्श से आत्मबोध-प्रमुख समीहित साध्यों को पूर्णतया सिद्ध करने वाली, एवं अपने कटाक्ष के कोर से ब्रह्म तत्त्व को सम्यक् प्रकाशित करने वाली माँ जगदम्ब श्री एवं शारदे, मेरी रक्षा करो ॥ ३ ॥

धर्मार्थकामसुखसर्वपुमर्थलब्ध्यै
नेदिष्ठवर्त्मचरणस्मृतिलेशतोऽर्च्ये ।
दूर्वाङ्कुरामृतजबिल्वकचम्पकाद्यैः
श्रीशारदाम्ब जगदम्ब मदम्ब पाहि ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वाधिक सरल और सुगम मार्ग—अपने चरणों की स्मृति के लेश मात्र से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रमुख समग्र पुरुषार्थों की प्राप्ति करा देने वाली, दूर्वांकुर, कमल, विल्व, चम्पक आदिकों से पूज्य माँ जगदम्ब लक्ष्मी तथा शारदे, मेरी रक्षा करो ॥ ४ ॥

उल्लङ्घ्यभिन्ननिजशासनपालनस्थ-
क्षोणीभुवर्मुखचतुर्दशलोकपूगे ।
क्षोणीप्रमुख्यभुवनेश्वरताप्रदार्च्ये
श्रीशारदाम्ब जगदम्ब मदम्ब पाहि ॥ ५ ॥

भू-लोक प्रभृति चतुर्दश भुवनों के जो लोग लौकिक बन्धनों को तोड़कर दैवी शासन के पालन में स्थित हैं उनका भूपतित्व, और भुवनेश्वरत्व के पीठ पर प्रतिष्ठित हो जाना जिनकी अर्चना से सम्भव है वे माँ जगदम्ब लक्ष्मी और शारदे, मेरी रक्षा करो ॥ ५ ॥

अन्तर्बहिर्विकृतिलेशविहीनचेतो-
वर्ष्माढ्ययोगिततिचिन्तितपादपद्मे ।
लक्ष्मीनिवासमुखवन्द्यपदाब्जजाते
श्रीशारदाम्ब जगदम्ब मदम्ब पाहि ॥ ६ ॥

जिनका मन और तन आन्तरिक एवं बाह्य विकारों के लेश से भी रहित है ऐसे योगिजनों से जिनके पादारविन्दों का ध्यान किया जाता है एवं जिनके पादपद्मों की वन्दना श्रीनिवास प्रमुख देव किया करते हैं वे माँ जगदम्वा लक्ष्मी और शारदा, तुम दोनों मेरी रक्षा करो ॥ ६ ॥

आयासगन्धरहितं सुलभैरुपायै-
श्चित्तप्रशान्तिबहिरिन्द्रियनिग्रहादीन् ।
यस्याः स्मृतिः प्रणतसात्कुरुते जवेन
श्रीशारदाम्ब जगदम्ब मदम्ब पाहि ॥ ७ ॥

जिनकी स्मृति सुलभ साधनों से ही भक्तों को आयास के लेश से भी रहित कर देती है एवं चित्त में प्रशान्ति तथा बाह्येन्द्रियों का निग्रह वेग से प्रणतजनों के आत्मसात् कर देती है वे माँ जगदम्बा श्री और शारदा, तुम दोनों मेरी रक्षा करो ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संस्पृश्य याः शममुखावयवाष्टकाढ्य-
योगं यमादिभयहीनमरं प्रदत्ते ।
भक्ताखिलाघततिसोढृनिजान्तरङ्गे
श्रीशारदाम्ब जगदम्ब मदम्ब पाहि ॥ ८ ॥

जो शम प्रमुख अंगो वाले अष्टांग योग का वरदान देकर मृत्यु आदि के भय से विमुक्त कर देती हैं, एवं अपने मन में भक्तों के समस्त पापपुंजों को क्षमा कर देने वाली माँ जगदम्बा श्री और शारदा तुम दोनों मेरी रक्षा करो ॥ ८ ॥

श्रीशारदाम्बा (वाणी) द्वयस्तोत्रम्

[स्रग्धरा]

श्रीमत्स्वीयप्रकाशाभिधयमिपमुखाराधितस्वाङ्घ्रिपद्मे
वीणापीयूषकुम्भेक्षितवरदभयव्रातविध्वंसमुद्रा ।
मुख्याढ्यस्वीयहस्तामृतभवविशदीभूतवृत्तिस्वचित्ते
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं(वन्दे श्रीशारदाम्बां)
हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ १ ॥

श्रीमान् आत्मप्रकाशाख्य योगीश्वरादि से जिनके चरण कमलों की आराधना की गई है, वीणा, अमृत-कलश, वरद एवं अभय मुद्रा से सुशोभित चार करारविन्दों से जिनके हृदय के वैशद्य का भान होता है ऐसी हरिहरपुर के श्रीमठ में प्रतिष्ठित चरणों वाली लक्ष्मी और सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ १ ॥

श्रीपद्मोद्भूतपद्मारमणगिरिसुताकान्तमुख्यामराल्या-
मल्लीजातीपयोजप्रमुखसुमवरैः सन्ततं पूजिताङ्घ्री ।
पौलोमीवज्रपाणिप्रमुखसुरततिस्तूयमानाङ्घ्रिपद्मे
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुन्दर कमल से प्रादुर्भूत ब्रह्मा, लक्ष्मीरमण, शंकर प्रभृति प्रमुख देववृन्दों द्वारा मल्लिका, चमेली, कमल आदि पुष्पों से जिनके चरणकमलों की सतत पूजा की जाती रही हो एवं शची-देवराज प्रमुख सुर समूहों से जिनके पादारविन्द की स्तुति की जा रही हो उन हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित पाद-पीठ वाली लक्ष्मी एवं सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ २ ॥

रागद्वेषप्रमुख्यान्तररिपुकलुषीभूतधीदुर्लभाङ्घ्री
वैराग्याढ्यस्वचेतोवनजनिसुलभस्वीयपादारविन्दे ।
श्रीसच्चिन्मोदरूपाक्षरपरमपदब्रह्मशक्तिस्वरूपे
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ ३ ॥

राग-द्वेषादि आन्तरिक विकारों से मलिनमति जनों के लिये दुर्लभ चरणों वाली, वैराग्य से समृद्ध हृदयारविन्द में अपने चरण-सरोज को सुलभ कर देने वाली एवं श्रीमत् सच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वर की शक्ति-स्वरूपा हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित पादों वाली लक्ष्मी तथा सरस्वती को मैं भावना करता हूँ ॥ ३ ॥

स्वश्रीवाणीविपूतद्रविणनिधिपतिस्वर्गिवासिव्रजार्या-
भूतस्वीयाङ्घ्रितोयेरुहयुगलरजोलेशसंस्पर्शलेशे ।
पादाम्भोजप्रणामप्रवणनिरवधिप्रेमकारुण्यसिन्धू
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ ४ ॥

लक्ष्मी और सरस्वती द्वारा विशेष रूप से पवित्रीकृत धनपति कुबेर आदि सुर-समूहों में श्रेष्ठ देवताओं को अपने युगल पादपद्मों के धूलिकण के संस्पर्श से गौरवशाली बना देने वाली, अपने चरणारविन्दों के प्रणाम करने में परायण भक्तों के लिये असीम प्रेम और करुणा के सागर रूप में रहने वाली हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित पादों वाली लक्ष्मी तथा सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ ४ ॥

नानारीत्याधराजीज्वरकुमृतिगदामुख्यहृद्भक्तलेशे
ब्रह्मण्याजाहरीशप्रियनिजहृदयण्याजनीरप्रजाते ।
(कीलालजाते)
हस्त्यास्याग्निप्रजातप्रजनकसहजे हस्तिमुख्यप्रदात्र्यौ
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नाना प्रकार से पापपुञ्ज, ज्वर, अपमृत्यु आदि रोगों को दूर करने में गर्व का उपचार करने वाली, दिनपति के सम्पर्क से जैसे नीरजजात उत्फुल्ल हो जाते हैं वैसे ही ब्रह्म-चिन्तन से जिनके हृत्सरोज विकसित हो जाते हैं, गजानन एवं षडानन के जनक भगवान् शंकर के सहजात, हस्ति-प्रभृति दुर्लभ पदार्थों की दात्री हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित पादों वाली लक्ष्मी एवं सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ ५ ॥

अङ्गच्छायालवन्यक्कृतरविकिरणप्रोज्ज्वलद्धर्मदर्पे (कान्ती)
पादानम्रव्रजांहोव्रजविपिनदवाप्पित्तपादाम्बुजाते ।
भोगीड्भोगस्वतल्पप्रियनिजहृदयापार्वतीभासिपार्श्वे
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ ६ ॥

अपने अंगों की प्रभा के लेश मात्र से सूर्य की आभा की चमकीली कान्ति के दर्प को नीचा दिखाने वाली, अपने चरणों में आनतजनों के पापपुञ्ज रूपी वनाग्नि को बुझा देने वाले चरणाम्बुजों वाली, शेषशायी भगवान् की भक्ति से भावित पार्वती की विभा जिनके परिपार्श्व में विराजमान है ऐसी हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित पादों वाली लक्ष्मी एवं सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ ६ ॥

तत्तत्(नाना)काम्येप्सया स्वानतजनहृदयाकाङ्क्षिताशेषदात्र्यौ
भक्तालीहृत्पयोभूविहितवसतितासूचिपद्मासनस्थे ।
आम्नायाम्नायशीर्षप्रकथितपुरुषार्थव्रजस्पर्शसक्ते
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ ७ ॥

अति विलक्षण स्पृहणीय पदार्थों को प्राप्त करने की कामना से अपने चरणों में प्रणिपात करने वाले भक्तों की समस्त हार्दिक अभिलाषाओं को देने वाली, भक्तवृन्दों के हृदयारविन्द में निवास करके पद्मासनस्थता को सूचित करने वाली, वेद और वेदान्त में प्रतिपादित पुरुषार्थों के समर्पण में आसक्त हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित पादों वाली लक्ष्मी तथा सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ ७ ॥

आत्मज्ञानप्रकाशस्पृशिविकसिततच्चित्तकीलालजाते
सर्वक्ष्मापालकत्वप्रभृतिबहुविधाभीष्टलक्ष्मीप्रदार्चे ।
धात्रीस्वर्गप्रमुख्याखिलभुवनवसल्लोकपूगादृताङ्गे
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

योगियों के हृदय-कमल को आत्मज्ञान के प्रकाश का संस्पर्श करके विकसित करने वाली, अपनी अर्चना से सार्वभौम साम्राज्य आदि अनेक प्रकार की अभीष्ट-समृद्धि देने वाली, भूमि, स्वर्ग प्रमुख समस्त भुवनों के निवासियों के समुदाय से जिसकी आज्ञा का समादर होता आ रहा है, उस हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित पादों वाली लक्ष्मी तथा सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ ८ ॥

कुष्ठापस्मारमुख्यामयततिदलनप्रौढपादाब्जचिन्ते
मोहाख्यक्रूरदैत्याधमशमनचणापाङ्गपातीयलेशे ।
कामक्रोधादिशून्यस्वहृदयसरसीसम्भवध्यानपादे
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ ९ ॥

जिनके पादारविन्द का चिन्तन कुष्ठ, अपस्मार प्रमुख समस्त व्याधियों के विनाश में पूर्ण समर्थ है, जिनके अपांग वीक्षण का लेशमात्र मोह नामक अतिक्रूर अधमशत्रु का शमन करने में सम्यक् ख्यात है, (भक्तजन) काम क्रोधादि विकारों से रहित अपने हृत्पुण्डरीक में जिनके चरणों का ध्यान करते हैं उस हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित चरणों वाली लक्ष्मी तथा सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ ९ ॥

चेतःशान्तीन्द्रियालीदमप्रमुखसुगुणव्रातदानव्रताढ्ये
संसाराम्भोधिमग्नानतजननिखिलश्रान्तिविच्छेदकार्चे ।
नम्राणां मृत्युभीतिप्रमुखहृतिपटुज्ञानयोगस्पृगङ्घ्री
श्रीवाण्यौ भावयेऽहं हरिहरपुरगश्रीमठाधिष्ठिताङ्घ्री ॥ १० ॥

चित्त की शान्ति, समस्त इन्द्रियों का दमन प्रमुख समस्त सद्गुणों के समुदाय का दान करने के व्रत से आढ्य, जिनकी अर्चना संसार-सागर में निमग्न प्रणत-जनों के सम्पूर्ण श्रम का विच्छेद करती है, जिनके चरण नम्रजनों के मरण-भय प्रमुख दुःखों को दूर करने वाले समर्थज्ञान और योग का वितरण करते रहते हैं उस हरिहरपुर के श्रीमठ में अधिष्ठित चरणों वाली लक्ष्मी तथा सरस्वती की मैं भावना करता हूँ ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीसत्राजित्तनुजास्तुतिः

[प्रहर्षिणी]

भक्तालीदिविजलतां भवाब्धिनौकां
भोगीन्द्रच्छविचिकुरां पदास्तपद्माम् ।
पादाब्जाश्रितवरदां रमेशजायां
सत्राजित्तनुजनुषं विभावयेऽहम् ॥ १ ॥

भक्तजन के कल्पतरु, भव-सागर की नौका, सर्पराज की छवि वाले बालों वाली, पद्म-पराजयकारी पदों वाली, चरणाम्बुज के आश्रितजनों को वरदायिनी, कृष्णप्रिया सत्राजित्तनया सत्यभामा का मैं मन में ध्यान करता हूँ ॥ १ ॥

काम्यालीप्रदनमनां सुरालिनम्यां
रम्याङ्गीं पटजितशारदाम्बुवाहाम् ।
कृत्ताङ्घ्रिप्रणतभवां कृपाम्बुराशिं
सत्राजित्तनुजनुषं समाश्रयेऽम्बाम् ॥ २ ॥

नमन मात्र से काम्य-पदार्थों की दात्री, देववृन्द द्वारा प्रणम्य, रम्य अंगों वाली, शरदभ्र से भी उज्ज्वल वस्त्रों वाली, प्रणतजनों के सांसारिक क्लेश का चरणों से नाश करने वाली, कृपा-सिन्धु सत्यभामा की मैं शरण लेता हूँ ॥ २ ॥

मेनादिस्तुतचरणां मुनीन्द्रपूज्यां
हेमा(भर्मा)भां नतवरदानबद्धदीक्षाम् ।
संसाराम्बुधिघटजां(तटदां)घनाभवेणीं हृदा प्रपद्ये ।
सत्राजित्तनुजनुषं समाश्रयेऽहम् ॥ ३ ॥

मेना आदि से नमस्कृत, मुनीन्द्रों से पूज्य, स्वर्णाभ, प्रणतजनों को वर देने की दीक्षा में दीक्षित, संसार-सागर के लिए अगस्त्य रूपा, (संसार सागर के तट पर पहुंचा देने वाली) नील नीरदाभ वेणी वाली सत्यभामा का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ॥ ३ ॥

भक्ताघप्रशमकरीं गरुत्मदीड्यां
तुङ्गाद्रिस्तनभरनम्रसूक्ष्ममध्याम् ।
वीणाधृन्मुनिमुखगीतसुन्दरत्वां
सत्राजित्तनुजनुषं विभावयेऽहम् ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तों के पाप-पुंज का प्रशमन करने वाली, गरुड से वन्दनीय, उच्च पर्वत सदृश स्तनों के भार से झुकी हुई कृश-कटि वाली, वीणा-पाणि नारद प्रभृति प्रमुख मुनीन्द्रों से प्रशंसित सौन्दर्य वाली सत्यभामा की भावना मैं मन में करता हूँ ॥ ४॥

एणाङ्कद्युतिवदनां गुणाढ्यचित्तां
कष्टालीहरणचणामभीष्टदात्रीम् ।
शोणाब्जप्रतिमपदां पयोजनेत्रीं
सत्राजित्तनुजनुषं भजाम्यजस्रम् ॥ ५ ॥

चन्द्रप्रभ मुख वाली, गुणों से समृद्ध चित्त वाली, कष्ट-समूह के नाशन में ख्यात, अभीष्ट दात्री, शोणारविन्द तुल्य पादों वाली, कमलनयनी सत्यभामा का मैं भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

श्रीसत्यभामास्तोत्रम्

[सिंहविक्रीडितम्]

विविधविषयरागिहृद्दुर्लभस्वीयपादाम्बुजां
विगतनिखिलभोगकांक्षाप्यपादामृतप्रोद्भवाम् ।
मघवदहनपाशिसूर्यादिदेवव्रजैर्भाविताां
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादर(सन्तत)म् ॥ १ ॥

अनेकानेक विषयों में अनुरक्त चित्त वालों के लिये दुर्लभ पादारविन्द वाली, विषय वितृष्ण जनों को सुलभ चरणसरोज वाली, इन्द्र, अग्नि, वरुण, सूर्यादिदेवों से पर्युपासित सत्यभामा को हृत्पुण्डरीक में सतत अनुसन्धान करता हूँ ॥ १ ॥

द्रविणमतिविवर्जितोऽपि द्रुतं यत्पदाम्भोजनुः
स्मरणलववशात् कुबेरामराचार्यजिष्णुर्भवेत् ।
प्रणतजनजरापमृत्युप्रमुख्यार्तिजालापहां
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निर्धन और ज्ञान-शून्यजन भी जिसके पादाब्ज के लेशमात्र स्मरण से भी कुबेर और वाचस्पति के विजेता हो जाते हैं एवं जो प्रणत जनों की जरा, अपमृत्यु प्रमुख विपत्तियों को दूर करती रहती हैं उन सत्यभामा को हृत्सरोज में मैं सादर धारण करता हूँ ॥ २ ॥

जननमरणवार्धिमग्नानमत्कारुणीवारिधिम्(दीनकारुण्यधिं)
अचलतनुभवाग्रसञ्जातनैजाङ्गसंलिङ्गिताम्।
द्विरदमुखरमाप्रदां कुम्भिकुम्भापहासिस्तनीं
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ ३ ॥

जन्म-मरण के सागर में निमग्न जन के आनत होने पर करुणा-सिन्धु, गिरिजा के अग्रज के आत्मज (कृष्ण) से समालिंगित, हाथी आदि सम्पत्ति देने वाली, मातंग के कुम्भ-स्थल के उपहास करने वाले स्तनों वाली, सत्यभामा को मैं हृदयारविन्द में सादर धारण करता हूँ ॥ ३ ॥

चरणविनतसर्वपापाटवीदावहव्याशिनं
भुजगजलदषट्पदन्यक्करिष्णूत्तमाङ्गोद्भवाम्।
स्वतनुरुचिविधूतकार्त्तस्वराशेषदर्पव्रजां
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ ४ ॥

चरणों में प्रणाम करने वालों की सर्व पापाटवी को दग्ध करने वाली दावानल-स्वरूपा, भुजग, जलद एवं भ्रमर को जीतने वाली वेणी से अलंकृत, अपने शरीर की कान्ति से तप्त-कार्त्तस्वर की प्रभा को अभिभूत करने वाली सत्यभामा का मैं हृदय-सरोज में सादर ध्यान करता हूँ ॥ ४ ॥

द्रुहिणतनुसमुद्भवव्यासजातोद्धवादिस्तुतां
स्वरवलवपरास्तकेक्यन्यपुष्टाच्छवर्हादिमा(भिमानावली)म्।
सपदि विहितनम्रलोकेष्टसर्वार्थसंस्पर्शनां
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ ५ ॥

ब्रह्मा के मानसपुत्र नारद, शुक, उद्धव आदि से वन्दित, अपनी मधुर ध्वनि के लेशमात्र से मयूरी, कोकिला आदि के अभिमान को नष्ट करने वाली, नम्रजनों को सम्पूर्ण अभिमत पदार्थों का अविलम्ब प्रबन्ध करने वाली सत्यभामा को मैं आदर सहित मानस-सरोज में धारण करता हूँ ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणतहृदयपङ्कभूपङ्कमारान्निवार्याथ या
विमलपरमतत्त्वबोधार्कतः फुल्लयत्युज्ज्वलम् ।
निगमगदितपुरुषार्थव्रजश्राणनैकप्रियां
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ ६ ॥

जो प्रणतजनों के हृदय-पंकज को पंक निवृत्ति पूर्वक निर्मल तत्त्व-बोधार्क से अत्यन्त प्रफुल्लित कर देती है, वेदोक्त समस्त पुरुषार्थों के समर्पण में प्रसन्नता का अनुभव करने वाली सत्यभामा को हृदयारविन्द में आदर-सहित धारण करता हूँ ॥ ६ ॥

धरणिपरिवृढत्वमुख्याखिलश्रीप्रदस्वार्चनां
निखिलभुवनवर्तिभिः पालितस्वीयसर्वाज्ञिकाम् ।
ज्वरितमुखसमस्तरोगावलीशान्तिकृत्स्वस्मृतिं
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ ७ ॥

अपनी अर्चना से भूपतित्व आदि प्रधान पदानुरूप धन देनेवाली, अपनी सभी आज्ञाओं का अखिल ब्रह्माण्डवासियों से पालन कराने वाली, अपनी स्मृति से ज्वर प्रमुख समस्त रोग-समूह की नाशिका सत्यभामा को अपने हृदय-सरोज में सादर धारण करता हूँ ॥ ७ ॥

अभयवरदमुद्रिकाभासमानस्वहस्ताम्बुजां
प्रणतजनमनोगताशेषदुर्बुद्धिसंहारिणीम् ।
विकृतिरहितमानसध्यातपादाम्बुसञ्जातधूलीलवां
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ ८ ॥

अभय, वरद आदि मुद्राओं से विभूपित कर-कमलों वाली, प्रणत जनों की निगूढ़ समग्र दुर्बुद्धियों का नाश करने वाली, निर्विकार चित्त वाले भक्तों से वन्दित पाद-पङ्कज के धूलि-कण वाली सत्यभामा को हृदयारविन्द में सादर धारण करता हूँ ॥ ८ ॥

द्रुहिणहृदयवल्लभापद्मभूरुक्मिणीयादवेट्-
धरणिधरसुतागिरीण्मुख्यसंश्लाघ्यचारित्रिकाम् ।
प्रशमदमसमस्तकष्टक्षमामुख्यसाद्गुण्यदां
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सरस्वती और ब्रह्मा, रुक्मिणी और श्रीकृष्ण, पार्वती और शंकर प्रमुख दम्पतियों से प्रशंसित चरित्रों वाली, शम, दम, तितिक्षा प्रमुख सद्गुणों की दात्री, सत्यभामा को हृदय-सरोज में सादर धारण करता हूँ ॥ ९ ॥

अमितदुरितसङ्घसंमर्षकस्वीयचित्ताम्बुजां
चरणनलिनसक्तधीसंसृतिश्रान्तहृत्पूजनाम् ।
शमनमुखभयापहां योगसिद्धिप्रमुख्यप्रदां
हृदयवनसमुद्भवे सत्यभामां दधे सादरम् ॥ १० ॥

अमित पाप-पुंज को क्षमा करने वाले हृदय-कमल वाली, पूजन करने से चरणारविन्द में आसक्त चित्त भक्तों के सांसारिक क्लेशों का हरण करने वाली, मृत्यु प्रमुख भय को दूर करने वाली, योगसिद्धि प्रमुख विषयों की दात्री सत्यभामा को हृदयारविन्द में सादर धारण करता हूँ ॥ १० ॥

श्रीसरसिजजनुःस्तवः

[हारिणी]

कारुण्याब्धिं त्रिभुवनसृजं सुरव्रजपूजितं
विद्याधीशं प्रणतवरदं रथेभमुखप्रदम् ।
वाणीकान्तं विरतसुलभं मुदब्धिनिशाकरं
वन्दे श्रीमत्सरसिजजनिस्वकीयकलेवरम् ॥ १ ॥

करुणा के सागर, त्रिभुवन के स्रष्टा, सुर-समूह से पूजित, विद्याओं के अधीश्वर, प्रणतजनों को वर देने वाले, रथ, हाथी आदि प्रमुख वस्तुओं के दाता, वाणी-वल्लभ, विरक्तों को सुलभ और आनन्द-सागर के चन्द्रमा, सुशोभमान कमल से अपने कलेवर को प्रकट करने वाले ब्रह्माजी को मैं नमन करता हूँ ॥ १ ॥

इष्टालीदं सुरततिनुतं प्रसादितभार्गवी-
प्राणप्रेष्ठं हरिपदरतं नमत्सकलर्द्धिदम् ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वाणीश्लिष्टं विभवदपदं ललाटजशङ्करं
नौमि श्रीमत्सरसिजजनुःस्वकीयकलेवरम् ॥ २ ॥

समस्त अभीष्ट वस्तुओं के दाता, देवमण्डल से नुत, लक्ष्मी-पति नारायण को प्रसन्न करने वाले, विष्णु के पद-पूजन में रत, भक्तों को समस्त समृद्धियों के दाता सरस्वती से संश्लिष्ट, वैभवदाता पद पद्म वाले, ललाट से शङ्कर को उत्पन्न करने वाले, सुशोभमान कमल से अपने कलेवर का आविर्भाव करने वाले, श्री ब्रह्माजी को मैं वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

स्वर्गिज्येष्ठः सदयहृदयो वितीर्णशुभव्रजः
शास्त्राली दः सुललिततनुस्तनूजजनुःशशी ।
ॐसंसक्तः कनकजठरः स्वफालजफालदृग्
भूयाद् भूत्यै सरसिजजनुःस्वकीयतनुः सदा ॥ ३ ॥

देवताओं में श्रेष्ठ, दयार्द्र हृदय वाले, समग्र शुभों के वितरक, सभी शास्त्रों के प्रबोधक, सुन्दर शरीर वाले, अपने पुत्र अत्रि से चन्द्रमा को उत्पन्न कराने वाले, प्रणव में आसक्त, हिरण्यगर्भ, अपने ललाट से फालाक्ष (त्रिलोचन) को जन्म देने वाले कमल-जनित स्वकीय शरीर धारण करने वाले श्री ब्रह्माजी सदा हमारी विभूति के कारण बनें ॥ ३ ॥

•

श्रीसरस्वतीस्तोत्रम्

[रुचिरा]

मनोजनुस्तदनुजनुःपरम्परा-
पराजिताशयधिषणातिदुर्लभाम् ।
विरागिताशमदमुख्यसद्गुण-
व्रजाञ्चिताशयसुलभां भजे गिरम् ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

काम क्रोधादि विकारों से ग्रस्त मति लोगों को अत्यन्त दुर्लभ, वैराग्य, शम दम आदि सद्गुणगणों से अलंकृत हृदयवालों को सुलभ सरस्वती को मैं भजता हूँ ॥ १ ॥

पुरन्दरत्रिदशमुखार्कभूषणा-
मरावलीवलिमुखदैत्यपूजिताम् ।
नमज्जराविविधरुजाकुपञ्चता-
मुखाखिलापद्धतिचणां भजे गिरम् ॥ २ ॥

पुरन्दर एवं देव प्रमुख अर्क, पूषा, आदि अमरावली से तथा बलि प्रमुख दैत्यों से पूजित, भक्तों की जरा, विविध व्याधि, अपमृत्यु प्रमुख आपदाओं के नाश में प्रसिद्ध वागीश्वरी को मैं भजता हूँ ॥ २ ॥

स्वकीयवाग्धनविभवप्रकर्षतः
पराजितामरगुरुगुह्यकेश्वराः ।
अकिञ्चनातिजडजना अपि द्रुतं
भवन्ति यत्पदनमनाद् भजे गिरम् ॥ ३ ॥

जिसके चरणों में नमन करने मात्र से अकिंचन कुबेर के वैभव एवं अतिमूढ जन वाचस्पति की वाग्विभूति को अतिशीघ्र पराजित कर देते हैं उस वाग्देवता को मैं भजता हूँ ॥ ३ ॥

तुषारभूधरधरणीधवात्मजा-
मनो[ऽ]मृतप्रभवदिनेट्सहोदरीम् ।
अगाधसंसृतिजलराशिगानसत्-
कृपासुधाजलधिहृदं भजे गिरम् ॥ ४ ॥

गिरिराज हिमालय की कन्या के हृदयारविन्द को विकसित करने वाले सूर्यरूप शिव की सहोदरी एवं अगाध संसार-सागर में निमग्न जनों से प्रणत कृपामृतसिन्धु हृदय वाली शारदा को मैं भजता हूँ ॥ ४ ॥

रदावलेश्वरतुरगप्रमुख्यस-
म्पदावलीवितरणसक्तमानसाम् ।
पदामृतप्रभवयुगीप्रणामकृत्-
कृताखिलाघनतिहरां भजे गिरम् ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गजराज, तुरग प्रमुख सम्पदाओं के देने में आसक्त चित्त, युगल चरणाम्भोज में प्रणाम करने वालों के किये गये समस्त पापों का नाश करने वाली सरस्वती को मैं भजता हूँ ॥ ५ ॥

सरीसृपक्षितिपतितल्पवल्लभा-
निजाग्रसम्भवरमणीमुखेडिताम् ।
कलेवरस्फुरदसितप्रभावित-
जिताहरीश्वरनिकरां भजे गिरम् ॥ ६ ॥

लक्ष्मी, गौरी प्रमुख देवियों से वन्दित एवं अपने शरीर की दिव्य दीप्ति से अनन्त सूर्यों की प्रभा को पराभूत करने वाली वाणी को मैं भजता हूँ ॥ ६ ॥

निजाक्षराकृतिसुखसच्चिदात्मतो-
पलब्धये शुकमुखमौनिसेविताम् ।
शिखावलान्यभृतशुकप्रमुख्यधि-
क्कृतिप्रभूस्वरुचिरं[ा]भजे गिरम् ॥ ७ ॥

अपने अक्षर रूप की सत् चित् और सुखात्मकता को प्राप्त करने के लिये शुक आदि मुनियों से सेवित एवं मयूर, कोकिल शुक प्रमुख मधुरभाषी प्राणियों की रुचिर वाणी को अपनी वाणी से धिक्कारने वाली वाणी को मैं भजता हूँ ॥ ७ ॥

सकामतायितधिषणास्वपादुका-
प्रणम्रहृत्स्थितसकलेप्सितप्रदाम् ।
चकासतीं निगमवचःसमीरिता-
खिलार्थसत्वरदतया भजे गिरम् ॥ ८ ॥

अपनी चरणपादुका में विनम्र हृदय सकाम भक्तों के सम्पूर्ण अभिलषित पदार्थों को देने वाली, वेदोक्त समग्र पदार्थों को शीघ्रता से देने वाली भ्राजमान भारती को मैं भजता हूँ ॥ ८ ॥

सरोभवस्थलकमलाभिनूतन-
कुटोद्भवप्रमुखसुमव्रजार्चिताम् ।
पदाम्बुजप्रणतहृदिप्रकाशिता-
खिलात्मतासुखधिषणां भजे गिरम् ॥ ९ ॥

सरोज, स्थल कमल एवं कुटज प्रमुख पुष्पों से समर्चित, पादाम्भोज में प्रणत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्तों के हृदय में सर्वभूतात्मता प्रमुख ज्ञान को प्रकाशित करने वाली वाणी को मैं भजता हूँ ॥ ९ ॥

महीभुवस्त्रिदिवमहोजनस्तपो-
मुखाखिलत्रिभुवनपालनप्रियाम् ।
महीमुखेप्सितभुवनक्षितीशता-
मुखप्रदस्वपदनतिं भजे गिरम् ॥ १० ॥

भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, प्रभृति प्रमुख लोकों के पालन में प्रेम करने वाली, अपने चरणों से प्रणतिपात करने से भूमि तथा भूमिपतित्वादि अभीप्सित पदार्थों की दात्री सरस्वती को मैं भजता हूँ ॥ १० ॥

स्वदोर्युगीविततिमहापराक्रम-
प्रवेपितत्रिदशनिकायशात्रवाम् ।
स्वपादवार्भवनतिसक्तचेतसां
ज्वरादिमामयशमनीं भजे गिरम् ॥ ११ ॥

अपने बाहु युगल के विस्तृत महा-पराक्रम से देव-वृन्द के शत्रुओं को कँपाने वाली एवं अपने पादारविन्द के प्रणाम में आसक्त चित्त भक्तों के ज्वर आदि रोगों को नष्ट करने वाली वाणी को मैं भजता हूँ ॥ ११ ॥

कराम्बुजव्रजविलसद्भयावली-
हरेष्टदाङ्कुशसुमकार्मुकादिमाम् ।
मनोऽञ्जनुर्विकृतिचयातिदूरता-
लसद्यमिव्रजकलितां भजे गिरम् ॥ १२ ॥

करारविन्द में भय आदि के नाशक एवं इष्टप्रद मनोहर अंकुश, कुसुम, धनुष आदि को धारण करने वाली एवं कामादि विकारों से दूर रहकर विराजमान योगीन्द्रों से अभिवन्दित भारती को मैं भजता हूँ ॥ १२ ॥

रमारमारमणधराध्रजाधरेट्-
पुलोमजाहरिमुखनिर्जरव्रजैः ।
पयोजनुःस्थलवनजातमल्लिका-
मुखार्चितस्वपदयुगीं भजे गिरम् ॥ १३ ॥

लक्ष्मी-नारायण, गौरी-शंकर एवं शची इन्द्र प्रमुख देववृन्द द्वारा कमल, स्थल-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कमल, मल्लिका प्रमुख पुष्पों से समर्चित चरण युगलों वाली भारती को मैं भजता हूँ ॥ १३ ॥

मुमुक्षुतायुतजनताभिकाम्यता-
लसच्छमप्रमुखगुणप्रदार्चनाम् ।
नतावलीश्रमनिकरापहन्तृता-
विभास्वरस्वपदनतिं भजे गिरम् ॥ १४ ॥

अपनी अर्चना से मुमुक्षु जनों के अभिलषित भव्य शमादि गुणों को देने वाली भास्वर चरणों के प्रणाम से ही प्रणत जनों के श्रम विकारों को नष्ट कर देने वाली वाणी को मैं भजता हूँ ॥ १४ ॥

कटाक्षतो यमनियमासनादिमान्
वितीर्य या यममुखभीचयापहा ।
पदाम्बुजभ्रमरकृताखिलाघसं-
ततिक्षमानिधिहृदयां भजे गिरम् ॥ १५ ॥

कटाक्ष से यम, नियम, आसन आदि दुर्लभ पदार्थों का वितरण करके मृत्यु-प्रमुख भयों को भगा देने वाली, अपने चरणारविन्द में भ्रमरायमाण भक्तों के सम्पूर्ण विदित अपराधों के लिये क्षमासिन्धु रूप हृदय वाली सरस्वती को मैं भजता हूँ ॥ १५ ॥

विधिप्रियापदनतिपूर्वकं मुदा
तदङ्घ्रिवार्जनुसुनुतिं पठन्ति ये ।
भवन्ति ते निखिलविदां पुरोऽनिशं
स्ववार्हसम्पदधिकधीकलामुखाः ॥ १६ ॥

जो सरस्वती के पद में प्रणाम-समर्पण पूर्वक हर्ष के साथ उनके चरणों के स्तवन को पढ़ते हैं वे सर्वज्ञों के सामने सदा स्तुत्य सम्पत्ति एवं अधिक बुद्धि एवं कला आदि के विधान हो जाते हैं ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीसरस्वतीस्तोत्रम्

[स्वागता]

अक्षसूत्रसृणिपुस्तकपाशै-
भसिमानभुजयुग्मयुगाढ्ये ।
कुन्दचन्द्रहिमभासिनि मुक्ता-
हारशोभिनि दयस्व दयाब्धे ॥ १ ॥

अक्षसूत्र, सृणि, पुस्तक और पाश से भासमान चारों हाथों वाली, कुन्द, चन्द्र और हिम के समान भासित होने वाली मुक्ताहार से सुशोभमान, दयासिन्धु दया करो ॥ १ ॥

[वसन्ततिलका]

ग्रन्थाक्षसूत्रवरदाभयमुद्रिकाभि-
श्चिह्नैश्चतुर्भिरमलैर्विलसद्भुजाले ।
कर्पूरकान्तिधवलात्म[वपुः]मनोज्ञां
ध्यायामि मूर्त्तिमनिशं तव वाक्सवित्रि ॥ २ ॥

हे वाग्देवते ग्रन्थ, अक्षसूत्र, वरद और अभय मुद्राओं से सुशोभमान चतुर्बाहु वाली, कर्पूरगोर सुन्दर शरीर धारण करने वाली तुम्हारी मूर्ति का मैं सतत ध्यान करता हूँ ॥ २ ॥

श्रीसरस्वतीब्रह्मस्तुतिः

[पृथ्वी]

जगत्त्रितयसूगुरू गणपषण्मुखादीडितौ
अहेतुकरुणाम्बुधी चरणनम्रसर्वेष्टदौ ।
इभाश्वमुखदानती(दायकौ)गिरीशसोदरीमामकौ
भजामि वचनप्रसूसरसिजातनैजाङ्कौ ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्रिभुवन के उत्पादकों से गुरु, गणपति, षण्मुख आदि से ईडित, अकारण करुणावरुणालय, चरण में नतजनों के समग्र अभीष्टों के दाता, नमन मात्र से हाथी घोड़े आदि देने वाले, शङ्कर की बहन और बहनोई, वाग्देवता एवं सरोजजनितांश ब्रह्मा को मैं भजता हूँ ॥ १ ॥

जिताक्षसुलभाङ्घ्रिकौ नतमुदब्धिरात्रीश्वरौ
परापरकलाधिपौ कमलदृक्स्नुषावर्ष्मजौ ।
शशाङ्कपितृसूगुरू द्रुतवितीर्णनम्रेप्सितौ
भजामि वचनप्रसूसरसिजातनैजाङ्गकौ ॥ २ ॥

जितेन्द्रियों के लिये सुलभ पाद, प्रणत जनों के आनन्द सिन्धु के चन्द्रमा, पर एवं अपर कलाओं के अधीश्वर, कमल नयन भगवान् को पुत्रवधू के आत्मज, चन्द्रमा के जनक अत्रि के पितामह, नम्रजनों के अभीप्सितों को शीघ्र देने वाले वाग्देवता एवं सरोजजनितांग ब्रह्मा को मैं भजता हूँ ॥ २ ॥

अशेषसुखनन्दितौ नमदनन्तऋद्धिप्रदौ
उमापतिसमादृतौ सकलभूतिदाङ्घ्र्यर्चनौ ।
षडीतिमुखवारकौ जलधिजाहरिप्रीतिदौ
भजामि वचनप्रसूसरसिजातनैजाङ्गकौ ॥ ३ ॥

समस्त सुरों से वन्दित, प्रणाम करने वालों को अनन्त समृद्धि देने वाले, उमापति से समादृत, चरणार्चना से सम्पूर्ण विभूतियों के दाता, छःहों ईतियों के निवारक, लक्ष्मो एवं नारायण को प्रसन्न रखने वाले वाग्देवता एवं सरोजजनितांग ब्रह्मा को मैं भजता हूँ ॥ ३ ॥

कृपामृतजनिक्षिती निटिललोचनादीडितौ
सुपर्वललनास्तुतौ मतिशरीरलावण्यदौ ।
शशाङ्कशिशिराशयौ कणभुगादिशास्त्रप्रदौ
भजामि वचनप्रसूसरसिजातनैजाङ्गकौ ॥ ४ ॥

कृपामृत की जन्मभूमि, भालाक्षादिसंस्तुत, देवांगनावन्दित, बुद्धि और काया को अनुपम सौन्दर्य देने वाले, चन्द्र सदृश शीतल हृदय वाले, कणादादि प्रणीत शास्त्रों के बोधक वाग्देवता एवं सरोजजनितांग ब्रह्मा को मैं भजता हूँ ॥ ४ ॥

पदापजितपङ्कजौ इहपरत्रसौख्यप्रदौ
महाप्रणवरूपिणौ प्रणवमुख्यमन्त्रात्मकौ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विरक्तमुदिताशयौ कनकजिष्णुकायच्छवी
भजामि वचनप्रसूसरसिजातनैजाङ्कौ ॥ ५ ॥

चरणों से कमल को जीत लेने वाले, ऐहिक और पारलौकिक सुख देने वाले, महाप्रणवस्वरूप, प्रणव प्रधान मन्त्र-स्वरूप, विरक्तों पर प्रसन्न रहने वाले, अपनी काय कान्ति से कनक को जीत लेने वाले वाग्देवता एवं सरोजजनितांग ब्रह्मा को मैं भजता हूँ ॥ ५ ॥

श्रीवचनप्रसूवनजजस्तवः

[प्रमिताक्षरा]

भजदिष्टदौ भवभयापहरौ
मधुकृत्कुचौ करजिताम्बुभवौ ।
शरदम्बुदाभवसनौ वरदौ
वचनप्रसूवनजजौ कलये ॥ १ ॥

भक्तों के अभीष्टदायक, भव-भय विनाशक, मनोहर कुचों वाले, हाथों से पद्मों को पराजित करने वाले, शरदभ्रसदृश वस्त्रों वाले, वरदायक वाग्देवता और ब्रह्मा को नमन करता हूँ ॥ १ ॥

गुणरम्यधीतनुमुखादिपुरी-
नतकाम्यदौ दिविजनम्यपदौ ।
जनिमृत्युहौ करुणयार्द्रमती
वचनप्रसूवनजजौ कलये ॥ २ ॥

गुणों से रमणीय बुद्धि, शरीर, मुख आदि से विभूषित, प्रणतजनों के स्पृहणीय पदार्थों के दाता, देव वन्द्य पाद वाले, जन्म-मृत्यु नाशक, करुणार्द्र मतिशाली सरस्वती और ब्रह्मा को नमन करता हूँ ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नतमेनकौ शुकमुखप्रणतौ
कनकच्छवी कनकगर्भतनू ।
प्रणतेष्टदौ भवविनाशकरौ
वचनप्रसूवनजजौ कलये ॥ ३ ॥

मेनकाभिवन्दित, शक प्रमुख मुनियों से प्रणत, स्वर्णाभ हिरण्यगर्भाकृति, प्रणतों के इष्टदायक, भवनाशक शारदा और स्वयम्भू को नमन करता हूँ ॥ ३ ॥

विनताघहौ विहितवार्धिभवा-
विनताजवाहहृदयप्रमुदौ ।
अखिलार्थदानपटुपादनती
वचनप्रसूवचनजजौ कलये ॥ ४ ॥

विनतों के पापनाशक, लक्ष्मी और नारायण के हृदय में प्रमोद भरने वाले, पाद प्रणति से अखिल अभीष्टों के दायक, सरस्वती और ब्रह्मा को नमन करता हूँ ॥४॥

धृतवीणकद्रुशुभसूजनकौ
कणभुङ्मुखाखिलनयावलिदौ ।
विजितैणकाम्बुधिजलोचनकौ
वचनप्रसूवनजजौ कलये ॥ ५ ॥

नारद और कद्रू की माँ के जनक, काणाद आदि प्रधान शास्त्रों के बोधक, मृग एवं लक्ष्मी के लोचनों से उत्तम लोचनों वाले सरस्वती और ब्रह्मा को नमन करता हूँ ॥ ५ ॥

नतसर्वकष्टशमनव्रतयोः
प्रणताखिलेष्टदपदाम्बुजयोः ।
पदपङ्कजाष्टकमिदं पठतां
प्रभवेन्निजाष्टविधसिद्धिररम् ॥ ६ ॥

नतजनों के सर्वविध कष्टों के नाश करने का व्रत धारण करने वाले, पादाम्भोज में प्रणतजनों के अखिल अभीष्टों में दायक विधि और वाणी के इस *पदपंकजाष्टक का पाठ करने वाला भक्त आठों सिद्धियों को प्राप्त करे ॥ ६ ॥

---

* उपलब्ध पाठ में आठ के स्थान पर पाँच ही पद्य हैं ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीसिन्धुजास्तुतिः

[रथोद्धता]

रागरोषगृधिमुख्यशात्रव-
व्रातवश्यमतिदुर्लभाङ्घ्रिके ।
तादृशाखिलरिपुव्रजान्तक-
स्वान्तदार्ढ्यसुलभेऽव सिन्धुजे ॥ १ ॥

काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं के वशीकृत हृदय वालों को दुर्लभ पादारविन्द वाली एवं उक्त शत्रुओं को मार डालने वालों के हृदय में निश्चित रूप से सुलभ सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ १ ॥

शक्रवह्निवरुणादिदेवता-
बाणतातमुखदैत्यपूजिते ।
पादसंसृतकुपञ्चताजरा-
मुख्यवारणहरेऽव सिन्धुजे ॥ २ ॥

इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि देवताओं एवं बाणासुर के जनक (बलि) प्रमुख दैत्यों से पूजित: चरणावनतजनों के अपमृत्यु, जरा प्रमुख गजराजों के लिये सिंहनी सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ २ ॥

बुद्धिहीनधनलेशवर्जितै-
रप्यरं यदमलाङ्घ्रिसंस्मृतेः ।
आप्यते सुगुरुजिद्-धनेशजित्-
स्वीयधीधनिकताऽव सिन्धुजे ॥ ३ ॥

मूढ़ एवं दरिद्र भी जिनके युगल चरणों की स्मृति से शीघ्र ही वाचस्पति की बुद्धि एवं धनपति कुवेर की समृद्धि को जीत लेते हैं, वे सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ ३ ॥

शैलराजतनयाग्रजप्रिये
शैलदर्पहृतिकृत्पयोधरे ।
दीननम्रजनताकृपाम्बुधि
स्वान्तपाथसिजनेऽव सिन्धुजे ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गिरीन्द्रकुमारी गिरिजा के अग्रज को वल्लभा, शैलों के दर्पनाशक पयोधरों वाली, दीन एवं नम्रजनों के लिये करुणासिन्धु हृदयारविन्द वाली सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ ४ ॥

कुम्भिमोचकमनोऽब्जघस्रप-
कुम्भिमुख(ख्य)कमलास्पृशिप्रिये ।
भक्तलोकविहिताघकानन-
प्लोषिदावदहनेव सिन्धुजे ॥ ५ ॥

कुम्भीपाक के मोचक भगवान् के हृदयारविन्द को विकसित करने के लिये सूर्यरूप, गज प्रमुख समृद्धि दाता की वल्लभा, भक्त लोगों से विहित पापवनों को भस्म करने के लिये दावानल स्वरूप सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ ५ ॥

दन्दशूकपतितल्पवल्लभे
दन्दशूकमधुकृद्विजित्कचे ।
कान्तिलेशजितभर्मनीरभू-
गर्भडम्बरततेऽव सिन्धुजे ॥ ६ ॥

शेषशायी नारायण की दयिता, सर्प एवं भ्रमर के विजेता कचों वाली, अपनी कान्ति के लेश से ही स्वर्ण एवं कमल की कर्णिकाओं के सौन्दर्य को जीत लेने वाली सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ ६ ॥

बादरायणतदीयवर्ष्मभू-
नारदादिमुनिगीतवैभवे ।
अक्षरक्षरपरात्मपूरुष-
प्रापकाक्षरमनोऽव सिन्धुजे ॥ ७ ॥

व्यास, शुक, नारद आदि मुनियों द्वारा गीतकीर्त्ति, क्षर, अक्षर, एवं परम-पुरुष को प्राप्त कराने में अक्षर हृदय वाली सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ ७ ॥

कामकामिविनमन्निखिलेहा-
व्रातपूरणमुखव्रताञ्चिते ।
धर्ममुख्यचतुरर्थविधातृ-
बाहुयुग्मयुगलेऽव सिन्धुजे ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सकाम भक्तों की समस्त कामनाओं को पूरा करने के प्रमुख व्रत से पूजित, धर्मादि चतुर्विध पुरुषार्थों को युगपत् प्रदान करने के लिये चतुर्बाहु सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ ८ ॥

नम्रलोकहृदयाम्बुजमध्य-
वाससूचकनिजासनाम्बुजे ।
तत्स्थिताखिलतमोनिवर्हक-
ज्ञानचण्डकिरणेऽव सिन्धुजे ॥ ९ ॥

प्रणतजनों के हृदयारविन्द के मध्य में निवास करने के लिये पद्म-निवास की अभिरुचि को सूचित करने वाली, भक्तों के मनो-निलय में स्थिर तिमिर को नष्ट करने में ज्ञानार्करूपा सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ ९ ॥

स्वर्गसिन्धुरशनाभुवर्महो
मुख्यलोकततिपाल्यशासने ।
सार्वभौमपदवीमुखदातृ-
स्वाङ्घ्रिभक्तिकणिकेऽव सिन्धुजे ॥ १० ॥

स्वर्ग, भूमि, भुवः, महः आदि प्रमुख लोकों में जिसका शासन पालनीय समझा जाता है एवं चक्रवर्त्तित्व आदि प्रमुख पदों को अपने चरणों की भक्ति कणिका से प्रदान करने वाली सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ १० ॥

धातुसाम्यविरहादिसम्भव-
व्याधिजालदलनप्रभुस्मृते ।
कष्टपूगशमनव्रताञ्चित-
स्वीयपादकमलेऽव सिन्धुजे ॥ ११ ॥

धातुओं के वैषम्य से जनित विविध व्याधियों को नष्ट करने में समर्थ स्मृति वाली, कष्ट समूहों के प्रशमन की दीक्षा से दीक्षित निज-पादाम्बुजों वाली सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ ११ ॥

यु(दु)ष्टभीषणरथाङ्गमुख्यधृ-
च्छिष्टभीहरणमुद्रिकाञ्चिते ।
निर्विकारलववृत्तिचिन्तित-
स्वाङ्घ्रिपुष्करयुगेऽव सिन्धुजे ॥ १२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुष्टों के लिए भयप्रद चक्र आदि प्रधान शस्त्रों को धारण करने वाली एवं शिष्टों को अभय दान देने वाली अभय मुद्रा से अलंकृत, निर्विकार चित्तवाले भक्तों द्वारा चिन्तन चरणाब्ज युगल वाली सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ १२ ॥

भारतीपति गिरीन्द्रसम्भवा-
जानिशक्रमुखनिर्जरोत्तमैः ।
फुल्लपद्मतुलसीमुखैर्मुदा
पूजितस्वचरणेऽव सिन्धुजे ॥ १३ ॥

ब्रह्मा, शंकर, शुक्र प्रमुख उत्तम देवताओं द्वारा प्रेम पूर्वक प्रफुल्ल कमल, तुलसीदल आदि पूजोपकरणों से पूजित निज-चरणों वाली सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ १३ ॥

शान्तिदान्तिमुखसाधनावली-
सागरीकृतपदप्रणामकृत् ।
जन्ममृत्युजलराशिगसर्व-
श्रान्तिवारणपटोऽव सिन्धुजे ॥ १४ ॥

चरणों में प्रणत जनों को शम, दम आदि साधनों से समृद्ध बना-देने वाली, जन्म-मृत्यु सागर में गोता लगाने वालों की श्रान्ति के निवारण में समर्थ सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ १४ ॥

भक्तलोकयममुख्यसाध्वस-
त्रातहर्तृयममुख्ययोगजे(दे) ।
मर्षिताङ्घ्रिकमलोद्भवानता-
नुष्ठिताघनिकरेऽव सिन्धुजे ॥ १५ ॥

भक्तजनों के मृत्यु-भय आदि को हरण करने में समर्थ यमादि- योगों का दान करने वाली, चरणारविन्द में आनतजनों द्वारा विहित-पापपुंजों को क्षमा कर देने वाली सिन्धुतनया रक्षा करें ॥ १५ ॥

सर्वकाङ्क्षितवरप्रदस्मृतेः
सिन्धुजन्मन इमां पठन् स्तुतिम् ।
विद्वदग्रसरतादिभास्वर-
श्रीनिकेतनपदं प्रपद्यते ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपनी स्मृति से ही समस्त कामनाओं की पूरयित्री सिन्धुजा के इस स्तोत्र को पढ़ने वाले लोग विद्वानों में अग्रेसर, एवं समृद्धिशाली स्थानों को प्राप्त कर लेते हैं ॥ १६ ॥

श्रीहरिद्यितास्तुतिः

[मृगचपला]

भवमृतिभीहृतिनिपुणे,
हरिदयिते जय कमले ॥ १ ॥

भवभीति एवं यमभीति के हरण में निपुण हरिदयिता कमला की जय हो ॥ १ ॥

भुजगपयोधरचिकुरे,
द्विजपधरे जय कमले ॥ २ ॥

भुजग और वारिद के समान कृष्ण केशों वाली एवं द्विजपति को धारण करने वाली कमला की जय हो ॥ २ ॥

नतवरदस्वपदनुते,
हतकलुषे जय कमले ॥ ३ ॥

अपने चरणों में प्रणाम करने वालों को वरदायिनी, पापनाशिनी कमला की जय हो ॥ ३ ॥

अमरततिप्रणतपदे,
सुमशरसूः जय कमले ॥ ४ ॥

देववृन्दवन्दित पादों वाली, काम की जननी कमला की जय हो ॥ ४ ॥

दनुजरिपुप्रणयपरे,
तनुजमिमं कुरु सुखिनम् ॥ ५ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दानवों के नाशक हरि के प्रेम में परायण देवि अपने इस पुत्र को सुखी बनाओ ॥ ५ ॥

अतुलगुणव्रजलसिते,
विधुवदने जय कमले ॥ ६ ॥

अतुल गुणगणों से विलसित चन्द्रमुखी कमला की जय हो ॥ ६ ॥

कमलजनूरिपुसहजे,
मम सकलां जय कमले ॥ ७ ॥

चन्द्रमा की सहोदरी कमला मेरी समस्त कामनाओं को विजय शालिनी बनाओ ॥ ७ ॥

नतयमभीशमनचणे,
विततकृपे जय कमले ॥ ८ ॥

प्रणतजनों के यमभय को दूर करने में प्रसिद्ध, विस्तृत कृपा, वाली कमला की जय हो ॥ ८ ॥

पुरुकरुणाम्बुधिहृदये,
जलधिजने जय कमले ॥ ९ ॥

अगाध करुणा सिन्धु रूप हृदय वाली, क्षीरसागर की कन्या कमला की जय हो ॥ ९ ॥

सुरललनार्चितचरणे,
स्मरतनुसूः जय कमले ॥ १० ॥

देवांगना समर्चित चरणों वाली, काम जननी कमला की जय हो ॥ १० ॥

मुनिनिकरप्रणुतपदे,
जनिमृतिहे जय कमले ॥ ११ ॥

मुनिवृन्द से वन्दित पादों वाली, जन्म-मृत्यु की नाशिनी कमला की जय हो ॥ ११ ॥

नतकनकस्पृशिनिरते,
कनकरुचे जय कमले ॥ १२ ॥

प्रणतजनों को सुवर्ण देने में निरत, हेमाभ शरीर वाली कमला की जय हो ॥ १२ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणतजनव्रजवरदे,
गुणततिदे जय कमले ॥ १३ ॥

प्रणतजनों को वर देने वाली, गुणगणों को देने वाली कमला की जय हो ॥ १३ ॥

भवजलधेः कलशजने,
अमलयशः जय कमले ॥ १४ ॥

भव-सागर के लिये अगस्त्य, निर्मल कीर्त्ति, कमला की जय हो ॥ १४ ॥

अहिघनषट्चरणकचे,
महितपदे जय कमले ॥ १५ ॥

सर्प, घन और भ्रमराभ केशों वाली, पूजितपादों वाली कमला की जय हो ॥ १५ ॥

नतदुरितक्षपणचणे,
धनमुखदे जय कमले ॥ १६ ॥

प्रणतजनों के पाप नाशन में प्रसिद्ध, धन आदि देने वाली कमला की जय हो ॥ १६ ॥

नतविनतातनुभवने,
वनजकरे जय कमले ॥ १७ ॥

विनत गरुड को ही अपना वास स्थान बनाने वाली पद्मपाणि कमला की जय हो ॥ १७ ॥

स्तनविजितक्षितिधरणे,
रुचिरमते जय कमले ॥ १८ ॥

स्तनों से पर्वतों को जीत लेने वाली, मनोज्ञमति कमला की जय हो ॥ १८ ॥

करयुगलीधृतकमले,
जितमृगदृक् जय कमले ॥ १९ ॥

दोनों हाथों में कमलों को धारण करने वाली, मृगों के नेत्रों को परास्त करने वाली कमला की जय हो ॥ १९ ॥

नयनपदादिमनयदे,
जय कमले कुरु सुखिनम् ॥ २० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

न्यायादि शास्त्रों को प्रकाशित करने वाली कमला की जय हो तथा माँ कमले मुझे सुखी बनाओ ॥ २० ॥

हरिणमदोज्ज्वलतिलके,
विधिसहजे जय कमले ॥ २१ ॥

मृगमद के मनोहर तिलक से विभूषित, विधि की सोदरी कमला की जय हो ॥ २१ ॥

अवितनते सितवसने,
सुरकलिते जय कमले ॥ २२ ॥

नतजनों की रक्षा करने वाली, शुक्लाम्बरधारिणी, देवपूजिता कमला की जय हो ॥ २२ ॥

नतविनते नमदघहे,
श्रुतिविनुते जय कमले ॥ २३ ॥

विनतावन्दित, भक्तों के पापों को नष्ट करने वाली, वेदवन्दिता कमला की जय हो ॥ २३ ॥

श्रीक्षितिगुरुश्रीशंकरषोडशीस्तोत्रम्

[पृथ्वी]

अशेषसरसीरुहप्रभवनाण्डकोटिस्थित-
प्रजाव्रजविबोधनप्रवणचित्तपङ्केरुहम् ।
अनेकपमुखाग्निभूजनकनव्यरूपोल्लस-
द्यतीश्वरनिजाकृतिं क्षितिगुरुं भजे शंकरम् ॥ १ ॥

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में अवस्थित प्रजामण्डल के हृदयारविन्द को विकसित करने में तत्पर एवं गणपति तथा कार्त्तिकेय के जनक भगवान् शङ्कर के नवावतार यतीन्द्र जगद्गुरु शङ्कराचार्य को भजता हूँ ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अहेतुमितिवर्जितप्रणतदीनलोकावली-
कृपामृतरसाकरस्वहृदयामृतप्रोद्भवम् ।
स्वकीयपदपङ्कजप्रभवधूलिलेशस्मृति-
प्रसक्तजनकाङ्क्षितप्रचयदं भजे शंकरम् ॥ २ ॥

प्रणत एवं दीन जनों पर अकारण करुणा-सिन्धु स्वरूप हृदयारविन्द वाले एवं अपने पादपङ्कज के पराग कण को भी स्मरण करने वालों को सम्पूर्ण अभिलषित पदार्थ प्रदान करने वाले शङ्कर को भजता करता हूँ ॥ २ ॥

रदावलतुरङ्गमप्रभृतिसर्वचिह्नाञ्चित-
प्रकृष्टधरणीशतावितरणप्रवीणाङ्घ्रिकम् ।
विमुक्तिललनामणिप्रवणमानसक्षोणिधृ-
त्क्षमापतिसुतापतिं क्षितिगुरुं भजे शंकरम् ॥ ३ ॥

हाथी, घोड़े आदि समस्त उपकरणों से अलंकृत भूपतित्व के प्रदान में प्रवीण चरण वाले एवं विमुक्ति रूपी अंगनारत्न में आसक्त चित्त भगवान् शङ्कर की प्रतिकृति के रूप में विराजमान जगद्गुरु श्री शङ्कर को भजता हूँ ॥ ३ ॥

सुमव्रजशरक्रुधागृधिविमोहमुख्याखिला-
न्तरारिनिकराजितप्रणतलभ्यपादाम्बुजम् ।
कदाचिदपि संस्मृतिरचचरणाम्बुजानव्रज-
प्रमोदसरिदीश्वरामृतकरं भजे शंकरम् ॥ ४ ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोहादि प्रमुख आन्तरिक शत्रुओं के विजेताजनों के प्रणतिपात से सुलभ पादारविन्द वाले एवं अपने पादारविन्द का कदाचित् स्मरण करने वाले भक्तों के प्रमोदार्णव को उल्लासित करने वाले चन्द्रस्वरूप शङ्कर को भजता हूँ ॥ ४ ॥

अनन्तभुवनावलीस्थितसमस्तविद्याव्रज-
प्रवीणजनताग्रगीकृतपदाब्जधूलीस्मृतम् ।
पदाम्बुजरजःसकृत्प्रणतलोकचित्तस्थिता-
खिलेष्टसपदिस्पृशिव्रतधरं भजे शंकरम् ॥ ५ ॥

अनन्त भुवनों में विराजमान समस्त विद्याओं के मर्मज्ञ विद्वानों में अग्रगण्य बुधों द्वारा स्मृत पादारविन्द पराग वाले तथा एक बार भी पदाब्ज रज को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणाम करने वालों के मन में स्थित समस्त अभीष्टों को तत्क्षण पूरा करने का व्रत धारण करने वाले शङ्कर को भजता हूँ ॥ ५ ॥

कलौ जगदनादृतश्रुतिपथोद्दिधीर्षावशा-
वतीर्णकमलासहोद्भवकलालसन्मस्तकम् ।
सरोजचरणाभिधाकृतिधरोरगक्ष्मापति-
स्वतल्पमुखशिष्यसत्कृतपदं भजे शंकरम् ॥ ६ ॥

कलियुग में जनता से उपेक्षित वेदमार्ग का उद्धार करने की इच्छा से साक्षात् चन्द्रशेखर के नवावतार तथा पद्मपादाचार्य प्रमुख शिष्यों से पूजितपाद शङ्कर को भजता हूँ ॥ ६ ॥

यदीयचरणाम्बुजद्वयमशेषदेवावली-
किरीटमणिसंस्फुरच्छविवितानीराजितम् ।
मनोजववितारितस्वपदसंनतेष्टव्रजा-
तिशायिसकलर्द्धिमच्छुभततिं भजे शंकरम् ॥ ७ ॥

सम्पूर्ण देववृन्द के मुकुट-मणियों को चमकीली आभा के प्ररोह से जिनके युगल पादारविन्द नीराजित हैं तथा अपने चरणों में संनतजनों को अभीष्ट पदार्थों से भी अधिक समस्त ऋद्धियों से युक्त कल्याण गण को मनोवेग से भी शीघ्र जो प्रदान करते हैं उन शङ्कर को मैं भजता हूँ ॥ ७ ॥

कृतेतरवचःशिरोगदितमार्गसंवृद्धये
गृहीतचरमाश्रमाकृतिमुमागृहीतार्धकम् ।
स्वकीयतनुसामिताविलसदग्रसंभूवपुः
समानविभवीकृतस्त्रविनतं भजे शंकरम् ॥ ८ ॥

वैदिक सम्प्रदाय की अभिवृद्धि के लिये संन्यासाश्रम में प्रविष्ट होने वाले उमा द्वारा गृहीत अर्धभाग तथा अपने को प्रणाम करने वालों को आत्मरूपता प्रदान करने वाले शङ्कर को भजता हूँ ॥ ८ ॥

कुमारिलनिजाकृतिप्रलसदाश्रयाशोद्भवा-
वतारचिताखिलस्वकरणीयपूर्वाङ्गकम् ।
सुरेश्वरसरोजनुश्श्रवणमुख्यरूपालिधृ-
त्सरोजजसरोजदृङ्मुखवृतं भजे शंकरम् ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अग्नि के अवतार रूप कुमारिल बनकर कर्मकाण्डीय क्रियाओं का सम्पादन करने वाले, तथा सुरेश्वराचार्य तथा पद्मपादाचार्य रूप से अवतीर्ण ब्रह्मा और विष्णु से घिरे हुये शङ्कर को भजता हूँ ॥ ९ ॥

अकारणनिसर्गजापरिमितस्वपादामृतो-
द्भवानतकृपासुधारसजनिक्षमावीक्षणम् (क्षितिस्वेक्षणम्)
ललाटशुचिभस्मसात्कृततनोः पुनः स्वान्तिके
प्रसक्तिविरहोज्झितानलदृशं भजे शंकरम् ॥ १० ॥

अपने पादाब्ज में आनतजनों को अकारण, नैसर्गिक तथा अपार कृपा-सुधा-सिन्धु स्वरूप दृष्टि से देखने वाले तथा ललाट पर अग्नि के स्थान पर तदवयवभूत भस्म को धारण करने वाले शङ्कर को भजता हूँ ॥ १० ॥

जयन्तजननीमुखाखिलसुराङ्गनादोडित-
स्वकीयचरणाद्रिजारमणनव्यदिव्याकृतिम् ।
अजाण्डजननीकरग्रहणयोग्यकामेश्वरा-
भिधार्हतनुलावणीजलनिधिं भजे शंकरम् ॥ ११ ॥

इन्द्राणी प्रभृति प्रमुख देवांगनाओं से वन्दित पादारविन्द वाले शङ्कर के नवावतार तथा ब्रह्माण्डों की जननी (पार्वती) के पाणिग्रहण के लिये योग्य कामेश्वर रूप धारण करने वाले शङ्कर के लावण्य-सिन्धु स्वरूप शरीर के समान शरीर वाले शङ्कर को भजता हूँ ॥ ११ ॥

धनंजयनिजाकृतिस्वविलसत्क्षणाक्ष्युज्झना-
वशेषितपयोजनुःसखरिपुस्वनेत्रद्वयम् ।
स्वकीयतरुणारुणाधरविलोचनप्रोल्लस-
द्रुचापजितबिम्बवार्जनितनुं भजे शंकरम् ॥ १२ ॥

अग्नि रूप तृतीय नेत्र के परित्याग से अवशिष्ट लोकाह्लादक चन्द्रोपम नेत्र-युगल वाले तथा अपने पूर्ण अरुण अधर की आभा से बिम्बफल को एवं नयनों की कान्ति से वारिज को जीतने वाले शङ्कर को भजता हूँ ॥ १२ ॥

कणादनयनाढ्यपत्कपिलभोगिराड्जैमिनि-
श्रुतिव्रजविभाजकोदितिनयालिपारंगतम् ।
इहोपरिसुखावली सुलभिता यदङ्घ्र्यम्बुभू-
सकृन्नमनलेशभूविभवतो भजे शंकरम् ॥ १३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त शास्त्रों के पारंगत तथा अपने चरणारविन्द का एक बार भी प्रणाम करने वालों को दत्त सुकृत राशि से ऐहिक तथा पारलौकिक सुखों को सुलभ बना देने वाले शङ्कर को भजता हूँ ॥ १३ ॥

अकारमत उस्वरं तदनु माक्षरं च श्रुतिः
स्वमूर्धसहिता मुहुर्यदभिधाङ्गकान्याह तम् ।
सदा प्रणवचिन्तनप्रभृतिसक्तचित्ताब्जनु-
र्यतीश्वरवितत्यनुग्रहपदं भजे शंकरम् ॥ १४ ॥

अ, उ, म के योग से अभिव्यक्त ॐकार को आत्मा का अभिधायक बतलाने वाले तथा सदैव प्रणव के अर्थानुसन्धान में लग्न हृदयारविन्द वाले एवं असीम अनुग्रह के आस्पद यतीश्वर शङ्कर को भजता हूँ ॥ १४ ॥

समस्तविषनव्रजप्रचुरमानसोदासिता-
प्रमुख्यभमिलक्षणप्रचयलासिपाण्यङ्घ्रिकम् ।
प्रणम्रयमकृन्तनप्रभृतिनैजपूर्वक्रिया-
तिशायिमृतबालकासुकलनं भजे शंकरम् ॥ १५ ॥

समस्त आकर्षक विषयों से चित्त की उदासीनता आदि प्रमुख संयमी के शुभ लक्षणों से लक्षित हस्तपादादि वाले, प्रणतजनों के यमभीति से विमोचक तथा अपने पूर्वाजित तपोवन से मृत बालक को पुनरुज्जीवित करने वाले शङ्कर को भजता हूँ ॥ १५ ॥

स्वकीयतनुसंस्फुरद्विमलदिव्यकान्तिच्छटा-
निरस्तनिजडम्बरप्रचयतप्तचामीकरम् ।
समस्तसमयाखिलस्थलसमस्तरीतिष्वपि-
प्रणम्रसकलेप्सितप्रदपदं भजे शंकरम् ॥ १६ ॥

अपने शरीर की चमकती हुई निर्मल कान्ति की छटा से तप्तचामीकर की आभा को पराभूत करने वाले, सभी समय, सभी जगह तथा सभी रीतियों में भी प्रणतजनों के सम्पूर्ण अभीष्टों के पादारविन्द वाले शङ्कर को भजता हूँ ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीक्षीरसमुद्रराजतनयालक्ष्मीस्तवः

[शार्दूलविक्रीडितम्]

भक्तेष्टस्वरगोभवप्रशमनी भृङ्गाम्बुधृत्कुन्तला
वार्भूजिष्णुकरा सिताम्बरधरा बिम्बाभशोणाधरा ।
काम्या पद्महृशासुरम्यधिषणा नम्या सुधाशिव्रजैः
भूयात् क्षीरसमुद्रराजतनया भूयैं विभूत्यै मम ॥ १ ॥

भक्तों को अभीष्ट पदार्थ देने में कल्पतरु की भी विजेत्री, भृंग और वारिद के सदृश बालों वाली, कमल को जीतने वाले करों से अलंकृत, शुक्ल वस्त्र धारण करने वाली, बिम्बफल को आभा के समान रक्त अधर वाली, पुण्डरीकाक्ष के लिये काम्य, अतीव रमणीय मतिशालिनी, देव वृन्दवन्दिता क्षीरसागरराज की तनया लक्ष्मी मेरी प्रचुर विभूति का कारण बनें ॥ १ ॥

कृष्णप्रीतिकरी कृपार्द्रहृदया कृत्तानतापायिका
मेनाजादिनुता सनातनसती वीनार्चिताङ्घ्रिद्वयी ।
सच्चिन्मोदरता सुदाडिमरदा संसारभीपारगा
भूयात् क्षीरसमुद्रराजतनया भूयैं विभूत्यै मम ॥ २ ॥

कृष्ण से प्रीति करने वाली, दयालुहृदया, आनतजनों के अपायों को नष्ट करने वाली, मैना और अज आदि से नुत, सनातन पतिव्रता, पक्षिराज से समर्चित चरण युगलों वाली, सच्चिदानन्द में रत, उत्तम दाडिम बीज के सदृश दाँतों वाली, संसार की भीति से पार कर देने वाली क्षीरसागर राज की तनया लक्ष्मी मेरी प्रचुर विभूति का कारण बनें ॥ २ ॥

एणाङ्काग्रभवा कणादविनुता वीणाविभास्वत्करा
मानातीतकृपा कनत्कनकभा पीनातितुङ्गस्तनी ।
शिष्टालीविनुताऽखिलेष्टवरदा कष्टावलीकृन्तिका
भूयात् क्षीरसमुद्द्रराजतनया भूयैं विभूत्यै मम ॥ ३ ॥

चन्द्रमा की अग्रजा, कणाद से विनुत, वीणा से अलंकृत करों वाली, असीम कृपा करने वाली, चमकीले सुवर्ण को आभा वाली, पीन और अति तुंग स्तनों वाली, शिष्ट-समुदाय से नमस्कृत, अखिल इष्ट पदार्थों का वर देने वाली, कष्टों को नष्ट करने वाली क्षीरसागर राज की तनया लक्ष्मी मेरे लिये प्रचुर विभूति-दायिनी हों ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीशारदाम्बागिरिजेशगणेशस्तोत्रम्

[वसन्ततिलका]

नैजान्तरङ्गशिशिरत्वविबोधनाय
प्रालेयदीधितिलसद्बहिरङ्गवस्त्राः ।
स्वाङ्घ्रिप्रणम्रजनताकरुणाब्धिचित्ताः
श्रीशारदाम्ब गिरिजेश गणेश पात ॥ १ ॥

अपने आन्तरिक शीतलत्व के विबोधनार्थ शीतांशु के समान धवल वस्त्र से सुशोभित वाह्य अंग वाले तथा अपने चरणों में आनतजनों पर करुणा-वरुणालय रूप चित्त वाले श्री शारदाम्वा, गिरिजेश तथा गणेश रक्षा करें ॥ १ ॥

कामक्रुधागृधिविमोहमुखान्तरारि-
सन्तत्यधीनमतिदुर्लभपादपद्माः ।
वैराग्यभक्तिधनलभ्यपदारविन्दाः
श्रीशारदाम्ब गिरिजेश गणेश पात ॥ २ ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि आन्तरिक शत्रुओं के सतत अधीन मति वालों के लिये दुर्लभ चरणारविन्द वाले तथा वैराग्य और भक्ति से सम्पन्न जनों के लिये सुलभ पादपद्मों वाले श्रीशारदाम्वा, गिरिजेश तथा गणेश रक्षा करें ॥ २ ॥

हस्त्यश्वपत्तिरथकोशमुखप्रदार्चा
नम्रावलीदुरितकुञ्जर(वारण)पञ्चवक्त्राः ।
चन्द्राननाहरिससंख्यमुखेभवक्त्राः
श्रीशारदाम्ब गिरिजेश गणेश पात ॥ ३ ॥

जिनकी अर्चना हाथी, घोड़े, पैदल, रथ रूप चतुरंगिणी सेना तथा कोश आदि को प्रदान करती हो तथा जो लोग प्रणतजनों के पाप रूपी कुञ्जर के लिये मृगराज हैं वे चन्द्रमुखी श्रीशारदाम्वा, पंचानन रूप गिरिजेश तथा गजवदन रूप गणेश रक्षा करें ॥ ३ ॥

शक्राग्निपाशिरविचन्द्रमुखामराली-
प्रह्लादतत्सुतसुताद्यसुरोत्तमार्च्याः ।
भक्तालिदुर्मरणरोगजरामुखघ्नाः
श्रीशारदाम्ब गिरिजेश गणेश पात ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन्द्र, अग्नि, वरुण, सूर्य, चन्द्र आदि देववृन्द तथा प्रह्लाद, बलि, बाण आदि असुरोत्तमों से वन्द्य तथा भक्तगणों के अपमरण, रोग, वृद्धता आदि के नाशक श्री शारदाम्बा, गिरिजेश तथा गणेश रक्षा करें ॥ ४ ॥

वाग्वाशिजिष्णुकबरीभरसर्पराज-
राजद्गलाहिकृतबन्धनिजोदराढ्याः ।
श्रीशंकरार्यभगवद्विहिताङ्घ्रिपूजाः
श्रीशारदाम्ब गिरिजेश गणेश पात ॥ ५ ॥

पन्नग से भी श्याम कबरी वाली देवी, सर्पराज से अलंकृत गले वाले तथा लम्बे उदर को सर्प द्वारा वेष्टित होने सुन्दर एवं श्री शंकराचार्य भगवत्पाद से पूजित चरणारविन्द वाले श्रीशारदाम्बा, गिरिजेश तथा गणेश रक्षा करें ॥ ५ ॥

भण्डान्धकेभमुखदैत्यहृविक्रमाढ्या-
श्चितान्धकारदनु(दिति)जाधमहन्तृचिन्ताः ।
निर्मूलितोभयविधामयपत्प्रसादाः
श्रीशारदाम्ब गिरिजेश गणेश पात ॥ ६ ॥

भँड, अन्धक, गज आदि असुरों के नाशक पराक्रम से समृद्ध चित्तान्धकार-रूपी दैत्याधम को स्मृतिमात्र से नष्ट करने वाले तथा पद प्रसाद से आधिव्याधि-नाशक श्रीशारदाम्बा, गिरिजेश तथा गणेश रक्षा करें ॥ ६ ॥

स्वर्गाधिवासिरिपुलोक भयप्रदायि-
नानाविधायुधलसन्निजपाणिपद्माः ।
भक्ताभयप्रदवरप्रदमुद्रिकाढ्याः
श्रीशारदाम्ब गिरिजेश गणेश पात ॥ ७ ॥

देवरिपुओं को भयप्रद नाना प्रकार के आयुधों से सुशोभित करारविन्द वाले, अभय तथा वरद मुद्राओं से विराजमान श्री शारदाम्बा, गिरिजेश तथा गणेश रक्षा करें ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीशृङ्गिरिपीठाधीशदेशिकस्तोत्रम्

[स्वागता]

पादपङ्कजनमज्जनतेष्ट-
श्राणनव्रतधरामरवृक्ष ।
देशिकाव भवसागरपोत-
स्वाङ्घ्रिनीरजनियुग्मसमर्च ॥ १ ॥

चरणारविन्द का नमन करने वाली जनता के इष्ट पदार्थों के दान का व्रत धारण करने वाले कल्पतरु, भवसागर के पोत तथा समर्चित युगल पादपद्म वाले गुरुदेव, रक्षा करो ॥ १ ॥

व्योमसम्भवनिजाशनभृङ्गा-
म्भोदकज्जलतमःप्रभकेश ।
देशिकाव भयहृद्वरदान-
प्रोल्लसत्करसमुज्ज्वलमुद्र ॥ २ ॥

पन्नग, भृंग, जलधर, कज्जल तथा अन्धकार के समान कृष्ण केश तथा अभय एवं वरद मुद्रा से अलंकृत करकंज वाले गुरुदेव रक्षा करो ॥ २ ॥

अङ्घ्रिसन्नतजनालिकृतान्त-
ध्वंसपण्डित पराक्रमपूर्ण ।
देशिकाव पुरुदुःखनिमज्ज-
द्दीननम्रजनताकरुणाब्धे ॥ ३ ॥

पादप्रणतजनों के मरण निवारण में प्रवीण, पूर्ण पराक्रमशाली अत्यन्त दुःख में डूबते हुए दीन तथा आनतजनों के लिये करुणासागर, गुरुदेव, रक्षा करें ॥ ३ ॥

स्वर्णमुख्यसकलेप्सितपूग-
श्राणनोद्धृतविनम्रनिकाय(दरिद्र) ।
पादपङ्कजनताखिलपाप-
भस्मसात्कृतिधुरीण गुरोऽव ॥ ४ ॥

सुवर्णादि प्रमुख सम्पूर्ण अभिलषित पदार्थों के दान से प्रणत एवं दरिद्रजनों के उद्धारक तथा पादारविन्द में प्रणतजनों के सम्पूर्ण पाप को भस्म करने में अग्रगण्य गुरुदेव, रक्षा करो ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अक्षपादकणभुक्कपिलादि-
प्रोक्तशास्त्रनिकरप्रदपूज ।
देशिकाव निगमान्तसमुद्यज्-
ज्ञानभानुपरिपीततमस्क ॥ ५ ॥

पूजित होने पर न्याय, वैशेषिक, सांख्य आदि शास्त्रों को प्रवचन द्वारा प्रदान करने वाले तथा वेदान्त के उदीयमान ज्ञान-भानु से तम के नाशक गुरुदेव रक्षा करो ॥ ५ ॥

कष्टसंचयविनाशकपादा-
भीष्टसन्ततिवितारिपदाब्ज ।
नीरसंभवतिरस्कृतिचुञ्चु-
स्वाक्षिभासिशशिजिष्णुनिजास्य(गुरोऽव) ॥६॥

कष्टावली के नाशक पाद वाले तथा अभीष्ट-सन्ततियों के प्रदायक पादारविन्द वाले, अपनी आँखों से नीरज की आभा को तिरस्कृत करने में प्रसिद्ध तथा चन्द्र-चन्द्रिका को अपने कान्तिमान आनन से जीतने वाले गुरु रक्षा करो ॥ ६ ॥

श्रीशृङ्गगिरिपीठाधिष्ठित-श्रीजगद्गुरु-श्रीसच्चिन्मोदाचार्यस्तवः

[विद्युन्माला]

निर्व्याजापारत्वभ्राज-
त्कारुण्याम्भोराशिस्वान्तम् ।
प्राणभ्रष्टस्रष्टृस्वाङ्घ्रिं
वन्दे सच्चिन्मोदाचार्यम् ॥ १ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निर्व्याज भव्य एवं अपार करुणावरुणालयस्वरूप हृदय वाले तथा अपने चरण में आनतजनों के सम्पूर्ण अभीष्टों के दायक सच्चिन्मोदाचार्य की वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

ईहाशून्यस्वान्तावाप्यं
हर्षाम्भोधेः पीयूषांशुम् ।
सर्वाविद्याभेदिस्वोक्तिं
वन्दे सच्चिन्मोदाचार्यम् ॥ २ ॥

निष्काम हृदय से प्राप्य, हर्षसागर के चन्द्र एवं अपनी वाणी से सर्व अविद्या के नाशक सच्चिन्मोदाचार्य की वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

पादाम्भोजद्वन्द्वानम्रा-
शेषाभीष्टस्पृक्संकल्पम् ।
योगिव्रातध्यानध्येयं
वन्दे सच्चिन्मोदाचार्यम् ॥ ३ ॥

अपने युगल पादारविन्द को प्रणाम करने वाले भक्तों के सम्पूर्ण मनोरथों के पूरक संकल्प वाले एवं योगिजनों के ध्यान से ध्येय सच्चिन्मोदाचार्य की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ३ ॥

वायुस्वान्तन्यक्कृद्वेग-
स्पृष्टानम्रेष्टर्द्धिव्रातम् ।
मुक्तिस्त्रीरत्नाश्लिष्टाङ्गै-
र्वन्दे सच्चिन्मोदाचार्यम् ॥ ४ ॥

वायु तथा मन के वेग को भी जीतने वाले वेग से आनतजनों की अभिलषित समृद्धियों के दाता तथा मुक्तिरूपी स्त्रीरत्न से आलिंगित अंग वाले सच्चिन्मोदाचार्य की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४ ॥

काणादाक्षस्वीयाङ्घ्र्यथादि-
श्रुत्यन्तान्तप्रज्ञादाङ्घ्रिम् ।
एणाङ्कन्यक्कृद्धासास्यं
वंन्दे सच्चिन्मोदाचार्यम् ॥ ५ ॥

अपने चरण के प्रभाव से न्याय, वैशेषिक, वेदान्त के ज्ञान को प्रदान

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करने वाले तथा स्मितमञ्जु मुख से चन्द्र की आभा को भी मलिन बनाने वाले सच्चिन्मोदाचार्य की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥

ऐहिक्यामुष्मिक्याशाल्यो
द्राक्सिध्येद्यत्पादार्चातः ॥
औदासीन्याढ्यस्वान्तेड्यं
वन्दे सच्चिन्मोदाचार्यम् ॥ ६ ॥

जिनके चरण की अर्चना से ऐहिक और आमुष्मिक आशायें शीघ्र सिद्ध हो होती हैं ऐसे विषयोपभोग से उदासीन महापुरुषों से वन्द्य सच्चिन्मोदाचार्य की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ६ ॥

ओमित्येव श्रुत्यन्तान्त-
श्रुत्युक्तौ यत्संज्ञाकारौ ।
ओंकारार्थध्यातृप्रीतं
वन्दे सच्चिन्मोदाचार्यम् ॥ ७ ॥

वेद और वेदान्त में वर्णित प्रणव ही जिनकी संज्ञा के रूप में हैं तथा प्रणव के अर्थ का अनुसन्धान करने वालों पर प्रीतचित्त सच्चिन्मोदाचार्य की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ७ ॥

अङ्गोद्भूताहंकारच्छि-
द्वैराग्यश्रीलावण्याढ्यम् ।
भक्ताशेषक्लेशालीघ्नं
वन्दे सच्चिन्मोदाचार्यम् ॥ ८ ॥

देहात्मवाद के नाशक वैराग्य की श्रीसुषमा से समृद्ध तथा भक्तजनों के अशेष क्लेशों के विनाशक सच्चिन्मोदाचार्य की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीनृसिंहगुरुस्तवः

[दोधकं]

अङ्घ्रिसरोरुहसंश्रितसंख्या-
वर्जितकोटिसमुद्धृतिचुञ्चुम् ।
मस्करिपूगसमर्चितपादं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ॥ १ ॥

चरणारविन्द का आश्रय लेने वाले अनन्त कोटि जीवों के समुद्धार में प्रसिद्ध, संन्यासिवृन्द से सम्पूजितपाद यतीन्द्र श्री नृसिंहगुरु को नमस्कार है ॥ १ ॥

स्यन्दनहस्तितुरङ्गममुख्य-
श्रीततिदायिकृपाकणलेशम् ।
शान्तिमुखावृतमुक्तिकलत्रं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ॥ २ ॥

कृपा-कणिका के लेश से भी रथ, गज, वाजि प्रमुख समृद्धियों के दाता तथा शान्ति के अवगुण्ठन से समावृत मुक्ति रूपी प्रिया वाले यतीन्द्र नृसिंहगुरु को नमस्कार है ॥ २ ॥

निर्जितरागरुडादिमशत्रु-
व्रातयमिव्रजलभ्यपदाब्जम् ।
भक्तजनप्रमदाब्धिसुधांशुं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ॥ ३ ॥

काम-क्रोध आदि आदिम शत्रुओं को जीतने वाले संयमशील साधुओं द्वारा लभ्य पादाम्बुज तथा भक्तजनों के प्रमोद सिन्धु को उद्वेलित करने वाले सुधाकर स्वरूप यतीन्द्र श्री नृसिंहगुरु को नमस्कार है ॥ ३ ॥

अत्रिमहामुनिनेत्रसमुत्थो-
त्तंसविजित्वरहासमनोज्ञम् ।
आश्रितकाङ्क्षितदापनतुष्टं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ॥ ४ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चन्द्रमा को जीत लेने वाले निर्मल हास से मनोहर तथा आश्रितजनों के अभिलषित पदार्थों को दिलाने से सन्तुष्ट यतीन्द्र श्री नृसिहगुरु को नमस्कार है ॥ ४ ॥

संयमिसन्ततिसन्ततसेव्य-
स्वाङ्घ्रिसरोरुहसंभवधूलिम् ।
ऋद्धिसमृद्धिविमुक्तिदपूजं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ॥ ५ ॥

अपने युगल पादारविन्द के पराग को संयमी जनों से निरन्तर सेव्यता का अनुभव करने वाले तथा अपनी पूजा करने वालों को ऋद्धि, समृद्धि तथा मुक्ति को देने वाले यतीन्द्र श्री नृसिंह गुरु को नमस्कार है ॥ ५ ॥

सीमसमानविवर्जितदीना-
नम्रनिकायदयाजनिभूमिम् ।
वैधलिपेरपमार्जनदक्षं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ॥ ६ ॥

असीम तथा असमान दीन तथा आनतजनों को कृपा की जन्मभूमि बनाने वाले तथा प्रतिकूल वैधसी लिपि को मिटा देने में दक्ष यतीन्द्र श्री नृसिंह गुरु को नमस्कार है ॥ ६ ॥

ललितमुक्त्युपशान्तिविरक्ति-
श्रीललनालिललामसमूहम् ।
मञ्जुलतातिमनोहरबुद्धिं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ॥ ७ ॥

मुक्ति, शान्ति, विरक्ति प्रभृति श्रेष्ठ रमणी रत्नों के समूह का लालन करने वाले तथा मञ्जुल एवं अति मनोहर बुद्धि वाले यतीन्द्र श्री नृसिंह गुरु को नमस्कार है ॥ ७ ॥

शङ्खतुषारमृणालमराल-
क्षीरवलक्षकलेवरकान्तिम् ।
श्राणितकाणभुजीमुखविद्यं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शंख, तुषार, मृणाल, मराल तथा क्षीर के समान गोरांग तथा न्यायादि विद्याओं के प्रदाता यतीन्द्र श्रीनृसिंह गुरु को नमस्कार है ।। ८ ।।

शोणसरोरुहडम्बरहन्तृ-
स्वीयमनोज्ञपदामृतजातम् ।
शाश्वतसौख्यदवर्त्मदपादं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ।। ९ ।।

अपने चरणारविन्द की रक्तिमा से रक्त कमल के आडम्बर को नष्ट करने वाले तथा अपने चरण से शाश्वत सुख के दाता मार्ग का निर्देशन करने वाले यतीन्द्र श्रीनृसिंह गुरु को नमस्कार है ।। ९ ।।

वाग्जननीकमलागिरिजाता-
पद्मजमाधवशंकरमूर्तिम् ।
कामितसर्वविभूतिदपादं
नौमि नृसिंहगुरुं यतिनाथम् ।। १० ।।

सरस्वती, कमला और गिरिजा से समन्वित ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकरस्वरूप तथा अभिलषित समस्त विभूतियों को देने वाले पादारविन्द वाले यतीन्द्र श्रीनृसिंह गुरु को नमस्कार है ।। १० ।।

श्रीगोर्गिरीशगणेशषोडशीस्तवः

[तोटकम्]

अखिलक्षितिजगन्निवसज्जनता-
कुशलप्रवणस्वहृदम्बुजनीन् ।
अनलप्रभवादिनुतस्वपदा-
न्कलये हृदि गोर्गिरिशेभमुखान् ।। १ ।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्पूर्ण त्रिभुवन में निवास करने वाली जनता के योग क्षेत्र में संलग्न हृदयारविन्द वाले तथा अनलपुत्रादिकों से वन्दित चरण वाणी, गिरीश, गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ १ ॥

अतटामितहेतुविहीनकृपा-
मृतनीरनिधिस्वहृदम्बुभवान् ।
प्रणतेप्सितदाननिषक्तमती-
न्निदधे हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ २ ॥

अकारण असीम करुणावरुणालय तथा प्रणतजनों के अभीष्ट दान में आसक्त-चित्त वाणी, पशुपति और गजानन को हृदय में धारण करता हूँ ॥ २ ॥

रथवारणवाजिपदातिमुखा-
खिलदापनदक्षकृपाकणिकान् ।
अजपर्वतभूमुखशक्तियुता-
न्कलये हृदि गीर्गिरिशेभमुखान् ॥ ३ ॥

कृपा-कणिका से चतुरङ्गिणी सेना को दिलाने में दक्ष, तथा ब्रह्मा, पार्वती एवं शक्ति से संयुत वाणी, महेश तथा गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ३ ॥

विजितस्मररुद्रणमत्सुत्रभा-
च्छ्रितमोदसुधाब्धिसुधाकिरणान् ।
स्ववशीकृतसर्वकलानिकरा-
न्निदधे हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ ४ ॥

काम और क्रोध को जीतने वाले भक्तों को सुलभ, आश्रितजनों के आनन्द-सिन्धु को उद्वेलित करने वाले चन्द्ररूप तथा समस्त कलाकलापों को स्वायत्त करने वाले वाणी, गिरीश तथा गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ४ ॥

द्रुहिणोरगभूपतिशायिमुखा-
खिलनिर्जरपूजितपत्कमलान् ।
उडुराजकलाकृतशीर्षमणी-
न्कलये हृदि गीर्गिरिशेभमुखान् ॥ ५ ॥

ब्रह्मा, विष्णु प्रभृति प्रधान देवों से पूजित पादारविन्द वाले, चन्द्रकला को भाल रत्न बनाने वाले वाणी, शङ्कर तथा गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उररीकृतभक्तजनेष्टशुभ-
वरसत्वरदानमुखव्रतकान् ।
दिविजव्रजवन्दितपादयुगा-
न्निदधे हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ ६ ॥

अंगीकृत भक्तजनों के अभिलषित शुभ वर को शीघ्र देने आदि व्रत को धारण करने वाले तथा देववृन्दवन्दित युगल पाद वाले वाणी, महेश तथा गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ६ ॥

निखिलत्रिदशालिकिरीटमणि-
च्छविराजिविराजिपदाम्बुजनीन् ।
अजरामरतामुखलिप्सितदा-
न्निदधे हृदि गीर्गिरिशेभमुखान् ॥ ७ ॥

समस्त देवताओं के किरीट में जटित मणियों की आभा से आभासित पादारविन्द वाले तथा अजरता और अमरता आदि प्राप्य पदार्थों के दाता वाणी, महेश और गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ७ ॥

कमलापतितुल्यसमस्तविधा-
मितभूतिदपादयुगान्नमताम् ।
कुधरप्रभवाद्युपगूढतनून्-
कलये हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ ८ ॥

युगल पादारविन्द को प्रणाम करने वालों के लिए लक्ष्मी पति के समान सम्पूर्ण अमित ऐश्वर्यों के दाता तथा ब्रह्मा, गिरिजा आदि से आलिंगित शरीर वाले वाणी, महेश और गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ८ ॥

द्रुतमानतकाम्यततिप्रमुखा-
खिलवस्तुवितारिकटाक्षकणाम् ।
द्रुहिणप्रमथालिहिडिम्बनुतान्
निदधे हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ ९ ॥

अपनी कटाक्ष कणिका से प्रणतजनों के काम्य पदार्थों में प्रधान वस्तुओं को अतिशीघ्र प्रदान करने वाले, ब्रह्मा, प्रमथ तथा हिडिम्ब से वन्दित वाणी, महेश तथा गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कमलासनपङ्कजदृक्प्रमुखा-
खिलदेवसमर्चितनैजपदान् ।
मितिहीनकृपामृतजन्ममही-
न्निदधे हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ १० ॥

ब्रह्मा, विष्णु प्रभृति प्रधान देवों से समर्चितपाद तथा अमित कृपामृत की जन्मभूमि वाणी, महेश तथा गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ १० ॥

झषदृङ्निटिलेक्षणवारणदृ-
ग्रुचिरान्दिविषल्ललनाविनुतान् ।
सुषमाम्बुधिनैजतनूधिषणा-
न्कलये हृदि गीर्गिरिशेभमुखान् ॥ ११ ॥

मीन के समान नयन, भाल पर विराजमान नेत्र तथा हाथी के समान लोचन से रुचिर, देवांगनाओं से विनुत एवं लोकोत्तरसौन्दर्यसागरस्वरूप शरीर और मति वाले वाणी, महेश तथा गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ११ ॥

अमृतप्रभवान्वयशत्रुकला-
विलसन्निजमस्तकमौलिमणीन् ।
(च्छविरूषिजनैजकिरीटमणीन्)
कणभुङ्मुखसर्वनयावलिदा-
न्निदधे हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ १२ ॥

चन्द्रकला की छविसे समुद्भासित किरीट मणि वाले तथा काणाद आदि समस्त प्रधान शास्त्रों के तत्त्वावबोधक वाणी, महेश एवं गणेश को हृदय धारण करता हूँ ॥ १२ ॥

अधरारुणतामुखमञ्जुलता(सुन्दरता)-
जितबिम्बपयोनिधिजन्मतनून् ।
सुलभीविहितेहपरप्रमदा-
न्कलये हृदि गीर्गिरिशेभमुखान् ॥ १३ ॥

अधर की अरुणता से बिम्ब तथा मुख की मञ्जुलता से चन्द्र को जीतने वाले तथा ऐहिक और पारलौकिक आनन्द को सुलभ कर देने वाले वाणी, महेश और गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ १३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वशिखायुतवेदवचांस्यपि य-
त्प्रणवाभिधतां प्रवदन्त्यनिशम् ।
प्रणवादिजपप्रवणाप्यपदा-
न्निदधे हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ १४ ॥

अपनी शिखाओं से युक्त वेद वाणी भी जिन्हें सदैव प्रणव से अभिधेय बतलाती हैं तथा प्रणवादि जप करने वालों को सुलभ वाणी, महेश और गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ १४ ॥

विषयेष्वखिलेष्वपि ये नितरां
विषताधिषणां कथ(ल) यन्त्यपि च ।
विजितेन्द्रियवर्गमनःसुलभा-
न्कलये हृदि गीर्गिरिशेभमुखान् ॥ १५ ॥

जो लोग समस्त विषयों में विष बुद्धि का निर्धारण करते हैं ऐसे जितेन्द्रिय जनों के मन से सुलभ वाणी, महेश और गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ १५ ॥

स्वकलेवरकान्तिभरापजित-
द्युतिहाटक(काञ्चन)पारदवार्धिभवान् ।
विधिदारमनोजहदन्त्यपहा-(दा)
न्निदधे हृदि वाक्पशुपेभमुखान् ॥ १६ ॥

सुवर्ण, पारद और चन्द्र को अपने-अपने कलेवर की कान्ति से अभिभूत कर देने वाले ब्रह्मा की प्रेयसी, काम के नाशक तथा गज की विरुदावली से विराजमान वाणी, महेश तथा गणेश को हृदय में धारण करता हूँ ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुद्धिपत्रम्

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१०	१	मैज	नैज
१२	११	क्षभा	क्षमा
१२	२५	पाल	पालक
१३	२०	पठताभिमाम्	पठतामिमाम्
१७	४	मह्लीर्लेलिता	मह्लीन् ललिता
१८	१८	धृष्ट	घृष्ट
२०	१०	लम्ये	लभ्ये
२२	२५	क्षितिपिति	क्षितिपति
२६	१७	पत्रार्थी	पदार्थी
२९	४	भृतो	मृतो
३१	१४	सुर्भकामका	सुमकार्मुका
३२	१	भृतो	मृतो
३२	११	रुबचिकां	रुचिकां
३२	२१	प्रयात्री	प्रदात्री
३३	१९	घ्रिवि	ध्रोर्वि
३७	९	विदृन	विनत
३७	१८	द्वंगु	ह्रंगु
४०	६	हरिणापजिन्नयनां नयनावधूत	हरिणापजिन्नयनावधूत
४४	१३	खिलाधाम्	खिलाघाम्
६०	६	शत्र	शत्रु
६५	२१	गुणान्	गुणाम्
६६	१४	नन्य	नम्य
६७	२५	भयाद्	भूयाद्
७४	२४	रम्भा	रम्या
७५	१९	गात्रम्तु	गात्र्यस्तु
७६	२०	मती	मह्लीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
७७	२०	मिदशा	त्रिदशा
८०	११	भिष्ट	मिष्ट
८३	११	पूरी पंक्ति को श्लोकान्त में रखना चाहिए।	
८५	२१	स्वग	स्वर्ण
८९	४	भव	मव
९२	६	ललता	ललिता
९४	५	महता	महसा
९५	११	पास	पाश
९९	१२	विधि	विध
१०२	७	न्यक्कृच्छ	न्यक्कृच्छवि
१०४	७	बाधक	बोधक
१०५	१२	भृति	मृति
१०६	२६	सिद्धयंष्टक	सिद्ध्यष्टक
१११	५	पढ़ें-वरप्रदौ क्षरदमृता भयप्रदौ	
११३	३	नम्या	नम्या
१२४	६	यदुकूला	यदुकुला
१२६	५	दूभता	दूभूता
१२८	१५	निकरेप्सित	निकराद्येप्सित
१३०	११	वर्जितप्रभूत	वर्जिते प्रभूत
१३२	१८	दक्षसस्वर	दक्षे सस्वर
१३७	१८	ङ्कारभेद	ङ्कारप्रभेद
१४४	३	प्रोद्भता	प्रोद्भूता
१४५	७	स्वान्ताति	स्वान्तामति
१४९	१०	कृतिकौ	कृतिकौ तौ
१५१	१४	प्रभावकणिका	प्रभाकणिका
१५२	३	निजाङ्गशेष	निजाङ्गाशेष
१५६	५	यावना	पावना
१६१	६	स्वीयाक्षालवेन	स्वीयाक्ष्णो लवेन
१६१	१३	त्स्वर्णकनत्	त्स्वर्णाः कनत्
१६५	१६	प्रदाचनाम्	प्रदार्चनाम्
१६५	२२	महाककलेवर	महाकलेवर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूज्यपाद ग्रन्थकार का संक्षिप्त परिचय

जगद्गुरु शङ्कराचार्य (गोवर्धन पीठाधीश) स्वामी श्री भारती कृष्ण तीर्थ महाराज (१८८४–१९६० ई०) प्रायः पचास वर्ष तक देश भरकी जनता को सनातन धर्म के आदर्शों और मूल्यों के प्रति जागृत करते रहे। आपकी ओजस्विनी और मधुर वाणी से असंख्य नर-नारी प्रभावित हुए। अमेरिका में भी आपकी वाणी ने आध्यात्मिक चेतना की बाढ़-सी ला दी थी। आपकी भक्ति-पूत समर्थ लेखनी से निःसृत स्तोत्र-साहित्य का कियदंश हिन्दी अनुवाद के सहित इस प्रकाशन में प्रस्तुत है। आशा है, इससे भावुक भक्तों का आप्यायन होगा।

अद्भुत गुरुभक्ति, प्रभावशालो भाषण-कौशल, अलौकिक प्रतिभा, काव्य-निर्माण में अप्रतिहत गति, सनातन धर्म में अगाध आस्था और उसके प्रचार के प्रति सर्वस्व समर्पण—ग्रन्थकार के अनन्त गुणों में से इन कतिपय का उल्लेख ही उनके परिचय के लिए यथेष्ट है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वैदिक गणित

Vedic Mathematics

'Sixteen Simple Mathematical Formulae From The Vedas'

(For One-line Answers to All Mathematical Problems).

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री भारती कृष्ण तीर्थ महाराज के मौलिक अनुसन्धान का यह प्रसाद सूत्रों द्वारा गणित का चमत्कार प्रस्तुत करता है। देश-विदेश में इस विलक्षण प्रकाशन ने धूम मचा दी है। भारतीय संस्कृति, वेद-विज्ञान और गणित के प्रेमियों के लिए ग्रन्थ अनिवार्य रूप से संग्राह्य है।

मूल्य–१०.०० मात्र

पृष्ठ-संख्या रॉयल अठपेजी, ३० + ३७० = ४००

प्रकाशक

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस, वारासणी-५

भारतीय विद्या भवन, चौपाटी, बम्बई-७

मुद्रक : महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी–१